५.१

श्रीहित-सुधा-सागर

श्रीहित

राधा विनोद गोस्वामी
संग्रह
राधा [illegible]नन्द मंदिर
चौक-वाराणसी

श्री हित सुधा-सागर

श्रीहित कीर्तिलाल गोस्वामी

श्रीहित रूपवाणी माला का बीस--इक्कीसवां पुष्प

। श्री राधावल्लभो जयति ❀ श्रीहित हरिवंश चन्द्रो जयति ।।
श्रीहितगुरु अधिकारी श्री किशोरीलालो विजयते
श्रीहितगुरु अधिकारी श्री रूपलालो विजयते

* श्री हितवाणी जी *

त्पर श्रीहिततत्वरूप महाप्रभु श्रीहितहरिवंश गोस्वामिचरण कृत

* श्री सेवकवाणी जी *

ीराधिकावतार श्रीहितनेह प्रकाशक श्रीसेवकजी महाराज कृत

एवं

ष्टयाम सेवाविधि, सेवाविलास, उत्सव बोध मंगल बधाई
रासमंडल यश, द्वितीय हितरूप चरित्र बेली आदि ।

१०८गोस्वामी श्रीहित कीर्तिलालजी महाराज

मन्दिर श्री १००८ श्रीराधाबल्लभ जी महाराज, वृन्दावन
की आज्ञानुसार—

श्रीयुत् सेठ चन्द्रप्रकाशजी अग्रवाल

बड़ाकर निवासी द्वारा प्रकाशित ।

द्वितीय बार	हिताब्द ४६१	न्योछावर
१००१	विक्रमाब्द २०२१	७) मात्र

मुद्रक—पं० प्यारेलाल शर्मा, श्रीविजय प्रेस, वृन्दावन ।

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
१—श्रीयमुनाष्टक सटीक	
२—श्रीराधासुधानिधि जी सटीक	
३—श्रीस्फुटवाणी जी	१४
४—श्रीचतुराशीजी	१६
५—श्रीसेवक वाणीजी	२३
६—फल स्तुति	३१
७—श्रीसेवक जू महाराज कौ भजनाष्टक	३१
८—श्रीसेवक उत्कर्ष	३१
९—अष्टयाम सेवाविधि	३१
१०—श्रीराधावल्लभजी कौ अष्टप्रहर सेवाविलास	३३
११—नित्य नैमित्तिक उत्सव बोध	३३
१२—मंगल वधाई	३५
१३—रसिक नाम ध्वनि	३८
१४—श्रीराधासुधानिधि जी कौ समय प्रबन्ध	३८
१५—श्रीचतुराशी जी के पदन कौ समय प्रबन्ध	३९

श्री राधावल्लभीय सम्प्रदायाचार्य श्रीमद्गोस्वामी
जयश्रीहितरूपलालजी महाराज
टीकायत अधिकारी--मन्दिर श्री १००८ श्रीराधावल्लभजी महाराज
श्री वृन्दावनधाम (मथुरा)

अवतरण आषाढ़ कृ० ५
विक्रम संवत् १९५७

निकुंज प्रवेश चैत्र शु० ६
विक्रम संवत् २०१९

समर्पण

माननीय आचार्य कुल कमल दिवाकर

श्रीराधावल्लभीय सम्प्रदाय

प्रधान पीठाधिकारी पूज्यवर श्रीमद् गोस्वामी

जय श्रीहित रूपलालजी महाराज

को

परम प्रेमास्पद श्रीयुत सेठ इन्द्रलालजी अग्रवाल

एवं

पुत्र श्रीयुत सेठ चिरंजीलालजी अग्रवाल की

स्मृति में

धर्मपत्नी श्रीमती सेठानी इन्द्रमणी बाईजी

व पुत्र

सेठ श्री चन्द्रप्रकाश जी द्वारा

समर्पित

❀ स्मरणीय ❀

आषाढ़ सुदी १५ (गुरु पूर्णिमा)

१—आज गुरु-पूजन का दिन है, अपने गुरु-चरणारविन्दों का पूजन करना परम धर्म एवं कर्तव्य है।

२—आज ही श्रीवृन्दावन धाम स्थित श्रीहित मण्डल(रासमण्डल) पर श्रीमद्गोस्वामी श्रीहित हरिवंश महाप्रभु के चरणों का पूजन करना प्राचीन पद्धति के अनुसार श्रीहित आचार्य कुल बालकों एवं श्रीहितनाद कुल मात्र का परम कर्तव्य है।

३—आज से ही श्रावण वदी ११ तक श्री १००८ श्रीराधावल्लभ लालजी के सन्मुख श्री प्रियादासजी कृत "सेवक चरित्र" की कथा होती है। एवं श्रावण वदी ११ से श्रावण सुदी ३ तक "सेवक चरित्र" का समाज में गायन होता है, आज ही श्रीसेवक जी का जन्मोत्सव है। उपरोक्त उत्सवों में श्रीहित महाप्रभु के बिन्दुकुल एवं नाद कुल का परम धर्म व कर्तव्य है कि सम्मिलित होकर शोभा-वर्द्धन करें।

नोट—सम्प्रदाय के अनुयायियों को कम से कम पांच जन्मोत्सव अवश्य करने चाहिये।

१—वैशाख शुक्ला ११ श्रीहिताचार्य महाप्रभु का जन्मोत्सव।

२—श्रावण शुक्ला ३ को श्रीसेवक जी का जन्मोत्सव।

३-- भाद्रपद कृष्णा अष्टमी को श्रीकृष्ण-जन्मोत्सव।

४—भाद्रपद शुक्ला ८ को श्रीनिकुंज निवासिनी श्रीराधारानी का जन्मोत्सव।

५—अपने गुरु का जन्म दिन जिस दिन होय "श्रीगुरु-जन्मोत्सव" मनाना चाहिये।

श्रीराधावल्लभीय सम्प्रदाय प्रधानपीठाधिपति टीकायत
गोस्वामी श्रीहित रूपलालजी महाराजात्मज
श्रीहित कीर्तिलालजी गोस्वामी
१००८ श्रीराधावल्लभजी का मन्दिर श्रीवृन्दावन धाम।

श्रीहित हरिवंशचन्द्र महाप्रभु चरणार्विन्दो जयति

भूमिका

'वन्दे बोध मयं नित्यं' नित्य बोधमई एवं नित्य वन्दन करने योग्य ही आचार्यपाद श्रीहित हरिवंश महाप्रभु की वाणी हैं, यह अलौकिक वाणी जन-कल्याण का रूप धारणकर शताब्दियों से जन-जन के हृदय में अपना प्रकाश फैला रही हैं, प्रत्येक घर में वाणी का यह दीप प्रकाशित होकर अन्धकार दूर करता रहा और कर रहा है—एकान्त में बैठ एकाग्र चित्त से अच्छी तरह मनन करने का, प्राणी के विचार करने का, साधन मन है। मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार को अन्त:करणचतुष्ट कहते हैं, परन्तु यदि मन शुद्ध हो तभी उसमें यथार्थ प्रवेश कर सकता है,मन दर्पण जैसा है, दर्पण यदि स्वच्छ हो तो उसमें मुँह का प्रतिबिंब पड़े, इसी तरह मन स्वच्छ पवित्र हो तभी उसमें अपने सत्य स्वरूप का प्रतिबिंब पड़े, पहले मन को पवित्र करना चाहिये, प्राणी का मन उसके हृदय में रहता है और हृदय शरीर का एक भाग है, अर्थात् मन को शरीर का आश्रय है, इसलिये उसका पोषण भी शरीर द्वारा ही होता है, शरीर जिन गुणयुक्त पदार्थों का सेवन करता है, वे गुण शरीर को होने के साथ ही मन को भी होते हैं शरीर तो जड़ एवं स्थूल है, फिर भी मन की सत्ता बहुत बड़ी है, शरीर की सारी इन्द्रियों (कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों) का वह राजा है इसलिये सबसे पहिले श्रीहितकुल आचार्य बालक द्वारा दीक्षित हो मंत्र का सारा सार ग्रहण कर कर्मेन्द्रियों तथा ज्ञानेन्द्रियों सहित मन को सुशील और सुशिक्षित करना चाहिये, जिससे पापाचार में वृत्ति प्रेरित न होकर वह स्वयं ही शुद्ध रहे। आज का जगत तो प्रमाद की मोहमई मदिरा पीकर सन्तुष्ट

है । **'पीत्वा मोहमयीं प्रमाद मदिरां उन्मत्तभूतं जगत्**--इस जगत् में सभी प्रकार के लवण, तीक्ष्ण, घृत, मधु-दुग्ध आदि के सागर-पर्वत आदि भरे हुये हैं और इसी जगत में इन सबसे ऊपर और अद्भुत स्वाद देने वाली महतजनों की वाणियां हैं जिनमें अगाध रस-सिन्धु लहरा रहा है इस सिन्धु से जो भी पान कर सकता है वही सफल है वही धन्य है, इन वाणियों का रस कृपा साध्य है गुरू कृपा और इष्ट कृपा ही एकमात्र साध्य है ।

आज जिस प्रकार की शिक्षा विश्वविद्यालयों द्वारा दी जा रही हैं उस ओर सभी विद्वानों का, जन-नेताओं का और शासकों का ध्यान जा चुका है, सभी अपर्याप्त समझ रहे हैं । जो देश में नैतिक पतन होरहा है उसका मूल कारण हमारी शिक्षा दीक्षा ही है, इसका सब अनुभव कर रहे हैं । ऐसी दशा में अपने पूर्वज आचार्यों और सन्तों की ही वाणी हैं जिसमें अपनी सामर्थ्य है । मानव का मन मूलतः शृङ्गार प्रिय है, रूप का वह उपासक है, वैराग्य की ओर मन स्वतः नहीं जाता, इस रस मार्ग में मन का सहज प्रवेश होता है प्रियाप्रियतम के प्रेम का अद्भुत सागर इन ग्रन्थों में लहरा रहा है । प्रेम के इस पंथ में एक बार पैर रखते ही स्वतः प्रवेश होने लगता है ।

नाम बीज गुरु कृपा बल निज उर घर में बोय ।
सत संगत जल सींचतें अंकुर लहलहो होय ।।

स्वभावतः ही प्रत्येक मनुष्य कुछ न कुछ करता ही रहता है, परन्तु उसका उसे ज्ञान नहीं होता वह ज्ञान होने के लिये ही गुरू की सहायता अपेक्षित होती है, कहावत ही है कि ज्ञान गुरू के बिना नहीं होता, ज्ञान के वगैर मुक्ति भी नहीं होती, मनुष्य अज्ञानी है, अंधकार में है, इसी वास्ते जीव को सद्गुरू की आवश्यकता होती है ।

गु शब्दस्त्वन्धकारोऽस्ति रु शब्दस्तन्निरोधकः ।
अन्धकार निरोधित्वाद्गुरुरित्यभिधीयते ॥

गु अर्थात अंधेरा और रु अर्थात् उसका नाश करनेवाला इसलिये गुरू की आवश्यकता होती है—गुरू ही अज्ञान रूपी अंधकार का नाश करने में समर्थ है—

इस ग्रन्थ में मुख्य आधार श्रीआचार्य महाप्रभु हितहरिवंश जी की वाणी हैं, जैसा कि इस ग्रन्थ का नाम है **"श्रीहित सुधा-सागर"** यह ग्रन्थ हित का ही सागर है इस ग्रन्थ में यमुनाष्टक, राधासुधानिधि, चतुरासीजी, स्फुटवाणीजी और आचार्य महाप्रभु के दो पत्रों का भी संकलन है—श्रीहितवाणीजी के साथ ही साथ श्रीसेवकजी कृत श्रीसेवक वाणी एवं मंगल बधाईयां श्रीरासमण्डल यश तथा द्वितीय हितरूप चरित्र वेली नामध्वनि का भी संग्रह है—

आज यह संयोग हमें अपने पूज्य प्रातःस्मरणीय (पिता) श्रीदादाजी महाराज श्रीमद्गोस्वामी श्रीहितरूपलालजी महाराज की कृपा एवं आशीर्वाद स्वरूप ही प्राप्त हुआ है कि हम रसिकजनों को इन वाणी ग्रन्थों का रसास्वादन करा रहे हैं, इस ग्रन्थ में श्रीराधा सुधानिधि की अपूर्व टीका को पूर्ण करनेवाले समर्थ हमारे पूज्यातिपूज्य श्रीबाबाजी महाराज जगद्गुरु श्रीमद्गोस्वामी श्रीहित किशोरीलालजी महाराज के प्रताप का ही फल है। कहाँ तो राधासुधानिधि और कहाँ सर्व साधारण उसमें स्नान कर सुख की अनुभूति करें, यही महत् पुरुषों की दया है। खुद तो सुख स्वरूप हैं ही—मगर अपने सुख में सभी को भी सम्मिलित करने की कृपा करते हैं। हम इस प्रसंग में अपने मन के भाव क्या-क्या लिखें। हमारे वास्ते तो यही प्रसन्नता का विषय है कि जो महाराज (पिता श्रीदादाजी) अहर्निश इन ग्रन्थों का रसास्वा-

दन करते थे और आज से ३०-३५ वर्ष पूर्व यही ग्रन्थ इसी नाम से उन्होंने प्रकाशित भी किया था बल्कि और २५-३० ग्रन्थों का प्रकाशन किया था जो आज सभी अप्राप्त हैं उन्हीं की प्रेरणानुसार इस ग्रन्थ का द्वितीय नवीन संस्करण प्रकाशित होकर रसिक एवं सुहृद्जनों के हृदयमन्दिर में प्रकाश करेगा। विज्ञान के नाम से आगे जो संग्रहीत है वह पुरानी वाणी को ही लिपी है। प्रकाश-स्वरूप पथप्रदर्शक गुरू अपने ओज और तेज से पूर्ण अन्तरात्मा के रूप में हमें निरन्तर उन्नति की ओर आत्मविकास की ओर बढ़ने का सकेत देरहे हैं—हमारे आचार्यों की वाणी श्रीसेवक-वाणीजी के द्वारा मन में अनेक बार सद्ज्ञान और विवेक की आभा-सी जलती है—पुकार की आवाज सी गूँजती है, जब हम नहीं सुनते हैं तो अन्ततः विलुप्त होजाती हैं। जब मन में भव्य संकल्प उठते हैं, आत्मनिर्माण के पवित्र विचार आते हैं और आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है, तभी समझलें कि हृदय के अन्धकार में महत् पुरुषों की वाणी एवं सद्गुरू की कृपा का दीपक प्रकाश कर रहा है। अगर संकल्प सत्य है तो आत्मा अवश्य ही मार्ग का निर्देशन करेगी और वही मार्ग श्रेष्ठ होगा। मनुष्य को सुख शान्ति तभी होगी, जब मनुष्य अन्याय और असत्य व्यवहार का त्याग करेगा, अज्ञान के स्थान पर ज्ञान का—अधर्म के स्थान पर धर्म का प्रयोग करेगा।

गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है कि—

"न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते" (गीता ४।३८)

ज्ञान के समान पवित्र और कोई वस्तु इस संसार में नहीं है, सद्ज्ञान और सद्विचार ही हमारे सहायक हो सकते हैं। ज्ञान की गम्भीरता हमारी भावना को बल देती है और उसकी उज्ज्वलता चरित्र को तेज प्रदान करती है। भावना की सरसता ज्ञान

की किरणों में कमल खिला देती है। वस्तुतः मनुष्य को यह वाणी एवं गुरु आदेश ही संसार की विभीषिकाओं से बचाने में समर्थ हैं। अव हम भी अपनी इस भूमिका को समाप्त करते हैं और इस ग्रन्थ के प्रकाशन में अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ और असुविधायें आईं इसी कारण प्रकाशन में भी विलम्ब होगया। जहाँ तक प्रूफ के संशोधन की बात है विशेष सावधानी बरती गई है फिर भी भूल रह जाना स्वाभाविक है इसके लिये क्षमनीय हैं। इस ग्रन्थ के प्रकाशन में हमें पूज्यनीय भाईयों गोस्वामी श्री-हित सुकुमारीलालजी अधिकारी एवं गोस्वामी श्रीहित भजनलाल जी महाराज से मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है साथ ही नादकुलभूषण बाबा श्रीनवेलीशरणजी की बराबर प्रेरणा प्राप्त होने से ही यह कार्य होसका है। इस ग्रन्थ के मुद्रण का पूर्ण श्रेय श्रीमान सेठ चन्द्रप्रकाशजी अग्रवाल को है जिन्होंने हमारे हृदय की अन्तरात्मा को प्रसन्न कर दिया। श्रीराधावल्लभलाल उनको यश की एवं उनकी धर्मपरायणा माँ को अपने चरणों की रज श्रीवृन्दावन की प्राप्ति करावें।

सुधर्म आचरण कीजिये, तन मन इन्द्री जीत।
तब हित नाम गिरा विषैं बढ़ै प्रीति परतीत।।

तथा—

केलि विविध त्यों रस विविध एक प्रेम विस्तार।
जैसौ मन तैसौ मनन सरनागति अधिकार।।

श्रावण शुक्ला ११ संवत् २०२१
श्रीवृन्दावनधाम

श्रीराधावल्लभीय सम्प्रदायाचार्य
वृन्दावन रजोपसेवी
श्रीहित कीर्तिलाल गोस्वामी

स्मृति

*** चौपाई ***

श्रीइन्द्रलालजी परम सनेही, गो ब्राह्मण पालक निस्प्रेह
बर्धमान ढिग ग्राम बराकर, बसै तहाँ शंकर प्रेमाकर
शिव के ध्यान माँहि लवलीन, बाढ़त छिन छिन प्रेम नवी
तिनके पुत्र चिरञ्जीलाल, पितु सम गौ ब्राह्मण प्रतिपाल
अल्प आयु में गये पधार, पत्नी के इक गर्भ अधा
नवम मास पूरण भयौ जबहीं, पुत्र रतन प्रगट्यौ तिन त
मातु इन्द्रमणि पूजी आस, कुल वर्धन श्री चन्द्रप्रकाश
ज्यों ज्यों चन्द्रकलानि विकाश, त्यों त्यों चन्द्रप्रकाश प्रकाश
बहुत वृद्ध भये इन्द्रलालजू, रुग्ण रहत हैं सबहि काल
धर्म परायण इन्द्रमनी जू, ससुर सु सेवा करत घनी जू
संवत् द्वै सहस्र उन्नीस, रोग बढ्यो तब बिस्वै बीस

दोहा—पुत्र वधू तैं तब कही, अपने हिय की बात ।
जियत न काशी मिलै तौ, पहुँचइयौ मृत गात ॥
कहाँ काशी मणिकर्णिका, कहाँ गंगा कौ नीर ।
कहाँ बराकर में बस्यौ, सही जात नहिं पीर ॥
पीर तीर ही मिटैगी, जो पहुँचै यह देह ।
इन्द्रमनी जू राखियो, तुम मेरौ वृत ऐह ॥

परम भक्त श्रीमान् सेठ श्री इन्द्रलालजी
बराकर (बर्धवान)

* चौपाई *

ु दिन में तब गये पधार, पहुँचे शिव ढिग तजि संसार ।
ा पितामह कौ आदेश, सुनि पहुँचायौ तन शिवदेश ॥
धाम सौं स्वजन समेत, तन लै चले भरे हिय हेत ।

—सुमणि कर्णिका घाट पर, आये भरे उछाह ।
संस्कार अन्तिम कियौ, जाकौं कहियत दाह ॥

* चौपाई *

शिव पूजी मन की आस । इन्द्रलाल गुनि अपनौं दास ॥
ः शिव जापर अतिशय ढरैं । ताकौं अंगीकृत यौं करैं ॥

—श्री राधावल्लभलाल की, सेवा दैंय रसाल ।
गोपीश्वर ह्वै सेवहीं, श्रीराधावल्लभलाल ॥
बस याही तैं पौत्र पर, शंकर भये कृपाल ।
श्रीराधावल्लभलाल कौ, सेवक कियौ रसाल ॥
तिनकी सेवा प्रगट यह, श्रीहित गिरा प्रकाश ।
श्री गुरु आयुष शिर धरी, मन में मानि हुलास ॥
सुखी रहौ फूलौ फलौ, हम यह देत अशीश ।
चिरजीवी चन्द्रप्रकाश पर, कृपा करैं बृज ईश ॥

* कवित्त *

र की भक्ति हीय पालक गौ ब्राह्मण के,
इन्द्रलाल नाम धाम बराकर बासी जू ।
जी के ध्यान लीन कर्म धर्म में प्रवीन,
उत्कट व्रतधारी शंभु के उपासी जू ॥

जियत न काशी मिलै तौ यह मृत गात,
जैसैं बनैं तैसैं तुम भेज दीजौ काशी
आशा यह पूजी शिव दीनौं धाम अभिराम,
जैसी अंत काल इन्द्रमणिसौं प्रकाशी जू
पितु कौ सुभाव पुनि पायौ श्री चिरंजीलाल,
अल्प आयु मध्य भये शिव लोक वासी
वधू कही बात सुनौं कैसें कुल नाम चलै,
हँसि बोले गर्भ तेरैं कुल कौ प्रकाशी
नाम कुल चालक है गो ब्राह्मण पालक है,
तारि है कुटुम्ब ह्वै राधिका उपासी
एतो कहि गये तहाँ महादेव इष्ट जहाँ,
भृत्य भये करैं नित्य प्रभु की खवासी जू
गये नव मास बीत प्रगट्यौ कुल तारन कौं,
द्विज सोधि नाम धरचो चन्द्र परकाशी
चन्द्र कौ प्रकाश ज्यौं कुल के चकोर त्यौं,
कहैं अहो कृपा करी शंभु अविनाशी
चिंतत है मातु नित कब पति कह्यौ होय,
सुत पावै गुरू कैसें वृन्दावन वासी
"जयश्री" कीर्त्तिलाल कृपा करी करवर शीष धरचौ,
चन्द्रप्रकाश भयौ राधिका उपासी जू

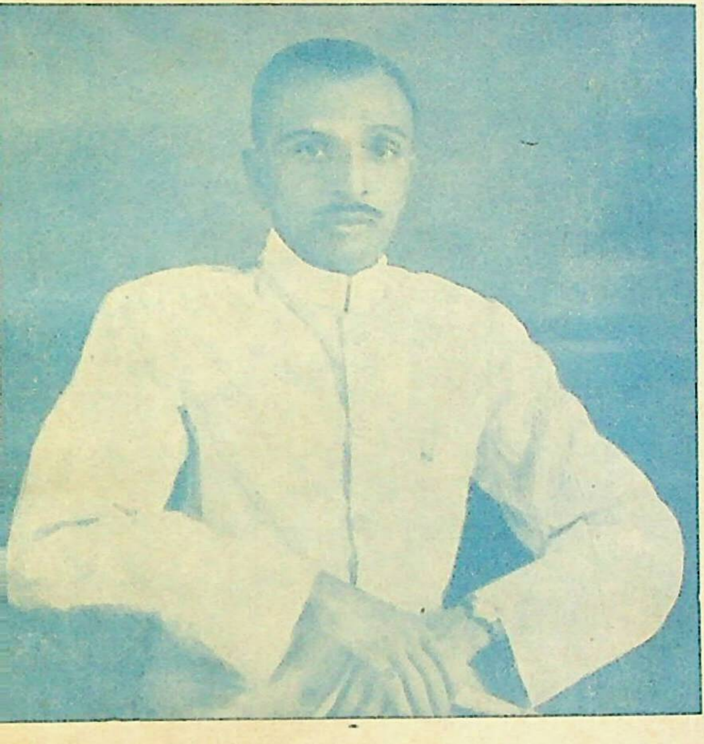

परम भागवत श्रीयुत सेठ श्री चिरंजीलालजी
पुत्र श्रीमान् इन्द्रलालजी बराकर (वर्धवान)

* भगवान् श्रीहितहरिवंशचन्द्रो विजयते *

विज्ञान

जिन नहीं समझ्यौ प्रेम यह, तिन सौं कहा प्रलाप।
दादुर हू जल में बसै, जानत मीन मिलाप॥

"स्वारथ सकल तज, गुरु चरणन भज,
गुण नाम सुन, कथ, संतन सौं संग कर।"

आद्य सनातन सिद्धाद्वैत मतैकनिष्ठ अनन्य श्रीहित राधावल्लभीय (ब्रह्म) सम्प्रदाय क्या है ? कब से है ? क्यों है ? इत्यादि समझाना तो स्वल्प समय में असम्भव सा है क्योंकि जब जगन्मान्य महात्मा श्री नाभा स्वामीजी इस सम्प्रदाय के पूर्वाचार्य चरण के लिये भक्ति भाव से डंके की चोट कहते हैं—

श्रीराधाचरण प्रधान हृदय अति सुदृढ़ उपासी।
कुञ्ज केलि दम्पती तहाँ की करत खवासी॥
सर्वस्व महाप्रसाद प्रसिद्ध ताके अधिकारी।
विधि निषेध नहिं दास अनन्य उत्कट व्रतधारी॥
श्रीव्याससुवन[1] पथ अनुसरे सोई भलैं पहिचान है।
श्रीहरिवंश गुसांई भजन की रीति सकृत कोउ जान है॥

यहाँ "सकृत" एक "सोई भलैं" इन शब्दों पर ध्यान देने से सुदुरूहता स्वयं प्रकट होती है। जीवों के कल्याणार्थ महानुभाव चरणों ने उपाय बताये हैं, यथा—

प्रथम हृदय श्रद्धा जो करै, आचारजनि जाय अनुसरै,
जहाँ जहाँ हरिवंश के॥

---

१ श्रीहितहरिवंश प्रभु।

अर्थात् जीव की श्रद्धा और प्रभु कृपा दोनों का जब सुयोग उपस्थित हो तब जीव को श्रीहितहरिवंशविन्दुकुलोद्भव आचार्य चरणों के समीप जा करके हितरसिकपथानुगा स्वधर्मप्रतिपादित दीक्षा शास्त्रानुसार लेनी चाहिये। तीव्र अभिलाषा और आचार्य चरण समीप पहुँचने में अति विलम्ब की संभावना होने पर कहीं-कहीं यदा कदा आचार्य चरणों की आज्ञा शिरोधार्य कर श्रीहित रूप गुरु प्रभु चित्र के सन्मुख उनके प्रतिनिधि स्वरूप (पति प्रदेश जाने से पतिव्रता के चित्र सेवा वत) कोई हित रसिक महानुभाव से दीक्षा लेकर श्रीशरणागत मंत्र का यथावकाश नीचे लिखी तीन श्रेणियों में से एक के अनुसार नित्य भजन पाठ सेवा भावना करनी चाहिये **अधिकस्याधिकं फलम्** फिर जब कभी श्रीमदाचार्यचरण में प्राप्त होनेको अवसर आवै तब फिर विधिपूर्वक उनसे मन्त्रोपदेश ग्रहण कर (हित संबंध)ले जैसेकि राजा परमानंद, नंददासजी, श्रीनवलदासजी भार्गव श्री चन्द्रसखीजी, श्रीभूँठास्वामीजी, श्री जंत्रीस्वामीजी, चतुर्भुजदासजी, श्रीलालस्वामीजी आदि ने आचार्य चरण सन्मुख जीवों को किया।

वाणी जी में छपे सेवा पाठ भावना आदि को समझ इन वाणी जी का नित्य पाठ करना चाहिये। नित्य पाठ के योग्य शुद्ध सुन्दर सचित्र सांगोपांग कोई गुटका नहीं था यह त्रुटि हमारे हृदय में बहुत खटकती थी। श्री प्रभु ने हृदय में प्रेरणा की कि शुद्ध सुन्दर सचित्र धर्मी मर्मियों के पाठ और पूजा करने को एक गुटका आवश्यकीय है, जैसा हृदय में विचार था, वैसा सुन्दर तो नहीं होसका, शायद जीवन रहा तो अगले संस्करण में यह त्रुटि श्री जी पूरी करादें। फिर भी यदि एक भी धर्मी का हृदय सन्तुष्ट होसका, एक भी मर्मीने हार्दिक सहानुभूति दी, तो हम समझेंगे कि हमारा जीवन किंचिन्मात्र सफल हुआ।

हमारे छपाने में संभव है कि कुछ और भी विलम्ब होजाता पर श्री० जी की कृपा से आज्ञा पाते ही कार्य में परिणत करने वाले सज्जन माननीय पं० श्री श्री नारायणजी दुवे रि. तहसीलदार रईस अलीगढ़ ने वड़े उत्साह से यह कार्य शीघ्र पूर्ण कराया। गरौंली स्टेट नरेश श्रीमान् चन्द्रभानु सिंहजी (रज) महोदय और श्रीदुवे जी के सामने प्रसंगानुसार चर्चा भई, उसी में श्रीमान दुवेजी ने छपाने का भार अपने ऊपर ले लिया और शीघ्र ही छपाने का आग्रह किया। हम श्री० प्रभु की पूर्ण कृपा का अनुभव करते भये-श्रीदुवेजी के लिये भी श्री० से प्रार्थना करें कि उनके और उनसे सम्वन्धित जनों के ऊपर श्रीचरणानुकम्पा और हित भक्ति सदा बनी रहै और उनके सुयोग्य पुत्र निकुंजवासी श्रीमान पं० विष्णुनारायणजी दुवे पर कृपा कर अपनी अनन्त कृपा करें। श्रीहित धर्म के मर्मी रसिकों से प्रार्थना है कि सव श्रीहितवाणी जी का पाठ नित्य न कर सकें तो श्रीसेवकवाणी जी का पाठ तो अवश्य ही किया करें क्योंकि।

"या धन कौ साधन यही श्रीसेवक कृपाहि विशेषिये"

श्रीहित मतानुसार श्रीहितमहाप्रभु की श्रीराधा सुधानिधि में कही आज्ञा—

क्वासौ राधा निगमपदवी दूरगा कुत्र चासौ,
कृष्णस्तस्या कुचकमलयोरंतरैकान्तवासः।

से विना श्रीस्वामिनी जी श्रीराधिका जी की कृपा श्रीकृष्ण की कृपा नहीं होसकै-और श्रीनाभा स्वामी एवं श्री ध्रुवदासजी श्री व्यासजी आदि महानुभावों के मतानुसार श्रीराधाचरण प्रधान.

राजा की दई ऐपै मिलैगी प्रधान हाथ० और

चरण शरण हरिवंश की जब लगि आयौ नाहिं।
नव निकुञ्ज निज माधुरी क्यों परसै मन माहिं॥
हरिवंश चरण उर धरणिधर मन वच करि विश्वास।
कुंवरि कृपा ह्वै है तबहि अरु वृन्दावन वास॥

सर्वै अंग गुणहीन हौं ताकौ जतन न कोय।
एक किशोरी कृपा तें जो कछु होय सु होय॥
सोउ कृपा अति सुगम नहिं ताकौं कौन उपाय।
चरण शरण हरिवंश की सहजहि बन्यौ बनाव॥
एवं— बिना-हरिवंशहि सरसरीत कौ कापै चलिहै भार।
को राधा दुलरावँ गावै, वचन सुनावै चारु॥
वृन्दावन की सहज माधुरी कहिहै कौन उदार।

अतः बिना श्रीहित हरिवंश कृपा के श्री राधिका जी की कृपा असंभव है और ऐसे ही श्रीहित नेह प्रकाशक श्रीराधिकावतार श्री सेवक जू महाराज की कृपा बिना श्रीहित कृपा अति कठिन है, अतएव समस्त हितधर्म मर्मियों से प्रार्थना है कि—

श्री हित धर्मिन सों बीनती श्री सेवक स्वरूप पहिचानियौ

और श्रीसेवक स्वरूप अति दूर है धर्मीवत हू मान

श्री सेवक जू कौ वास्तविक स्वरूप (श्रीराधा) तौ समझ और दृष्टि में सहज नहीं आवेगा पर केवल अपने धर्म भैया मान के उनके गुणगान उनकी वाणी जी का नित्य पाठ और उनकी जन्मोत्सव वधाई गान (सावन सुदी तीज हरियाली भूलन की) को अवश्य कर्त्तव्य है, न करने से गुरु द्रोही होने का लांछन और गुरु इष्ट सपथ वाणीजी में वर्णित है। श्रीसेवक वाणी-पाठ और उनकी कृपा से थोड़े समय में ही श्रीहित-धर्म का लाभ हो सकै है। फिर सत्सङ्ग वृन्दावन वास आदि उपाय भी सहायक होंय। भगवान् श्रीहितहरिवंश चन्द्र के मुखोच्चारित होने से यमुनाष्टक, श्रीराधासुधानिधि और श्रीस्फुट वाणी एवं श्रीचतुराशीजी श्रीहित भगवान् की वाणी हैं और श्रीराधिकावतार श्रीसेवकजी की गिरा की भी प्राचीन पुण्यश्लोक महात्माओं के कथनानुसार :—

वेदगिरा सेवक गिरा वाणी संज्ञा दोय ।

वाणी संज्ञा है । अतः ये सम्मिलित ही लिखी-पढ़ी जायँ हैं ।

श्रीकृष्ण भगवान् के छटे दिन पूतना राक्षसी के मारने के आश्चर्य-चरित्र की तरह भगवान् श्रीहितजी ने भी छैः मास की अवस्था में श्रीराधासुधानिधि की रचना की, जैसा कि लिखा है :—

गतेतुषष्टमे मासि सुधासिंधुं प्रवर्त्य च ।

और षाण्मासिककृतश्रीमद्राधारससुधानिधिः ।

बाल्यादिकेऽपिकान्कान् स्वान् ज्योतिर्युग्मं न दत्तवान् ॥

श्रीहित स्वरूप का वर्णन शास्त्रकारों ने ऐसा किया है। यथा (श्रीराधावल्लभ श्रील हितरूपसखी तनु, गौरश्यामलयोश्चित्रं यत्संधि प्रेम तद्वपुः) :—

ज्योतिर्युग्मकसत्प्रेम साक्षाद्वंशी स्वरूपकः ।

या वंशी सा हितालिश्चतदह्मो व्यासनन्दनः ॥

शब्द ब्रह्म वपुर्वंशी सृष्टि हेत्वैकविग्रहः ।

त्रयीमूर्त्ति लयोत्पत्तिः कृद्वंश्ये च तदाकृतिः ॥

विस्तारभय से ज्यादा हम यहाँ नहीं लिख सकैं, श्रीसेवकजी महाराज के लिये भी महात्माओं का कथन है । सेवक की सरि को करै भजन सरोवर हंस :—

एवं—श्रीसेवकमहं वन्दे हरिवंशप्रकाशकम् ।

तथा—प्रथम श्रीसेवक पद सिर नाऊँ ।

और यहाँ तक कि :—

सेवकवाणी जो नहिं जानै, तिनकी बात रसिक नहिं मानै ॥

इन श्रीसेवकवाणी के पाठ से असंख्यजीव इस सुदृढ़ भव तक को भी गोपद पानीकी तरह पार कर गये ॥ रसिकों के नित्यपाठ को श्रीवाणीजी एवं दर्शनार्थ दर्शनीय श्रीप्रभुचित्र भी साथ में

"नामवाणी जहाँ श्यामश्यामा तहाँ" के अनुसार दोनों ही उपस्थित हैं, रसेच्छुकों को किस प्रकार शरणागत होकर किस तरह भजन करना चाहिए यह इसी "विज्ञान" में आगे संक्षिप्त में बतायेंगे। भजनाधिकारी होने और शरणागत आने के लिये महात्मा नेही श्रीनागरीदास कहते हैं :—

खरौई कठिन है भजन ढिग ढरिवौ।
तमकि सिंदूर मेलि माथे पर साहस सिद्ध सती कैसौ जरिवौ ॥
रण के चाय घायल ज्यौं घूमै मुरै न गरूर सूर कैसौ लरिवौ।
नागरीदास सुलभ जिन जानौ श्रीहरिवंश पन्थ पग धरिवौ ॥

रेखाङ्कित वाक्य विचारने से सहृदय मर्मी उसकी सुदुरूहता समझ सकेंगे। भजनाधिकारी होने पर भावनाधिकारी होने के लिये भावना क्रम का संक्षिप्त वर्णन भी एक पुस्तकाकार इन वाणीजी में लगा दिया गया है यथासाध्य इन वाणीजी को सर्वोपयोगी सुन्दर बनाने की चेष्टा की है, यदि संसार में किसी को भी इनसे लाभ हुआ, तो हम अपने परिश्रम को ही नहीं अपितु जीवन को भी कृतार्थ मानेंगे क्योंकि :—

जैसैं तैसैं जो कहै एक बार हरिवंश।
पायन माथौ दै रहै, क्षण-क्षण करै प्रशंस ॥

और—धरम्म सुनाय धरम्महि जाचत चाहौं कृपा जु धरम्मिनि की।

और यदि कहीं कुछ त्रुटि रह गई हों तो कृपा कर क्षमा कर समझाय दें।

श्रीसेवकजीकी आज्ञानुसार :—

जौरु तुम रसिक रस रीति के चाड़िले, तौरु मन देहु हरिवंश वानी।

और श्रीवाणीजी में प्रवेश तभी होगा, जब शास्त्रानुकूल आर्यजन पथोपदिष्ट भगवान् श्रीहित हरिवंशविदुवंशोद्भव गुरु शरणागति जाकर :—

त समर्पत प्राणधन गुरु सेवा तजि करहिं जे वानि यहै अधर्म यहै सब हानि।

इस आज्ञा को समझ कर पूर्ण विश्वास से सेवा भजन में पर रहै, तब सुख स्वाद पाकर निर्भय होकर कह सकै :—

श्रीहरिवंश के नाम प्रताप कौ लाभ लह्यो सु कह्यौ नहिं जाई।

था—हरिवंश भरोसे भये निडर सु नित गर्जत हरिवंश बल।

जो—हरिनाम जगत्र शिरोमणि वंश बिना कबहूँ नहिं लैहौं।

भी—जो हरिवंश तजौं, भजौं औरहि तौ मोहिं श्रीहरिवंश दुहाई।

— सुखद हरिवंश प्रभु क्यों न यांचौ।

से याचना करने को श्रीहित कुल महामहन्त गुरु शरण ना उचित है। हमारे यहाँ श्रीराधावल्लभीय निर्मोही अखाड़े के बड़े सिद्ध सन्त महन्त महात्मा विरक्त गद्दी पर सुशोभित होकर -देशान्तर में श्रीराधावल्लभ श्रीहरिवंश नाम की अनुराग यश ाका डंके की चोट फहरा कर धर्मोपदेश करते चले आ रहे हैं। एवं और जो रसिक सज्जन तन-मन हित पर न्यौछावर कर चुके कर रहे हैं एवं भविष्य में करेंगे, उन सब भाइयों की हम म्बार बलिहारी जायँ :—

जो हरिवंश कौ नाम सुनावैं, तन मन प्राण तासु बलिहारी।

कैसौइ पापी क्यों न होय हरिवंश नाम जो लेय।
अलक लडैती रीझि कैं महल खवासी देय॥

या नाम लेने वाले की बड़ाई कैसे की जाय। अस्तु—

गुरु मन्त्र लेने से पहिले विचार ले कि ये महाराज आचार्य ज अर्थात् भगवान् श्रीराधावल्लभलालजी के सान्निध्य में जाने हैं या नहीं। यह निश्चय होजाने पर अपने हृदय में अन्तरात्मा छे कि इनके ऊपर मेरा पूर्ण विश्वास प्रेम श्रद्धा है या नहीं य करने में भले ही कुछ विलम्ब हो, पर ये उपरोक्त सब बातें

पूर्ण दृढ़ता से निश्चय करके तभी सेवक हो, जिससे कि पीछे किसी भी कारण से गुरुद्रोही न होना पड़े और मानसिक अपराध भी कभी भूल कर भी न होने पावै। फिर धूप, दीप, नैवैद्य, पुष्प, चन्दन अक्षत, रोली, कपूर, श्रीफल, वस्त्र भेंट, पात्र, आभूषण आदि यथाशक्ति यथा सम्भव गुरु भेंट करै, गुरु चरणोदक लेकर हृदय शुद्ध कर कण्ठी-मन्त्रोपदेश की प्रार्थना कर मन्त्र ले, फिर उसे परम पवित्रता से स्नानादि कर ऊनी रेशमी वस्त्र धारण कर द्वादश तिलक लगा, बिना और सांसारिक वस्तु स्पर्श किये श्रीचित्र वाणीजी की सेवाकर श्रीगुरूपदिष्ट श्रीसिद्ध शरणागत मन्त्र का अन्तरङ्ग भजन करै, ध्यान रहै कि मन्त्र का उच्चारण कभी इस तरह भी न हो कि अपने कान या मक्खी मच्छरादि सुन सकें क्योंकि अपने हित सिद्धान्तानुसार मन्त्रोपदेश का "आचार्य मां विजानीयात्" के अनुसार आचार्य चरण को ही अधिकार है, अन्यथा करने से मन्त्रित्व शक्ति का अभाव हो जाने से अक्षर समूह मन्त्र वाक्य ही रह जाता है। आचार्य वंश के गुरु न भये तो अनधिकार-चेष्टा के कारण गुरु से मन्त्र शक्ति यों गई और शिष्य पर तो आवैगी ही कहाँ से। इस विषय को विज्ञ विद्वान् पूर्ण जानते हैं जिनकी इच्छा हो वह किसी योग्य विद्वान् से समझ सकते हैं। सेवक होने पर कम से कम प्रथम श्रेणी के अनुसार सेवक को दोनों समय सेवा, १०००० मन्त्र जाप, श्रीहितवाणी सेवकवाणीजी का पाठ और यथावकाश अन्य वाणी पाठ एवं नाम मन्त्र का प्रतिक्षण अनुशीलन जाप करना चाहिए। दूसरी श्रेणी के अनुसार सेवक को एक बार सेवा चतुराशी सेवकवाणीजी का पाठ और ५००० मन्त्र का जाप एवं यथावकाश वाणी अनुशीलन और नाम मन्त्र जाप करना चाहिए। तृतीय श्रेणी के अनुसार सहज सेवा तथा श्रीसेवकवाणीजी पाठ ५५० मन्त्र जाप और यथावकाश और वाणी पाठ एवं नाम मन्त्र जाप हर समय करना उचित है। कम से कम

ये क्रम है। ज्यादा करने वाले बड़भागियों की कौन प्रशंसा कर सके और प्रत्येक को इस दोहे का अर्थ सदा ध्यान में रखना चाहिये।

सबसों हित निष्काम मति, वृन्दावन विश्राम।
श्री राधावल्लभ लाल कौ, हृदय ध्यान मुख नाम॥

इस दोहे का सच्चे हृदय से आश्रय लेने पर कोई भी वस्तु शेष नहीं रह जाती और श्रीराधासुधानिधिजी की टीका बे नाम की अधूरी खंडित प्रायः हीं, उन्हें परम हित रस रसिक महात्मा श्रीनवेलीशरणजी एवं श्री प्रेमदासीजी ने प्रार्थना करके परमपूज्य श्री आचार्यचरण से सांगोपांग शुद्ध और पूर्ण कराई प्राचीन टीकाकार का नाम अज्ञात होने से पूर्ण कर्त्ता ही का नामोल्लेख किया है। अन्त में रसिक महानुभावों से विनय है कि कोई त्रुटि रह गई हो तो अपना अन्तरङ्ग सम्बन्ध मान क्षमा कर समझाय दें और—

"गुणान्गृह्णन्तु सुहृदो दोषांश्चिन्वंतु दुर्धियः।
भाग्यमेवात्र निकषः सामान्ये रत्नपंकयोः॥"

अर्थात् सहृदय सज्जन गुण ग्रहण करें और असहृदय निन्दक दोषों को बीनें। समुद्र से रत्न और कीच दोनों ही भाग्य के अनुसार मनुष्य प्राप्त करते हैं और जो :—

गुण में औगुण खोजहीं, जे जु प्रकृति के नीच।
ज्यों जु जुही के खेत में, सूकर खोजत कीच॥

हैं उनके लिए श्री जी हमारी यही भावना रक्खें कि "धनि धनि निन्दक हितू हमारे"—

जन्माष्टमी, सोम, ९३ वि०
ता० १०-८-३६ श्रीहिताब्द ४६४

गोस्वामी श्रीहित रूपलालजी
अधिकारी, वृन्दावन

चितवन तेरी पै लुब्यौ श्री राधावल्लभलाल ।
हित हरिवंश रिझवार सौं देख्यौ रूप रसाल ।।
देख्यौ रूप रसाल छक्यौ प्यारी के मद में ।
मन की गति भई पंगु प्रिया के पद में ।।
श्री रूपलाल हित आनंद वरसत या वृन्दावन ।
कीरति अलि तृण तोर प्रिया सौं जोरत चितवन ।।१।।

सेवक जू की रीति यह सेवक जू की गैल ।
बड़भागी कोऊ करत ईंहि मारग की सैल ।।
ईंहि मारग की सैल कृपा गुरु चरणन पावै ।
राखै हृदय विवेक जनित हरिवंश कहावै ।।
निरखै रासविलास प्रणतजन नौका खेवक ।
श्रीहित कीरतलाल व्यास सुत को निजु सेवक ।।२।।

श्री राधा पद कमल ध्यान हिय में धरै ।
रस सम्पति हित नाम सु अभिलाषा भरै ।।
जियत ही अखियन लखै हितरूप प्रियालाल कौ ।
बौराय मति मन धीरधरि सुख लहौ राधालाल कौ ।।
बानिक बन्यौं बड़भाग सौं यह कृपा तारानन्द की ।
अजहू हारै कहत शोभा (श्री) वृन्दावन चन्द की ।।
यमुना पुलिन जोरी अलिन संग त्रिविधि सौरभ लेत हैं ।
हँसत प्यारी छकत प्यारौ कीर्तिहित सुख देत हैं ।।३।।

श्रीहितवाणीजी

श्लोक पदादिका अकारादिक्रम सूची।

पद	पृष्ठ
अ	
अष्टक०	५
अहो सुरत०	१५
अगनित०	२०
अंक स्थितेऽपि०	२७
अंक भरे	२७
अन्योन्य०	२९
अमद प्रेमा०	३०
अतिस्नेहा०	३१
अलंविषय०	४७
अहो रसिकशे०	६२
अति अद्भुत	६६
अहो भुवनमो०	७७
अमर्यादोन्मी०	८३
अनुल्लिख्यानं०	८४
अङ्ग प्रत्यङ्गरिंगन्०	८८
अङ्ग अङ्ग सुख सिंधु०	८८
अलिंदे कालिंदी०	९०

पद	पृष्ठ
अद्य श्यामकिशोर०	९१
अनंग नवरंगिणी	९६
अति सुन्दर सुकुमार०	९७
अबला अति वृषभा०	१०१
अरुण नयन घूंमत०	१०५
अतिरस प्रेम के०	१११
अहो तेऽमीकुञ्जा०	१११
अदृष्ट्वा राधांके०	११५
अति चतुर शिरो०	११९
अहो लाल तुम०	१२१
अनंग जय मङ्गल०	१२१
अप्रेक्षे कृत निश्चयापि०	१२५
अकस्मात्कस्याश्चित्०	१२६
अनिर्वचनीय अति०	१२९
अति शुद्ध प्रेम विलास	१३३
अहो द्वंधी कर्तुं कृतिभि०	१३९
अनेन प्रीता मे दिशतु०	१३९
अद्भुतानंदलोभश्चेन्नम्ना	१४६

पद	पृष्ठ
अतिही अरुण तेरे नयन०	१६५
अधर अरुण तेरे कैसे०	१६६
अपनी बात मोसोंकहरी०	१७०
अति नागरि वृषभानु०	१६२

आ

पद	पृष्ठ
आधाय०	८
आननाननं०	६८
आगें आगें ला०	१०३
आशास्य दास्यं०	१०६
आनँद आज०	१५२
आज तू ग्वाल०	१५३
आरती मदन०	१५५
आरती कीजै०	१५५
आजु तौ युवति०	१६२
आज प्रभात०	१६३
आज निकुञ्ज०	१६४
आज नागरी कि०	१६६
आज मेरे कहैं०	१७०
आज देख ब्रज०	१७१
आज गोपाल०	१७५
आज नीकी ब०	१७६
आज अतिरा०	१८२
आज बनकी०	१८३
आज बनरा०	१८४
आज बन नी०	१८७
आवत श्रीवृ०	१६३
आज दोऊ दामि०	२००
आज सखी बन०	२०५
आज सँभारत०	२१४
आजव देखि०	२२४

इ

पद	पृष्ठ
इतो भयमितः०	६१
इक इक अक्षर०	८३
इलायची लोंग०	८४
इहैवाभूत्कुंजे०	११३
इनहीं नवल०	११३

उ

पद	पृष्ठ
उज्जृंभमाण०	११
उज्जागरं रसिक०	१३
उझली नवकैशोर	२७
उन्मीलन मिथुनानु०	३७
उन्मीलन्मुकुट०	६७
उपास्य चरणांबुजे०	६८
उन्मीलन्नवमल्लि०	८२
उदचिद्रोमांच प्रचय०	१०६
उच्छिष्टामृतभुक्तवैव०	१३०

पद	पृष्ठ
ए	
एक बार०	५३
एकं कांचन०	९२
ऐसी विचित्र जोरी०	११९
एकस्या रतिचौरएव०	१२७
ओ	
ओष्ठ प्रान्तोच्छलित०	१०२
क	
केनापि०	१०
कृष्णामृतं०	१२
कुञ्ज भवन०	१४
क्रीड़ासारः०	२२
क्रीड़ा सरवर०	२२
कुञ्जांतरे०	२८
करत हास०	२९
कृपापात्र निज०	३२
करत कछु बात०	३५
कदा वा खेलंतौ०	३८
कैशोराद्भुत माधुरी०	४६
कर्माणि श्रुतिबोधि०	४६
कोटि-कोटि नरकादि०	४७
कृष्णः पक्षो०	५०
कागी निशि०	५०
कांताढ्याश्चर्य०	५१
कलिंद गिरिनंदिनी०	५२
कालिंदी तटकुंज०	५३
करं ते पत्रालिं०	५९
करोरन शरद०	६०
कहो न परै किशोर०	६२
कदा सुमणिकिं०	६३
कालिंदी कूल कल्प०	७०
कलिंद गिरिनंदिनी०	७३
कालिंदी जलकन०	७३
कबहुँक सुन्दर पान०	७४
कदा वृन्दारण्ये०	७५
कानन बरषत०	७५
काचिद्वृदावन नव०	७९
किनहूँ के लेखेमहा०	८०
क्षरंतीव प्रत्यक्षर०	८३
कदा रासे प्रेमोन्मद०	८६
क्षणं मधुरगानतः०	९०
कबहूँ क्षण गाय०	९०
करे कमलमद्भुतं	९३
कदा रत्युन्मुक्तं०	९४
केलिश्रम शिथिल०	९५

पद	पृष्ठ
कि ब्रूमोऽन्यत्र०	९५
कोटीन्दुच्छवि०	९९
कोटि चन्द्रद्युति०	९९
कदा गोविंदाराधन०	९९
किं रे धूर्त प्रवर०	१०३
कदा वा राधायाः०	१०३
कदा वा प्रोद्दाम०	१०४
कालिंदी तट कुञ्जे०	१०७
कालिदी तटकुञ्ज०	१०७
कदा गायं गायं०	१०८
क्षणं सीत्कुर्वंती०	१०९
कामं तूलिकया०	११०
कालिंदी के कूल०	११५
किंवा नस्तैः०	११७
कहौ कहा प्रयोजन०	११७
कहा मधुर सारिका०	१२०
कहुँ तोतन कौं०	१२०
किनहूँ उरज गहै०	१२७
कांतिः कापिपरोज्ज्व०	१२९
क्रीड़न्मीनद्वयाक्ष्याः	१३१
कहा कहूं पिय नैननि०	१३७
कोमल कर कंज०	१३७
कदाचिद्गायंती०	१३९
क्वासौ राधानिगम०	१४१

पद	पृष्ठ
कहँ राधा जिनकी०	१४१
क्वाहं मूढ़मतिः क्व०	१४५
कहाँ मूढ़मति मैं०	१४५
कौन चतुर युवती०	१६४
कहा कहौं इन नैनन०	२०४
काहे कौं मान बढ़ावत०	२१७
ख	
खेलन्मुग्धाक्षि०	९३
खेलत श्रीवृषभानु०	१२२
खेलत रास रसिक०	१७२
खेलौ लाल चाहत०	१८९
खेलत रास दुलहिनी०	२०५
खंजनि मीन मृगज०	२१७
ग	
गत्वा कलिंद०	१७
गोकुग छैल०	२२
गौरांगे म्रदिमा०	४२
गोरे अङ्ग०	४२
गात्रे कोटित०	५५
गिनत वनैना०	८४
ग ोदधरि चूमि	११०

पद	पृष्ठ
गई बीनन फूलन	१११
गता दूरे गावो०	१२४
गईं दूर गैयां लला०	१२४
गाय गाय श्रति०	१३८

च

पद	पृष्ठ
चमत्कार०	९
चतुराई०	१४
चिंतामणिः०	१८
चंद्रास्ये हरिणा०	६५
चन्द्रमुखी मृग०	६५
चरण कमल०	७८
चन्द्र कौ मन्द०	८८
चलत्कुटिल०	१००
चलल्लीला०	११९
चकोरस्ते०	१३७
चकई०	१४९
चलौ०	१५४
चलहिरा०	१६८
चलहि कि०	१८८
चल सुं०	१९२

छ

पद	पृष्ठ
छाजत है छविनुकी०	१३६
छाँड़दै मानिनी मान०	२२४

ज

पद	पृष्ठ
जाकौं ब्रह्म०	८
जाकी छवि०	८
जिन पग०	२१
जावन की०	१२
जमुना तट०	१७
जाकी दृगन०	२४
जयति जयति०	३९
जाकी पग तल०	४१
जोई परावस्तु०	४४
जो कोई०	५८
जो मै नंदनँदन०	६४
जिन तुम पद०	७३
जिनके जगमगात०	७५
जय जय युगलकि०	७९
जे नहिं लोक वेद गति०	८०
जिन राधामाधव०	८१
जो पै सुच कनक०	८७
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु०	८९
जाग्रत्स्वप्न०	८९
जयति जयति वृन्दावन०	१०७
जिन प्रिय पग नख०	११०
जीतकैं अनङ्क जङ्ग०	१२१

पद	पृष्ठ
ज्योतिः पुंजद्वयमिदमहो०	१२३
जग उपहासन सौं०	१२८
जिहि कारण कमला०	१३०
जे जे श्रीवृन्दावन वासी०	१४३
जै जै जै वृषभानुदुलारी०	१४६
जोई जोई प्यारो करै०	१६१

झ

झीनी झीनी०	८६
झूलत दोऊ०	१८६

त

तःनः०	६
तस्या०	२४
तवपद०	३५
तन्नीयान्०	३६
तत्सौंदर्यं०	४७
तव अमित०	४६
तुम रसनिधि०	५१
तिन तुम्हरी०	५३
तांबूलं कचिद०	७४
भुवनमोह०	७७
त्वयि श्यामे नित्ये०	८१

पद	पृष्ठ
तजिकैं मर्याद०	८३
तुम सुन्दर वृष०	६१
तादृङ् मूर्तिर्ब्रज०	११८
तुम मानिनि पियसौं०	११८
तुम भूठन अमृत०	१३१
तुम भावती गोविंद०	१३६
तू बालक नहिं भरयौ०	१४६
तैं भाजन कृत०	१५०
तातें भैया मेरी सौंह०	१५०
तू रति रंगभरी०	१५१
तेरौ ईध्यान राधिका०	१५४
तनहि राख सत्संग में०	१५८
तेरे नयन करत दोऊ चा०	१७४
तेरे हित लेन आई बन तैं०	२०३

द

दिव्य प्रमोद०	८
दृष्ट्वैव०	१४
दूरादपास्य०	२१
दुकूलं बिभ्राणा०	३०
दृष्ट्या यत्र०	३६
दृग सैनन०	३६
दंपति हियरें०	३७
दूरे स्निग्धपरं०	४८

पद	पृष्ठ
दृशौ त्वयि०	५१
देवानामथभक्त०	५४
दौर दौर बहु०	७६
दुकूल मति कोमलं०	८५
दया ईशवृषभानु०	१०४
दूरे सृष्टयादि०	१२८
द्वादशचन्द्र०	१४८
दोउ जन भीजत०	१५७
देखत नव निकुंज०	१८०
देख सखी राधा पिय०	१९६
दान दै री नवल०	१९७
देखौ माई सुन्दरता०	१९८
देखौ माई अबला०	१९९

ध

पद	पृष्ठ
धम्मिल्लं०	३८
धर्माद्यर्थं०	४४
धर्मं अर्थं०	४४
ध्यायंस्तंशि०	१४०
ध्याऊं मोहन०	१४०

न

पद	पृष्ठ
नित्य राधा०	२
नव सकेत०	१६
निर्माय चारु०	२०
नव संकेत०	२१
नव संकेत०	२६
निज अंग उतरी०	३०
निज प्राणेश्वर्याः०	३२
नवकिशोर वय०	४६
निज कर तब उरजन०	५९
नव व्रज युवति०	६८
नव नव व्रज०	६८
नीचे कीने नैन०	६९
न जानीते लोकं०	८०
नदेवैर्ब्रह्माद्यै०	८१
नख कंठ कठोर०	८९
नासाग्रे नव मौक्तिकं०	१२५
नारद ब्रह्म शिवादि०	१३०
नीलेंदीवरवृन्द कांति०	१३३
नमो नमो यमुना महा०	१४३
ना जानौं छिन०	१४९
निकसि कुंज ठाडे भये०	१५८
नन्द के लाल हर्यो मन०	१६८
नैननि पर वारौं कोटिक०	१७४
नवलनागरि नवलनागर०	१९६
नयौ नेह नवरंग नयौ०	१९९

पद	पृष्ठ
नागरी निकुञ्ज ऐन किश०	२१९
नागरता की राशि कि०	२२३
निरखै युगलकिशोर भोर०	२२५
प	
प्रफुल्ल०	४
प्रफुलित०	४
परस जाहि०	८
परम चतुर०	९
परत पांय०	१०
पादांगुली०	१३
प्यारी श्रीराधा०	१९
पीतारुणच्छवि०	१९
पत्रावलीं रच०	२३
पूर्णानुरागरस०	२५
पूर्ण रस०	२५
प्रेमोल्लसद्रस०	२५
प्रेमोल्लास०	२५
प्यारी करत०	२७
पचदारु०	३१
प्रीति कामपि०	३३
प्रीति रीति जानत०	३३
परस्पर हास्य०	३४
पादस्पर्श रसोत्स०	३५

पद	पृष्ठ
प्रेमानन्द रसैक०	४०
प्रात. पीतपटं०	४३
पलटि गयौ०	४३
प्रेम्णः सन्०	४४
परम रसोज्ज्वल०	४५
प्यारी तवपद०	४८
प्यारी तुम अति०	४९
प्रिय बोलत०	६१
प्यारी चरण सरोज०	६५
प्यारी जू कें मुकुट०	६७
प्रेमोल्लासैकसीमा०	७२
प्रफुलित नील०	७४
प्रत्यंगोच्छलदु०	७४
प्रफुलित फूलन०	८३
प्रेम उमंग रस०	८६
प्रसृमर पट वासे०	८६
पूरित रंग अनंग	९६
प्रीतम नाम रूप०	९८
प्रेयः संग सुधा०	९८
प्रीतम कौ संग०	९८
पूर्ण प्रेमामृत रस०	१०१
पूरण प्रेम अमी०	१०१
प्रेमावेश परस्पर०	१०४
परस्परं प्रेम रसेनि०	१०६

पद	पृष्ठ
प्रीतिरिव मूर्तिमती०	१०७
प्यारी अधरामृत०	१०८
पुलकित तन अति०	१०९
पातं पातं रदकमल०	११२
पत्रालीं ललितां०	१२०
पत्रावली कपोल०	१२०
प्रथमहिं देखी राधिका०	१२३
प्यारी जू नै मोह्यौ०	१२५
प्रियांसे निक्षिप्तोत्०	१२७
प्रेमांमृतनिधि०	१३१
प्रेमांभोधिरसोल्ल०	१३२
प्रेमरस निधि तरुणाई०	१३३
प्यारी उर दोऊ कुचन०	१३४
पिय उर कौंस्तभमणी०	१३४
प्यारी राजत दूर वहु०	१४०
परमाद्भुत आनन्द कौ०	१४७

पद	पृष्ठ
प्यारे बोली भामिनी०	१६१
प्रात समय दोऊ रस०	१६२
प्रीति की रीति रंगीलौई०	१९०
प्रीति न काहू की कानि०	१९१
प्रथम यथामति प्रणऊं०	२०१
प्रथम श्रीसेवक पद शिर०	२२६

भ

पद	पृष्ठ
भूली०	३०
भ्रकुटी०	३७
भ्रमद्भृकुटि०	६६
भानुसुता०	१०७
भूयो भूयः०	११६
भो श्रीदामन्०	१२३

पद	पृष्ठ
भानु दषम्म०	१४८
भव जलनिधि०	२२५

म

पद	पृष्ठ
मान धन०	१०
मोर पक्ष०	१५
मंजुस्वभाव०	१८
मृदु स्वभाव०	१९
मोर पक्ष ल०	२०
मृदु कपोलन०	२३
महाप्रेमोन्मीलन्०	२९
मधुर स्वरन०	३४
मोह्यौ श्रावन०	४०
मुक्ता पंक्ति प्र०	५६
मुक्ताहल०	५६
मोहन मन अनु०	६१

पद	पृष्ठ
मणि किंकिणि०	६३
मल्ली दामनिद०	७१
मन्दीकृत्य मुकुं०	७८
मिथो भंगी कोटि०	७९
मत्कठे किं०	८९
मनु कंचन०	९२
मनु बिछुरन०	९४
मोमन अनतन०	९५
मिथः प्रेमावेशात्०	१०४
मदारुण विलो०	१०५
मदाघूर्णं नेत्रं०	१०५
मग्न प्रेमरस०	१०६
मोहनलाल०	११२
मूर्छितविविश	११६
मानिनि मन०	१२५
भालाश्रन्थनशि०	१३२
माला गुहि चन्दन०	१३२
महामणिवरस्रज०	१३४
मणि मोतिन०	१३५
मध्ये मध्ये०	१३५
मानुष कौ तन०	१५१
मोहनलाल के०	१५२
मैं जु मोहन सुन्यौं०	१५२

पद	पृष्ठ
मंजुल कल कुंज देश०	१६७
मोहनलाल के रसमाती०	१७३
मोहिनी मदन०	१७६
मधुरितु वृन्दा०	१७७
मोहन मदनत्रि०	२०६
मदन मथन घन०	२०९
मोहिनी मोहन०	२१३

य

पद	पृष्ठ
य एतद०	५
यस्याः कदापि०	६
यो ब्रह्मरुद्र०	७
यत्किंकरीषु०	९
यत्पाद पद्म०	११
यत्पादांबुरुहैक०	४१
यद्वृन्दावनमात्र	४३
यल्लक्ष्मी शुक०	४८
यदि स्नेहाद्राधे०	४९
यमुना के कूल०	५२
यस्यास्ते वत०	५२
यज्ञापःसक्त०	५३
यमुना तट०	५४
या वाराधयति०	५५
येषां प्रेक्षा०	५८

पद	पृष्ठ	पद	पृष्ठ
यद्गोविंदकथा०	६३	रस के सिंधु०	१६
यमुनातट कल्प०	७०	रस ओ लुन.ई०	१८
यस्यास्तत्सुकु०	७२	रसनिधि अगम०	२४
यस्यास्फूर्जत्पद०	७५	राधादास्यमपास्य०	४५
याता यातशतेन०	७६	राधा दास्य धरत०	४५
यदि कनक सरोजं०	८७	रहो गोष्टींश्रोतुं०	५६
यमुना के तट के०	६०	राजत वृन्दावन नव०	६०
यत्रान्नीलतकेली०	१०१	रूपं शारद०	६०
युगल नैन घूमत०	१०६	रहो दास्यं तस्याः०	६४
यस्याः प्रेम घनाकृतेः०	११०	राधापाद सरोजभक्ति०	६५
यूनोर्वीक्ष दरत्रपा०	१२२	राका चन्द्रो वराको०	६६
यन्नारदाजेशशुकैः०	१२६	राकानेकविचित्र०	७०
यद्राधापद किंकरी०	१४४	राधाकेलिनिकुंजवी०	७६
यत्र यत्र मम जन्म०	१४५	राधाकेलि निकुंज की०	७६
		राधानामसुधा रसं०	७७
यह जु एक मन बहुत०	२०३	राधिका नाम०	७८
र		राधा नामैव कार्यं ह्यनु०	७८
		राधिका के ाम ही सौं०	७८
रसैकसीम०	२	रोमालीमिहरात्मजा०	६७
रसकी है०	२	रोमावली ललित०	६७
रतन०	३	राधामाधवयोर्विचित्र०	६७
रससागर०	११	रसिक लाल मनमोहन०	१०२
राधाकराव०	१२	रस घन मोहन मूर्ति०	१०८
राधिका०	१३	रस समूह वर मूरति०	१०८

पद	पृष्ठ
राधे तव विंवअधर०	११४
राधापादारविंदोच्छलित०	११५
रसागाधे राधाहृदि०	१२६
राधा हिय रस०	१२६
राधा गलवांही दिये०	१२७
रसिकशिरोमणिलालरूप०	१४१
राधापददासी प्रथम०	१४४
राधा केलिकलासु०	१४४
रहौ कोऊ काहू मनहिं०	१५६
रसना कटौ जु अनरटौं०	१५८
राधा प्यारी तेरे नयन स०	१७५
राधे देख बन की बात०	१७८
रुचिर राजतवधू कानन०	२१२
रास में रसिक मोहन बने०	२१२
रहसि २ मोहन पियके०	२२०

ल

पद	पृष्ठ
लावण्यसार०	१७
लोग कुटम्म०	२१
लावण्यामृत०	३५
लक्ष्मी कोटिवि:०	३८
लक्ष्मी कोटि०	३९
लीलापांगतरं०	४१
लीला ललित०	४१
लिखंति भुज०	४६
लब्ध्वा दास्यं०	४६
लीलापांग तरंगितै०	५०
लीला पूर्व कटाक्ष०	५०
ललित अँगमांहिं०	५५
लज्जांत: पट मार०	५७
लाज आड पट०	५७
लावण्यं परमाद्भुतं०	६६
ललित भृकुटि०	६७
लुलित नवलवंगो०	८४
लसद्वदनपंकजा०	९:
लाल लख कंज०	९६
लाड़िली लड़ावत०	९९
लसद्दशन मौक्तिक०	१००
लाल मुख पान०	१०२
लक्ष्म्या पश्चन०	१३०
ललित सीमतविच०	१३६
लाल की रूप माधुरी०	१५७
लटकत फिरत युवति०	२१९

व

पद	पृष्ठ
व्रजाधिराज०	१
व्रजराजनन्दन०	१

पद	पृष्ठ
वृजेन्द्रसून०	२
विचित्र रत्न०	२
वहंतिकां०	३
व्रह्मेश्वरादि०	७
वृन्दानि सर्व०	१०
वृन्दावनेश्वरि०	११
वृन्दावन रानी०	१२
वैदग्ध्यसिंधु०	१४
वृन्दाटवी प्रकट०	२१
वेणु: करान्निपतित:०	२४
वीणां करे मधु०	२८
वीन मधुमती०	२८
विचिन्वन्ती०	३१
विपंचित सुपंचमं०	३३
वृन्दारण्यनिकुंज०	३४
वृन्दारण्य निकुंज में०	३५
व्रज नगरी की गलियन में०	३८
वृन्दावन प्रेमामृत सागर०	४०
वृन्दारण्यनिकुंजसीमनि०	४०
वेद श्रुतिन कहे०	४७
विहारिन सुन्दरताकी०	४८
व्रज की मणिमोहन०	५५
बलान्नीत्वा तल्पं०	५८
वत रसियन शिर मुकुट०	५९
वृन्दाटव्यां नवनवरसा०	६०
विचित्रवरभूषणोज्ज्वल०	६२
व्रज नृप श्रीवृषभानु०	६४
वृन्दारण्यनिकुंजसीमसु०	७१
वृन्दाबन कुंजन सदा०	७१
वन फूलन वैनी गुही०	७२
व्याकोशेन्दीश्वर विक०	७३
व्रह्मानन्दैकवादा: कति०	८०
विचित्ररतिविक्रम०	९२
वहु विधि करत विहार०	९३
वर कर कमल फिरावैं०	९३
विच्छेदाभासमाना दहह०	९४
वोई देखौ वोई देखौ०	११२
व्याकोशेंदी वराष्टापद०	११९
विनहिं काज बिन बात०	१२६
वीच वीच फूल लगे०	१३५
विचित्राभिभंगी०	१३६
बिलसी निशि पी संग०	१३९
वृन्दारण्ये नव रसकला०	१४२
वृन्दावन नवरसकला०	१४२
वहंती राधाया: कुच०	१४३

पद	पृष्ठ
वृषभानुनन्दिनी राजतहैं०	१५३
बनी श्रीराधामोहनकी०	१६६
ब्रज नव तरुणि कदम्ब०	१७८
वन की कुञ्जनि कुंजन०	१८५
वेगि उठ चल गहरु०	१८६
बैठे लाल निकुञ्ज भवन०	१९०
विपिन घन कुंजरति०	१९४
वनकी लीला लालहिभावै	१९४
बनी वृषभानुनन्दिनी०	१९५
वेणु माई बाजै वंशीवट०	२०८
विहरत दोऊ प्रीतमकुंज०	२०९
वल्लवी सु कनक वल्लरी०	२२१
वृषभाबुनन्दिनी मधुर०	२२२

श्री

पद	पृष्ठ
श्रीगुरु०	६
श्रीराधापद०	७
श्रीराधिके सुरत०	१५
श्रीराधिके सुरत०	१५
श्रीराधिकां निज०	१९
श्रीराधिके तव०	२६
श्रीबृन्दावन नवलत०	७९
श्रीमद्राधेत्वमथ०	९१
श्रीगोपेन्द्रकुमार०	१०२
श्रमित विशद विहार	१०४
श्रीमद्विंबाधरे ते०	११३
श्रीगोवर्द्धन एक एव०	१२१
श्रीगोविंद ब्रजवरवधू०	१३९
श्रीराधारसिकेन्द्ररूप	१४१
श्रीवृन्दावनधामपावन०	१४६
श्रीराधेश्रुतिभिर्बुधै:०	१४६
श्रीसकल गुणसंपन्न०	१५९
श्रीवृषभानुनन्दिनी०	१५९

श

पद	पृष्ठ
शिवि विधि०	४
शास्त्र श्रौ०	४
श्यामेति०	२३
शंख चक्रादिक०	४६
श्यामे चाटुरुता०	६१
श्यामा मंडलमौलि०	६७
शरद के चन्द्रमा०	६९
शरद विचित्र०	७०
शुद्ध प्रेमैक लीला०	७०
शुद्ध प्रेम लीला०	७१
श्लोकान्प्रेष्ठ०	८८
शुचि दशन दम०	१००
श्याम अलक०	१०७
श्यामाश्यामेत्य०	११८

पद	पृष्ठ
श्यामश्याम हा०	११८
शुद्ध प्रेमविलास०	१३३
श्यामश्यामेत्यमृत०	१३८
श्याम श्याम घन०	१३८
श्याम संग राधिकारास०	२१५

ष

षट् पद विभास	२२६

स

सुरेन्द्र०	३
समस्म०	४
सुकुमारी०	१३
सुरत सरिता०	१५
सत्प्रेमसिंधु०	१६
संकेत कुंज०	१६
सत्प्रेमराशि०	१७
सुन्दर प्रेम०	१७
सरनागत ताकी०	१८
संकेत कुंज मनु०	२०
सांद्रानुराग०	२१
सुन्दर अंग०	२२
संकेत कुंजनिलये०	२५
सरस सुगन्धित०	२६

पद	पृष्ठ
सद्गंध माल्य०	२६
संलापमुच्छल०	२७
सरस्यौ अति०	२९
सहास वर मोहना०	३४
सा भ्रू नर्तन०	३६
सुन्दर सुभग०	३८
सब दूर रहैं०	४२
सुघर मणि०	५१
सुरगण भक्त०	५४
स्निग्धाकुंचित०	५६
सचिक्कन श्याम०	५६
सा लावण्यचम०	५७
सोई लावण्य०	५८
सखियन नैरचि०	६२
सीमा प्रेमोल्लासकी०	७२
सुन्दरताई रूप औ०	७५
सदानन्दं वृन्दावन०	८२
सदा आनन्द रसरूप०	८२
सौंदर्यामृतराशिर०	८५
सुन्दरता पीयूषकी०	८५
सुधाकरमुधा०	८८
सांझ समय नवतरुन०	९१
सुरतनदी सुन्दर०	९३
सिसक सिसक रहजात०	१०९

पद	पृष्ठ
सांद्रप्रेमरसौघवर्षिणि०	१११
स्वेदापूर: कुसुमचय०	१११
सांद्रानन्दोन्मदरस०	११४
सघन आनन्द अति०	११४
सुन पंकज लोचन०	११६
सुस्वादु सरस तुंदिल०	१२८
सुन्दर रस परिपूरित०	१२८
संगत्यापि महोत्सवेन	१३४
स्पृष्ट्वा स्पृष्ट्वामृदु०	१३७
सदा गायं गायं०	१३८
सद्योगींद्रसुदृश्य०	१४३
स्वर्ग नर्क अरु लोक०	१४५
सारस सर विछुरंत०	१५०
सत्र सौं हित०	१५८
सुनि मेरो बचन छबीलो	१७१
सुन्दर पुनिन सुभग०	२१५
सुघङ्ग नाचत नवल०	२२०

ह

पद	पृष्ठ
हरिजूकी०	३
हे श्याम सुन्दर०	२३
होत रसोत्सव०	२८
हरि हरि कहि०	३२
हठ करि मोहनलाल०	५८
हे श्यामा हे नित्यप्रिये०	८२
होरी खेलत रास में०	८७
हे श्रीदाम सुबल हे०	१२३
हा कालिंदित्वयि०	१४२
हो यमुनामम जीवन०	१४२
हरि रसना राधा राधा०	१५६
हौं बलि जाऊँ नागरी०	२०१
हौं जु कहय इक बात०	२१८

श्रीहितसेवक वाणीजी की प्रकरण सूची।

१—श्रीहित यशविलास प्रथम प्रकरण	...	२२७
२—श्रीहरिवंश रसविलास द्वितीय प्रकरण	...	२३७
३—श्रीहरिवंश नाम प्रताप तृतीय प्रकरण	...	२४२
४—श्रीहितवाणी प्रताप चतुर्थ प्रकरण	...	२४९
५—श्रीहितइष्टाराधन पंचम प्रकरण	...	२५८
६—श्रीहित धर्मिन कृत षष्ठ प्रकरण	...	२६२
७—श्रीहित रसरीति सप्तम प्रकरण	...	२६६
८—श्रीहित अनन्यटेक अष्टम प्रकरण	...	२७०
९—श्रीहित अकृपाकृपा नवम प्रकरण	...	२७६
१०—श्रीहित भक्त भजन दशम प्रकरण	...	२८१
११—श्रीहित ध्यान गुण प्रकाश एकादश प्रकरण	..	२८८
१२—श्रीहित मङ्गलगान द्वादश प्रकरण	...	२९३
१३—श्रीहितपाके धर्मी धर्म त्रयोदश प्रकरण	...	२९५
१४—श्रीहित काचे धर्मी धर्मं चतुर्थ प्रकरण	...	३००
१५—श्रीहित अलभ्यलाभ पंचदश प्रकरण	...	३०८
१६—श्रीहित अबोलनौ सिद्धान्त नाम षोडश प्रकरण		३१०

१७—फलस्तुति छप्पय	...	३११
१८—श्रीसेवक जू कौ भजनाष्टक	...	३१४
१९—श्रीसेवक उत्कर्ष	...	३१७
२०—श्रीअष्टयाम सेवाविधिः	..	३१९
२१—श्रीराधावल्लभ जू कौ अष्ट प्रहर सेवाविलास	..	३३३
२२—नित्य नैमित्तिक उत्सव बोध	...	३३९
२३—श्रीहित हरिवंशचन्द्र महाप्रभू की बधाई	...	३५७
२४—हितरूप सुयश	...	३५८
२५—द्वितीय हितरूप चरित्र बेली	...	३५९

२६—हितरूप मिलन की आस ... ३३६
२७—श्रीहित हरिवंश महाप्रभू की गजल बधाई ... ३६७
पद ... ३६६
२८—श्रीहित किशोरीलालजी गोस्वामी की मंगल बधाई ३७०
२६—श्रीहित रूपलालजी गोस्वामी की मंगल बधाई ३७३
३०—श्रीभोलानाथ जी कृत कुण्डलिया ... ३७६
३१—श्रीहित सुकुमारीलालजी गोस्वामी की मंगल बधाई ३७७
३२—श्रीहित भजनलालजी गोस्वामी की मंगल बधाई ३८०
३३—श्रीहित कीर्तिलालजी गोस्वामी की मंगल बधाई ३८२
३४—श्रीराधा सुधानिधिजी कौ समय प्रबन्ध ... ३८७
३५—श्रीमच्चतुराशीजी कौ समय प्रबन्ध ... ३६४

* फल-स्तुति *

हित कौ मिहों स्वरूप सहल हीयेमें आवै।
हित की नित नव केलि हेलि सँग दृग दरपावै॥
श्रीहित की रस रीतिं प्रीति पुनि हित की पावै।
श्रीहित महली टहल नवल करि जुगल रिझावै॥

हित गिरा कृपा बल सहज सो,हित रास रंगरस राचि है।
बलि अलिकिशोरिहितरूप जो,नित श्रीहितवाणी वाँचि है॥

श्रीहित रूप पदपद्म परांग-पानकर अनन्य मधुकर—

किशोरीशरण।

* श्रीहित *

श्रीराधासुधानिधिस्तोत्रम्

आचार्य महाप्रभु श्रीहितहरिवंशचन्द्र गोस्वामिना विरचितम्

निभृत निकुंज हित रस सुरति केलि कदम्ब विलासी
श्री राधाबल्लभलालजी महाराज
वृन्दाबनधाम.

।। श्रीहित राधावल्लभो जयति ।।

।। श्रीहित हरिवंशचन्द्रवंशो जयति ।।

।। अधिकारी गुरु श्रीहित किशोरीलालो विजयते ।।

।। अधिकारी गुरु श्रीहित रूपलालो विजयते ।।

श्रीहित वाणीजी

श्रीआचार्य महाप्रभु श्रीहितहरिवंशचन्द्रजी कृत–

१–श्रीयमुनाष्टक ।

व्रजाधिराजनंदनाम्बुदाभगात्रचंदना–
नुलेपगंधवाहिनीं भवाब्धिवीजदाहिनीम् ।
जगत्त्रये यशस्विनीं लसत्सुधापयस्विनीं–
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरंतमोहभंजिनीम् ॥१॥

कवित्त—व्रजराज-नंदन कौ मेघ श्याम गात तामें चन्दन की खौर चित्र रचना रचावै है। सोई अनुलेप अंगराग कौ प्रवाह वहै भवसिन्धु बीज निःसेश कै जरावै है।। तीन लोक माँझ जाके जस कौ वितान तन्यौ सुधा सम जल क्रीड़ा जुगल करावै है। ता कलिंदनंदिनी कौं भजौं हितचन्द जो दुरंत मोह भेद वन सम्पति लखावै है ॥१॥

रसैकसीमराधिकापदाब्जभक्तिसाधिकां--
तदंगरागपिंजरप्रभातिपुञ्जमंजुलाम् ।
स्वरोचिषातिशोभितां कृतां जनाधिगंजनां--
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरंतमोहभंजिनीम् ॥२॥

कवित्त—रस की है एक सींव सदा राधाप्यारीजू ताके चरनन की सुभक्ति कौं सधावै है। प्रिया अंगराग सौं विचित्रन प्रभा कौं धरैं अति मंजु पुञ्ज छवि नव सरसावै है ॥ अपनी सुकांति करि सोभित सरस रूप अंजन कौ मंजन करत छवि छावै है। ता कलिंद-नंदिनी कौं भजौं हितचन्दजी दुरंत मोह भेद वन सम्पति लखावै है ॥२॥

व्रजेन्द्रसूनुराधिकाहृदिप्रपूर्यमाणयो—
महारसाब्धिपूरयोरिवातितीव्रवेगतः ।
बहिःसमुच्छलन्नवप्रवाहरूपिणीमहं—
भजे कलिन्दनंदिनीं दुरंतमोहभंजिनीम् ॥३॥

कवित्त—नित्य राधावल्लभ के हिय माँझ पूरि रह्यौ महारस-सागर सदा ही उमगावै है। ताही कौ जो पूर वह सबनि कौं दूर ताकौ अति तीव्र वेगि दृग दरसावै है ॥ बाहर कौं उछल कै नवल प्रवाह रूप अति ही अनूप परिकर कौं रिझावै है ॥ ता कलिंद-नंदिनी कौं भजौं हितचन्द जो दुरंत मोह भेद वन सम्पति लखावै है ॥ ३ ॥

विचित्ररत्नबद्धसत्तटद्वयश्रियोज्वलां--
विचित्रहंससारसाद्यनन्तपक्षिसंकुलाम् ।

विचित्रमीनमेखलां कृतातिदीनपालितां—
भजे कलिन्दनंदिनीं दुरंतमोहभंजिनीम् ॥४॥

कवित्त—रतन जटित दोऊ तटनि की सोभा अति उज्वल अनन्त सौ सरस छवि छावै है। चित्र औ विचित्र हंस सारस कौं आदि लै अनेक पंछी डोलैं तिन्हें मोद उपजावै है ॥ नाना भाँति मीन ते तौ करत कलोल जामें दीननि के पालनि कौ विरद बढ़ावै है। ता कलिंदनंदिनी कौं भजौं हितचन्द जो दुरंत मोह भेद वन सम्पति लखावै है ॥ ४ ॥

वहंतिकां श्रियांहरेर्मु दा कृपास्वरूपिणीं—
विशुद्धभक्तिमुज्वलां परेरसात्मिकां विदुः।
सुधाश्रुतित्वलौकिकीं परेशवर्णरूपिणीं—
भजेकलिन्दनन्दिनीं दुरंतमोह भंजिनीम् ॥५॥

कवित्त—हरिजू की शोभा ताकौं वहत सदाही रहें अति ही कृपा स्वरूप कहत न आवै है। भक्ति जो विशुद्ध सोई उज्वल महा है श्रेष्ठ रस ही की मूरति जानि हिय सुख पावै है ॥ नित ही अलौकिक सुधाकौं श्रवै प्रेम द्रवै श्याम की वरन धरैं छवि दरसावै है। ता कलिदनन्दिनी कौं भजौं हितचन्द जो दुरंत मोह भेद वन सम्पति लखावै है ॥ ५ ॥

सुरेन्द्रवृन्दवन्दितां रसादधिष्ठितेवने—
सदोपलब्धमाधवाद्भुतैकसद्रशोन्मदाम्।
अतीवविह्वलामिवचलत्तरङ्गदोर्लतां—
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरंतमोहभंजिनीम् ॥६॥

कवित्त—शिव विधि इन्द्र जाकौं वन्दन करत सदा सो तौ रस रूप धाम ही में सचु पावै है। माधव सों पायौ जो अद्भुत एक रस तासों सदा उन्मत्त रह छकनि छकावै है॥ अतिसै विह्वल ह्वै उछलें तरंग मानौं ऊँची भुज लता करि मिलन कौं आवै है। ता कलिंद-नन्दिनी कौं भजौं हितचन्द जो दुरंतमोह भेद वन सम्पति लखावै है॥ ६॥

प्रफुल्लपंकजाननां लसन्नवोत्पलेक्षणां—
रथाङ्गनामयुग्मकस्तनीमुदारहंसिकाम्।
नितंवचारुरोधसां हरेः प्रियां रसोज्वलां—
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरंतमोहभंजिनीम्॥७॥

कवित्त—प्रफुलित कंज सो वदन मानों सोभा देन उतपल नैन सौं कटाक्ष बरसावै है। चकवा औ चकवी यों राजत हैं कुच दोऊ हंस बोलें सोई छुद्र घंटिका बजावै है॥ सुन्दर जो विवि तट तेई हैं नितंव पिय प्यारी कौ उज्जल रस रूप दरसावै है। ता कलिंद-नंदिनी कौं भजौं हितचन्द जो दुरंत मोह भेद वन सम्पति लखावै है॥ ७॥

समस्तवेदमस्तकैरगम्य वैभवां सदा—
महामुनींद्रनारदादिभिः सदैव भाविताम्।
अतुल्यपामरैरपि श्रितां पुमर्थशारदां—
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरंतमोहभंजिनीम्॥८॥

कवित्त—शास्त्र औ पुरान वेद उपनिषदादि जाके वैभव कौं गावैं भेद उर में न आवै है। महा जे मुनींद्र और नारदादि

भक्त सदा हिय माँझ ध्यावत पै मन न अघावै है ।। पामर अतुल्य जाको आश्रय करत मात्र सब पुरुषार्थ ही के सार कों पावै है ।। ता कलिंदनंदिनी कौं भजौं हितचन्द जो दुरंत मोह भेद वन सम्पति लखावै है ।। ८ ।।

य एतदष्टकं बुधस्त्रिकालमादृतः पठेत्—
कलिंदनंदिनीं हृदा विचिंत्य विश्ववंदिताम् ।
इहैव राधिकापतेः पदाब्जभक्तिमुत्तमा—
मवाप्य स ध्रुवं भवेत्परत्र तत्प्रियानुगः ।।९।।

कवित्त—अष्टक पुनीत जो त्रिकाल माहिं पाठ करै याकौं अति आनन्द सौं विशुद्ध ह्वै कै तन में । विश्व जाहि वंदै ता कलिदनन्दिनी कौ हिय ध्यान धरै अधिक औ मुदित होइ मन में ।। याही लोक माँझ राधापति की पदाब्ज भक्ति उत्तम पाय निश्चै करि बसै जाय जन में । फेर पिय प्यारी जू की अनुचरी होइ चन्द हित जुत सुखी रहै अलिगन वन में ।। ९ ।।

इति श्रीमदाचार्य महाप्रभु जय श्रीहितहरिवंश
चन्द्रवर जू कृतं यमुनाष्टकम् ।

॥ श्रीहित राधावल्लभो जयति ॥

॥ श्रीहित हरिवंशचन्द्रवंशो विजयते ॥

॥ अधिकारी गुरु श्रीहित किशोरीलालो विजयते ॥

॥ अधिकारी गुरु श्रीहित रूपलालो विजयते ॥

श्रीमदाचार्य महाप्रभु श्रीहितहरिवंशचन्द्र गोस्वामि कृत

* श्रीहित राधासुधानिधि *

* वसन्ततिलकवृत्तम् *

[मङ्गला समय]

यस्याः कदापि वसनाञ्चलखेलनोत्थ--

धन्यातिधन्यपवनेनकृतार्थमानी ।

योगींद्रदुर्गमगतिर्मधुसूदनोऽपि—

तस्या नमोस्तु वृषभानुभुवोदिशेऽपि ॥१॥

श्रीमद्राधावल्लभीय प्रधानपीठाधिपति आचार्य गोस्वामी
श्रीहित किशोरीलालजी टीकैत कृत पूरित भावार्थ
हितहार्द प्रकाशनी टीका प्रारंभ—

मंगलाचरण

श्री गुरु चरण सरोज रज सिर धर करौं प्रणाम । मंगल-मय सुख दान अति सब विधि पूरण काम ॥ १ ॥ वंदौं श्रीगुरु चरन रज सब विधि मंगल रूप । अष्ट सिद्धि नव निधि सदा दाता सुखद सरूप ॥ २ ॥ पद ॥ जै जै जै श्रीहित गुरु प्यारे । परम कृपालु उदार दयानिधि जीवन प्राण हमारे ॥ अति आनन्द रूप गुन आगर रसिकनके दृग तारे । दीजै लाल किशोरी पद रुचि माँगौं गोद पसारे ॥(दोहा) रसिक नृपति हरिवंशहित पद पंकज उरधार । ललित किशोरीलाल हित गाऊँ कछु रससार । श्रीराधा रस सुधानिधि प्रगटित मुख हरिवंश ॥ तासु भाव भाषा कहौं पद रचि परम प्रशंस ॥ ५ ॥

दोहा—केलि करत सहजहिं उड़्यौ, प्यारी अंचल छोर।
पवन बढ़ी अँग-अँग लगी, नागर नवलकिशोर ॥ १ ॥
अति अगम्य योगीन्द्रगन, जा मोहन गति गैल।
धनि धनि कहि ता पवन सों, भाग सराहत छैल ॥ २ ॥
सो प्यारी छवि-मधु छक्यौ, रहत मत्त घनश्याम।
ता वृषभानु दुलारि कौं, मेरी सदा प्रणाम ॥ ३ ॥
वृन्दावन जमुना निकट, जा दिशि प्यारी वास।
ता दिश कौं पुनि-पुनि करौं, नमस्कार सुखरास ॥ ४ ॥

(मंगला समय)

ब्रह्मेश्वरादिसुदुरूहपदारविंद—
श्रीमत्परागपरमाद्भुतवैभवायाः।
सर्वार्थसाररसवर्षिकृपार्द्रदृष्टे—
स्तस्या नमोऽस्तु वृषभानुभुवो महिम्ने ॥२॥

कुण्डलिया-श्रीराधा पद-कंज कौ, शुचि पराग छवि धाम।
परमाद्भुत वैभव सहित, सोभा जुत अभिराम ॥
सोभा जुत अभिराम, सदा ब्रह्मादिक दुसकर।
सर्व अर्थ रस सार, भक्त रस श्रवत निरन्तर ॥
करुनाभीनी दृष्टि, कृपानिधि रूप अगाधा।
वन्दौं वर वृषभानुसुता, महिमा श्रीराधा ॥ २ ॥

(चरण स्मरण)

यो ब्रह्मरुद्रशुकनारदभीष्ममुख्यै—
रालक्षितो न सहसा पुरुषस्य तस्य।
सद्यो वशीकरणचूर्णमनन्तशक्तिं—
तं राधिकाचरणरेणुमनुस्मरामि ॥३॥

कवित्त—जाकों ब्रह्मरुद्र शुक भीषम नारदादि मुख्य आदि सुर नर मुनि हारैं ध्यान धार धार। बड़े-बड़े यत्न सों समाधिहू लगावें तऊ सहसा न पावैं लखि जाकी रूप गति अपार॥ ताही महापुरुष के तुरत वसी करिवे कौ चूरन अनंत कोटि शक्तिन कौ श्रवै धार। ऐसी श्रीराधा पग रैन सुखदान सदा सुमरत हौं सुमरत हौं सुमरत हौं बार-बार॥ ३॥

(मंगला समय)

आधाय मूर्द्धनि यदापुरुदारगोप्यः—
काम्यं पदं प्रियगुणैरपि पिच्छमौलेः।
भावोत्सवेन भजतां रस कामधेनुं—
तं राधिकाचरणरेणुमहं स्मरामि॥ ४॥

सोरठा–परसि जाहि निज भाल, सीस धारि ब्रज सुन्दरिन।
विन प्रयास ततकाल, पायौ सुन्दर श्याम घन॥
कामधेनु रस दैन, भावोत्सव जुत भावुकन।
सो राधा पग रैन, सुखद सदा सुमिरन करौं॥ ४॥

(प्रियास्वरूप वर्णन)

दिव्यप्रमोदरससारनिजाङ्गसंग—
पीयूषवीचिनिचयैरभिषेचयंती।
कंदर्पकोटिशरमूर्छितनंदसूनु—
संजीविनी जयति कापि निकुञ्जदेवी॥५॥

कुंडलिया–जाकी छवि लखि छैल उर, लग्यौ पंच सर मार।
मूर्छित ह्वै अवनी गिरयौ, बिसरी अङ्ग सम्हार॥

विसरी अङ्ग सम्हार, तबहिं अकुलाय किशोरी ।
लपकि अङ्क भरि लियौ, लाल जीवन धन गोरी ॥
प्रमुदित अँग रस सार, श्रवन वर बूंद सुधा की ।
जै हो ललित निकुंज ईश देवी कोऊ जाकी ॥५॥

(वदन स्मरण)

तन्नः प्रतिक्षणचमत्कृतचारुलीला—
लावण्यमोहनमहामधुराङ्गभङ्गि ।
राधाननं हि मधुराङ्गकलानिधान—
माविर्भविष्यति कदा रससिंधुसारम् ॥६॥

दोहा—चमत्कार दिन-दिन सरस लीलामय अवतार ।
चित चोरत लावन्य जुत, श्रवत माधुरी धार ॥
अङ्ग अङ्ग रस निधि मधुर, ताकौ सार अनूप ।
कब देखौं इन द्रगन अस, रुचिर राधिका रूप ॥६॥

(मंगला समय)

यत्किंकरीषु बहुशः खलु काकुवाणी—
नित्यं परस्य पुरुषस्य शिखंडमौलेः ।
तस्याः कदा रसनिधेर्वृषभानुजाया—
स्तत्केलिकुञ्जभवनाङ्गणमार्जनीस्याम् ॥७॥

माँझ--परम चतुर नागर मनमोहन मोर पक्ष सिर धारै ।
प्राण पिया सहचरि गन प्रति नित वचन अधीन उचारैं ॥
सो रससिन्धु किशोरी के कब केलि निकुंज मँझारै ।
झारौं लियैं सोहनी कब में प्रमुदित साँझ सकारैं ॥ ७ ॥

(वृन्दावन महिमा)

वृन्दानि सर्वमहतामपहाय दूरा—
दुवृन्दाटवीमनुसर प्रणयेन चेतः ।
सत्तारणीकृतसुभावसुधारसौघं—
राधाभिधानमिहदिव्यनिधानमस्ति ॥८॥

कवित्त—मान धन धर्म कुल कान की बड़ाइन के जेतिक समूह तिन्हें दूरि हीसौं त्यागै किन । दीन-हीन छीन अति आयु के आधीन जान मेरी सीख मान तज आन खटरागै किन ॥ तारिवे की बान जिहि सहज सुभाव सोई श्रवत सुधा की धार तामें प्रेम पागै किन । राधा नाम रतन अमोल कौ डवा है ऐसौ वृन्दावन तामें मेरे मन अनुरागै किन ॥ ८ ॥

(शय्या समय)

केनापि नागरवरेण पदे निपत्य—
संप्रार्थितैकपरिरम्भरसोत्सवायाः ।
सभ्रूविभंगमतिरङ्गनिधेः कदा ते—
श्री राधिके नहि नहीति गिरः शृणोमि ॥९॥

दोहा—परत पाँय नागर रसिक, करि-करि विनय अपार ।
कसि मिलिये टुक कण्ठ सौं, प्यारी प्राण अधार ॥
तुम सुनिकै नहि-नहिं कहौ, रसनिधि ग्रीव ढुराय ।
सुनत श्रवन श्रीमुख वचन, कब मम हियौ सिराय ॥९॥

(प्रार्थना)

यत्पादपद्मनखचन्द्रमणिच्छटाया–
विस्फूर्जितं किमपि गोपवधूष्वदर्शि ।
पूर्णानुरागरससागरसारमूर्तिः–
सा राधिका मयि कदापि कृपां करोतु ॥१०॥

चौपाई–जिन पग नख मणि छटा जुन्हाई ।
कछु वृज जुवतिन मँह लखि पाई ॥
सो अनुराग सार वपु गोरी ।
कृपा करें कब नवलकिशोरी ॥१०॥

(प्रार्थना)

उज्जृम्भमाणरसवारिनिधेस्तरंगै–
रंगैरिव प्रणयलोलविलोचनायाः ।
तस्याः कदा नु भविता मयि पुण्यदृष्टि–
वृन्दाटवीनवनिकुञ्जगृहाधिदेव्याः ॥११॥

सोरठा–रस सागर अँग-अँग, नवल छवीली बाल के ।
सोभा ललित तरंग, छिन-छिन प्रति अति ही सरस ॥
नेह भरे चितचोर, चपल नैन मनमोहने ।
कब दृग करुना कोर, हेरैं बन कुंजेस्वरी ॥११॥

(चरण स्मरण)

वृन्दावनेश्वरि तवैवपदारविन्दं–
प्रेमामृतैकमकरन्दरसौघपूर्णम् ।
हृद्यर्पितं मधुपतेः स्मरतापमुग्रं–
निर्वापयत्परमशीतलमाश्रयामि ॥१२॥

सवैया–वृन्दावन रानी तव पद-पंकज प्रेम सुधा मकरंद भरे ।
मनमोहन के हिय माँहि बसे वर मनमथ ताप हरे सिगरे॥
सोई सीतल चरन सरोज सदा आश्रित ह्वै अंतस माँहि धरे।
रंग भीने मुन्दर रूप पगे मृदु नैनन सौं छिनहूँ न टरे ॥१२॥

(वृन्दावन महिमा)

राधाकरावचितपल्लववल्लरीके–
राधापदांकविलसन्मधुरस्थलीके ।
राधायशोमुखरमत्तखगावलीके–
राधाविहारविपिने रमतां मनो मे ॥१३॥

बरव–जा वनकी द्रुम वेली पल्लव पात ।
रचि-रचि प्रिया सँवारी कोमल गात ॥
देखत जहँ तहँ अवनी हिय हुलसाय ।
प्रिय पद तल कर अंकित रहि चमकाय ॥
पतरी पतरी डारन चिरियन पाँत ।
राधा जस मिल गावत अति रस माँत ॥
सो वन नवलकिशोरी विहरन ठाँउ ।
सदा बसै मन मेरे बलि बलि जाँउ ॥१३॥

(श्रृंगार समय)

कृष्णामृतं चल विगाढुमितीरिताहं–
तावत्सहस्व रजनी सखि यावदेति ।
इत्थं विहस्य वृषभानुसुतेह लप्स्ये–
मानं कदा रसदकेलिकदम्बजातम् ॥१४॥

कुण्डलिया—सुकुमारी प्यारी हिये, उपजी आनन्द-वेल।
निज हित सजनी सौं कह्यौ, चल कृष्णा कल केल॥
चल कृष्णा कल केल, करें हिलमिल झकझोरी।
परखि प्रेम की बात, कही हँसि चतुरा गोरी॥
धरौ साँझलौं धीर, केलि करियौं निशि प्यारी।
हुलसहु कव लखि सुनत, सकुच विहसन सुकुमारी॥१४॥

(संकेत समय)

पादांगुलीनिहितदृष्टिमपत्रपिष्णुं—
दूरादुदीक्ष्य रसिकेंद्रमुखेन्दुबिंबम्।
वीक्षे चलत्पदगतिं चरिताभिरामां—
झंकारनूपुरवतीं बत कर्हि राधाम्॥१५॥

करखा छन्द–राधिका चरन मन हरन मृदु आंगुरी सोहिनी ललित जावक रचीली। दूरतें जु इन्दु मुख विंब निज श्याम घन देखि इक टक रह्यौ छवि छवीली॥समझि मन ही मनै विहँस वर भामिनी चली झट झमकि आतुर लजीली। सुनौं कब ललित झनकार नूपुर पगन नागरी नवल सोभा सजीली॥१५॥

(भोग तीनों समय)

उज्जागरं रसिकनागरसंगरंगैः—
कुञ्जोदरे कृतवती नु मुदा रजन्याम्।
सुस्नापिता हि मधुनैव सुभोजिता त्वं—
राधे कदा स्वपिषि मत्करलालितांघ्रिः॥१६॥

चौपाई—कुञ्ज भवन तिय पिय सँग जागी।
रति विहार सब निसि अनुरागी॥
भोरहिं उठ अस्नान कराऊँ।
अँग अँगौछ सारी पलटाऊँ॥
बहु विधि व्यंजन रुचिर बनाऊँ।
तुमहिं खवाय हिये हुलसाऊँ॥
सेज बिछाय लाय पौढ़ाऊँ।
चरन चाँप निज भाग सिहाऊँ॥ १६॥

(प्रिया स्वरूप वर्णन)

वैदग्ध्यसिंधुरनुरागरसैकसिन्धु—
र्वात्सल्यसिन्धुरतिसांद्रकृपैकसिंधुः।
लावण्यसिंधुरमृतच्छविरूपसिंधुः—
श्रीराधिका स्फुरतु मे हृदि केलिसिंधुः॥१७॥

दोहा—चतुराई अनुराग रस-सिंधु अगम सुकुमार।
करुनाकर आनन्दनिधि, पानिप अंग अपार॥
रूप सुधा की अवधि वर, रोम रोम छवि रास।
सो राधा मम हिय करौ, सागर केलि-विलास॥

(प्रेम वैचित्री)

दृष्ट्वैव चंपकलतेव चमत्कृतांगी—
वेणुध्वनिं क्व च निशम्य च विह्वलांगी।
सा श्यामसुन्दरगुणैरनुगीयमानैः—
प्रीता परिष्वजतु मां वृषभानुपुत्री॥ १८॥

माँझ—मोर पक्ष लखि प्यारी कौं सखि प्रीतम की सुधि आई।
औचक परी कान वंशी धुनि देह दसा विसराई ॥
अमी घूंट सी श्याम कहानी कहि अलि चेत कराई।
ह्वै प्रसन्न वृषभानुलली कब लैहैं कण्ठ लगाई ॥१८॥

(चरण स्मरण)

श्रीराधिके सुरतरंगि नितंबभागे—
काँचीकलापकलहंसकलानुलापैः।
मंजीरसिंजितमधुव्रतगुंजितांघ्रि—
पंकेरुहैः शिशिरयस्व रसच्छटाभिः ॥ १९ ॥

छन्द—अहो सुरत रंगिनी राधे। छवि सागर अगम अगाधे।
कटि-किंकिनि रव रुचि दैनी। बोलत कल हंसन श्रैनी ॥
पग नूपुर की झनकारें। मधुकर मनु मत्त गुञ्जारें ॥
सोई चरन-कमल रस ढोरी। मुहि कृत-कृत करौ किशोरी१९

(हितसखी-प्रिया परस्पर सम्भाषण)

श्रीराधिके सुरतरंगिणि दिव्यकेलि—
कल्लोलमालिनि लसद्वदनारविंदे।
श्यामामृतांबुनिधिसंगमतीव्रवेगि—
न्यावर्त्तनाभिरुचिरे मम सन्निधेहि ॥ २० ॥

छन्द—सुरत सरिता राधिका वर दिव्य केलि तरंग।
अमृत सागर श्याम घन कौं चलत मिलन उमंग ॥

नाभि भँवर गँभीर राजत वदन पंकज वाल।
देखिहौं कब नैन भर सो ललित रूप विशाल ॥ २० ॥

(चरण स्मरण)

सत्प्रेमसिंधुमकरंदरसौघधारा—
सारानजस्रमभितः स्रवदाश्रितेषु ।
श्रीराधिके तव कदा चरणारविंदं—
गोविंदजीवनधनं शिरसा वहामि ॥ २१ ॥

माँझ—रसके सिन्धु अनूप परम कोमल पग राधा।
निज आश्रित हिय सदा श्रवत रस लहर अगाधा॥
नव नेही घनश्याम प्राण जीवन धन जोई।
भाग सिराहि-सिराहि सीस कब धारौं सोई ॥ २१ ॥

(संकेत समय)

संकेतकुञ्जमनुकुंजरमंदगामि—
न्यादायदिव्यमृदुचंदनगंधमाल्यम् ।
त्वां कामकेलिरभसेन कदा चलतीं—
राधेऽनुयामि पदवीमुपदर्शयन्तीम् ॥ २२ ॥

माँझ—नव संकेत निकुञ्ज चलौ गज गामिन बलि-बलि जाऊँ।
माला चन्दन अतर पान लै पाछें-पाछें आऊँ॥
वाट विसार चलौ रसमाती लखि आतुर ह्वै धाऊँ।
इतै--इतै बलिहारी कब मैं मारग सुगम बताऊँ ॥२२॥

(शृंगार समय)

गत्वा कलिंदतनयाविजनावतार—
मुद्वर्त्तयंत्यमृतमंगमनंगजीवम् ।
श्रीराधिके तव कदा नवनागरेंद्रं—
पश्यामि मग्ननयनं स्थितमुच्चनीपे ॥ २३ ॥

माँझ—जमुना तट निर्जन घाट बन्यौ तहाँ प्राणप्रियै पधरावहुँ मैं ।
अँग-अँग अनंग के जीवन हैं करि उवटन तिनहिं न्हवावहुँ मैं ॥
तव नागर छैल शिरोमणि कौं तहाँ औचकही लखि पावहुँ मैं ।
दुरिकैं चुरिकै द्रुम डार चढ्यौ निरखै तुव रूप सिहावहुँ मैं॥२३

(वदन स्मरण)

सत्प्रेमराशिसरसो विकसत्सरोजं—
स्वानंदसीधुरससिंधुविवर्द्धनेंदुम् ।
तच्छ्रीमुखं कुटिलकुंतलभृङ्गजुष्टं—
श्रीराधिके तव कदा नु विलोकयिष्ये ॥२४॥

माँझ-सुन्दर प्रेम सार सरवर मधु तव मुख प्रफुलित कंज किशोरी ।
कै पिय मन आनँद रस-अंबुद उमगावन विधु उदय भयोरी ॥
कुंतल कुटिल लसत लहि एरे मनु अलिगन राजत चहुँ ओरी ।
खुले भागकब मो आँखिन कौ निरखें यहछवि छकि नव गोरी२४

(प्रिया स्वरूप वर्णन)

लावण्यसाररससारसुखैकसारे—
कारुण्यसारमधुरच्छविरूपसारे ।

वैदग्ध्यसाररतिकेलिविलाससारे-
राधाभिधे मम मनोखिलसारसारे ॥२५॥

कवित्त—रस औ लुनाई की सार है नवेली वाल सुख की है सार करुना हू की सार है। शोभा छवि रूप माधुरी की है सार वाल परम प्रवीन अति चातुरी की सार है ॥ नागर के संग रस रग की विलास सार केलि कौ प्रकास हाव भाव गति सार है। ताही के चरन माहिं मेरौ मन बसौ नित्त राधा जाकौ नाम सब सारन की सार है ॥ २५ ॥

(प्रिया स्वरूप वर्णन)

चिंतामणिः प्रणमतां व्रजनागरीणां—
चूड़ामणिः कुलमणिर्वृषभानुनाम्नः ।
सा श्यामकामवरशांतिमणिर्निकुञ्ज-
भूषामणिर्हृदयसंपुटसन्मणिर्नः ॥२६॥

चौपाई—सरनागत तिनकी चिंतामणि ।
नव व्रज-जुवती जन चूड़ामणि ॥
कुल मणि श्री वृषभानु दुलारी ।
श्याम काम रस मणि सुखकारी ॥
कुंज भवन भूषन मणि गोरी ।
मम हिय संपुट सत मणि सोरी ॥ २६ ॥

(प्रिया स्वरुप वर्णन)

मंजुस्वभावमधिकल्पलतानिकुञ्जं—
व्यंजंतमद्भुतकृपारसपुञ्जमेव ।

प्रेमामृतांबुधिमगाधमबाधमेतं-
राधाभिधं द्रुतमुपाश्रय साधु चेतः ॥२७॥

दोहा—मृदु स्वभाव चितचोर अति, ललित कल्पतरु कुंज।
एजी सहज जनावहीं, विविध कृपा रस पुंज ॥
प्रेमामृत सागर अगम, बाधा रहित बिसाल।
सो राधा पग सरन गहु, रे चित चेत उताल ॥

(शय्या समय)

श्रीराधिकां निजविटेन सहालपंतीं-
शोणाधरप्रसृमरच्छविमञ्जरीकाम्।
सिंदूरसंवलितमौक्तिकपङ्क्तिशोभां-
यो भावयेद्दशनकुन्दवतीं स धन्यः ॥२८॥

कवित्त—प्यारी श्री राधा निज छैल प्राण प्यारे सौं आनँद अनुरागी रस बातैं बतरातीं हैं। लाल बिंबफल सम ओठन की किरनै सी दसौ दिशि फैल रहीं शोभा सरसाती हैं॥ राजत बर पटल भाल सेंदुर रँगि कछुक लाल मोतिन लर देखि-देखि अँखियाँ सचुपाती हैं। कुंद की कली सी जाकी दंतावलि लसैं ताहि धन्य-धन्य भावुक जे ध्यावत दिन राती हैं॥ २८॥

(प्रिया स्वरूप वर्णन)

पीतारुणच्छविमनंततडिल्लताभां-
प्रौढ़ानुरागमदविह्वलचारुमूर्तिम्।

प्रेमास्पदां व्रजमहीपतितन्महिष्यो—
गोविंदवन्मनसि तां निदधामि राधाम् ॥२८

माँझ—अगनित बिजुरी अरुन पीत सम अंग प्रभा सुकुमारी है।
उमग्यौ अति अनुराग सिंधु वर सुन्दर रूप उजारी है॥
नन्द जसोमति के हिय कौं मनमोहन के सम प्यारी है।
सो राधा वृषभानुलली छवि हरिष हिये में धारी है ॥२८

(शृंगार समय)

निर्माय चारुमुकुटं नवचन्द्रकेण—
गुञ्जाभिरारचितहारमुपाहरन्ती ।
वृन्दाटवीनवनिकुञ्जगृहाधिदेव्याः—
श्रीराधिके तव कदा भवितास्मि दासी ॥३०

पद—मोर पक्ष लै प्रीति सों, राचौं मुकुट विशाल ।
गुहि पिय हित सँग लै चलौं, सुन्दर गुञ्जामाल ।।
ऐसी बन कुंजेश्वरी, पूरित हित नँदलाल ।
तिन्ह तुम्हरी मैं सहचरी, ह्वै हौं वलि किंह काल ॥३०॥

(संकेत समय)

संकेतकुञ्जमनुपल्लवमास्तरीतुं—
तत्तत्प्रसादमभितः खलु संवरीतुम् ।
त्वां श्यामचन्द्रमभिसारयितुं धृताशे—
श्रीराधिके मयि विधेहि कृपाकटाक्षम् ॥ ३१

चौपाई—नव संकेत कुंज मैं बारी।
मृदु पल्लव रचि सेज सँवारी॥
तिंह सेवा रीझन सुख दैनी।
मिलै प्रसाद रुचिर पिकवैनी॥
श्यामचन्द्र तव छैल छवीलौ।
आन मिलाऊँ रूप लुभीलौ॥
यह अभिलाष लड़ैती मेरी।
पुजवहु कृपाकटाक्षनि हेरी॥३१॥

(चरण स्मरण)

दूरादपास्य स्वजनान्सुखमर्थकोटिं–
सर्वेषु साधनवरेषु चिरं निराशः।
वर्षंतमेव सहजाद्भुतसौख्यधारां–
श्रीराधिकाचरणरेणुमहं स्मरामि॥३२॥

पद–लोग कुटुम सुख अर्थ अनन्तहि दूरहि सों दुरियायौ।
जप वृतादि साधनन युगन सौं ह्वै निराश बिसरायौ॥
अद्भुत आनँद-धार सहज ही श्रवत पुराननि गायौ।
सो राधा पग ललित रैन सौं मन मैं लाय लगायौ॥३२॥

(वक्षोज वर्णन)

वृन्दाटवीप्रकटमन्मथकोटिमूर्तेः–
कस्यापि गोकुलकिशोरनिशाकरस्य।
सर्वस्व संपुटमिव स्तनशातकुम्भ–
कुम्भद्वयं स्मरमनो वृषभानुपुत्र्याः॥३३॥

दोहा—गोकुल छैल किशोर नव, राजत श्रीवन ऐन।
श्यामचन्द्र दुति वदन लखि,लजत कोटि रति-मैंन।।
सर्वस संपुट तासु के, प्रिय उर युग्म विशाल।
कनक-कुम्भ अति सोहने, भज मन तिनहिं निहाल ।।३३

(वक्षोज वर्णन)

सांद्रानुरागरससारसरःसरोजं-
किं वा द्विधा मुकुलितं मुखचन्द्रभासा ।
तन्नूतनस्तनयुगं वृषभानुजायाः-
स्वानंदसीधुमकरन्दघनं स्मरामि ।। ३४ ।।

कुण्डलिया-सुन्दर अँग अनुराग रस, सार सरोवर बाल।
कंज कली तामें ललित, तिय उर युगल विशाल॥
तिय उर युगल विशाल, निपट अद्भुत छवि मूली।
उदित देखि मुख चन्द्र, दोय रहीं मुद्रित फूली॥
सो वृषभानु-दुलारि, उरज आनंद समुन्दर।
सुमिरौं घन मकरन्द, मधुर सौरभ जुत सुन्दर।।३४

(वक्षोज वर्णन)

क्रीडासरःकनकपंकजकुड्मलाय-
स्वानंदपूर्णरसकल्पतरोःफलाय ।
तस्मै नमो भुवनमोहनमोहनाय-
श्रीराधिके तव नवस्तनमंडलाय ।। ३५ ।।

दोहा—क्रीड़ा सरवर में प्रिये, पङ्कज कनक अनूप।
कै आनँद के कल्पतरु, गदराने फल रूप ।।

त्रिभुवन मोहन नव रसिक, मोह्यौ झलक निहार।
तिहिं उरोज मंडलहि मैं, प्रणवत वारम्वार ॥३५॥

(शृंगार समय)

पत्रावलीं रचयितुं कुचयोः कपोले-
वद्धुं विचित्रकवरीं नवमल्लिकाभिः।
अंगं च भूषयितुमाभरणै र्धृताशे-
श्रीराधिके मयि विधेहि कृपावलोकम् ॥३६॥

माँझ-मृदुल कपोलन पै पत्रावलि रचि-रचि रुचिर बनाऊँगी।
कब नवीन मल्लिका सुमन लै कबरी गुहि हुलसाऊँगी॥
ललित ललित आभरन विहारिन रुचि अनुसार सजाऊँगी।
मेरे मन यह आस लली कब कृपावलोकन पाऊँगी ॥३६॥

(प्रेम वैचित्री)

श्यामेति सुन्दरवरेति मनोहरेति--
कंदर्पकोटिललितेति सुनागरेति।
सोत्कंठमह्नि गृणती मुहुराकुलाक्षी-
सा राधिका मयि कदा नु भवेत्प्रसन्ना ॥३७॥

छन्द-हे श्याम सुन्दर प्यारे। मन मौहन रूप उज्यारे।
हे कोटि मदन तन शोभा। नव-नागर मो मन लोभा॥
अस प्रेम विचित्र पुकारें। अति व्याकुल धीर न धारें।
सोइ प्राण प्रिया रँग भीनी। कब होंहि प्रसन्न प्रवीनी। ३७।

(प्रेम वैचित्री)

वेणुः कराग्निपतितः स्खलितं शिखंडं—
भ्रष्टं च पीतवसनं व्रजराजसूनोः ।
यस्याः कटाक्षशरघातविमूर्छितस्य—
तां राधिकां परिचरामि कदा रसेन ॥३८॥

कुण्डलिया—जाकी दृगन कटाक्ष सर, विंध्यौ नन्दसुत-वीर ।
मूर्छित ह्वै अवनी लुठत, पुनि-पुनि विकल अधीर ॥
पुनि-पुनि विकल अधीर, निपट कसरत उर अन्तर ।
वंशी कहुँ खस परी गिरचौ कहुँ मुकुट मोर पर ॥
विगलित पीत दुकूल, सुरति नहिं नेंकहु ताकी ।
कब मैं रसजुत करहुँ, हरषि परिचरिया जाकी ॥

(प्रार्थना)

तस्या अपाररससारविलासमूर्ते—
रानंदकंदपरमाद्भुतसौम्यलक्ष्म्याः ।
ब्रह्मादिदुर्गमगतेर्वृषभानुजायाः—
कैंकर्य्यमेव मम जन्मनि जन्मनि स्यात् ॥३९॥

छन्द—रसनिधि अगम अपार सार मूरति मन हरनी ।
परमाद्भुत आनन्दकन्द शोभा सुख करनी ।
ब्रह्मादिकनि अगम्य जोई वृषभानु दुलारी ॥
जन्म-जन्म किंकरी तासु कब ह्वै हौं वारी ॥ ३९ ॥

(प्रार्थना)

पूर्णानुरागरसमूर्त्तितडिल्लताभं—
ज्योतिः परं भगवतो रतिमद्रहस्यम् ।
यत्प्रादुरस्ति कृपया वृषभानुगेहे—
स्यात्किंकरीभवतुमेव ममाभिलाषः ॥४०॥

पद—पूर्ण रस अनुराग मूरति बदन दुति जिम दामिनी ।
परम जोति सरूप स्वामिनि रूप गुन अभिरामिनी ॥
करि कृपा मोहन रमन हित भई प्रगट वृषभानु कें ।
मन आस तिनकी सहचरी कब होहुँ कृत-कृत मानकैं ॥

(मुखारविंद स्मरण)

प्रेमोल्लसद्रसविलासविकासकंदं—
गोविन्दलोचनवितृप्तचकोरपेयं ।
सिंचंतमद्भुतरसामृतचंद्रिकौघैः—
श्रीराधिकावदनचन्द्रमहं स्मरामि ॥४१॥

पद—प्रेमोल्लास विलास कन्द दिसि उदित उजागर ।
चख चकोर गोविंद तृप्त नहिं होत छिनहुँ भर ॥
अद्भुत मृदु मुसकान सुधा सींचत नवगोरी ।
सो राधा मुख चन्द्र भजौं अनुपम छवि छोरी ॥ ४१ ॥

(संकेत समय)

संकेतकुञ्जनिलये मृदुपल्लवेन—
क्लृप्ते कदापि नवसङ्गभयत्रपाढ्याम् ।

अत्याग्रहेण करवारिरुहे गृहीत्वा—
नेष्ये विटेंद्रशयने वृषभानुपुत्रीम् ॥४२॥

छप्पय—नव संकेत निकुंज मृदुल पल्लव चुनि लाऊँ ।
अति कोमल कमनीय मधुर रचि सेज बिछाऊँ ॥
प्रथम समागम लाज हिये संकित सुकुमारी ।
हठि करि-करि नहीं चलौ मुरक पलटौ सुकुमारी ॥
हा वृषभानु दुलारि तव अति आग्रह कर कमल गहि ।
रसिक लाल ढिग तुमहिं कब पधराऊँ बलिहारि कहि॥४२

(संकेत समय)

सद्गंधमाल्यनवचन्द्रलवङ्गसङ्ग—
ताम्बूलसंपुटमधीश्वरि मां वहंतीम् ।
श्यामं तमुन्मदरसादभिसंसरंतीं—
श्रीराधिके करुणयानुचरीं विधेहि ॥४३॥

माँझ—सरस सुगंधित फूलन माला अतर लगाय बसाऊँ ।
शुच संपुट में बीरी भरि-भरि ललित लवंग लगाऊँ ॥
पिय छवि छकी चलौं रस आतुर ताछिन की बलि जाऊँ
लिये चलत सब सौंज टहलि मैं कृपा दृष्टि कब पाऊँ ॥४३

(वक्षोज वर्णन)

श्रीराधिके तव नवोद्गमचारुवृत्त—
वक्षोजमेव मुकुलद्वयलोभनीयम् ।
श्रोणीं दधद्रसगुणैरुपचीयमानं—
कैशोरकं जयति मोहनचित्तचोरम् । ४४॥

दोहा—उझली नवकैशोर वय, प्यारी तुव मृदुगात।
पीतम मनहिं लुभावने, उमगे उर उरजात॥
नूतन रस गुन सौं भरी, श्रोंणी भाग विशाल।
जै जै मोहन मनहरन, वैस उमंग नव वाल॥४४॥

(शय्या समय)

संलापमुच्छलदनंगतरंगमाला—
संक्षोभितेन वपुषा व्रजनागरेण।
प्रत्यक्षरं क्षरदपाररसामृताब्धि—
श्रीराधिके तव कदानु शृणोम्यदूरात्॥४५॥

पद—प्यारी करत रँगीली वतियाँ।
जिहँ सुनि सुनि नँदलाल हिये में,मदन तरंग उठत बहुभतियाँ।
निपट अपार रसामृत वरषत,इक-इक अक्षर प्रति रँग रतियाँ।
रोम-रोम विह्वल नटनागर, सो सुनि कवै जुड़ाऊँ छतियाँ॥४५

(प्रेम वैचित्री)

अंकस्थितेऽपि दयिते किमपि प्रलापं—
हा मोहनेति मधुरं विदधत्यकस्मात्।
श्यामानुरागमदविह्वलमोहनांगी—
श्यामामणिर्जयति कापि निकुञ्जसीम्नि॥४६॥

दोहा—अंक भरे राजत तऊ अनायास तिहिं काल।
चौंकि उठी वर भामिनी, कहि हा मोहनलाल॥
विह्वल श्यामनुराग में, चकित छबीली वाम।
जयति जयति वृषभानुजा, कुंजमणी अभिराम॥४६॥

(शय्या समय)

कुञ्जांतरे किमपि जातरसोत्सवायाः—
श्रुत्वा तदा लपितसिंजितमिश्रितानि ।
श्रीराधिके तव रहः परिचारिकाहं—
द्वारस्थिता रसहृदे पतिता कदा स्याम् ॥४७॥

दोहा—होत रसोत्सव कुंज में, पिय प्यारी रुचि दैन ।
सुनियत मृदु बोलन प्रिया किंकिनि रव सुख-अैन ॥
एकांती तुव सहचरी, कब ह्वै हौं कुंज द्वार ।
भीजै हिय रस रंग में, सुनि-सुनि धुनि रस सार ॥४७॥

(प्रेम वैचित्री)

वीणां करे मधुमतीं मधुरस्वरांता—
माधायनागरशिरोमणिभावलीलाम् ।
गायंत्यहो दिनमपारमिवाश्रुवर्षै—
र्दुःखान्नयंत्यहह सा हृदि मेऽस्तु राधा ॥४८॥

चौपाई—वीन मधुमती मधुर सुरीली ।
कोमल कर गहि ललित छबीली ॥
नागर रसिक शिरोमणि गुन गन ।
गावत अति अनुराग मुदित मन ॥
पुलकित श्रवत प्रेम जल लोचन ।
दिन बिहात ऐसेहि रस सोचन ॥
मधुमाती छवि मत्त अगाधा ।
हृदय बसौ मेरे सो राधा ॥ ४८ ॥

(शय्या समय)

अन्योन्यहासपरिहासविलासकेली—
वैचित्र्यजृंभितमहारसवैभवेन ।
वृन्दावने विलसितापहृतं विदग्ध—
द्वंद्वेन केनचिदहो हृदयं मदीयम् ॥ ४९ ॥

माँझ—करत हास परिहास परस्पर नव विलास रस केली ।
परम विचित्र महा रस वैभव नवजोरी अलबेली ॥
विहरत नव निकुंज वृन्दावन दोऊ कस भुज मेली ।
मो मन बसौ निरंतर सोई अद्भुत जोट नवेली ॥ ४९ ॥

(प्रिया स्वरूप वर्णन शिखरिणी छन्द)

महाप्रेमोन्मीलन्नवरससुधासिंधु लहरी—
परीवाहैर्विश्वं स्नपयदिवनेत्रांतनटनैः ।
तडिन्मालागौरं किमपि नवकैशोरमधुरं—
पुरंध्रीणांचूड़ाभरणनवरत्नं विजयते ॥५०॥

कवित्त—सरस्यौ अति प्रेम सोई नूतन रस सुधासिंधु तिह प्रवाह लहरनि कर विश्व कौं न्हवावै हैं । चंचल छवीले अति तीखे औ लजीले दृग नेक ही नचाय सुख निधि में डुवावैं हैं ॥ गोरे गोरे मृदुल विशाल अंग-अंग सब वीजुरी की माल मानौं चित्त कौं चुरावैं हैं । नवलकिशोरी व्रजगोरिन सिर चूड़ामनि राजत सर्वोपरि जिहिं राधा कहि गावैं हैं ॥ ५० ॥

(प्रिया स्वरूप वर्णन)

अनंदप्रेमाङ्कश्लथसकलनिर्बंधहृदयं-
दयापारं दिव्यच्छविमधुरलावण्यललितम्।
अलक्ष्यं राधाख्यं निखिलनिगमैरप्यतितरां-
रसांभोधेःसारं किमपि सुकुमारं विजयते॥५१

कुण्डलिया—भूली प्रेम उमंग में, मानादिक कृत नित्त।
अति अपार करुणामयी, सदय हृदय मृदु चित्त॥
सदय हृदय मृदु चित्त, मधुर छवि दिव्य लुनाई।
आगम, निगम, अलक्ष, नाम राधा सुखदाई॥
रस-सागर कौ सार, अलौकिक छवि सुख मूली।
जै-जै नव-सुकुमारि, निरखि मम गति मति भूली॥

(मंगल समय)

दुकूलं बिभ्राणामथ कुचतटे कंचुकपटं-
प्रसादं स्वामिन्याः स्वकरतलदत्तं प्रणयतः।
स्थितां नित्यं पार्श्वे विविधपरिचर्य्यैकचतुरां-
किशोरीमात्मानं किमिह सुकुमारीं नु कलये॥५२॥

चौपाई--निज अँग उतरी कँचुकि सारी।
देँहि कृपा करि भानु दुलारी॥
हुलसि-हुलसि पहिरौं रँगभीने।
ठाड़ी रहौं निकट रुख लीने॥
निपुन विविध सेवा चतुराई।
अंग-अंग नव-वैस चुचाई॥
आपुन कौं सुकुमार सहचरी।
कब देखौं मैं प्रेम रस भरी॥

(शृंगार समय)

विचिन्वंती केशान् क्वचन करजैः कंचुकपटं-
क्व चाप्यामुञ्चंती कुचकनकदीव्यत्कलशयोः।
सुगुल्फे न्यस्यंती क्वचन मणिमंजीरयुगलं-
कदा स्यां श्रीराधे तव सुपरिचारिण्यहमहो ॥५३॥

सोरठा—पेंचदार लहिरार, श्याम सचिक्कन सोहने।
नवल छबीले बार, सुरझाऊँ कब नखन तें॥

दोहा—वेणी विविध प्रसून तें, कब गूथौं सुकुमारि।
कारे चिकने अति नरम, सुरझाऊँ कब वारि।
अति कजरारी कंचुकी, पहिराऊँ चित चोर।
कुचन युगल छवि कसन अति,तनी बाँधि दोउ ओर॥
कटि किंकिणि मोती मणिन, नूपुर अरु पाजेब।
कब पहिराऊँ लाड़िली, चरणन सेवा देव॥

कवित्त-कारे सटकारे केश चिकने नरम वेश निज करजन सों हौं कब सुरझाऊँगी। विविध प्रसूनन तें गूँथौं वो विचित्र वेणी कनक कलश कुच कंचुकी पहिराऊँगी॥ किंकिणि मणिन मोती नूपुर पायजेब जोती चरण शृङ्गार दोऊ जावक लगाऊँगी। हा हा या किंकरी पर करुणा किशोरी करौ कब निज सेवा कर तुमकौं रिझाऊँगी॥ ५३॥

(प्रार्थना)

अतिस्नेहादुच्चैरपि च हरिनामानि गृणत-
स्तथा सौगंधाद्यैर्बहुभिरुपचारैश्च यजतः।

परानंदं वृन्दावनमनुचरंतं च दधतो–
मनो मे राधायाः पदमृदुलपद्मे निवसुत ॥५४॥

दोहा—हरि-हरि कहि उन्मत्त हौं, हरि राधा दोऊ एक ।
सेव्य निरंतर राधिका, हरि की येही टेक ॥
हरि-भक्तन के भजन सौं, छण ही हरि मिलजाय ।
हरि राधा के भक्त ज्यों, उच्चारन फल पाय ॥
वहुत भांति सौं जन सहित, अरु सुगंध उपचार ।
सेवौं युगलकिशोर कौं, वृन्दावन उर धार ॥

कवित्त—भजै जो जाकौं सो तो इष्ट है निरंतर ताकौ परम इष्ट प्रिया कों श्रीहरिजू आराधे हैं । ऐसे हरि राधा हित वृन्दावन एक नित रटै हरि राधे श्रीराधे श्रीराधे हैं ॥ ऐसें हरि राधा वर उच्चरौं वार-वार षोडशोपचार पूज काम सब साधे हैं । वृन्दावन विहरौं कव राधा पद पद्म हेरौं हित के समुद्र ये अतिहि अगाधे हैं ॥ ५४ ॥

(अत्यानन्य)

निजप्राणेश्वर्य्या यदपि दयनीयेयमितिमां–
मुहुश्चुंबत्यालिंगति सुरतमाध्व्या मदयति ।
विचित्रां स्नेहर्द्धिं रचयति तथाप्यद्भुतगते–
स्तवैव श्रीराधेपदरसविलासे मम मनः ॥५५॥

अरिल्ल—कृपा-पात्र निज प्रीय की मोकौं जानिके ।
दुलरावत अति लाल परम प्रीय मानके ॥
हास विलास विनोद प्रमोद सुरासके ।
श्रीराधे पद कञ्ज मधुप मन वासके ॥ ५५ ॥

कवित्त–प्यारी की सहेली निज जानिकें सुजान लाल डाल गलबाँहीं अति प्रेम विलसंत है। नाना भाँति रास रस करत विलास हित प्यारी पद-पंकज में होय हुलसंत है।।हा हा कर विनती हू करत है बार-बार हारिकें अपनपो अरु प्रीति सरसंत है। मेरौ जे मधुप मन किशोरी जू चरण माँहि रहै नित निरंतर ठौर नहिं अन्त है ।।५५।।

(बाल्य कैशोर) शार्दूल विक्रीडित वृत

प्रीतिं कामपि नाममात्रजनितप्रोद्दामरोमोद्गमां–
राधामाधवयोः सदैव भजतोः कौमार एवोज्वलाम् ।
वृन्दारण्यनवप्रसूननिचयानानीय कुंजांतरे–
गूढं शैशवखेलनैर्बत कदा कार्य्यो विवाहोत्सवः।।५६।।

कुंडलिया—प्रीति रीति जानत भलैं, राधा माधव दोय ।
उज्ज्वल वेश कुमारि नित तिन पद भज सुख होय ।।
तिन पद भज सुख होय, दोय मिल खेल खिलावहु ।
वृन्दा विपिन निकुंज, नवल रचि फूल बनावहु ।।
तहाँ रचि कबहूँ व्याह-महोत्सव मन हित मानत ।
सहज सनेही भलैं प्रीति की रीतहि जानत ।। ५६ ।।

(मंगला समय) पृथ्वी छन्द

विपंचितसुपंचमं रुचिरवेणुना गायता–
प्रियेण सह वीणया मधुरगानविद्यानिधिः ।
करींद्रवनसंमिलन्मदकरिण्युदारक्रमा–
कदा नु वृषभानुजा मिलतु भानुजारोधसि ।।५७।।

माँझ—मधुर स्वरन पूरित मन-मोहन वंशी रुचिर बजावैं।
गान कला अति कुशल किशोरी वीणा प्रवीण सुनावैं।
विहरत मत्त गयंद गयंदनि ज्यौं वन-वन सुख पावैं।
त्यौं क्रीड़त यमुना तट दोऊ कव यह छवि दरसावैं ॥५७

(रास समय) पृथ्वी छन्द

सहासवरमोहनाद्भुतविलासरासोत्सवे—
विचित्रवरतांडवश्रमजलार्द्रगंडस्थलौ।
कदा नु वरनागरीरसिकशेखरौ तौ मुदा—
भजामि पदलालनाल्ललितजीवनं कुर्वती ॥५८

रेखता-परस्पर हास्य रस बोरं। छबीली छैल चित चोरैं॥
विलासों रास रँग बरसैं। निरत तांडव अधिक सरसैं॥
श्रमित मुख स्वेद कन शोभा। युगल वर रूप मन लोभा
सुघर वर राधिका मोहन। रसिक सिरमौर अति सोहन
मृदुल तिन पद कमल सुन्दर। सु मैं कब अपनी ओली धर
दवाऊँगी दवाऊँगी। निरख मुख छवि सिहाऊँगी ॥५८

(मंगल समय) शार्दूल विक्रीडित वृत्त

वृन्दारण्यनिकुंजमंजुलगृहेष्वात्मेश्वरीं मार्गयन्—
हा राधे सविदग्धदर्शितपथं किं यासि नेत्यालपन्।
कालिंदीसलिले च तत्कुचतटीकस्तूरिकापंकिले—
स्नायं स्नायमहोकुदेहजमलं जह्यां कदा निर्मलः॥५९

दोहा—वृन्दारण्य निकुञ्ज में, वसत लसत छवि छाय।
राधे अपने मिलन कौ, मारग दियौ लखाय॥
पद—प्यारी जू मारग दियौ लखाय तहाँ अहौ कै नाँहीं।
यौं कब ढूँढ़त फिरौं कलित कुञ्जन बन माँहीं॥
कालिंदी जल भयौ उरज मृगमद लगि कारौ।
तहाँ न्हाय कब करौं देह प्राकृत मल न्यारौ॥ ५९॥

(संकेत समय) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

पादस्पर्शरसोत्सवं प्रणतिभिर्गोविन्दमिन्दीवर—
श्यामं प्रार्थयितुं सुमंजुलरहःकुंजांश्च संमार्जितुम्।
मालाचंदनगंधपूररसवत्तांबूलसत्पानका—
न्यादातुं च रसैकदायिनि तव प्रेष्या कदा स्यामहं॥६०॥

दोहा—तव पद-पंकज छियन कौं, विवस रसोत्सव लाल।
मो कब मनुहारी करै, जान तिहारी बाल॥
मंजुल केलि निकुंज कौं, रचि-रचि सुखद सम्हार।
सेज बिछाऊँ मृदलु शुचि, रस उपजावन हार॥
माला चन्दन गंध रस, मादिक बीरी पान।
लै चलिवौ सेवा मिलै, अतर लायची दान॥
रसदैनी वृषभानुजा, यह विधि कबधौं होय।
ऐसी तुव निज अनुचरी, हौंहुँ रहौं छवि जोय॥६०॥

(प्रिया स्वरूप वर्णन) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

लावण्यामृतवार्त्तया जगदिदं संप्लावयंती शर—
द्राकाचंद्रमनंतमेववदनज्योत्स्नाभिरातन्वती।

श्रीवृन्दावनकुञ्जमँजुगृहिणी काप्यस्ति तुच्छामहो—
कुर्वाणाखिलसाध्यसाधनकथां दत्त्वा स्वदास्योत्सवम्॥६

कर्षा छन्द–करत कछु बात लावण्य मृदु रस सु
श्रवत चहुँ ओर ज्यों जग जिवावै। उदित मुख चन्द्रमा चाँद
चमक सौं शरद निशि इन्दु कोटिक लजावै॥ सोई वृन्दाविपि
कुंज मंजेश्वरी कृपा कर आस मम कब पुजावै। साध्य साध
अखिल कथा सो तुच्छ जब आपनी चरण-चेरी बनावै॥ ६१॥

(बन बिहार) मन्दाक्रान्ता वृत

दृष्ट्या यत्र क्वचन विहिता अ्रेडने नंदसूनोः—
प्रत्याख्यानच्छलत उदितोदारसंकेतदेशा।
धूर्त्तेन्द्र त्वद्धयमुपगता सा रहो नीपवाट्यां—
नैका गच्छेत्कितव कृतमित्यादिशेत्कर्हि राधा॥६२

छप्पय–दृग सैनन संकेत कुंज पूछत नटनागर।
परम चातुरी प्रिया बतावत यह विधि मिसकर॥
संकित तव छल छन्द अरे नट धूर्त्त शिरोमन।
इकली कवहुँ न जाऊँ सघन वा कुंज कदम तन॥
सो तव रस वचनावली मान-मान निज भाग धन।
सुनि-सुनि कब हुलसाय हौं ह्वै हौं आनँद निधि मगन॥

(संकेत समय) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

सा भ्रूनर्त्तनचातुरी निरुपमा साचारुनेत्राञ्चले—
लीलाखेलनचातुरी वरतनोस्तादृग्वचश्चातुरी

संकेतागमचातुरी नवनवक्रीडाकलाचातुरी—
राधाया जयतात्सखीजनपरीहासोत्सवं चातुरी ॥ ६३ ॥

कवित्त—भृकुटी नचायवे की चातुरी अनूप खेल लीला सौं दृगंचल चलायवे की चातुरी ॥ त्यौंही मृदु बोलन में चातुरी चुरावै चित्त निशि ही संकेत कुञ्ज आवन की चातुरी। नूतन नवीन रस केलि के विलासन में भाँति-भाँति कला दरसावन की चातुरी ॥ जयति किशोरी की सहेलिन सखीन माँहि हास परहास सरसावन की चातुरी ॥ ६३ ॥

(बाल्य कैशोर) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

उन्मीलन्मिथुनानुरागगरिमोदारस्फुरन्माधुरी—
धारासारधुरीणदिव्यललितानंगोत्सवैः खेलतोः ।
राधामाधवयोः परं भवतु नश्चित्ते चिरार्त्तिस्पृशोः—
कौमारेनवकेलिशिल्पलहरीशिक्षादिदीक्षारसः ॥ ६४ ॥

कुण्डलिया—दम्पति हियरें परस्पर, बाढ्यौ अति-अनुराग ।
धार सार नव माधुरी, बरसत झरी सुहाग ॥
बरसत झरी सुहाग, दिव्य मदनोत्सव माँहीं ।
राधामाधव मिलन, आर्ति अति हिय ललचाँहीं ॥
सो सुकुमारि कुमार,मिलन प्रथमहिं अँग कम्पित।
कब रस घात सिखाय, करौं निपुनें रस दम्पति ॥६४॥

(बाल्य कैशोर) शिखरिणीवृत्त

कदा वा खेलंतौ व्रजनगरवीथीषु हृदयं—
हरंतौ श्रीराधाव्रजपतिकुमारौ सुकृतिनः ।
अकस्मात्कौमारे प्रकटनवकैशोरविभवौ—
प्रपश्यन्पूर्णस्यां रहसि परिहासादिनिरतौ ॥ ६५ ॥

दोहा—व्रज नगरी की गलिन में, खेलत अद्भुत ख्याल ।
सुकृतिन हियौ चुरावहीं, राधा मदनगुपाल ॥
अकस्मात कौमार सौं, ह्वै किशोर रसरास ।
हास्यादिक रस मगन कब,निरखौं मन यह आस ॥६५

(शृंगार समय) मंदाक्रान्तावृत्त

धम्मिल्लं ते नवपरिमलैरुल्लसत्फुल्लमल्ली—
माल्यं भालस्थलमपि लसत्सांन्द्रसिंदूरविन्दु ।
दीर्घापाङ्गच्छविमनुपमां चारुचंद्रांशुहासं—
प्रेमोल्लासं तव तु कुचयोर्द्वंद्वमंतः स्मरामि ॥ ६६॥

पंजाबी छन्द–सुन्दर सुभग चमेली फूलन माल सुभग सँम्हारी
भालविन्दु सिंदूर लसत चख चपल कटाक्षन कारी है
कुच जुग प्रेमानन्द उदै तन हँसन मयंक उजारी है
यह छवि भानुदुलारी की मन सुमिरत लागत प्यारीहै

(प्रिया स्वरूप वर्णन) शार्दूलविक्रीडितवृत

लक्ष्मीकोटिविलक्ष्यलक्षणलसल्लीला किशोरीशतै-
राराध्यं व्रजमंडलेतिमधुरं राधाभिधानं परम् ।

ज्योतिः किञ्चन सिंचदुज्ज्वलरसप्राग्भावमाविर्भव—
द्राधे चेतसि भूरिभाग्यविभवैः कस्याप्यहोः जृम्भते ।।६७।।

छप्पय—लक्ष्मी कोटि विलक्ष रहत लीला रस जिनकी ।
परम जोति आराध्य मुकुट मणि व्रजयुवतिन को ।।
बरसत रस शृङ्गार अनिर्वचनीय अगाधा ।
धन्य भाग्य जिन हिये वसत एसी श्रीराधा ।।
उदित सुव्रजमंडल सदा नाम राधिका कुँवरि वर ।
अति सुन्दर छवि आगरी गुन सागर अलि अगमतर।।६७

(प्रिया स्वरूप वर्णन) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

तज्जीयान्नवयौवनोद्‌यमहालावण्यलीलामयं—
सांद्रानन्दघनानुरागघटितश्रीमूर्तिसंमोहनम् ।
वृन्दारण्यनिकुञ्जकेलिललितं काश्मीरगौरच्छवि—
श्रीगोविन्द इव व्रजेन्द्रगृहिणी प्रेमैकपात्रं महः ।।६८।।

बरवै—जयति जयति नव युवना ललित उमंग ।
छवि लावण्य सुलीला पूरित अंग ।।
सघनानँद घन मूरति अति अनुराग ।
मनमोहन मन मोहत पलक न लाग ।।
श्रीवृन्दावन कुञ्जन रस विलसात ।
शुचि केशर से सुन्दर गोरे गात ।।
जिहिं विधि लागत प्यारे जसुदा श्याम ।
तिहिं विधि लगत दुलारी प्यारी वाम ।। ६८ ।।

(प्रिया स्वरूप वर्णन) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

प्रेमानंदरसैकवारिधिमहाकल्लोलमालाकुला—
व्यालोलारुणलोचनाञ्चलचमत्कारेणसंचिन्वती ।
किञ्चित्केलिकलामहोत्सवमहो वृन्दाटवीमन्दिरे–
नन्दत्यद्भुतकामवैभवमयी राधाजगन्मोहिनी।।६९।

चोपाई—वृन्दावन प्रेमामृत सागर ।
लसत तरङ्ग गौर श्यामल वर ।।
उभै दृगंचल चंचल कोरैं ।
चपल चमत्कृत आनँद बोरैं ।।
निपल अलौकिक केलि कला गन ।
होत रसोत्सव नवल निकुञ्जन ।।
कीर्ति अनूपम जगत मोहिनी ।
विलसत रस वन प्रिया सोहिनी ।।६९।।

(प्रिया स्वरूप वर्णन) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

वृन्दारण्यनिकुञ्जसीमनि नवप्रेमानुभावभ्रम—
द्भ्रूभङ्गीलवमोहितव्रजमणिर्भक्तैकचिन्तामणिः ।
सांद्रानन्दरसामृतस्रवमणिः प्रोद्दामविद्युल्लता–
कोटिज्योतिरुदेति कापि रमणी चूड़ामणिर्मोहिनी।।७०।

दोहा—मोह्यौ श्रीवनकुञ्ज में, व्रजमणि नन्दकिशोर ।
प्रेमामृत नव भाव सौं, भ्रुकुटी वंक मरोर ।।

रसिक जनन चिंतामणी, रोम-रोम छवि ग्रैन।
चूड़ामणि व्रज नागरिन, नागरि सो सुख दैन॥
अति अगम्य आनंद रस. सुधा श्रवत दुति अंग।
अगनित विजुरी सी दमक, ललित मोहिनी रंग॥ ७०॥

(प्रिया स्वरूप वर्णन) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

लीलापांगतरंगितैरुद्भवन्नेकैकशः कोटिशः–
कंदर्पाः पुरदर्पटंकृतमहाकोदंडविस्फारिणः।
तारुण्यप्रथमप्रवेशसमये यस्या महामाधुरी–
धारानंतचमत्कृता भवतु नः श्रीराधिकास्वामिनी॥७१॥

दोहा—लीला ललित कटाक्ष सौं, उपजत शत रति मार।
भृकुटि मुरन शोभा मनौं, धनु ही की टंकार॥
झलक तरुणाई कछुक ग्रँग, माधुरी झर वरसाय।
रूप चमत कृत प्रिया कव, सेवहुँ स्वामिनि पाय॥ ७१॥

(प्रार्थना) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

यत्पादांबुरुहैकरेणुकणिकां मूर्ध्ना निधातुं नहि–
प्रापुर्ब्रह्मशिवादयोप्यधिकृतिं गोप्येकभावाश्रया।
सापि प्रेमसुधारसांबुधिनिधी राधापि साधारणी–
भूता कालगतिक्रमेण बलिना हे दैव तुभ्यं नमः॥७२॥

कुंडलिया–जाकी पग तल रेणु कन, धारण कौं निज शीष।
गूढ़ भाव ग्राश्रय करत, देवादिक विधि ईश॥

देवादिक विधि ईश, चरण रज पावत नहिं कर ।
प्रेम सुधा-रस सिन्धु, अगम सो राधा सुन्दर ॥
जानत सब साधारण, काल गति महिमा ताकी ।
तोहि करौं दंडौत, दई यह माया जाकी ॥ ७२

(शय्या समय) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

दूरे स्निग्धपरंपरा विजयतां दूरे सुहृन्मंडली—
भृत्याः सन्तु विदूरतो व्रजपतेरन्यः प्रसंगः कुतः ।
यत्र श्रीवृषभानुजाकृतरतिः कुंजोदरे कामिना—
द्वारस्था प्रियकिंकरी परमहं श्रोष्यामि कांचीध्वनिम्॥

सवैया–सब दूर रहैं मन मोहन मित्र सखा रस भावुक दूर विराजै
तहाँ दास्य उपासिकहू नहिं जाँय सुआन प्रसंग गनौं किह का
रति केलि करैं जहाँ लाडिलीलाल सु कुंज कुटीर खड़ी दरवा
परचारिनं मैं सुनिहौं कबहूँ मधुरी कटिकिंकिणि नूपुर बाजैं॥

(शृंगार समय) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

गौरांगे ग्रदिमा स्मिते मधुरिमा नेत्रांचले द्राघिमा–
वक्षोजे गरिमा तथैव तनिमा मध्ये गतौ मंदिमा ।
श्रोण्यां च प्रथिमा भ्रुवोः कुटिलिमा बिंबाधरे शोणिमा–
श्रीराधे हृदि ते रसेन जड़िमाध्यानेऽस्तु मे गोचरः॥७

दक्षिनी छंद–गोरे अँग मृदुताई नीकी ।
अद्भुत मधुर हँसाई नीकी ॥

चंचल दृग बंकाई नीकी।
उन्नत उर कठुराई नीकी॥
क्षीन कटि लचकाई नीकी।
झूमत मंद चलाई नीकी॥
शुचि नितंब गरुवाई नीकी।
अधर बिम्ब अरुणाई नीकी॥
नव रस छकन छकाई नीकी।
नित नव प्रिये लुनाई नीकी॥
मम हिय रहै समाई नीकी॥७४॥

(मंगल समय) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

प्रातः पीतपटं कदा व्यपनयाम्यन्यांशुकस्यार्पणा-
त्कुञ्जे विस्मृतकंचुकीमपि समानेतुं प्रधावामि वा।
बध्नीयां कबरीं युनज्मि गलितां मुक्तावलीमंजये-
नेत्रे नागरि रङ्ककैश्च पिदधाम्यंगव्रणं वा कदा॥७५॥

माँझ—पलटि गयौ निशि केलि पीत पट निरख भोर पलटाऊँ।
विसरी कंचुकि कुंज सेज पै जाय धाय लै आऊँ॥
कस कवरी शिथिली मोतिन लर टूटी गुहि पहिराऊँ।
कुंकुम नख छत ढाँपि रेख मषि पौंछि कबै हुलसाऊँ॥७५॥

(प्रिया स्वरूप वर्णन) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

यद्वृन्दावनमात्रगोचरमहो यन्न श्रुतीकं शिरो-
प्यारोढुं क्षमते न यच्छिवशुकादीनां तु यद्ध्यानगम्।
यत्प्रेमामृतमाधुरीरसमयं यन्नित्यकैशोरकं-
तद्रूपं परिवेष्टुमेव नयनं लोलायमानं मम॥७६॥

कवित्त–जोई परा तत्व वृन्दावन में प्रकाशै जाकौं वेद शिरो भाग उपनिषद न पावैं लख। जासु रूप ध्यान अति दुरगम शुकादिकन कौं प्रेम सुधा माधुरी की सार जोई शिख नख॥ छवि सिंधु बोरी नित्य नवलकिशोरी भोरी वदन की शोभा मानौं चली रूप सीवां नख। ताकी मुख शोभा अति अद्भुत निहारिबे कौं व्याकुल रहत ललचात नित मेरे चख॥ ७६॥

(प्रार्थना) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

धर्माद्यर्थचतुष्टयं विजयतां किं तद्वृथा वार्त्तया–
सैकांतेश्वरभक्तियोगपदवी त्वारोपिता मूर्द्धनि।
यो वृन्दावनसीम्नि कश्चन घनाश्चर्यः किशोरीमणि–
स्तत्कैंकर्यरसामृतादिह परं चित्तो न मे रोचते॥७७॥

छप्पय–धर्म अर्थ फल काम मोक्ष सब दूर विराजैं।
कहा तिन की बतरान वृथा कीजै बिन काजैं॥
हरि की भक्ति अनन्य महा पदवी कहि गाई।
सिर माथे पै रहौ कहौं पै निज मन भाई॥
अद्भुत नवल किशोरी मणि वसत कुंज वृन्दाविपिन।
रुचत न मेरौ मन कहूँ जासु रसामृतदास्य बिन॥ ७७॥

(प्रिया स्वरूप वर्णन) शार्दूल विक्रीडित वृत

प्रेम्णः सन्मधुरोज्ज्वलस्य हृदयं शृङ्गारलीलाकला–
वैचित्री परमावधिर्भगवतः पूज्यैव कापीशता।
ईशानी च शची महासुखतनुः शक्तिः स्वतंत्रापरा–
श्रीवृन्दावननाथपट्टमहिषी राधैव सेव्या मम॥७८॥

दोहा—परम रसोज्ज्वल मधुर तर, हृदय नवल सुकुमार।
लीला कला विचित्र अति, अद्भुत वर शृङ्गार॥
कृष्ण पूज्यवर भामिनी, उमा रमा सरदार।
सुख की सार स्वतंत्र शुचि, पराशक्ति बलिहार॥
वृन्दावन नायक नवल, रसिया मोहनलाल।
ताकी दुलहिन शशि मुखी, रूप रँगीली बाल॥
ललित लड़ैती राधिका, रोम-रोम छवि राशि।
मन, वच, क्रम करि ताहि मैं, सेवत परम हुलासि॥७८॥

(प्रार्थना) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

राधादास्यमपास्य यः प्रयतते गोविन्दसंगाशया–
सोऽयं पूर्णसुधारुचेः परिचयं राकां विना कांक्षति।
किं च श्यामप्रवाहवारिल्लहरीबीजं न ये तां विदु–
स्ते प्राप्यापि महामृतांबुधिमहो बिंदुं परं प्राप्नुयुः॥७९॥

चौपाई–राधा दास्य धरत मन नाहीं।
कृष्ण मिलन बहु जतन कराहीं॥
मावस रैन अैन अँधियारी।
लख्यौ चहत सो इंदु उजारी॥
मोहन रति प्रवाह की लहरैं।
ताकी बीज न राधा सुमिरैं॥
पावहिं यदपि सुधानिधि मोहन।
पै विन राधा मिलहि एक कन॥७९॥

(रसिक स्वरूप वर्णन) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

कैशोराद्भुतमाधुरीभरधुरीणांगच्छविं राधिकां—
प्रेमोल्लासभराधिकां निरवधि ध्यायंति ये तद्धियः।
त्यक्ताः कर्मभिरात्मनैव भगवद्धर्मेप्यहो निर्ममाः—
सर्वाश्चर्यगतिं गताः रसमयीं तेभ्यो महद्भ्यो नमः॥८०॥

मांझ—नव किशोर वय ललित माधुरी अद्भुत अँग-अँग राधा।
ध्यान मत्त जे रहत जासुके डूबे प्रेम अगाधा।
छाँड़ि दिये तनके करमन औ भगवत् धर्म हूँ विसरायौ।
सर्वाश्चर्य मयी रस गति तिन रसिकन कौं शिर नायौ॥८०॥

(रसिक स्वरूप वर्णन) पृथ्वी छन्द

लिखंति भुजमूलतो न खलु शंखचक्रादिकं—
विचित्रहरिमन्दिरं न रचयंति भालस्थले।
लसत्तुलसिमालिकां दधति कंठपीठे न वा—
गुरोर्भजनविक्रमात्क इह ते महाबुद्धयः॥ ८१ ॥

छन्द—शंख चक्रादिक न कबहूँ भुजन पर अंकित करैं।
पुन तिलक निज भाल पै कबहूँ न रचि-रचि कैं करैं॥
माल तुलसी हू न बहुधा देखियत तिनके गरैं।
प्रेम वश गुरु कृपा कोऊ सुबुधि विरले लख परैं॥

(रसिक स्वरूपवर्णन) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

कर्माणि श्रुतिबोधितानि नितरां कुर्वंतु कुर्वन्तु मा—
गूढाश्चर्यरसाः स्रगादिविषयान्गृह्णंतु मुंचंतु वा।

कैर्वा भावरहस्यपारगमतिः श्रीराधिकाप्रेयसः—
किञ्चिज्ज्ञैरनुयुज्यतां बहिरहो भ्राम्यद्भिरन्यैरपि ॥८२॥

छन्द–वेद श्रुतिन कहे कर्मविविध बिधि तिन्हैं करौ कोऊ भावैकरौ ना। आश्चर्य रस गूढ़ स्नगादि विषयजे तिन्हें गहौ कोऊ चाहें गहौ ना॥प्यारी लाल रहसि पारग मति यद्यपि यह रस आछैं तिरौना। पै तिनही सौं होय मिलन मो भ्रमत अनत जे कबहुँ मिलौ ना॥८२

(प्रार्थना) पृथ्वी छन्द

अलं विषयवार्त्तया नरककोटिवीभत्सया—
वृथा श्रुतिकथाश्रमो बत बिभेमि कैवल्यतः।
परेशभजनोन्मदा यदि शुकादयः किं ततः—
परं तु मम राधिकापदरसे मनो मज्जतु ॥८३॥

कवित्त–कोटि कोटि नरकादिक तिनहूँ सौं निंद ऐसी विषय वार्ता ताकौं भूल विसरायौ है। मुक्ति आदि मार्ग बहु वेद श्रुति गाये सोउ मोकौं न भाये या तें हियरा डरायौ है॥ परब्रह्म ध्यान रति रहत शुकादि नित कहूँ साँच-साँच सोऊ चित नाहिं आयौ है मैं तौ श्रीराधा पद कंज दुःखगंजन रस रज की मन रंजन मन मंजन करायौ है॥ ८६ ॥

(प्रिया स्वरूप वर्णन) मंदाक्रान्ता वृत्त

तत्सौंदर्यं स च नववयो यौवनश्रीप्रवेशः—
सा दृग्भंगी स च रसघनाश्चर्यवक्षोजकुंभः।

सोऽयं बिंबाधरमधुरिमा तत्स्मितं सा च वाणी—
सेयं लीलागतिरपि न विस्मर्यते राधिकायाः ॥८४॥

पद—विहारिन सुन्दरता की खान ।
अद्भुत वह सौंदर्य नई वय योवन प्रथम उठान ॥
वह दृग वंक विलोकन वह जुग उरज कुंभ उमगान ।
वह सुन्दर अधरन अरुनाई वह मधुरी मुसक्यान ॥
तैसिहिं वह मृदु-मृदु रस बतियाँ चलन अनौखी आन ।
सो अँग अंगन रूप माधुरी नहिं विसरत वह वान ॥ ८४ ॥

(प्रार्थना) शार्दूलविक्रीडित वृत

यद्ब्रह्मीशुकनारदादि परमाश्चर्यानुरागोत्सवैः—
प्राप्तं त्वत्कृपयैव हि व्रजभृतां तत्तत्किशोरीगणैः ।
तत्कैंकर्यमनुक्षणाद्भुतरसं प्राप्तुं धृताशे मयि—
श्रीराधे नवकुञ्जनागरि कृपादृष्टिं कदा दास्यसि ॥८५॥

दोहा—प्यारी तव पद टहल कौं, कमलादिक ललचाहिं ।
शुक नारद आदिक सबै, वांछित पावत नाहिं ॥
सो सेवा व्रजनागरिन, दीनी करुणा-कोर ।
क्षण-क्षण प्रति अति रस लहत, वर अनुराग झकोर ॥
नव निकुञ्ज वर नागरी, अहो प्रिये रस दान ।
सोइ टहल मुहि कृपा कर, देहु आपुनी जान ॥ ८५ ॥

(शय्या समय) मन्दाक्रान्ता छन्द

लब्ध्वा दास्यं तदतिकृपया मोहनस्वादितेन—
सौंदर्य्यश्रीपदकमलयोर्लालनैः स्वापितायाः।
श्रीराधाया मधुरमधुरोच्छिष्टपीयूषसारं—
भोजं भोजं नवनवरसानंदमग्नः कदा स्याम् ॥८६॥

छन्द—तव अमित कृपा सौं प्यारी।
अस टहल मिलै बलिहारी॥
जिहिं स्वादहिं लहत विहारी।
मृदु चरण पलोटन वारी॥
सोई मधुर-मधुर अति नीकैं।
उच्छिष्ट अमी रस पीकैं॥
नव-नव आनँद रस जोऊँ।
तिन माँहि मगन कब होऊं॥ ८६ ॥

(अत्यानन्य) शिखिरिणी छन्द

यदि स्नेहाद्राधे दिशसि रतिलांपत्यपदवीं—
गतं मे स्वप्रेष्ठं तदपि मम निष्ठं शृणु यथा।
कटाक्षैरालोके स्मितसहचरैर्जातपुलकं—
समाश्लिष्याम्युच्चैरथ च रसये त्वत्पदरसम् ॥ ८७ ॥

कुंडलिया—प्यारी तुम अति नेह सौं, मोहनलाल सिखाय।
पठवौ मो ढिग चपल सो अंचल पट गहै आय॥
अंचल पट गहै आय, सुनौ पै निष्ठा मेरी।
करि कटाक्ष अवलोकि, मन्द मुसक्यान घनेरी॥

जबहिं होय रोमांच, उदित आलिंगन वारी।
तौ हू मैं तव चरन कमल, रस चाहौं प्यारी॥

(श्रीहित सखी-प्रिया-सम्भाषण) मन्दाक्रान्ता छन्द

कृष्णः पद्मो नवकुवलयं कृष्णसारस्तमालो—
नीलांभोदस्तव रुचिपदं नामरूपैश्च कृष्णा।
कृष्णे कस्मात्तव विमुखता मोहनश्याममूर्त्ता—
वित्युक्त्वा त्वां प्रहसितमुखीं किन्नु पश्यामि राधे।८८।

कुण्डलिया—कारी निशि पंकज असित, अरु मृग श्याम तमाल।
सजल मेघ यमुना तुम्हें अति ही रुचत विशाल॥
अति ही रुचत विशाल, तुम्है पै या छिन गोरी।
श्याम नाम अँग श्याम, मूर्त्ति अद्भुत रस वोरी॥
अनायास तुव पास, लखौं किन छवि मतवारी।
यह मेरी सुन हँसत लखौं कब छवि हितकारी॥८८॥

(रास समय) शार्दूलविक्रीडित वृत

लीलापांगतरंगितैरिव दिशो नीलोत्पलश्यामला—
दोलायत्कनकाद्रिमंडलमिव व्योम स्तनैस्तन्वतीम्।
उत्फुल्लस्थलपंकजामिव भुवं रासे पदन्यासतः—
श्रीराधामनुधावतीं व्रजकिशोरीणां घटां भावये॥८९॥

छन्द—लीला पूर्व कटाक्ष तरंगन दश दिशि नील कमल फूले।
उरज उतंग सुमेरु रूप के छवि सीवाँ आनँद मूले॥
नृत्तत मणि मंडल पग दुति ज्यों पखुरी गुलाव सुहाई हैं।
तिन प्रिय अनुगामिन व्रजभामिन रूपघटा मन ध्याई हैं॥८९

(प्रार्थना) पृथ्वी छन्द

दृशौ त्वयि रसांबुधौ मधुरमीनवद्भ्राम्यतः—
स्तनौ त्वयि सुधासरस्यहह चक्रवाकाविव ।
मुखं सुरतरंगिणि त्वयि विकासि हेमांबुजं—
मिलंतु मयि राधिके तव कृपातरंगच्छटाः ॥ ९० ॥

सोरठा—तुम रस निधि सुकुमार, अमित मीन लोइन चपल ।
कै छवि सर सुख सार, ललित उरज चकवाक विव ॥
सुरत नदी कै वाल, कनक कंज मुख डहडह्यौ ।
अपनी कृपा कृपालु, तासु छटा कीजै प्रिये ॥९०॥

(प्रार्थना) स्रग्धरा छन्द

कांताढ्याश्चर्यकांता कुलमणिकमला कोटकाम्यैकपादां—
भोजभ्राजन्नखेंदुच्छविलवविभवा काप्यगम्या किशोरी ।
उन्मर्य्यादप्रवृद्धप्रणयरसमहांभोधिगंभीरलीला—
माधुर्योज्जृंभितांगी मयि किमपि कृपारङ्गमङ्गीकरोतु९१

छन्द—सुघर मणि कमला सी गोरी ।
जुपै ह्वै अगनित इकठोरी ॥
तऊ तव चरण कंज प्यारी ।
नखन दुति चंदा उजियारी ॥
तासु छवि लेशहु नहिं पावैं ।
सकुचि मुख निरखत रहि जावैं ॥
किशोरी अगम रूप बोरी ।
प्रेमनिधि उमग सींव तोरी ॥

ललित लीला अथाह प्यारी।
अंग माधुर्य उमगि वारी॥
कृपा करि अंगीकृत कीजै।
विनय बलि मेरी सुनि लीजै॥ ६१॥

(प्रार्थना) पृथ्वी छन्द

कलिंदगिरिनंदिनीपुलिनमालतीमंदिरे—
प्रविष्टवनमालिना ललितकेलिलोलीकृते।
प्रतिक्षणचमत्कृताद्भुतरसैकलीलानिधे—
निधेहि मयि राधिके निजकृपातरङ्गच्छटाम्॥ ६२॥

कवित्त—यमुना के कूल वीर मालिती निकुंज लसै तामें दोउ मिले आय राधा वनमाली। सुन्दर नव केलि कलित ललित सुरत रंग झेल राजत अति अद्भुत प्रिय अंग चपल चाली॥ क्षण-क्षण छवि चमत्कार अनुपम रस मधुर सार लीला निध ताकी वर कीरतिदा लाली। करुना निधि अंग--अंग आपुर्न कृपा तरंग तासु छटा मोपै टुक कीजै प्रतिपाली॥ ६३॥

(चरण स्मरण) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

यस्यास्ते बत किंकरीषु बहुशश्चाटूनि वृन्दाटवी—
कंदर्पः कुरुते तवैव किमपि प्रेप्सुः प्रसादोत्सवम्।
सांद्रानंदघनानुराग लहरीनिस्यंदपादांबुज—
द्वंद्वे श्रीवृषभानुनंदिनि सदा वंदे तव श्रीपदम्॥६३॥

दोहा—तिन तुम्हरी दासीन प्रति, श्रीवन मनमथ लाल।
वदत बैन बहु वीनती, तुम रीझौ जिहि हाल ।।
तिन तुव पद पंकज श्रवत, आनँद घन अनुराग।
सो जुग पद वंदौ सदा, मान धन्य निज भाग ।। ६३ ॥

(नाम स्मरण) शार्दूल विक्रीडित वृत्त

यज्जापः सकृदेव गोकुलपतेराकर्षकस्तत्क्षणा—
द्यत्र प्रेमवतां समस्तपुरुषार्थेषु स्फुरेत्तुच्छता।
यन्नामांकितमंत्रजापनपरः प्रीत्या स्वयं माधवः—
श्रीकृष्णोऽपि तदद्भुतं स्फुरतु मे राधेति वर्णद्वयम्६४

दोहा—एक वार हू लेहि मुख, राधा-राधा नाम।
श्रवण सुनत ततकाल वर, धाय मिलै घनश्याम ।।
याही रस-मय नाम सौं राखत प्रेम अपार।
लगत तुच्छ पुरुषार्थ सब, यह आगैं सुकुमार ।।
जो मन मोहन करत बस, सबहिन कौ चित चोर।
सो या नामहिं प्रीति सौं, जपत रहत निशि भोर ।।
सो यह राधा वरण द्वि, मो हिय फुरौ विशाल।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति हू, विसरै नहिं त्रैकाल ।।६४।।

(नाम स्मरण) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

कालिंदीतटकुञ्जमंदिरगतो योगीन्द्रवद्यत्पद—
ज्योतिर्ध्यानपरः सदा जपति यां प्रेमाश्रुपूर्णो हरिः।
केनाप्यद्भुतमुल्लसद्रतिरसानंदेन संमोहिता—
सा राधेति सदा हृदि स्फुरतु मे विद्या परा द्व्यक्षरा ६५

चौपाई–यमुना तट निकुंज सुखदाई ।
तामैं राजत रसिक कन्हाई ।।
जिहिं पग शिर योगीन्द्र नवावत ।
सो मोहन राधा हिय ध्यावत ।।
प्रेम नीर दृग मुख राधा रट ।
अद्भुत रति रस सुख मोहित नट ।।
सो मो हिय राधा युग अक्षर ।
विद्या परम प्रकाशै अति कर ।।९५।।

(नाम स्मरण) शार्दूल विक्रीडित वृत

देवानामथ भक्तमुक्तसुहृदामत्यंतदूरं च यत्–
प्रेमानंदरसं महासुखकरं चोच्चारितं प्रेमतः ।
प्रेम्णाकर्णयते जपत्यथ मुदा गायत्यथालिष्वयं–
जल्पत्यश्रुमुखो हरिस्तदमृतं राधेति मे जीवनम् ।।९६

पद—सुरगण भक्त सु मुक्त सुहृद तिनसौं रहि न्यारौ ।
राधा नाम अनूप प्रेम आनँद रहै प्यारौ ।।
महा सुखाकर प्रेम सहित उच्चारत जोई ।
सुनत प्रीति-बस श्याम सुन्दर आनँद अति होई ।।
निज मुख जप पुनि गान करत पुलकित गद गद स्वर ।
श्रवत प्रेम जल नैन ताहि उर लावत आतुर ।।
सोई अमृत रूप नाम राधा सुकुमारी ।
मेरी जीवन मूल सदा ताकी वलिहारी ।।९६।।

(नामस्मरण) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

या वाराधयति प्रियं व्रजमणिं प्रौढ़ानुरागोत्सवैः–
संसिध्यंति यदाश्रयेण हि परं गोविन्दसख्युत्सुकाः।
यत्सिद्धिः परमापदैकरसवत्याराधनात्ते नु सा–
श्रीराधाश्रुतिमौलिशेखरलतानाम्नी मम प्रीयताम् ॥९७

सवैया-व्रजकी मणि मोहनलाल महा अनुराग रसोत्सव सौंजिहिं ध्यावै.
याही श्रीराधिका नाम कृपावल सिद्धि सवै मन वांछित पावै ॥
देत गोविंद की सख्य अराधत तत्त्व परा रस कौं दरसावै ।
सो श्रुति मौलि शिरोमणि मोहि कवै करणा करकैं अपनावै९७

(श्रृंगार समय) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

गात्रे कोटितडिच्छवि प्रविततानंदच्छवि श्रीमुखे–
विंबोष्ठे नवविद्रुमच्छवि करे सत्पल्लवैकच्छवि ।
हेमांभोरुहकुड्मलच्छवि कुचद्वन्द्वेऽरविंदेक्षणां–
वंदे तन्नवकुञ्जकेलिमधुरं राधाभिधानं महः ॥ ९८ ॥

कर्षा-ललित अँग माँहि दुति दामिनी देखियत वदन आनँद वरषा सुहाई । अधर अतिअरुण विद्रुम छटा मृदुल कर रुचिरअँगुरीन पल्लव लजाई ॥ उरज जुग मनहु कंचन कमल कली अलि दृगन शुच कंज उपमा छिनाई । कुंज नव केलि माधुर्य जाकौ सोई राधिका नाम मैं शीश नाई ॥९८॥

(श्रीहितसखी-प्रिया-परस्पर सम्भाषण) मंदाक्रान्ता छन्द

मुक्तापंक्तिप्रतिमदशना चारुबिंबाधरोष्ठी—
मध्ये क्षामा नवनवरसावर्त्तगंभीरनाभिः ।
पीनश्रोणिस्तरुणिमसमुन्मेषलावण्यसिंधु—
वैंदग्धीनां किमपि हृदयं नागरी पातु राधा ॥९९॥

माँझ—मुक्ता हल दशनावलि मानौ अधरन बिम्ब ललाई ।
कृशि कटि सुभग नवीन भँवर रस नाभि गंभीर सुहाई॥
पुष्ट नितंब झलक तरुनाई शोभा निधि सरसाई ।
सो चातुर्य अवधि राधा नागरि मेरी सुखदाई ॥९९॥

(श्रीहितसखी-प्रिया परस्पर सम्भाषण) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

स्निग्धाकुञ्चितनीलकेशि विदलद्बिंबोष्ठि चंद्रानने—
खेलत्खञ्जनगंजनाक्षि रुचिमन्नासाग्रमुक्ताफले ।
पीनश्रोणि तनूदरि स्तनतटीवृत्तच्छटात्यद्भुते—
राधे श्रीभुजवल्लिचारुवलये स्वं रूपमाविष्कुरु॥१००॥

रेखता–सचिक्कन श्याम घुँघरारे, छबीले केश सटकारे,
अधर वर बिंब फल शोभा, वदन चंदा उजारी है।
चपल खंजन सु मद गंजन,ललित दृग रूप के प्याले,
लसै नथ नासिका सुन्दर, सु श्रोणी पुष्ट भारी है॥
उदर शुच सूक्ष्म मन मौहै,उरज युग गोल अद्भुत तर
कलाई नील मणि चूरी,चमक अनुपम अपारी है।

लुनाई सार सुख झेली, निपट चित चोर अलबेली,
स्वरूप अपना मुझै नैनों, दिखाओ स्वामिनी प्यारी॥१००॥

(शृङ्गार समय) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

लज्जांतःपटमारचय्य रचितस्मायप्रसूनांजलौ—
राधांगे नवरंगधाम्नि ललितप्रस्तावने यौवने ।
श्रोणीहेमवरासने स्मरनृपेणाध्यासिते मोहने—
लीलापांगविचित्रतांडवकलापांडित्यमुन्मीलति॥१०१॥

दोहा—लाज आड पट रचन वर, मुसकन वरसत फूल ।
प्यारी अँग रँग भूम तुव, योवन नट छवि मूल ॥
कटि मंडल सोई कनक, सिंहासन छवि देत ।
राजत मदन नरेश मन-मोहन मन हरि लेत ॥
रस लीला करि-करि मधुर, नचवत नैन विशाल ।
नाट्य होत सोई मनौं, अद्भुत रूप रसाल ॥
प्रगट होत पांडित्य यह, अंग-अंग सुकुमार ।
यह शोभा पै मैं सदा, वार-वार बलिहार ॥१०१॥

(मंगला समय) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

सा लावण्य चमत्कृतिर्नवत्रयोरूपं च तन्मोहनं—
तत्तत्केलिकलाविलासलहरीचातुर्यमाश्चर्यभूः ।
नो किंचित्कृतमेव यत्र न नुतिर्नागो न वा संभ्रमो—
राधामाधवयोःस कोपि सहजःप्रेमोत्सवःपातुवः॥१०२॥

छन्द—सोई लावण्य चमत्कृत वैस नवीन सु मोहनी रूप निकाई
केलि कलान विलास तरंग उठै यह ठाँव नहीं चतुराई।
कृत्रमी जहाँ प्रेम नहीं न बिनै अपराध न संभ्रम की समियाई
राधिका माधव प्रेम विचित्र रसज्ञन पालहु सो सुखदाई ॥१०२

(चरण स्मरण) मन्दाक्रान्ता छन्द

येषां प्रेत्तां वितरति नवोदारगाढानुरागान्–
मेघस्यामो मधुरमधुरानंदमूर्त्तिमुकुंदः ।
वृन्दाटव्यां सुमहिमचमत्कारकारीण्यहो किं–
तानि प्रेत्तेद्‌भुतरसनिधानानि राधापदानि ॥१०३॥

छन्द—जो कोई प्रिया चरण मन राखत ।
तिनहिं मुकुंद मूर्ति आनँद घन श्याम सुन्दर अनुराग देत अत।
क्षण-क्षण चमत्कार कानन में देत सदा नहिं नेक विसारत।
सो रसनिधि राधा पद अंबुज मुदित होहुँ कब नैन निहारत॥१०

(शैय्या समय) शिखिरणी छंद

वलान्नीत्वा तल्पं किमपि परिरभ्याधरसुधां–
निपीय प्रोल्लिख्य प्रखरनखरेण स्तनभरम् ॥
ततो नीवीं न्यस्ते रसिकमणिना त्वत्करधृते–
कदाकुंजच्छिद्रे भवतु मम राधेनुनयनम् ॥ १०४ ॥

छन्द–हठ कर मोहनलाल प्रिया कौं शुचि सिज्या बैठाईरी ।
आलिंगन अधरामृत लै उर नखछत छवि दरसाईरी ॥
पुन नव रसिक शिरोमणी प्रीतम सघन कुंज अतुराईरी।
परसत नीवी सो निरखौं मुख कब दृग रंध्र लगाईरी ॥१०४

(संकेत समय) शिखिरिणी छन्द

करं ते पत्रालिं किमपि कुचयोः कर्त्तु मुचितं—
पदं ते कुंजेषु प्रियमभिसरंत्या अभि तौ ।
दृशौ कुंजच्छिद्रैस्तव निभृतकेलिं कलयितुं—
यदा वीक्षे राधे तदपि भविता किं शुभदिनम्॥१०५॥

छन्द—निज कर तव उरजन प्यारी ।
पत्रावलि रचौं सम्हारी ॥
निज कुंज चलौ पिय माहीं ।
सँग लागहुँ ज्यों परछाँहीं ॥
पिय संग करौ रस केली ।
निरखौं रंध्रनि दृग मेली ॥
राधे यह आश पुजै है ।
ऐसो कब शुभ दिन ह्वै है ॥

(संकेत समय) शिखिरिणी छन्द

रहो गोष्ठी श्रोतुं तव निजविटेंद्रेण ललितां—
करे धृत्वा त्वां वा नवरमणतल्पे घटयितुम् ।
रतामर्दस्रस्तं कचभरमथो संयमयितुं—
विदध्याः श्रीराधे मम किमधिकारोत्सवरसम् ॥१०६॥

छन्द-वत रसियन शिर मुकुट लाल सौं रस बतियाँ बतरातीं ।
निर्जन कंज प्रीति जुत सुन्दर सुनत सिराऊँ छातीं ॥
पिय बोलै निज सेज ठड़ीं तुम रूप सुधा रस मातीं ।
तव गहि कर प्रीतम पलका पै पहुँचाऊँ हुलसाती ॥

अमित विहार शिथिल कवरी लखि गूँथहुँ रचि सुख पाती ।
इन अधिकार उत्सवन कौं बलि कवलौं रहौं ललचाती ॥१०६॥

(बन विहार) मन्दाक्रान्ता छंद

वृन्दाटव्यां नवनवरसानंदपुंजे निकुंजे—
गुंजद्भृंगीकुलमुखरिते मंजुमंजुप्रहासैः ।
अन्योन्यक्षेपणनिचयनप्राप्तसंगोपनाद्यैः
क्रीडज्जीयाद्रसिकमिथुनं क्लृप्तकेलीकदम्बम् ॥ १०७ ॥

बसन्त—राजत वृन्दावन नव निकुञ्ज ।
जहाँ नव-नव रस आनन्द पुञ्ज ॥
मधु मत्त मधुप गुञ्जत विशाल ।
परि हास्य केलि करें लाल बाल ॥
मिलि खेलें परस्पर खेल सार ।
पिय मुरली वसन नहिं देत हार ॥
मिल हसन लसन दम्पति विहार ।
तिन केल समूहन जै जै कार ॥१०७॥

(श्रीहित प्रिया-परस्पर सम्भाषण) शार्दूलविक्रीडित वृत

रूपं शारदचंद्रकोटिवदने धम्मिल्लमल्लीस्रजा—
मामोदैर्विकलीकृतालिपटले राधे कदा तेऽद्भुतम् ।
ग्रैवेयोज्वलकंचुकंठि मृदुदोर्वल्लीचलत्कंकणे—
वीक्षे पट्टदुकूलवासिनि रणन्मंजीरपादाम्बुजे ॥१०८॥

छन्द—करोरन शरद रैंन के चन्द्रमा सी लसै राधिका चन्द्र मुख वर उजेरी । चमेली सु चोटी गुंही है महक सौं लुभाई है

विह्वल मधुपनी घनेरी ।। ललित ग्रीव भूषण मृदुल हाथ कंगन सुरंग चीर अंग-अंग शोभा वगेरी । वजै पाँय नूपुर अनूपम ये भाँकी लगै दीठ ना पै वसै दीठ मेरी ।।१०८।।

(श्रीहित सखी प्रियाजी परस्पर-सम्भाषण) पृथ्वी छन्द

इतो भयमितस्त्रपा कुलमितो यशः श्रीरितो—
हिनस्त्यखिलशृंखलामपि सखीनिवासस्त्वया ।
सगद्गदमुदीरितं सुबहुमोहनाकांक्षया—
कथंकथमयीश्वरि प्रहसितैः कदा म्रेडयसे ।। १०६।।

छन्द—मोहन मन अनुराग हिये में बोली मुख वृषभानु दुलारी । इत भय लाज मोहि री सजनी इत कुल यश सम्पति अति भारी ।। नट नागर नव नेह इतै जिहि सरवस यह शृङ्खला निवारी । इतै सखिन मध रहन अलीरी जानत तू सब पीर हमारी ।। प्रीतम मिलन चाह गद गद स्वर सुनतहिं मैं कब बोलौं प्यारी । कहा-कहा कह कहत स्वामिनी हँसन लगैं वृषभानु दुलारी ।। १०६ ।।

(श्रीहित सखी प्रियाजी परस्पर-सम्भाषण) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

श्यामे चाटुशतानि कुर्वति सहालापान्प्रणेत्री मया—
गृह्णाने च दुकूलपल्लवमहो हुंकृत्य मां द्रक्ष्यसि ।
विभ्राणे भुजवल्लिमुल्लसितया रोमस्रजालंकृतां—
दृष्ट्वा त्वां रसलीनमूर्त्तिमथ किं पश्यामि हास्यं ततः ११०

छन्द-प्रिय बोलत वैन अधीन प्रिया न सुनै सखि सौं बतराय रही ।
जब अंचल छोर गह्यौ रसिका भ्रुव मोर तवै हुंकार कही ।।

बहुरौं अलि ओर लियौ मुख मोर तवै चट लालन बाँह गही ।
पुलके तन रोम हँसी रसमग्न भई कब देखहुँ रूप वही ॥११०॥

(बन बिहार) पृथ्वी छन्द

अहो रसिकशेखरः स्फुरति कोपि वृन्दावने—
निकुञ्जनवनागरीकुचकिशोरकेलिप्रियः ।
करोतु स कृपां सखीप्रकटपूर्णनत्युत्सवो—
निजप्रियतमापदे रसमये ददातु स्थितिम् ॥ १११ ॥

दोहा—कही न परै किशोर छवि, रसिकन कौ शिरताज ।
राजत श्रीवन कुंज में, अद्भुत रूप जहाज ॥
नव नागरि कंदुक उरज, खेलन जिहिं चित चाव ।
कर जोरत पैयाँ परत, सखियन के रस भाव ॥
प्यारी पग राखत सदां, शीष मुकट नँदलाल ।
कृपा दृष्टि करि मोहि सो, कृत-कृत करौ निहाल ॥१११॥

(रास समय) पृथ्वी छन्द

विचित्रवरभूषणोज्ज्वलदुकूलसत्कंचुकैः—
सखीभिरतिभूषिता तिलकगंधमाल्यैरपि ।
स्वयं च सकलाकलासु कुशलीकृता नः कदा—
सुरासमधुरोत्सवे किमपि वेशयेत्स्वामिनी ॥ ११२ ॥

कुण्डलिया–सखियन नें रचि कें कियौ, ललित लड़ी शृंगार ।
पहिराये भूषण सुभग, जगमगात रस सार ॥

जगमगात रस सार, सेत कंचुकी शुचि सारी।
भाल विंदु अँग अतर, सुमन माला हिय धारी ॥
सकल कला निज निपुन, स्वामिनी दै निज उतरन।
सिखँ निर्त कब लैंहि, रास मधि मुहि निज सखियन ११२

(रास समय) पृथ्वी छन्द

कदा सुमणिकिंकिणीवलयनूपुरप्रोल्लसन्—
महामधुरमंडलाद्भुतविलासरासोत्सवे ।
अपि प्रणयिनो बृहद्भुजगृहीतकंठ्यो वयं—
परं निजरसेश्वरीचरणलक्ष्म वीक्षामहे ॥ ११३ ॥

छन्द—मणि किंकिणि कटि लसी नीलमणि चुरी ललित कर।
पग नूपुर रुचि दैंन चरण राजत अति सुन्दर ॥
रासोत्सव रस रास तहाँ रसिया नट नागर।
मेरें दै गलबाँह नचै थेई-थेई तत्ता कर ॥
तहँ मैं अपनी स्वामिनी प्राण प्रिया पग अंक छवि।
देखत हो रहौं एकटक बनि है ऐसी बनक कब ॥११३॥

(अभिलाषा) शार्दूलविक्रीडित वृत

यद्गोविंदकथासुधारसहृदे चेतो मया जृंभितं—
यद्वा तद्गुणकीर्त्तनार्चनविभूषाद्यैर्दिनं प्रापितम् ।
यद्यत्प्रीतिरकारि तत्प्रियजनेष्वात्यंतिकी तेन मे—
गोपेंद्रात्मजजीवनप्रणयिनी श्रीराधिका तुष्यतु॥११४।

छन्द—जो मैं नंद-नंदन गुण गायौ।
कथा सुधा रस चित्त डुवायौ ॥
पूजन कर शृंगार बनाये।
यह विधि मैं निश-दिवश विताये ॥
अथवा लाल भक्त जे प्यारे।
तिन सौं हित कर दिननि गुजारे।
तौ यह फल मोहिं मिलै अगाधा।
होय प्रसन्न तिन जीवन राधा ॥ ११४ ॥

(प्रार्थना) शिखिरिणी छन्द

रहो दास्यं तस्याः किमपि वृषभानोर्व्रजवरी—
यसः पुत्र्याः पूर्णप्रणयरसमूर्त्तेर्यदि लभे।
तदा नः किं धर्मैः किमु सुरगणैः किं च विधिना—
किमीशेन श्यामप्रियमिलनयत्नैरपि च किम् ॥११५॥

सोरठा—व्रज नृप श्री वृषभानु, तासु सुता मन मोहिनी।
प्रेममयी रसखान, रस पूरित मूरति ललित ॥
भेदिन सुरत विहार, होहुँ जु तिनकी सहचरी।
तौ वहु धर्म विचार, कहा प्रयोजन आपनौं ॥
नाहिन पुन निज काज, इंद्रादिक सुर गण जिते।
ब्रह्मादिक शिवराज, रहैं आपने गृह सुखी ॥
औरन कौन गनाय, याहू सौं चढ़ती कहौं।
मोहन मिलन उपाय, किह कारन पुनि कीजिये ॥११५॥

(प्रिया-हितसखी परस्पर सम्भाषण) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

चन्द्रास्ये हरिणाक्षि देवि सुनसे शोणाधरे सुस्मिते—
चिल्लक्ष्मीभुजवल्लि कम्बुरुचिरग्रीवे गिरीन्द्रस्तनि ।
भञ्जन्मध्यवृहन्नितंवकदलीखंडोरुपादाम्बुज—
प्रोन्मीलन्नखचंद्रमंडलि कदा राधे मयाराध्यसे ॥११६॥

दोहा—चन्द्र मुखी मृग-लोचनी, नासा सुघर अनूप ।
मन्द हसन मन मोहिनी, भुज सुन्दर रस रूप ॥
त्रिवली जुत ग्रीवा ललित, छवि सुमेरु कुच गोल ।
कृश कटि पीन नितम्ब अति, कदलि जंघ छवि टोल ॥
चरण कमल सुठ सोंहने, नख चंदन की कांति ।
छिटकि रही, ह्वै जात जहाँ, अगनित शशि दुति भ्रांति ॥
अैसी सुन्दर स्वामिनी, तृन तोरौं बलिहार ।
आराधौं तिनकौं सदा, मन वच क्रम आधार ॥ ११६ ॥

(अत्यानन्य) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

राधापादसरोजभक्तिमचलामुद्वीक्ष्य निष्कैतवां—
प्रीतः स्वं भजतोपि निर्भरमहाप्रेम्णाधिकं सर्वशः ।
आलिंगत्यथ चुम्बति स्ववदनात्ताम्बूलमास्येर्पयेत्—
कंठे स्वां वनमालिकामपि मम न्यस्येत्कदा मोहनः११७

छन्द—प्यारी चरण सरोज प्रीति दृढ़ जानिकैं, ।
मोपै मोहनलाल रीझि हित मानिकैं ॥
निज भक्तन सौं अधिक नेह उर आनहीं ।
प्राण प्रिया की कृपा-पात्र मोहि जानहीं ॥

आलिंगन मुख चुम्बन करत सनेह सौं।
निज मुख चर्वित पान देत अति नेह सौं॥
कंठ प्रसादी हार हिये पहिरावहीं।
यह विधि कब मम रोम-रोम सुख पावहीं॥ ११७॥

(प्रार्थना) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

लावण्यं परमाद्भुतं रतिकलाचातुर्यमत्यद्भुतं—
कांतिःकापि महाद्भुता वरतनोर्लीलागतिश्चाद्भुता।
दृग्भंगी पुनरद्भुताद्भुततमा यस्याः स्मितं चाद्भुतं—
सा राधाद्भुतमूर्त्तिरद्भुतरसं दास्यं कदा दास्यति॥११८

चौपाई-अति अद्भुत प्रिय वदन लुनाई।
अद्भुत रति कलान चतुराई॥
अद्भुत तन की कांति मनोहर।
अद्भुत गति लीला वर सुन्दर॥
अद्भुत निपट नैन की नितंन।
परमाद्भुत वाकी मृदु विहसन॥
अैसी अद्भुत मूरति राधा।
अद्भुत दास्य देंहि सुख राधा॥ ११८॥

(वदन स्मरण) पृथ्वी छन्द

भ्रमद्भ्रु कुटिसुंदरं स्फुरितचारुबिंबाधरं—
ग्रहे मधुरहुंकृतं प्रणयकेलिकोपाकुलम्॥
महारसिकमौलिना सभयकौतुकं वीक्षितं—
स्मरामि तव राधिके रतिकलासुखं श्रीमुखम्॥११९॥

छन्द—ललित भृकुटि नचन फरक अधर बिंब चारी।
वसन गहत लाल मधुर उघटत हुंकारी॥
प्रीति केलि कोप सरस सतगुण अति शोभा।
महा रसिक मुकट लाल संकित लखि लोभा॥
झलकत सुख सुरति केलि क्षण-क्षण जिहिं वारी।
सुन्दर तव श्रीमुख मैं सुमिरत नित प्यारी॥ ११९॥

(शृङ्गार समय) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

उन्मीलन्मुकुटच्छटापरिलसद्दिक्चक्रवालं स्फुरत—
केयूरांगदहारकंकणघटानिर्धूतरत्नच्छवि।
श्रोणीमंडलकिंकिणीकलरवं मंजीरमंजुध्वनि—
श्रीमत्पादसरोरुहं भज मनो राधाभिधानं महः॥१२०

पद—प्यारी जू कैं मुकुट शीष पै भासै।
सामुहि साहत लाल परस्पर, अँग-अँग छटा प्रकासै॥
बाजूबँद नव-रत्न भुजन उर, मोतिन माल विराजै।
गोरी कनक कलाई सुन्दर, नीलम चुरी सुराजै॥
शुच पतरी कटि तट किंकिणि की, मधुर-मधुर रव सोहै।
सुन्दर पद-पंकज नूपुर ध्वनि, रुनक-झुनक मन मोहै॥
रे मन ऐसी ललित सुन्दरी, रोम-रोम छबिरासी।
जासु राधिका नाम विदित भज, उत्सव मन रसरासी॥१२०॥

(प्रिया स्वरूप वर्णन) शार्दूलविक्रीडित वृत

श्यामामंडलमौलिमंडनमणिः श्यामानुरागस्फुर—
द्रोमोद्भेदविभाविताकृतिरहो काश्मीरगौरच्छविः।

सातीवोन्मदकामकेलितरला मां पातु मंदस्मिता—
मंदारद्रुमकुञ्जमंदिरगता गोविंदपट्टेश्वरी ॥ १२१ ॥

छन्द—नव व्रज जुवति कदम्ब शिरोमणि लाडिली ।
छकी छैल अनुराग पुलकि रोमावली ॥
केशर सी दुति गौर वदन छवि भामिनी ।
काम केलि मदमत्त चपल अभिरामिनी ॥
मन्द-मन्द मुसक्यान सुमन वरषावहीं ।
कल्पलता मृदु कुंज सघन छवि छावहीं ॥
नवल वधूटी पिय जीवन धन नागरी ।
मो पै होहु कृपालु रूप गुण आगरी ॥ १२१॥

(मंगल समय) पृथ्वी छन्द

उपास्यचरणांबुजे व्रजभृतां किशोरीगणै—
र्महद्भिरपि पूरुषैरपरिभाव्यभावोत्सवे ।
अगाधरसधामनि स्वपदपद्मसेवाविधौ—
विधेहि मधुरोज्ज्वलामिव कृतिं ममाधीश्वरि ॥१२२॥

छन्द–नव-नव व्रज नागरि यूथ उजागरि जिन पद-कमल उपासी
महा भागवत तिन भावोत्सव जानत ना सुखरासी ॥
अगम अगोचर रसरासी तिन निज पद-कंज खवासी ।
देहु दई जो मोहन कों बलि स्वामिनी विपिन बिलासी॥१२२

(शैय्या समय) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

आनम्राननचंद्रमीरितदृगापांगच्छटामन्थरं—
किंचिद्दर्शिशिरोवगुंठनपटं लीलाविलासावधिम् ।

उन्नीयालकमंजरीःकररुहैरालक्ष्य सन्नागर—

स्यांगेंगं तव राधिके सचकितालोकं कदा लोकये।१२३

सोरठा—नीचे कीने नैन, लखत कनखियन लाल तन।
शोभा कहन बनै न, छवि की सीम विहारिनी ॥
लीला रास विलास, केलि अवधि वर भामिनी।
कर-कर मृदु कर न्यास, अलक सँवारत चिवुक सौं ॥
लपटी प्रीतम अँग, चकित बिम्ब निज वदन लखि।
छवि की ललित तरंग, कब दृग भर-भर देखिहौं ॥१२३॥

(प्रार्थना) स्रग्धरा छन्द

राकाचंद्रो वराको यदनुपमरसानंदकंदाननेंदो—

स्तत्तादृक्चंद्रिकाया अपि किमपि कलामात्रकस्याणुतोपि।

यस्याः शोणाधरश्रीविधृतनवसुधामाधुरीसारसिंधुः—

साराधाकामबाधाविधुरमधुपतिप्राणदा प्रीयतां नः॥१२४॥

कवित्त—शरद के चन्द्रमा सौं नीकौ है मुखारविंद रस की आनन्द-कन्द अद्भुत निकाई है। जाहि अवलोक होत फीकी चन्द जोति वर फैल रहो चहूँ ओर वदन जुन्हाई है॥ अधर अरुन सुधा माधुरी को सार निधि जाहि मिलैं अनमिल मानत कन्हाई है। मदन की वेदन सौं व्याकुल अमर लाल ताहि प्राण देत दान राधा सुखदाई है॥ १२४॥

(वदन स्मरण) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

राकानेकविचित्रचंद्र उदितः प्रेमामृतज्योतिषां—
वीचीभिः परिपूरयेदगणितब्रह्मांडकोटिं यदि ।
वृन्दारण्यनिकुंजसीमनि तदाभासः परं लक्ष्यसे—
भावेनैव यदा तदैव तुलये राधे तव श्रीमुखम् ।। १८

छन्द—शरद विचित्र अनंत चन्द्रमा उदित होंहि इक ठांवें ।
प्रेम अमी दुति लहरिन सौं ब्रह्मांड कोटि चमकावें ॥
प्यारी तव श्रीमुख-मयंक की उपमा कौं नहिं पावें ।
श्रीवन कंज-कुंज तव शोभा पूरित अति छवि छावें ॥१८

(प्रिया स्वरूप) श्रृग्धरा वृत

कालिंदीकूलकल्पद्रुमतलनिलयप्रोल्लसत्केलिकंदा—
वृन्दाटव्यां सदैव प्रकटतररहोवल्लवीभावभव्या ।
भक्तानां हृत्सरोजेमधुररससुधास्यंदिपादारविन्दा—
सांद्रानंदाकृतिर्नः स्फुरतु नवनवप्रेमलक्ष्मीरमंदा ।। १

सवैया–यमुना तट कल्पलता सु निकुंज प्रकाशित केलि समूह त
वृन्दावन नित्त रहस्य उदै, विन योषित भाव लखात नहीं ॥
जिनके पग भक्तन के हिय में, मधुरामृत सार श्रवैं नितहीं ।
घन आनँद रूप नवीन महा, प्रिय प्रेम फुरौ नित मो हिय हीं॥

(प्रार्थना) श्रृग्धरा छन्द

शुद्धप्रेमैकलीलानिधिरहह महातंकमंकस्थिते च—
प्रेष्ठे बिभ्रत्पदभ्रस्फुरदतुलकृपास्नेहमाधुर्यमूर्त्तिः ॥

प्राणालीकोटिनीराजितपदसुषमामाधुरीमाधवेन—
श्रीराधामामगाधामृतरसभरितेकर्हिदास्येभिषिंचेत् ॥१२७॥

चौपाई-शुद्ध प्रेम लीला निधि गोरी।
भरै प्रीति करि पियहि अँकोरी ॥
अति कृपालु हित ही की मूरति।
नव माधुर्य्य सार वपु पूरति ॥
मोहन निरखि प्रिया पग शोभा ॥
वारत प्राण नैन मन लोभा ॥
मो पै सो करुणा निधि राधा।
अमी–दास्य–रस श्रवहु अगाधा ॥१२७॥

(प्रार्थना) शार्दूलविक्रीडित वृत

वृन्दारण्यनिकुञ्जसीमसु सदा स्वानंगरंगोत्सवै—
र्माद्यत्यद्भुतमाधवाधरसुधामाध्वीकसंस्वादनैः।
गोविंदप्रियवर्गदुर्गमसखीवृन्दैरनालक्षिता—
दास्यं दास्यति मे कदा नु कृपया वृन्दावनाधीश्वरी॥१२८॥

दोहा—वृन्दावन कुञ्जन सदा, मदन रंगरँगी वाल।
प्रीतम अधरामृत पियें, माती रहत निहाल॥
लाल और सखि वृन्दहू, लखत न जिनके खेल।
कब वन रानी कृपा कर, देंहि टहल रस केल॥१२८॥

(शृङ्गार समय) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

मल्लीदामनिबद्धचारुकबरं सिंदूररेखोल्लस—
त्सीमंते नवरत्नचित्रतिलकं गंडोल्लसत्कुंडलम्।

निष्कग्रीवमुदारहारमरुणं बिभ्रद्दुकूलं नवं—
विद्युत्कोटिनिभं स्मरोत्सवमयं राधाख्यमीक्षे महः॥१२६

कुंडलिया—वन फूलन वैनी गुही, माँग रची सिंदूर।
टीकौ रतन जड़ाव वर, लसत भाल छवि भूर॥
लसत भाल छवि भूर, झलक कुंडल शुचि गंडन।
पदक हार लसै कंठ, सुरँग सारी तन नूतन॥
दामिन कोटि समान, ललित अंगन दुति झलकन।
मदनमहोत्सव युक्त, तेज निरखौं राधावन॥१२६

(प्रिया स्वरूप वर्णन) स्रग्धरा छन्द

प्रेमोल्लासैकसीमा परमरसचमत्कारवैचित्र्यसीमा—
सौंदर्यस्यैकसीमा किमपि नववयोरूपलावण्यसीमा।
लीलामाधुर्यसीमा निजजनपरमौदार्यवात्सल्यसीमा—
साराधासौख्यसीमा जयति रतिकलाकेलिमाधुर्यसीमा१३०

कुण्डलिया—सीमा प्रेमोल्लास की, सुवर शिरोमणि बाल।
चमत्कार रस की सरस, सीम विचित्र विशाल॥
सीम विचित्र विशाल, अकथनी सुन्दरताई।
नव वय छवि लावण्य, सीम लीला मधुराई॥
निज रसिकन पै अति, उदार करुणा की सीमा।
जय राधा सुख सीम, केलि रति माधुरि सीमा॥१३०

(प्रिया स्वरूप वर्णन) शार्दूलविक्रीडित वृत

यस्यास्तत्सुकुमारसुन्दरपदोन्मीलन्नखेंदुच्छटा—
लावण्यैकलवोपजीविसकलश्यामामणीमंडलम्।

शुद्धप्रेमविलासमूर्त्तिरधिकोन्मीलन्महामाधुरी—
धारासारधुरीणकेलिविभवा सा राधिका मे गतिः १३१

छन्द—जिन तुव पद सुकुमार चन्द्र नख छटा लुनाई।
तासु लेश ब्रज वधुन सदा जीवन सुखदाई॥
मूरति प्रेम बिलास महा माधुरि रस वरषति।
छवि निधि अगम अपार सोई राधा मेरी गति॥१३१॥

(शृङ्गार समय) पृथ्वी छन्द

कलिंदगिरिनंदिनीसलिलबिंदुसंदोहभृन्—
मृदूद्गतिरतिश्रमं मिथुनमद्भुतक्रीडया।
अमंदरसतुंदिलभ्रमरवृन्दवृन्दाटवी—
निकुंजवरमंदिरे किमपि सुन्दरं नंदति॥ १३२॥

दोहा—कालिंदी जल कन लियें, आवत त्रिविधि समीर।
सुरत श्रमित सुकुमार विव, सींचत केलि अधीर॥
अति अद्भुत कोऊ रस पगे, गौर श्याम छवि पुञ्ज।
आनन्दित वन कुञ्ज में, करत मत्त अलि गुञ्ज॥१३२॥

(मंगल समय) मन्दाक्रान्ता वृत्त

व्याकोशेंदीवरविकसितामंदहेमारविंद—
श्रीमन्निस्यंदनरतिरसांदोलि कंदर्पकेलि।
वृन्दारण्ये नवरससुधास्यंदिपादारविंदं—
ज्योतिर्द्वंद्वं किमपि परमानंदकंदं चकास्ति॥ १३३॥

छन्द—प्रफुलित नील सरोज विपिन इक कनक कंज सी फूली।
शोभा युत विव छके केलि रस थकित विशुध गति भूली।
नव रस सुधा श्रवत पद-पंकज अद्भुत कोऊ इक जोरी।
परम जोति आनंदकंद अति उदित निकुंजनि खोरी।१३३

(शैया समय) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

ताम्बूलं क्वचिदर्पयामि चरणौ संवाहयामि क्वचिन्—
मालाद्यैः परिमंडये क्वचिदहो संवीजयामि क्वचित्।
कर्पूरादिसुवासितं क्व च पुनः सुस्वादु चांभोमृतं—
पायाम्येव गृहे कदा खलु भजे श्रीराधिकामाधवौ॥१३४॥

चौपई-कवहुँक सुन्दर पान लगाऊँ।
कवहुँ कमल पग चाँपि रिझाऊँ॥
कवहुँ कुसुम भूषन गुहि लाऊँ।
पहिराऊँ कब विजन ढुराऊँ॥
कर्पूरादि सुगंधित पानी।
लै लै कवहुँ पिवावहुँ आनी॥
राधा माधव कुंज निवासी।
यौं कब सेवहुँ मैं रसरासी॥१३४॥

(प्रिया स्वरूप वर्णन) शार्दूलविक्रीडित वृत

प्रत्यंगोच्छलदुज्ज्वलामृतरसप्रेमैकपूर्णाम्बुधि—
र्लावण्यैकसुधानिधिः पुरुकृपावात्सल्यसारांबुधिः।
तारुण्यप्रथमप्रवेशविलसन्माधुर्यसाम्राज्यभू—
र्गुप्तः कोपि महानिधिर्विजयते राधारसौकोवधिः॥१३५॥

कवित्त–सुन्दरताई रूप औ लुनाई की अवधि वर वात्सल्य सिंधु निज सखिन फुरत हैं। अंग-अंग प्रेम निधि पूरित अपार अति उज्वल शृंगार की तरंग उछलत हैं ।। प्रथम प्रवेश नव यौवन विलास तासौं माधुरी श्रवत अति रंग सरषत हैं।जय हो सुकुमारी रस अंबुद अपारी निधिहू की निधि प्यारी सदा गुप्तही रहतहैं१३५

(प्रार्थना) मन्दाक्रान्ता छन्द

यस्याः स्फूर्जत्पदनखमणिज्योतिरेकच्छटायाः—
सांद्रप्रेमामृतरसमहासिंधुकोटिर्विलासः ।
सा चेद्राधा रचयति कृपादृष्टिपातं कदाचिन्—
मुक्तिस्तुच्छीभवति बहुशः प्राकृताप्राकृतश्रीः ॥ १३६ ॥

छन्द—जिनके जगमगात पद-पंकज नख-मणि छटा विकास ।
निपट प्रेम रस अमी सिंधु अति कोटिन प्रकट विलास ।।
सो वृषभानुदुलारि कदाचित करुणा दृष्टि करांहि ।
गिनौं तुच्छतव मुक्ति अलौकिक लौकिक सुख किहिं मांहि१३६

(अभिलाष) शिखिरिणी छन्द

कदा वृन्दारण्ये मधुरमधुरानंदरसदे—
प्रियेश्वर्य्याः केलीभवननवकुंजानि मृगये ।
कदा श्रीराधायाः पदकमलमाध्वीकलहरी—
परीवाहैश्चेतो मधुकरमधीरं मदयिता ॥ १३७ ॥

छन्द –कानन वरषत मधुर-मधुर आनँद रस नित-नित ।
प्रियेश्वरिहिं कब केलि कुंज ढूँढ़ौं तहाँ जित कित ।।

तिन पद-कंज पराग सदा मोमन अलि मोहित ।
मातौ रहै अधीर होय कब अस गति वितरित ॥

(प्रार्थना) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

राधाकेलिनिकुंजवीथिषु चरन्नाधाभिधामुच्चर--
न्राधाया अनुरूपमेव परमं धर्म्मं रसेनाचरन् ।
राधायाश्चरणांबुजं परिचरन्नानोपचारैर्मुदा—
कर्हि स्यां श्रुतिशेखरोपरि चरन्नाश्चर्यचर्यां चरन ।१३८

कुण्डलिया—राधा केलि निकुञ्जकी, विचरौं वीथिन माँझ ।
राधा-राधा नाम नित, रटौं भोर नित साँझ ॥
रटौं भोर नित साँझ, करौं आचरणहुँ सोई ।
रीझै जा विधि प्रिया परम, धरमिन गत वोई ॥
वहु उपचारन मुदित, चरण सेवहुँ सुखसाधा ।
श्रुतिपथ नखि कब पंथ, गहौं आश्चर्यित राधा ॥१३८॥

(शय्या समय)शार्दूलविक्रीडित वृत्त

यातायातशतेन संगमितयोरन्योन्यवक्त्रोल्लस—
च्चंद्रालोकनसंप्रभूतबहुलानंगांबुधिक्षोभयोः ।
अंतः कुञ्जकुटीरतल्पगतयोर्दिव्याद्भुतक्रीडयो—
राधामाधवयोः कदानुशृणुयांमंजीरकांचीध्वनिम् ॥१३९

छन्द—दौर-दौर बहुजतननि दम्पति आन निकुञ्ज मिलाये ।
सुख मुख चन्द्र विलोक परस्पर आनँन्द सिंधु बढ़ाये ॥
मूदि निकुञ्ज तल्पपर सुन्दर दिव्य केलि झर लाये ।
सुनिहौं कब नूपुर किंकिन धुनि मैं तहाँ कान लगाये ॥१३९॥

(मंगल समय) पृथ्वी छन्द

अहो भुवनमोहनं मधुरमाधवीमंडपे—
मधूत्सवसमुन्सुकं किमपि नीलपीतच्छवि ।
विदग्धमिथुनं मिथोद्दृढतरानुरागोल्लसन्—
मदं मदयते कदा चिरतरं मदीयं मनः ॥ १४० ॥

बसन्त—त्रिभुवन मोहन दोउ रूपवंत ।
चित चौंप खेल उत्सव बसन्त ॥
माधवी निकुंज राजत विशाल ।
दोऊ गौर श्याम शोभा रसाल ॥
वित्र चतुर शिरोमणि रस सुजान
अनुराग पगे शोभा निधान ॥
युग युग सोई नव युगल लाल ।
मन मत्त करैं मेरौ निहाल ॥ १४० ॥

(अभिलाष) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

राधानामसुधारसं रसयितुं जिह्वास्तु मे विह्वला—
पादौ तत्पदकांकितासु चरतां वृन्दाटवीवीथिषुः ।
तत्कर्मैव करः करोतु हृदयं तस्याः पदं ध्यायता—
त्तद्भावोत्सवतः परं भवतु मे तत्प्राणनाथे रतिः ॥१४१

छन्द—राधिका नाम रस सुधा के स्वाद हित रहै विह्वल सदा जीव मेरी । प्रिया पद अंक राजत सु वीथिन तहाँ पगन कर

शीष विचरौं भलेरी ।। करनसौं करहुँ सेवा विविधि लाड़िली हृ
धरि ध्यान पद नख उजेरी । प्राण प्रिय भाँवतौ तासु नातें स
लाल में होहु मम रति घनेरी ।। १४१ ।।

(अभिलाष) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

मंदीकृत्य मुकुंदसुंदरपदद्वंदारविंदामल—
प्रेमानंदममंदमिंदुतिलकाद्यु न्मादकंदं परम् ।
राधाकेलिकथारसांबुधिचलद्वीचीभिरांदोलितं—
वृन्दारण्यनिकुंजमंदिरवरालिंदे मनो नंदतुः ।। १४२

छंद—चरण-कमल नँद नंद राजत अति सुन्दर उभै ।
तिनकौ प्रेमानंद मत्त शिवादिककौं करत ।।
प्रिया केलि इत हास रस निधि चपल तरंग वर ।
श्रीवन कुंज प्रकाश तहाँ मेरे मन मुदित रहु ।। १४२ ।।

(अभिलाष) श्रृग्धरा छन्द

राधानामैव कार्य्यं ह्यनुदिनमिलितं साधनाधीशकोटि—
स्त्याज्यो नीराज्य राधापदकमलसुधांसत्पुमर्थाग्रकोटि
राधापादाब्जलीलाभुवि जयति सदा मंदमंदारकोटिः—
श्रीराधाकिंकरीणां लुठति चरणयोरद्भुता सिद्धिको

कवित्त—राधिका के नाम हीसौं काम हमें रैन-दिन छाँ
श्रुति साधन करोड़न जे गाये हैं । प्यारी पद-पंकज पै वार-वा
डारौं वलि कोटि पुरुषार्थ न मेरे मन भाये हैं ।। तिनहीं के चर
सरोजन की लीला वर अगिनित कल्प-तरु देखि सकुचाये हैं

जाकी निज दासिनि के पांयन में रिद्धि सिद्धि लोटत असंख्य औ अनंत शिर नाये हैं ॥ १४३ ॥

(मङ्गल-समय) शिखिरिणी छंद

मिथोभङ्गीकोटिप्रवहदनुरागामृतरसो—
तरंगभ्रूभङ्गक्षुभितबहिरभ्यंतरमहोः ।
मदाघूर्णन्नेत्रं रचयति विचित्रं रतिकला—
विलासं तत्कुंजे जयति नवकैशोरमिथुनम् ॥ १४४ ॥

पद—जय-जय युगलकिशोर नवीने ।
करत मधुर वतरान परस्पर, कोटि कटाक्ष सहित मन छीने ॥
नव अनुराग सुधा-रस लहरिन, भृकुटि नचाय उभै बस कीने ।
उमग्यौ प्रेम महा उर अन्तर, पुलकित रोम-रोम रँगभीने ॥
घूमत अरुण नैन मधुमाते, वहु विधि सुरति केलि लव लीने ।
विलसत मुदित निकुंज भवन में, गौर श्याम गल वहियाँ दीने।१४४

(प्रियास्वरूप वर्णन) मन्दाक्रान्ता छन्द

काचिद्वृंदावननवलतामंदिरे नंदसूनो—
र्दर्प्यद्दोष्कंदलदृढपरीरम्भनिस्पंदगात्री ।
दिव्यानंताद्भुतरसकलाः कल्पयंत्याविरास्ते—
सांद्रानंदामृतरसघनप्रेममूर्तिः किशोरी ॥ १४५ ॥

दोहा—श्रीवृन्दावन नव लता, मंदिर रचित विशाल ।
तहाँ भुज भर अंकम कसी, जाकौं मोहनलाल ॥

अद्भुत दिव्य अनंत रस, प्रकटित कला प्रवीन ।
प्रेमामृत आनंद निधि, कोउ किशोरि नवीन ॥ १४५ ॥

(रसिक स्वरूप वर्णन) शिखिरिणी छन्द

न जानीते लोकं न च निगमजातं कुलपरं—
परां वा नो जानात्यहह न सतां चापि चरितम् ।
रसं राधायामाभजति किल भावं व्रजमणौ—
रहस्ये तद्यस्य स्थितिरपि न साधारणगतिः ॥ १४६

चौपाई—जे नहि लोक वेद गति जानहिं ।
कुल परपाटी चितहुँ न आनहिं ॥
सत संतन आचरण घनेरे ।
तिनहूँसौं राखत मन फेरे ॥
व्रज मणि नवलकिशोर-किशोरी ।
तिन छवि रस गति मति जिन बोरी॥
गुप्त रहस्य भाव थिर मन में ।
ते साधारण पुरुष न जनमें ॥ १४६ ॥

(प्रार्थना) श्रृग्धरा छंद

ब्रह्मानंदैकवादाः कतिचन भगवद्वंदनानंदमत्ताः—
केचिद्गोविंदसख्याद्यनुपमपरमानंदमन्ये स्वदंतेः ।
श्रीराधाकिंकरीणां त्वखिलसुखचमत्कारसारैकसीमा—
तत्पादांभोजराजन्नखमणिविलस उज्योतिरेकच्छटा

दोहा— किनहूँ के लेखैं महा, तत्व सु ब्रह्मानंद ।
भगवत वंदन में कोऊ, माते भजनानंद ॥

पुन सख्यादिक रसन के, होत उपासक जोय।
परम मुदित मन रहत नित,कृत-कृत मानत सोय ॥
पै राधा दासीन कौं, सम्पूरण सुख सार।
चमत्कार सीमा सदा, रहत प्राप्त अति चार ॥
तिनके पद-पंकज ललित नख मणि दुति चित चोर।
तासु छटा सम तुलत नहिं, ब्रह्मानंद करोर ॥ १४७ ॥

(मंगल समय) शिखिरणी छन्द

न देवैर्ब्रह्माद्यैर्न खलु हरिभक्तैर्न सुहृदा—
दिभिर्यद्वै राधामधुपतिरहस्यं सुविदितम्।
तयोर्दासी भूत्वा तदुपचितकेलीरसमये—
दुरंताः प्रत्याशा हरहर दृशोर्गोचरयितुम् ॥ १४८ ॥

छन्द–जिन राधा माधव रहस्य श्रुति ब्रह्मादिक नहिं पायौ।
हरि भक्तनि सुवलादि सखन मन भली भाँति नहिं आयौ॥
कब तिन सहचरि ह्वै रस क्रीड़ा पल-पल में दृग धारौं।
हा हा यह अभिलाष अनौखी पाय अपुनपौ वारौं ॥१४८ ॥

(शैय्या समय) शिखिरणीवृत

त्वयि श्यामे नित्ये प्रणयिनि विदग्धे रसनिधौ—
प्रिये भूयोभूयः सुदृढमतिरागो भवतु मे।
इति प्रेष्ठेनोक्ता रमण मम चित्ते तव वचो—
वदंतीति स्मेरा मम मनसि राधा विलसतु ॥१४९॥

छन्द—हे श्यामा हे नित्य प्रिये हे चतुर शिरोमणि ।
हे रस सिंधु अपार अहो राधे आनँदघन ।।
तो में मो अनुराग बढ़ौ अति बारम्बारी ।
सुनि यह प्रीतम बैन बिहँसि बोलत सुकुमारी ।।
हैं मो मन तुम वचन रमण जिय जानिये ।
ऐसें कहतीं राधिका बसौ सु नित मेरे हिये ।। १४९ ।।

(चरण स्मरण) शिखरिणीवृत्त

सदानंदं वृन्दावननवलतामंदिरवरे—
ष्वमंदैः कंदर्पोन्मदरतिकलाकौतुकरसम् ।
किशोरं तज्ज्योतिर्युगलमतिघोरं मम भवं—
ज्वलज्ज्वालं शीतैः स्वपदमकरंदैः शमयतु ।। १५०

छंद—सदा आनंद रस रूप वृन्दा विपिन नवल द्रुम वेलि रचि कुञ्ज छाई। मदन मद मत्त विव करत रति केलि मिलि सरस कौतुक सु आनंद दाई।। नवल कैशोर वय युगल छवि ज्योति मनु चरण मकरंद सीरक सुहाई । रहत नित तप्त मम हृदय संसार तप ताहि शीतल करौ रस डुबाई ।। १५० ।।

(प्रिया-हितसखी परस्पर सम्भाषण) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

उन्मीलन्नवमल्लिदामविलसद्धम्मिल्लभारे वृह—
च्छ्रोणीमंडलमेखलाकलरवे शिंजत्सुमञ्जीरिणि ।
केयूरांगदकंकणावलिलसद्दोर्वल्लिदीप्तिच्छटे—
हेमांभोरुहकुड्मलस्तनि कदा राधे दृशा पीयसे १५१

छन्द-प्रफुलित फूलनि गुही कवरि कटि विशद किंकिणी बाजैं ।
पग नूपुर झनकार मनोहर भुज भुजबंद विराजैं ।।
चमकत चुरी नीलमणि कर कुच कंचन कमल कली से ।
सो रस रूप माधुरी भर कब पियहुँ ओक दृग ही से ।।१५१।।

(शय्या समय) शिखरिणी छन्द

अमर्यादोन्मीलत्सुरतरसपीयूषजलधेः–
सुधांगैरुत्तुंगैरिव किमपि दोलायिततनुः ।।
स्फुरंती प्रेयोंके स्फुटकनकपंकेरुहमुखी—
सखीनां नो राधे नयनसुखमाधास्यसि कदा ।।१५२।।

सवैया-तजिकैं मर्य्याद विहार सुधा रस सागर की उमगान भली ।
गम्भीर महा सरसै उछरै वर रूप तरंगन की अवली ।।
विकस्यौ मुख कंचन कंज अहो पिय अंक लसी वृषभानु लली ।
सुख दैहौ कबै हम नैनन कौं वलि आपुनि जानि अली महली।।१५२

(प्रिया-हितसखी परस्पर सम्भाषण) शिखरिणी छन्द

क्षरंतीव प्रत्यक्षरमनुपमप्रेमजलधिं
सुधाधारावृष्टीरिव विदधती श्रोत्रपुटयोः ।
रसार्द्रा सन्मृद्वी परमसुखदा शीतलतरा—
भवित्री किं राधे तव सह मया कापि सुकथा ।।१५३।।

छन्द-इक-इक अक्षर प्रति मम कानन प्रेम धार वरषावौगी ।
अमित अपार अमी रस लहरिन प्यारी भलें डुबावौगी ।।

सुन्दर परम सुखद शीतल अति करि तन मन हरषावौगी।
मधुर-मधुर मुसक्याय लडैंती कब मोसौं बतरावौगी॥१५३॥

(नाम स्मरण) शिखरिणी छन्द

अनुल्लिख्यानंतानपि सदपराधान्मधुपति—
महाप्रेमाविष्टस्तव परमदेयं विमृशति।
तवैकं श्रीराधे गृणत इह नामामृतरसं—
महिम्नः कः सीमां स्पृशति तव दास्यैकमनसाम्॥१५४॥

कवित्त—गिनत बनै ना अघ अगिनित अपार मोऊ एक बार राधा नाम मुख सौं उचारै जो। सोचत हिय बार-बार मोहन मन अति उदार याकौं कहा दीजै याकी पटतर अनुसारै को॥ प्यारी नाम अमृत रस प्यारौ सुनि विवस होत धन्य-धन्य सोई अति हित सौं पुकारै हो। ताकी महिमा की सीम परस सकै जो कौन ललित लडैंती पद सेवा उर धारै सो॥१५४॥

(रास समय) मालती वृत

लुलितनवलवंगोदारकर्पूरपूरं—
प्रियतममुखचंद्रोद्गीर्णतांबूलखंडम्।
घनपुलककपोला स्वादयंती मदास्ये—
र्पयतु किमपि दासीवत्सला कर्हि राधा॥१५५॥

रेखता—इलायची लौंग कर्पूर रिति रची बीड़ी अली सुन्दर। दई दम्पति के कोमल कर अधिक शोभा सुहाई है॥ दशन दाबी विहारी ने खुटक ली आधी प्यारी ने। युगल वर

केलि लव लीने सुरत छवि नैन छाई है ॥ वदन रोमावलीं पुलकैं उठी मनमें मदन ललकैं। कपोलौं पान का रस लैं कुछ औरैं मनमें आई है ॥ सदा दासीन हितकारी करै निज पीक सुकुमारी। मेरे मुख दैंहि सुखकारी यही आशा लगाई है ॥ १५५ ॥

(प्रार्थना) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

सौंदर्य्यामृतराशिरद्भुतमहालावण्यलीलाकला—
कालिंदीवरवीचिडंबरपरिस्फूर्जत्कटाक्षच्छविः।
सा कापि स्मरकेलिकोमलकलावैचित्र्यकोटिस्फुरत्—
प्रेमानंदघनाकृतिर्दिशतु मे दास्यं किशोरीमणिः॥१५६

दोहा—सुन्दरता पीयूष की, राजत राशि विशाल।
अद्भुत अति लावन्यमय, लीला ललित रसाल॥
लहरत कालिंदी मनौं, उठत कटाक्ष तरंग।
वरणत बनत न माधुरी, दृग मटकन भ्रू भङ्ग॥
सुरत निकुंज विहार में, अनुपम नव सुकुमार।
प्रकटित कला विचित्र अति, कोटि-कोटि रस सार॥
प्रेमानँद घन मूर्त्ति नव, युवति शिरोमणि बाल।
निज पद-पंकज टहल मुहि, दीजै हा हा हाल॥ १५६॥

(शृङ्गार समय) पृथ्वी छन्द

दुकूलमतिकोमलं कलयदेव कौसुंभकं—
निबद्धमधुमल्लिकाललितमाल्यधम्मिल्लकम्।

बृहत्कटितटस्फुरन्मुखरमेखलालंकृतं—

कदा नु कलयामि तत्कनकचंपकाभं महः ॥ १५७॥

छंद—झीनी झीनी झीनी चुनरिया ।
चटकीली नव रंग कसूँभी राजत अंग सुघर नागरिया ।
गूँथित सुमन सुगंधित वैनी वेला ललित चँवेलि निवरिया ।
वाजत कटि मंजीर अनूपम मधुर-मधुर रव गति मति हरि...
कंचन चम्पकली सी मानौं गोरे गात मदन रँग ढरिया ।
सुमिरतही सो रूप पुंज मोहि विसर जाय सुधि देहि सम्हरि...

(रास समय) शिखरिणी छन्द

कदा रासे प्रेमोन्मदरसविलासेद्भुतमये ।

दिशोर्मध्ये भ्राजन्मधुपतिसखीवृन्दवलये ।

मुदांतः कांतेन स्वरचितमहालास्यकलया—

निषेत्रे नृत्यन्तीं व्यजननवतांबूलशकलैः ॥ १५८ ॥

छन्द—प्रेम उमँग रस विलास रचित रास माँही ।
अद्भुत पिय सखिन यूथ मंडल सरसाँही ॥
निर्तत मधु युगल लाल दीनैं गलबाँही ।
करलै कव विजन पान सेवहुँ तिहिं ठाँही ॥ १५८ ॥

(रास समय) मालती वृत्त

प्रसृमरपटवासे प्रेमसीमाविकासे—

मधुरमधुरहासे दिव्यभूषाविलासे ।

पुलकितदयितांसे संचलद्वाहुपाशे—

तदतिललितरासे कर्हि राधामुपासे ॥१५६॥

कुण्डलिया—होली खेलत रास में, नृत्य करत हुलसाय।
नूतन पट फहरानि छवि, नैनन रही समाय॥
नैनन रही समाय, प्रेम क्रीड़ा बहु भाँती।
बिच-बिच ईषद हास, दमक वर भूषन पाँती॥
मुदित छैल गलबाँही, संग ललितादि किशोरी।
पिय नाचति कर जोरि, अराधहुँ मैं कब गोरी॥१५९

(वदन स्मरण) मालती वृत्त

यदि कनकसरोजं कोटि चन्द्रांशुपूर्णं—

नवनवमकरंदस्यंदि सौंदर्यधाम।

भवति लसितचंचत्खंजनद्वंद्वमास्यं—

तदपि मधुरहास्यं दत्तदास्यं न तस्याः॥१६०॥

श्री मु०–जोपै सुच कनक कंज प्रगटै सुखदाई।
कोटि-कोटि चन्द्र कान्ति पूरित दरसाई॥
नव-नव मकरंद श्रवत सदन छवि लुनाई।
खंजन युग खेलैं तहाँ करि करि चपलाई॥
तौहू मुसक्यान मृदु उपमा नहिं पाई।
दास भ्रमर पान करैं मकरँद अघाई॥

अरिल्ल—सुन्दर कंचन कंज कहा सुख देत हैं।
कोटि-कोटि मुख चन्द्र मान हरि लेत हैं॥
कंज चन्द्र मुख इन्दु की उपमा तुच्छ हैं।
मधुर महा मकरंद मनोहर गुच्छ हैं॥

खंजन युग अति चपल खेल तहाँ करत हैं ।
मन्द मृदुल मुसक्यान सु सौरभ झरत हैं ।।
मत्त भ्रमर मकरंद पान करि तृप्त हैं ।
अनुपम मुख तुम देखि लालहूँ लिप्त हैं ।। १६० ।।

(वदन स्मरण) पृथ्वी छन्द

सुधाकरसुधाकरं प्रतिपदस्फुरन्माधुरी—
धुरीणनवचंद्रिकाजलधितुंदिलं राधिके ।
अतृप्तहरिलोचनद्वयचकोरपेयं कदा—
रसांबुधिसमुन्नतं वदनचन्द्रमीक्षे तव ।। १६१ ।।

स०-चन्द्रकौं मन्द करै मुखचन्द्र सुमाधुरी है मुसक्यान की चाँदिनी
प्यारे के नेत्र चकोर दोऊ नित पान करैं क्षण एक न छाँड़िनी ।
खारी समुद्र कौ हीन जे चंद्र सु क्षीन मलीन करै प्रति यामिनी ।
रूप समुद्र कौ तो मुख चंद्र अनंद सौं मैंकब देखूँगी भामिनी।।१६

(अभिलाष) स्रग्धरा छन्द

अंगप्रत्यंगरिंगन्मधुरतरमहा कीर्तिपीयूषसिंधो—
रिंदोः कोटीर्विनिंदद्वदनमतिमदा लोलनेत्रं दधत्याः ।
राधाया सौकुमार्याद्भुतललिततनोःकेलिकल्लोलिनीना-
मानंदस्यंदिनीनां प्रणयरसमयान् किं विगाहे प्रवाहान्

छप्पय–अंग-अंग सुख सिंधु सुधा रस महा मधुर है ।
अति कीरति सौं भरचौ अलौकिक विमल प्रचुर है ।।

कोटि इन्दु कौं निन्द करै मुख चन्द तिहारौ।
श्री राधा सुकुमारि चपल लोचनन निहारौ॥
तुम ललित अंग लीला ललित-ललित केलि आनन्द घन।
हित प्रीति सरस रस रूप कौं अवगाहै कब ललित मन१६२

(मंगला समय) मन्दाक्राता छन्द

मत्कंठे किं नखरशिखया दैत्यराजोस्मि नाहं—
मैवं पीडां कुरु कुचतटे पूतना नाहमस्मि।
इत्थं कीरैरनुकृतवचः प्रेयसा संगतायाः—
प्रातःश्रोष्ये तव सखिकदा केलिकुंजे मृजंती ॥१६३॥

दुमिला—नख कंठ कठोर लगावत क्यों हम दैत्यनरेश नहीं जु भलैं।
कुच पीडत ही हम पूतन ना सुन बोल लडैंतिन जू निकलैं॥
यह बात निकुञ्ज सुतोतन की अति प्रात सुनी नव कुञ्ज चलैं।
कब केलि निकुञ्ज बुहारन हेत सु जाय सुनौं बतरानि गलैं॥१६३।

(मंगला समय) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु स्फुरतु मे राधापदाब्जच्छटा—
वैकुंठे नरकेथ वा मम गतिर्नान्यस्तु राधां विना।
राधाकेलिकथासुधांबुधिमहावीचीभिरांदोलितं—
कालिंदीतटकुञ्जमंदिरवरालिंदे मनो विंदतु ॥१६४॥

सवैया—जाग्रत्स्वप्न सुषुप्तिहु मैं पद-पंकज राधिका के अविलोकौं।
स्वर्गन नर्कन में गति नाहिं बिना जु विहारिन नाम के मो कौं॥

प्रेम-समुद्र सुधा कि झकोर कलिंद-सुता तटि कुञ्ज सुनौं कौं।
मंदिर मंजु महा सुख पुंज निकुञ्ज सुआँगन में मति रोकौं॥१६४॥

(शय्या समय) शिखरिणी छन्द

अलिंदे कालिंदीतटनवलतामन्दिरगते—
रतामर्दोद्भूतश्रमजलभरापूर्णवपुषोः।
सुखस्पर्शेनामीलितनयनयोः शीतमतुलं—
कदा कुर्यां संवीजनमहह राधामुरभिदोः ॥ १६५ ॥

कवित्त घनाक्षरी–यमुना के तट के निकट लता मंदिर है तहाँ प्रिया प्रीतम जू विहार नित करैं हैं। विमल विहार श्रम कढ्यौ स्वेद दोऊ अंग कबहूँ नेत्र मूँद मृदु सिसकी सी भरैं हैं॥ हित कौ अनूठो खेल सुखसिंधु बढ्यौ पेलि निरख-निरख चेरी निज हीयरौ भरैं है। तहाँ निज हाथन सौं बीजना झुलाय कब शीतल समीर जाय ऐसौ मन करै है ॥ १६५ ॥

(बन विहार) पृथ्वी छन्द

क्षणं मधुरगानतः क्षणममंदहिंदोलतः—
क्षणं कुसुमवायुतः सुरतकेलिशिल्पैः क्षणम्।
अहो मधुरसद्रसप्रणयकेलिवृन्दावने—
विदग्धवरनागरीरसिकशेखरौ खेलतः ॥ १६६ ॥

दुर्मिला–कबहूँ क्षण गाय महा स्वरसौं क्षण झूलत जाय हिंडोरन पैं।
क्षण फूलन की बिजनी कर में रुचि पौन करैं झक झोरन पैं।
कबहूँ कर केलिनि चातुरता बन में चतुरेंन्द्र शिरोमणि पैं।
हित रीझन नागरि नागर की लखि वारत काम करोरन पैं॥१६६॥

(शय्या समय) शार्दूलविक्रीडित वृत

अद्य श्यामकिशोरमौलिरहह प्राप्तो रजन्या मुखे—
नीत्वा तां करयोः प्रगृह्य सहसा नीपाटवीं प्राविशत् ।
श्रोष्ये तल्पमिलन्महारतिभरे प्राप्तेपि शीत्कारितं—
तद्वीचीमुखतर्जनं किमु हरेः स्वश्रोत्ररंध्राश्रितम् ॥१६७

छन्द—साँझ समं नव तरुन सिरोमन मोहन वन सौं आयौ री ।
गहि भुज मूल लाड़िली कौ चट कदम कुंज पधरायौ री॥
मिलि बिलसत दम्पति रसमाते ललित सेज सुखदाई री ।
मधुर-मधुर सिसकार अनूठी बीच-बीच सरसाई री ॥
करि करि कें रस रोश भामिनी हूँहूँ कहि भ्रू तानें री ।
हटकत सुखमय श्याम सुंदर कौं नहिं नहिं कहि हठ ठानैंरी॥
नियरैं जाय सिहाय भाग निज रंध्रन कान लगाऊँ री ।
सुनि-सुनि कें वतरान रसीली वारी हियौ सिहाऊँ री॥१६७

(वाल्यकैशोर) मंदाक्रान्ता छन्द

श्रीमद्राधे त्वमथ मधुरं श्रीयशोदाकुमारे—
प्राप्ते कैशोरकमतिरसाद्वल्गसे साधुयोगम् ॥
इत्थं वाले महसि कथया नित्यलीलावयः श्री—
जातावेशा प्रकटसहजा किन्नु दृश्या किशोरी ॥१६८॥

छन्द—तुम सुन्दर वृषभानु कुमारी ।
तैसें हि मधुर महर सुत प्यारी ॥
जिह जव नव किशोर वय झलकै ।
इत तत्र तन जोवन रस छलकै ॥

ता छिन मिलन महा सुखदाई।
सुनि यह वचन कुँवरि मुसक्याई॥
सहज भई नव ललित किशोरी।
कब देखहुँ वह छवि रस बोरी॥ १६८॥

(शय्या समय) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

एकं कांचनचंपकच्छवि परं नीलांबुदश्यामलं—
कंदर्पोत्तरलं तथैकमपरं नैवानुकूलं बहिः॥
किंचैकं बहुमानभंगि रचवचाटूनि कुर्वत्परं—
वीक्षे क्रीडनिकुंजसीम्नि तदहो द्वंद्वं महामोहनम्॥१६९

दोहा—मनु कंचन चम्पा कली, गोरी एक विशाल।
इक सुन्दर नव श्याम घन, राजत रूप रसाल॥
श्याम काम आवेष वश, अति आतुर अकुलात।
नेति-नेति मृदु वचन छुटि, गोरी कहत न बात॥
गोरी रूप गुमान सौं, करत मान भ्रू तान।
चरण परस हाहा वदत, श्याम जोर जुग पान॥
नव निकुञ्ज विलसत उभै, अति सुन्दर चित चोर।
रे मन तिनहिं विलोक चल, कालिंदी तट ओर॥ १६६

(मंगला समय) पृथ्वी छन्द

विचित्ररतिविक्रमं दधदनुक्रमादाकुलं—
महामदनवेगतो निभृतमञ्जुकुंजोदरे।
अहो विनिमयन्नवं किमपि नीलपीतं पटं—
मिथो मिलितमद्भुतं जयति पीत नीलं महः॥१७०

सोरठा—बहु विधि करत विहार, अमित विचित्रित सुरत रस ॥
माते मदन खुमार, राजत निर्जन कुञ्ज वर ॥
पलटे भेष विशाल, वलि बलि अंगन माधुरी ।
नील पीत दुति माल.जयति-जयति दम्पति रसिक॥१७०

(बन बिहार) पृथ्वी छंद

करे कमलमद्भुतं भ्रमयतोर्मिथोंसार्पित—
स्फुरत्पुलकदोर्लतायुगलयोः स्मरोन्मत्तयोः ।
सहासरसपेशलं मदकरींद्रभंगीशतै—
र्गतिं रसिकयोर्द्वयोः स्मरत चारुवृन्दावने ॥ १७१ ॥

बरवै—वर कर कमल फिरावें दै गलबाँह ।
पुलकि मदन मद माते विवि सरसाँह ॥
निपुन हास्य रस कोविद चलैं गज चाल ।
भज मन श्रीवन सुन्दर रसिक रसाल ॥ १७१ ॥

(चरण स्मरण) भ्रग्धरा छन्द

खेलन्मुग्धाक्षिमीनस्फुरदधरमणी विद्रुमश्रोणिभार—
द्वीपायामोत्तरंगस्मरकलभकटा टोपवक्षोरुहायाः ।
गंभीरावर्त्तनाभेर्बहुलहरिमहा प्रेमपीयूषसिंधोः—
श्रीराधायाः पदांभोरुहपरिचरणे योग्यतामेव गेपे॥१७२

छन्द—सुरत नदी सुन्दर सुकुमारी ।
तरत मीन अँखियाँ चपलारी ॥
विद्रुम रत्न अधर अरुनाई ।
शुच नितंब टापू सुखदाई ॥

मदन तरंग उठत अँग लौने ।
उरज युग्म क्रीडत गज छौने ।।
नाभि गँभीर भँवर मन हरनी ।
त्रिवली ललित लहर छवि भरनी ।।
रस सागर वर छैल कन्हाई ।
उमँग मिलत ता सँग सुखदाई ।।
तिन राधा पद-कंज खवासी ।
कब पाऊँ मैं यह सुखरासी ।। १७२ ।।

(मंगल समय) श्रृग्धरा छंद

विच्छेदाभासमानादहह निमिषतो गात्रविस्रंसनादौ—
चंचत्कल्पाग्नि कोटिज्वलितमिव भवेद्बाह्यमभ्यंतरं च
गाढस्नेहानुबंधग्रथितमिव तयोरद्भुतप्रेममूर्त्य :—
श्रीराधामाधवाख्यं परमिह मधुरं तद्द्वयं धामजाने

कुण्डलिया—मन बिछुरन संका उठी, भयौ विरह आभा
पल वियोग जे भ्रम भयौ, जद्यपि विव इक पा
जद्यपि विव इक पास, तौऊ विरहानल ता
दोऊ निपट अधीर, भये व्याकुल अति तन म
नेह विवश गुथ रहे, प्रेम मूरति आनँद
अद्भुत प्यारी लाल, युगल आराधत मो मन ॥

(शैय्या समय) शिखिरिणी छन्द

कदा रत्युन्मुक्तं कचभरमहं संयमयिता—
कदा वा संधास्ये त्रुटितनवमुक्तावलिमपि ।

कदा वा कस्तूर्य्यासिनलकमपि भूयो रचियिता—
निकुञ्जांतर्वर्त्तो नवरतिरणे यौवनमणेः ।। १७४ ।।

छंद—केलि श्रम शिथिल भई केश कवरी प्रिया ताहि कव गुहौं कस सुरँग डोरी । त्रुटित मुक्तान लर पोहि पहिराउँ वन रचौं पुनि तिलक मृग मद किशोरी ।। कुञ्ज किसलय रचित सैन विहारैं युगल रसिक नागर सुघर नवल गोरी । भवन विहरत जुद्ध हाव भावन सहित जयति जोवन मनी ललित जोरी ।। १७४ ।।

(वृन्दावन महिमा) श्रृग्धरा छंद

किं ब्रूमोन्यत्र कुंठीकृतकजनपदे धाम्न्यपि श्रीविकुंठे—
राधामाधुर्यवेत्ता मधुपतिरथ तन्माधुरीं वेत्ति राधा ।
वृन्दारण्यस्थलीयं परमरससुधा माधुरीणां धुरीणा—
तद्द्वंद्वं स्वादनीयं सकलमपि ददौ राधिकाकिंकरीभ्यः।।

छन्द—मो मन अनत न कहुँ सचु पावै
कहा कहौं वैकुण्ठ भवन हूँ भ्रम व्याकुल फिर आवै ।।
श्री वृन्दावन परम रसामृत माधुरि झर वरषावै ।।
ताही युगल विहार स्वाद लहि अति आनँद उमगावै ।
जहाँ प्यारी माधुर्य विहारी नैनन नित्त वसावै ।
लाल ललित लावण्य मधुर गोरी के मन अति भावै ।।
तिन दोहुन रस लेत सखी गन उर आनँद न समावै ।
हुलसि-हुलसि तहहीं रस लोभी लुठ-पुठ पुन-पुन आवै।।१७५।।

(प्रिया स्वरूप वर्णन) पृथ्वी छन्द

लसद्वदनपंकजा नवगभीरनाभिभ्रमा—
नितंबपुलिनोल्लसन्मुखरकांचिकादंबिनी ।
विशुद्धरसवाहिनी रसिकसिंधुसंगोन्मदा—
सदा सुरतरंगिणी जयति कापि वृन्दावने ॥ १७६ ॥

छन्द—लाल लख कंज गम्भीर नाभी भ्रमर पुलिन श्रौंनो निपट ललित राजें । हंस बालक मनौं कूल इत उत फिरत विशद कटि मधुर मंजीर बाजें । शुद्ध रस प्रेम धारन श्रवत भामिनी लाल रस सिंधु मिलि उमँगि भ्राजें ॥ अनिर्वचनीय रति केलि सलिता प्रिया सदा वृन्दा विपिन मधि विराजें ॥१७६॥

(प्रिया स्वरूप वर्णन) पृथ्वी छन्द

अनंगनवरंगिणीरसतरंगिणीसंगतां—
दधत्सुखसुधामये स्वतनुनीरधौ राधिकाम् ॥
अहो मधुपकाकलीमधुरमाधवीमण्डपे—
स्मयत्क्षुभितमेधते सुरतसीधुमत्तं महः ॥ १७७ ॥

दोहा—पूरित रंग अनंग सौं रस सरिता वर बाल ।
उमँगि मिली आनंद निधि, नागर मोहन लाल ॥
मधुर माधवी कुंज में, करत मधुप गुंजार ।
अद्भुत रस संगम भयौ, बार-बार बलि हार ॥
मदन ललक मन में बढ़ी, नव नागरि रस सार ।
सुरत अमल छाकी रहै, मत्त सदा सुकुमार ॥ १७७ ॥

(वृन्दावन महिमा) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

रोमालीमिहिरात्मजा सुललिते बंधूकबंधुप्रभा–
सर्वांगे स्फुटचंपकच्छविरहो नाभीसरः शोभना ।
वक्षोजस्तवका लसद्भुजलता शिंजापतच्छुंकृतिः–
श्रीराधा हरते मनो मधुपतेरन्येव वृन्दाटवी ॥१७८॥

छन्द--रोमावली ललित जमुना छवि अधरन विम्ब ललाई ।
अँग-अँग चम्पा नाभि सरोवर उरज गुच्छ सुखदाई ॥
झूम रहीं विव रूप लता रुचि प्रफुलित भुजा सुहाई ।
प्रीतम अलि मन मोहन प्यारी वृन्दावन बन आई ॥१७८॥

(मंगला समय) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

राधामाधवयोर्विचित्रसुरतारंभे निकुञ्जोदर—
स्रस्तप्रस्तरसंगतैर्वपुरलं कुर्वंगरागैः कदा ।
तत्रैव त्रुटिताः स्रजो निपतिताः संधाय भूयःकदा—
कंठे धारयितास्मि मार्जनकृते प्रातः प्रविष्टास्म्यहम् १७९

छंद—अति सुन्दर सुकुमार राधामाधव नव रसिक ।
कीने सुरत विहार परम विचित्रित मद भरे ॥
जहाँ तहाँ गिरे विशाल केशरादि अँगराग सब ।
टूटि गई उर माल मुक्ताहल विथुरे अवनि ॥
उठि तहाँ भोरहि जाउँ झारन हित लै सोहनी ।
निरखि-निरखि हुलसाउँ निशि सुख सूचित चिन्ह जे ॥

युगल प्रसादी जान अँगरागन निज अँग करौं ।
पहिरौं कृत-कृत मान गुहि तिन मोतिन माल कब ॥१७६॥

(प्रेम वैचित्री) शार्दूलविक्रीडित वृत

श्लोकान्प्रेष्ठयशोंकितान्गृहशुकानध्यापयेत्कर्हिचिद्—
गुञ्जामंजुलहारबर्हमुकुटं निर्माति काले क्वचित् ।
आलिख्य प्रियमूर्त्तिमाकुलकुचौ संवङ्कयेद्वा कदा—
प्येवंव्यापृतिभिर्दिनं नयति मे राधा प्रियस्वामिनी१८०

माँझ—प्रीतम नाम रूप गुन प्यारी कबहुँक शुकन पढ़ावैं ।
गुंजामाल मयूर चन्द्रकन कबहुँक मुकुट बनावैं ॥
लिखि मनमोहन चित्र विकल ह्वै कबहुँक कस उर लावैं ।
ऐसें हीं रसमत्त स्वामिनी राधा दिवस मल्हावैं ॥१८०

(प्रिया स्वरूप वर्णन) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

प्रेयःसंगसुधासदानुभविनी भूयोभवद्भाविनी—
लीलापंचमरागिणी रतिकला भंगीशतोद्भाविनी ।
कारुण्यद्रवभाविनी कटितटे कांचीकलाराविणी—
श्रीराधैव गतिर्ममास्तु पदयोः प्रेमामृतश्राविणी ॥१८१॥

छन्द—प्रीतम कौ संग सुधा रस मन भावै सोई पञ्चम सुरागिनी अलापै वर भामिनी । कोटिन विलास की कलान कों प्रकासै वर करुणा कौ सिन्धु अति अगम बढ़ावनी ॥ छीन कटि किंकिणी कौ मधुर महीन रव प्रकटित प्रेम सुधा झरना झरावनी । सोई सुकुमारी वृषभानु की दुलारी राधा जन्म-जन्म मेरी गति होय अभिरामिनी ॥ १८१ ॥

(प्रिया स्वरूप वर्णन) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

कोटींदुच्छविहासिनी नवसुधा संभारसंभाषिणी—
वक्षोजद्वितयेन हेमकलशश्रीगर्वनिर्वासिनी ।
चित्रग्रामनिवासिनी नवनवप्रेमोत्सवोल्लासिनी—
वृन्दारण्यविलासिनी किमु रहो भूयाद्धृदल्लासिनी १८२

दोहा—कोटि चन्द्र दुति वारियै, हसन दशन दम कान ।
बोलन मृदु बरषत सुधा, रोम रोम रस खान ॥
कंचन कलश लजावहीं, उरज युग्म छवि सार ।
बरसाने वृषभानु गृह, बसत नवल सुकुमार ॥
नित-नित प्रेम विलास नव, विहरत श्रीवन बाग ।
करुणा करि सो देहु मो, हृदय प्रेम अनुराग ॥ १८२॥

(रास समय) शिखरिणी छन्द

कदा गोविंदाराधनललिततांबूलशकलं—
मुदा स्वादं स्वादं पुलकिततनुर्मे प्रियसखी ।
दुकूलेनोन्मीलन्नवकमलकिंजल्करुचिना—
निवीतांगी संगीतकनिजकलाः शिक्षयति माम् ॥१८३

छन्द—लाडिली लडावत लालहि चावत नागरि पान ।
दीनी अर्धं ललन मुख हित सौं उर आनँद उमगान ॥
पुलकित तन मृदु वदन गुराई झीने पट झलकान ।
सो कब मोहि लडैंती सिखवैं नृत्य कला गुन गान ॥१८३॥

(वदन स्मरण) पृथ्वी छन्द

लसद्दशनमौक्तिकप्रवरकांतिपूरस्फुरन्–
मनोजनवपल्लवाधरमणिच्छटासुन्दरम् ।
चरन्मकरकुण्डलं चकितचारुनेत्रांचलं–
स्मरामि तव राधिके वदन मण्डलं निर्मलम् ॥१८४॥

छन्द–शुचि दशन दमकनि दुति मनोहर मनहु मोतिन की लरी।
तहाँ मृदुल पल्लव अधर सुन्दर अरुण मनु झांई परी॥
ललन कुण्डल झलक प्यारी ललित गंडन छवि भरी।
सोई भजौं राधे चपल चख जुत वदन मंडल प्रति घरी॥१८

(वदन स्मरण) पृथ्वी छंद

चलत्कुटिलकुन्तलं तिलकशोभिभालस्थलं—
तिलप्रसवनासिकापुटविराजिमुक्ताफलम् ।
कलंकरहितामृतच्छविसमुज्ज्वलं राधिके—
तवातिरतिपेशलं वदनमंडलं भावये ॥१८५॥

चौपाई—श्याम अलक सुठि घूँघर वारी ।
सेंदुर विंदु भाल रुचिकारी ॥
तिल प्रसून सम नासा सोहै ।
वेसर की डोलन मन मोहै ॥
रहित कलंक सुधा वरसाई ।
रसभीनी वर वदन निकाई ॥

तिहिं मुख मंडल मैं नित ध्याऊँ ।
क्षण-क्षण प्रति पल-पल बलि जाऊँ ॥

(वन बिहार) मन्दाक्राता वृत्त

पूर्णप्रेमामृतरससमुल्लाससौभाग्यसारं—
कुंजेकुंजे नवरतिकलाकौतुकेनात्तकेलि ।
उत्फुल्लेंदीवरकनकयोः कांतिचोरं किशोरं—
ज्योतिर्द्वन्द्वं किमपि परमानन्दकंदं चकास्ति॥१८६॥

छन्द—पूरण प्रेम अमी रस बरषत सौभग सार छबीले ।
कुंज-कुंज नव सुरत कला कल कौतुक रमत रमीले ॥
प्रफुलित नील पीत पंकज दुति छीनत वदन सजीले ।
परमानन्द जोति अति अद्भुत युगलकिशोर रसीले ॥१८६॥

(अतिसख्य) शिखरिणी छन्द

ययोन्मीलत्केलीविलसितकटाक्षैककलया-
कृतो वन्दी वृन्दाविपिनकलभेंद्रो मदकलः ।
जडी भूतः क्रीडामृग इव यदाज्ञालवकृते-
कृती नः सा राधा शिथिलयतु साधारणगतिम् ॥ १८७

कुंड०—अबला अति वृषभानुजा, पै निरखौं बल रास ।
श्रीवन मत्तगयंद पिय, बस कियौ भृकुटि विलास ॥
बस कीयौ भृकुटि बिलास मनौं अंकुश उर कसकैं ।
क्रीड़ा मृग यों लाल विना आयुस नहिं टसकैं ॥

धन्य भाग्य गनि शीष धरत अज्ञा निज नवला ॥
साधारण गति शिथिल करौ मेरी सो अवला ॥१८७॥

(प्रार्थना) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

श्रीगोपेंद्रकुमारमोहनमहाविद्ये स्फुरन्माधुरी—
सारस्फाररसांबुराशिसहज प्रस्यंदिनेत्रांचले ।
कारुण्यार्द्र कटाक्षभंगि मधुरस्मेराननांभोरुहे—
हाहा स्वामिनि राधिके मयि कृपा दृष्टिं मनाङ् निक्षिप

छन्द—रसिक लाल मन मोहन प्यारी विद्या परम भरी है।
सहज दृगंचल चंचल कोरन हेरत सुधा झरी है ॥
हाहा राधे कृपा दृष्टि निज सहचरि जन हितकारी।
मोहू तन वह करुणा चितवन चितवहु टुक बलिहारी ॥१८८

(रास समय) मंदाक्रान्ता वृत्त

ओष्ठप्रांतोच्छलितदयितोद्गीर्णतांबूलरागा—
रागानुच्चै र्निजरचितया चित्रभंग्योन्नयंती ।
तिर्यग्ग्रीवा रुचिररुचिरोदंचदाकुञ्चित भ्रूः—
प्रेयःपार्श्वे विपुलपुलकैर्मंडिताभाति राधा १८९॥

कबित्त—लाल मुख पान प्यारी अति हित मान लियें
दशनखुटक ताकौ रंग रच्यो नीकौ है। रुचिर रुचीली गति तान
रसीली वर निपट सुरीली मन मोहै लेत पी कौ है ॥ ग्रीवा कं
मुरन कछु भृकुटि नचन छवि चोरें चित लाल ढिंग बैठ

लली कौ है । पुलकित गात रोम-रोम सरसात ग्रैसौ सुन्दर स्वरूप वृषभानु नंदिनी कौ है ॥ १८९ ॥

(ग्रतिसख्य) मन्दाक्रान्ता वृत

किं रे धूर्त्तप्रवर निकटं यासि नः प्राणसख्या—
नूनं बाला कुचतटकरस्पर्शमात्राद्विमुह्येत् ।
इत्थं राधे पथि पथि रसान्नागरं तेनुलग्नं—
क्षिप्त्वा भंग्या हृदयमुभयोः कर्हि संमोहयिष्ये ॥१९०॥

दोहा—ग्रागैं ग्रागैं लाडिली, जात ग्रापनी गैल ।
रूप छक्यौ पाछैं लग्यौ, ग्रावत नागर छैल ॥
तँह मारग रोकौ चपल दूर-दूर कहि लाल ।
प्राण प्रिया सँग ग्राय जिन, रति लंपट रस ख्याल ॥
चौंध जाँयगे दृग लला, उर जिन हाथ चलाय ।
विथकित ह्वै भुव लोटि हौ. देह दशा विसराय ॥
इहिं विधि कव परिहास्य के, वचन सुनाय सुनाय ।
दुहुँ मन मोद बढ़ायहौं, तन मन ग्रानँद पाय ॥१९०॥

(ग्रतिसख्य) शिखिरिणी वृत्त

कदा वा राधायाः पद कमलमायोज्य हृदये—
दयेशं निःशेषं नियतमिह जह्यामुपविधिम् ।
कदा वा गोविंदः सकल सुखदः प्रेमकरणा—
दनन्येधन्ये वै स्वयमुपनयेत स्मरकलाम् ॥१९१॥

छन्द—दया ईश वृषभानु लली पद कंज हृदय धर।
विसराऊँ सम्पूर्ण बिधिन कब दूर-दूर कर॥
करुणाकर कव मोहि श्याम सुन्दर सुखदाई।
धन्य अनन्य विचार केलि सिखवैं चतुराई॥

(शय्या समय) शिखरिणी वृत्त

कदा वा प्रोद्दामस्मरसमरसंरंभरभस—
प्ररूढ़स्वेदांभःप्लुतलुलितचित्राखिलतनू।
गतौ कुञ्जद्वारे सुखमरुति संवीज्य परया—
मुदाहं श्रीराधारसिकतिलकौ स्यां सुकृतिनी॥१९२

छन्द—श्रमित त्रिशद विहार रस संग्राम नागर नागरीं।
ललित वदन विचित्र झलकत स्वेद बूँदें छवि भरीं॥
लेत सीरी पवन सुख विच कुञ्ज द्वारें आय कैं।
कवें कृत-कृत होंहुँ तिनकौं विजनि सुमन ढुरायकें॥१९२

(शय्या समय) शिखरिणी वृत्त

मिथःप्रेमावेशाध्दनपुलकदोर्वल्लिरचित—
प्रगाढाश्लेषेणोत्सवरसभरोन्मीलितदृशौ—
निकुञ्जक्लृप्ते वै नवकुसुमतल्पेधिशयितौ—
कदा पत्संवाहादिभिरहमधीशौ नु सुखये॥१९३॥

छन्द—प्रेमावेश परस्पर सोहत पुलकित ललित गात पिय प्यारी।
अंक कसे भुज भरि आँनन्द सों मुकलित कछु अखियाँ

अनियारी ।। नवल कुसुम सिज्या पै पौढ़े रस बस युगल विहारी । ता क्षरण कोमल पग तल दम्पति सहलाऊँ कव मैं वलिहारी ।। १६३ ।।

(प्रिया स्वरूप वर्णन) पृथ्वी छन्द

मदारुणविलोचनं कनकदर्पकामोचनं—
महाप्रणयमाधुरीरसविलासनित्योत्सुकम् ।
लसन्नवयः श्रिया ललित भंगिलीलामयं—
हृदा तदहमुद्वहे किमपि हेमगौरं महः ।। १६४।।

चौपाई—अरुण नैन घूमत मतवारे ।
तन दुति उपमा गर्व निवारे ।।
महा प्रेमरस ललित माधुरी ।
विलसत नित चित चौंप चातुरी ।।
सुन्दर नवल किशोरी गोरी ।
छवि लावण्य रूप रस वोरी ।।
मेरे हिय सो बसत सदाहीं ।
जाहि निरखि रवि शशि सकुचाहीं ।। १६४ ।।

(मंगल समय) शिखरिणी छंद

मदाघूर्णन्नेत्रं नवरतिरसावेशविवशो—
ल्लसद्गात्रं प्राणप्रणयपरिपाट्यां परतरम् ।
मिथो गाढाश्लेषाद्वलयमिव जातं मरकत—
द्रुतस्वर्णच्छायं स्फुरतु मिथुनं तन्मम हृदि ।। १६५ ।।

छन्द—युगल नैंन घूमत मधुमाते ।
नव रति रस आवेश परस्पर विवश अनूपम अँग रँगराते
सुन्दर सहज सनेह सींव विव कस लिपटे मृदु-मृदु
मुसक्याते । भये उमेठमा चूरौ दोऊ गौर श्याम कैसिहुँ न
चिन्हाते । मरकत मणि कंचनसी तन दुति नूतन र
वरषा वरषाते । सो दम्पति छवि नित मम हियरें वसे
सदा करुणा के नाते ।। १९५ ।।

(मंगल समय) मालाजातिइन्द्रवज्रा

परस्परं प्रेमरसे निमग्न—
मशेषसम्मोहनरूपकेलि ।
वृन्दावनांतर्नवकुञ्जगेहे—
तन्नीलपीतं मिथुनं चकास्ति ।। १९६ ।।

दोहा—मग्न प्रेम रस परस्पर, राजत विव सुकुमार ।
मन मोहत सवहीन कौ, जिनकौ रूप विहार ।।
शोभित श्री वृन्दाविपिन, अद्भुत नवल निकुंज ।
जगमगात जोरी ललित, गौर श्याम छवि पुञ्ज ।। १९६ ।।

(अभिलाष) रामाजातिइन्द्रवज्रा

आशास्य दास्यं वृषभानुजाया—
स्तीरे समध्यास्य च भानुजायाः ।
कदा नु वृन्दावनकुञ्जवीथी—
ष्वहं नु राधे ह्यतिथिर्भवेयम् ।। १९७ ।।

छन्द—भानु सुता दास्य आश्रय धरि कब मन माँही ।
ध्यान धारि बैठौं तट जमुना द्रुम छाँही ॥
कबहुँ विपिन कुञ्ज गलिन राधा धुनि बोलौं ।
जाचत पग सेवा ह्वै अतिथि अटत डोलौं ॥ १९७ ॥

(मंगल समय) गीति छन्द

कालिंदीतटकुंजे—
पुंजी भूतं रसामृतं किमपि ।
अद्भुतकेलिनिधानं—
निरवधि राधाभिधानमुल्लसति ॥ १९८ ॥

छन्द—कालिंदी तट कुञ्ज विराजै ।
तहँ रस सुधा सिंधु सी राजै ॥
अमित केलि निधि अगम अनोखी ।
राधा नाम लसत छवि पोखी ॥ १९८ ॥

(प्रिया स्वरूप वर्णन) गीति छन्द

प्रीतिरिव मूर्तिमती रससिंधोः—
सारसंपदिव विमला ।
वैदग्धीनां हृदयं—
काचन वृन्दावनाधिकारिणी जयति ॥१९९॥

छन्द—जयति-जयति वृन्दावन रानी ।
प्रेम प्रीत मूरति सुखदानी ॥

शुचि रस सिंधु सार सम्पति वर
परम चतुर अद्भुत गुन नागर ॥ १९९ ॥

(वनविहार) श्रीआर्यावृत्त

रसघनमोहनमूर्ति—
विचित्रकेलिमहोत्सवोल्लसितम् ।
राधाचरणविलोडित—
रुचिरशिखण्डं हरिं वंदे ॥ २०० ॥

वरवै—रस समूह वर मूरति अति चितचोर ।
केलि विचित्र सुआनँद मुदित किशोर ॥
मोर मुकुट जिहिं डोलैं राधा पाँव ।
तिन हरि के कर जोरौं शीष नवाँव ॥ २०० ॥

(मंगल समय) शिखरिणीवृत्त

कदा गायंगायं मधुरमधुरीत्या मधुभिद—
श्चरित्राणि स्फारामृतरमविचित्राणि बहुशः ।
मृजन्ती तत्केलीभवनमभिरामं मलयज—
च्छटाभिः सिंचंती रसह्रदनिमग्नास्मि भविता ॥२०१॥

दोहा—प्यारी अधरामृत छक्यो, मधुमातौ घनश्याम ।
गाऊँ सरस विचित्र अति, सुधा सरस अभिराम ॥
भली भाँति दै सोहनी, सुन्दर केलि निकुञ्ज ।
छिरकि सुगंधित नीर कव, मग्न हौंहु रस पुंज ॥२०१॥

(प्रिया स्वरूप वर्णन) शिखरिणी वृत्त

उदंचद्रोमांचप्रचयखचिता वेपथुमतीं—
दधानां श्रीराधामतिमधुरलीलामयतनुम् ।
कदा वा कस्तूर्या किमपि रचयंत्येव कुचयो—
र्विचित्रां पत्रालीमहमहह वीक्षे सुकृतिनी ॥ २०२ ॥

छन्द—पुलकित तन अति ललित लाडिली लीलामय वपुधारी ।
तिनके कब मृगमद पत्रावलि रचौं उरज सुकुमारी ॥
विथकित रहौं अंग माधुरि लखि बिसरौं देह सम्हारी ।
रचन लगें निज करसौं छवि कब निरखि जाउँ मैं वारी२०२

(प्रेम वैचित्री) शिखरिणी वृत्त

क्षणं सीत्कुर्वंती क्षणमथ महावेपथुमती—
क्षणं श्यामश्यामेत्यमुमभिलपंती पुलकिता ।
महाप्रेमा कापि प्रमदमदनोद्दामरसदा—
सदानंदा मूर्तिर्जयति वृषभानोः कुलमणिः ॥ २०३ ॥

दोहा—सिसकि-सिसकि रहिजात छिन, कम्प उठत मृदु गात ।
श्याम--श्याम हे कहत कहुँ, रोम--रोम पुलकात ॥
महा प्रेम मूरति निपट, मदन मत्त रसदान ।
जय आनँद मूरति प्रिया, कुलमणि श्रीवृषभान ॥२०३॥

(प्रार्थना) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

यस्याः प्रेमघनाकृतेः पदनखज्योत्स्ना
भरस्नापित—
स्वांतानांसमुदेति कापि सरसा
भक्तिश्चमत्कारिणी ।
सा मे गोकुलभूप नंदनमन
श्चोरी किशोरी कदा ।
दास्यं दास्यतिसर्ववेदशिरसां
यत्तद्रहस्यं परम् ॥ २०४ ॥

छंद—जिन प्रिय पग नख चन्द्र चाँदिनी जिनके हिये प्रकाशी।
चमत्कार युत सरस प्रेममय भक्ती तिनहिं विकाशी ॥
सो मोहन मनहरणि किशोरी करौ मोहि निज दासी।
गुप्त टहल सो देहु जु अजहूँ उपनिषदन ना भासी ॥ २०४ ॥

(चरण स्मरण) शार्दूल वक्रीडित वृत्त

कामं तूलिकया करेण हरिणा यालक्तकैरंकिता—
नानाकेलिविदग्धगोपरमणीवृन्दे तथा वंदिता ।
या संगुप्ततया तथोपनिषदां हृद्येव विद्योतते—
सा राधाचरणद्वयी मम गतिर्लास्यैकलीलामयी ॥२०५

छन्द—गोद धरि चूँमि चख परसि घनश्याम नें चित्र जावक
विचित्रित रचेरी ॥ विविधि क्रीडान मध चतुर व्रज

नागरिन नाय निज शीष मस्तक धरेरी । गुप्त श्रति निगम आगमन नहिं लखि परत रहत मन वच सदा उर वसेरी ।। नृत्य लीला ललित सकल सुख पगे श्रीराधिका पद कमल गति सु मेरी ।। २०५ ।।

(प्रार्थना) शार्दूलविक्रीडितवृत्त

सांद्रप्रेमरसौघवर्षिणि नवोन्मीलन्महामाधुरी—
साम्राज्यैकधुरीणकेलिविभवत्कारुण्यकल्लोलिनि ।
श्रीवृन्दावनचंद्रचित्तहरिणी बंधुस्फुरद्वागुरे—
श्रीराधे नवकुञ्जनागरि तव क्रीतास्मि दास्योत्सवैः२०६

कवित्त—अति रस प्रेम के समूह कौं श्रवत नित अंग-अंग माधुरी नवीन उमगाई है ।। केलि वर वैभव की चक्रवर्ती प्यारी निज सखिन पै कृपा की लहर वरषाई है।।वृन्दावन चन्द्र लाल ताकौ मनमृगी मानौं सहजहिं बाँधिवे की फाँसरी बनाई है । ऐहो राधे नवल निकुञ्ज नागरि तिहारे दास्य ही नें मोल लैकें मोहि अपनाई है ।। २०६ ।।

(मंगल समय) मन्दाक्रान्तावृत्त

स्वेदापूरः कुसुमचयनैर्दूरतः कंटकांको—
वक्षोजेऽस्यास्तिलकविलयो हंत घर्माभसैव ।
ओष्ठः सख्या हिमपवनतः सव्रणो राधिके ते—
क्रूरास्वेवं स्वघटितमहो गोपये प्रेष्ठसंगम् ।। २०७ ।।

सवैय —गई वीनन फूलन दूर प्रिये वर,अंगहि अंग चुचात पसीना चुभि कंटक अंक बनें उरमें, विंदिया पुछ स्वेद सुभाल

रहीना ।। लगि शीतल पौंन सुखे अधरा मसि क्यों श्रम नील निचोल नवीना । कहि अैसैं दुराऊँ असंगिन सौं कब पी सँग केलि रसासव पीना ।। २०७ ।।

(वन बिहार) मन्दाक्राता वृत्त

पातंपातं पदकमलयोः कृष्णभृंगेण तस्याः—
स्मेरास्येंदोर्मुकुलितकुचद्वंद्वहैमारविंदम् ।
पीत्वा वक्त्रांबुजमतिरसान्नूनमंतः प्रवेष्टु—
मत्यावेशान्नखरशिखया पाट्यमानं किमीक्षे ।।२०८ ।।

पद—मोहनलाल मधुप रँगरातौ ।
मंद-मंद मुसक्यात लली के पद अंबुज मड रातौ ।।
कनक कंज मुकुलित उरजन रस लेत लीन ह्वै जातौ।
कबहुँ अधर रस पियत मत्त ह्वै कब निरखौं रस मातौ२०८।।

(अभिलाषा) शिखरिणीवृत्त

अहो तेमी कुञ्जास्तदनुपमरासस्थलमिदं—
गिरिद्रोणी सैव स्फुरति रतिरंगे प्रणयिनी ।
न वीक्षे श्रीराधां हरिहरि कुतोपीति शतधा—
विदीर्येत प्राणेश्वरि मम कदा हंत हृदयम् ।। २०९ ।।

बँगला छन्द—वोई देखो वोई देखो नवल निकुंजे ।
अनुपम रासस्थल सोई छवि पूंजे ।।
वोई गिरि गोवर्द्धन गुहा रुचिकारी ।
विहरत जहाँ नित नव सुकुमारी ।।

हाहा नहीं देखों कहूँ नवल किशोरी।
लुकी-लुकी डोलौं बन-बन चोरी-चोरी ॥
अहो प्राणेश्वरि तुम विरह दुखारी।
हृदय विदीर्ण कब होय मम प्यारी ॥२०९॥

(अभिलाषा) शिखरिणीवृत्त

इहैवाभूत्कुन्जे नवरतिकलामोहनतनो—
रहोऽत्रैवानृत्यद्दयितमहिता सा रसनिधिः।
इति स्मारं स्मारं तत्र चरितपीयूषलहरीं—
कदा स्यां श्रीराधे चकित इह वृन्दावन भुवि ॥२१०

दोहा—इनहीं नवल निकुञ्ज नित, पी सँग होत विहार।
याही मंडल रास रस, केलि करत सुकुमार ॥
यह विधि महिमामृत लहरि सुमिरि-सुमिरि हिय माँहि।
श्रीवन विस्मित डोलिहौं, कब राधे बन छाँहि ॥२१०॥

(प्रिया-हित सखी परस्पर सम्भाषण) स्रग्धरा छन्द

श्रीमद्बिंबाधरे ते स्फुरतिनवसुधा—
माधुरीसिंधुकोटि—
नेत्रांतस्ते विकीर्णाद्भुत—
कुसुमधनुश्चंडसत्कांडकोटिः।

श्रीवक्षोजे तवातिप्रमद—

रसकलासारसर्वस्वकोटिः—

श्रीराधे त्वत्पदाब्जात्स्रवति—

निरवधिःप्रेमपीयूषकोटिः ॥२११॥

छन्द—राधे तव विंव अधर सोहत नव सुधा सिंधु माधुरी समुद्र कोटि कोटिन उमगाने । चंचल दृग अंचल अति वंक मुरक हेरन के छाँड़त मानौं अनंग शर धनुष ताने ॥ वक्षस्थल छवि अपार प्रमद रस कलान सार सर्वस सुकुमार चारु कोटि सुःख साने ॥ अगनित वर प्रेम अमी वरषत चरणारविन्द कृत-कृत मैं लूटी यह नाना निधि खजाने ॥ २११ ॥

(शय्या समय) मन्दाक्रान्ता वृत

सांद्रानंदोन्मदरसघनप्रेमपीयूषमूर्त्तेः—

श्रीराधाया अथ मधुपतेः सुप्तयोः कुञ्जतल्पे ।

कुर्वाणाहं मृदुमृदुपदांभोजसंवाहनानि—

शय्यांते किं किमपि पतिता प्राप्ततंद्रा भवेयम् ॥२१२॥

छन्द—सघन आनन्द अति रस भरी प्रेममय सुधा की मनहुँ मूरति किशोरी । पोढ़ रहि कुञ्ज परजंक सिज्या रुचिर लाल मधु मत्त के संग गोरी ॥ पाँयते बैठि तहाँ ललित पग तल हरैं चापिहौं कबै अनुराग वोरी । तहँ हिं अलसाय औंघाय रहि जाउँ मैं कौन शुभ दिन घरी होय सो री ॥ २१२ ॥

(अभिलाष) स्रग्धरा छन्द

राधापादारविंदोच्छलितनवरस—
प्रेमपीयूषपुंजे—
कालिंदीकूलकुंजे हृदि कलितमहो—
दारमाधुर्यभावः ।
श्रीवृन्दारण्यवीथीललितरतिकला—
नागरीं तां गरीयो—
गंभीरैकानुरागां मनसि परिचरन्—
विस्मृतान्यः कदा स्याम् ॥२१३॥

दोहा—कालिंदी के कूल इक, सुन्दर नवल निकुञ्ज ।
दम्पति तहाँ विराजहीं, गौर श्याम छवि पुञ्ज ॥
प्रिय पग कंज नवीन रस, सुधा श्रवत अभिराम ।
भाव धरौं कब माधुरी, अद्भुत विव छवि धाम ॥
चतुर जु सुरत कलान में, प्रेम छके मन चाव ।
विहरत वृन्दाविपिन में, भूलौं कब तन भाव ॥ २१३ ॥

(प्रेम वैचित्री) शिखरिणी वृत्त

अदृष्ट्वा राधांके निमिषमपि तं नागरमणिं—
तया वा खेलंतं ललितललितानंगकलया

कदाहं दुःखाब्धौ सपदि पतिता मूर्छितवती—
न तामाश्वास्यार्त्ता सुचिरमनुशोचे निजदशाम् ।।२१४।।

दोहा—मूर्छित विवश भई प्रिये, लाल अंक नहिं देख।
किहिं विधि क्रीड़ा केलि सुख, करौं कहा अवशेख ।।
देखि जु हित हित की दशा, व्याकुल हिय अति सोच।
सावधान नहिं कर सकी, प्रिया, यही संकोच ।।२१४।।

(प्रिया-हित सखी परस्पर सम्भाषण) मन्दाक्रान्तावृत्त

भूयोभूयः कमलनयने किं मुधा वार्यतेऽसौ—
वाङ्मात्रेऽपि त्वदनुगमनं न त्यजत्येव धूर्त्तः।
किंचिद्राधे कुरु कुचतटीप्रांतमस्य प्रदीयं—
चक्षुर्द्वारा तमनुपतितं चूर्णतामेतु चेतः ।।२१५।।

पद—सुन पंकज लोचन चतुर नारि।
सँग डोलैं लाल अति ही लवारि ।।
नहिं मानै ढीठ जे नन्द छैल।
रहि जाय यहाँ जे अपनी गैल ।।
कुच तटी प्रांत याकौं दिखाय।
चित चूर्ण हो याकौ अट पटाय ।।
यह अलि हित की सुन प्यारी बात।
अति नागरता नैंननि दिखात ।।२१५।।

(वृन्दावन महिमा) श्रृग्धरा छन्द

किं वा नस्तैः सुशास्त्रैः किमथ तदुदितै—
वर्त्मभिः सद्गृहीतै—
र्यत्रास्ति प्रेममूर्त्तेर्नहि महिमसुधा—
नापि भावस्तदीयः ।
किं वा वैकुण्ठलक्ष्म्याप्यहह परमया—
यत्र मे नास्तिराधा—
किं त्वाशाप्यस्तु वृन्दावनभुवि—
मधुरा कोटिजन्मांतरेपि ॥२१६॥

कवित्त—कहौ कहा प्रयोजन मोय ऐसे शास्त्र बातन सौं जामैं नहिं प्रिया पद कंज मकरंद है । संतन जे माने ग्रन्थ नाहिं जामैं प्रेम पंथ राधा नाम अमृत कौ जोपै ना अनंद है ॥ धाम है वैकुंठ दिव्य जहाँ रहैं लक्ष्मी निधि राधा बिन मेरौ मन तहाँ अति मन्द है । वृन्दावन रानी राजधानी जन्म-जन्म मिलै यही जिय चाहूँ चित जामैं ही सुछन्द है ॥ २१६ ॥

पद—ऐसे शास्त्र से कहा प्रयोजन, जामैं नहीं मूर्ति सुकुमारी ।
कहा संत सद ग्रही शास्त्र से,जो नहीं प्रेम पंथ पिय प्यारी॥
कहा काम वैकुण्ठ धाम सौं राधा नाम न जामैं ।
लक्ष्मी विभव कोटि नहिं चाहूँ, राधा जू नहीं तामैं ॥
श्रीराधे कौ दरशन दुसकर, पै मैं जाचौं गोद पसारी ।
जन्म-जन्म छूटै ना छिनहूँ,वृन्दावन भूमी सुखकारी ॥२१६॥

(प्रेम वैचित्री) मन्दाक्रान्ता वृत्त

श्यामश्यामेत्यनुपमरसापूर्णवर्णैर्जपंती—
स्थित्वा स्थित्वा मधुरमधुरोत्तारमुच्चारयन्ती।
मुक्तास्थूलान्नयनगलितानश्रुबिंदून्वहन्ती—
हृष्यद्रोमा प्रतिपति चमत्कुर्वती पातु राधा ॥२१७॥

दोहा—श्याम-श्याम हा श्यामघन, प्रेम विवस सुकुमार।
हरें-हरें टेरत कबहुँ, कबहुँ पुकार पुकार॥
मुक्ता से अंसुवा टरें, मृदुल अंग पुलकान।
चमत्कार क्षण-क्षण, रखहु, सो राधा मम प्रान ॥२१७॥

(प्रेम वैचित्री) मन्दाक्रान्ता छन्द

तादृङ्मूर्त्तिर्व्रजपतिसुतः पादयोर्मे पतित्वा-
दंताग्रेणाथधृत्वा तृणकममलान्काकुवादान्ब्रवीति।
नित्यं चानुव्रजति कुरुते सङ्गमायोद्यमं चे-
त्युद्वेगं मे प्रणयिनि किमावेदयेयं नु राधे ॥ २१८ ॥

पद—तुम मानिनि पिय सौं नहिं बोलौ, मुहि ढिग ठाढ़ी पावैं।
तुमहिं मिलावन काज लाड़िलौ, कब मो हा हा खावैं।
झुकि-झुकि चहै पाँय मम परसन, तिनुका, दशन दबावैं।
दीन बचन बोलत मिलिवे कौं, संग न छाड़ौ भावैं॥
सो उद्वेग करौं मैं प्यारी, मिलौ जु सहज सुभावैं।
करत निवेदन ललन दीनता, करुणा मनह्वै आवै ॥२१८॥

(बन विहार) शिखरिणीवृत्त

चलल्लीलागत्या क्वचिदनुचलद्धंसमिथुनं—
क्वचित्केकिन्यग्रे कृतनटनचन्द्रक्यनुकृति ।
लताश्लिष्टं शाखिप्रवरमनुकुर्वत् क्वचिदहो—
विदग्धद्वंद्वं तद्रमत इह वृन्दावनभुवि ॥ २१९ ॥

बसंत—अति चतुर शिरोमणि प्यारो लाल ।
नित वृन्दावन विहरत विशाल ॥
दोउ चलत कबहुँ अलि मधुर चाल ।
जिहिं निरखि-निरखि मोहत मराल ॥
कहुं नचत मयूरन बन विहार ।
त्रिबि नृत्यत तैसैंहि भुज पसार ॥
लपटी लखि कहुँ तरु वेलि संग ।
लपटत त्योंही कस अंग-अंग ॥
यह भाँति अनूठे करत ख्याल ।
हित किशोरीलाल शोभा रसाल ॥ २१९ ॥

(मंगल समय) मन्दाक्रान्तावृत्त

व्याकोशेंदीवराष्टापदकमलरुचां हारि कान्त्या स्वया—
यत् कालिंदीयं सुरभिमनिलं शीतलं सेवमानम् ।
सांद्रानंदं नवनवरसं प्रोल्लसत्केलिवृन्दं—
ज्योतिर्द्वंद्वं मधुरमधुरं प्रेमकंदं चकास्ति ॥ २२० ॥

पद—ऐसी विचित्र जोरी बनी, जैसी कहूँ देखी सुनी न भनी ।
नील कमल इक श्याम सुन्दर, इक गोरी कनक तनी ॥

जमुना कूल मंद मारुत सुख, लेत ललित कमनी।
अति आनँद रूप नव रस जुत, केलि समूह ठनी ॥
विशद प्रकाश मधुर-मधुरहुँ तैं अद्भुत प्रेम सनी ।
वृन्दाविपिन निकुंज लाडिली, विहरत मन हरनी ॥२२०॥

(वनविहार) पृथ्वी छन्द

कदा मधुरसारिकाः स्वरसपद्यमध्यापय—
त्प्रदाय करतालिकाः क्वचन नर्तयत्केकिनम् ।
क्वचित्कनकवल्लरीवृततमाललीलाधनं—
विदग्धमिथुनं तदद्भुतमुदेति वृन्दावने ॥२२१॥

सवैया-कहुँ तोतन कौं अपने रस के, पद मोद विनोद पढ़ावत हैं।
कर तारिन दै कबहूँ बन जाय, मयूरन मत्त नचावत हैं॥
कहुँ कंचन वेलिसौं श्याम तमाल,मिल्यौ लखिकैं लिपटावत हैं।
अस चातुर अद्भुत जोट लखौं, कब वृन्दावनछवि छावत हैं॥

(शृंगार समय) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

पत्रालीं ललितां कपोलफलके नेत्रांबुजे कज्जलं—
रंगंबिंबफलाधरे च कुचयोः काश्मीरजालेपनम् ।
श्रीराधे नवसंगमाय तरले पादांगुलीपंक्तिषु—
न्यस्यंती प्रणयादलक्तकरसं पूर्णा कदा स्यामहम्॥२२२॥

सोरठा—पत्रावली कपोल, तुमरे कब राचों प्रिये ।
सुन्दर लोचन लोल,अंजनि रुचिर बनाय हौं ॥

चरण कमल सुकुमार, अँगुरी सुन्दर सोहनी ।
रचि-रचि कै अति चारु, जावक सुरँग लगायहौं ॥
वीरी ललित बनाय, रँगौं अधर वर भामिनी ।
केशर पत्र बनाय, सुभग उरोजन करहुँ मैं ॥
हा राधे सुख राशि, प्रथम समागम चपल चित ।
मो मन की यह आश, पुजवहुगी कब लाड़िली ॥२२२॥

(अतिसख्य) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

श्रीगोवर्द्धन एक एव भवता पाणौ प्रयत्नाद्धृतो—
राधावर्ष्मणि हेमशैलयुगले दृष्टेपि ते स्याद्भयम् ।
तद्गोपेंद्रकुमार मा कुरु वृथा गर्वं परीहासतः—
कर्ह्येवं वृषभानुनंदिनि तव प्रेयांसमाभाषये ॥२२३॥

छंद—अहो लला तुम बहु यत्ननि सौं, इक गिरि कर पर धारौ ।
प्राण प्रिया मम हेम शैल युग, धारत नित्य निहारौ ॥
जिनकी झलक विलोक, कंप तुम तन मन सुरत विसारौ ।
यातें बहुत गर्व की बातैं, हम आगे न सँचारौ ॥
यह विधि हा वृषभानु नंदिनी, मोहनलाल तिहारौ ।
तासौं कब परिहास्य वचन यह कहौं, हँसै सुनि प्यारौ॥ २२३

(शय्या समय) पृथ्वी छंद

अनङ्गजयमङ्गलध्वनितकिंकिणीडिंडिमः—
स्तनादिवरताडनैर्नखरदंतघातैर्युतः ।

अहो चतुरनागरीनवकिशोरयोर्मंजुले—
निकुञ्जनिलयाजिरे रतिरणोत्सवो जृंभते ॥२२४॥

कवित्त—जीतकें अनंग जंग दुंदुभी वजत मानौं किंकिनी कमर पग नूपुर की ध्वनि चारु । जघन कपोल कुच अधर चिवुक चख नखन दशन ही के सहत सुभट वार ॥ नागरी चतुर तिय नवल किशोर पिय अंग-अंग मेल रस केलि माहि सर सार । ललित निकुञ्ज होत उत्सव सुरत जुद्ध जै जै ध्वनि बोलौं कव रंध्रन सौं मैं निहार ॥ २२४ ॥

(बाल्यकैशोर) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

यूनोर्वीक्ष्यदरत्रपानटकलामावीक्षयन्ती दृशो—
वृण्वाना चकितेन संचितमहारत्नस्तनंचाप्युरः ।
सा काचिद्वृषभानुवेश्मनि सखीमालासु बालावली—
मौलिःखेलति विश्वमोहनमहासारूप्यमाचिन्वती॥२२५॥

छन्द—खेलत श्री वृषभानु भवन वृषभानु किशोरी ।
सखी सहेलिन संग खेलि सुन्दर वर भोरी ॥
दुरि चुरिकें घनश्याम लख्यो निरखत छवि प्यारी ।
औचक मिलि गई दीठ गई कछु लज सुकुमारी॥
समाधान कियौ लाल दृगन करि सैनावैनी ।
लखि न जाय कोऊ,सखिन ओर देखत मृग नैनी॥
अद्भुत रत्न अमोल उरज ढाँपत पट छोरैं ।
जग मोहन कब लखौं रूप युवतिन शिर मोरैं ॥ २२५॥

(प्रेम वैचित्री) मन्दाक्रान्ता वृत्त

ज्योतिः पुञ्जद्वयमिदमहो मंडलाकारमस्या—
वक्षस्युन्मादयति हृदयं किं फलत्यन्यदग्रे ।
भ्रूकोदंडं नकृतघटनं सत्कटाक्षौघबाणैः—
प्राणान्हन्यात्किमु परमतो भावि भूयो न जाने ॥२२६

दोहा—प्रथमहि देखी राधिका, मूर्छित ह्वै नँदलाल ।
समुझावत व्याकुल मनहिं, चितै-चितै छवि वाल ॥
याके उर मंडल उदय, ज्योति पुंज शुच दोय ।
कहा फल करिहैं अबहि ते, डारत हियौ विलोय ॥
सहजहि भृकुटि कमान सौं, छुटत कटाक्षन वान ।
अवलौं कसकत हैं हिये, वेध गये मम प्रान ॥
अबहीं सौं चित चोर अस रोम-रोम सुकुमार ।
आगे कैसिक बचहि चित, जोवनवती निहार ॥ २२६ ॥

(प्रेम वैचित्री) मन्दाक्रान्ता वृत्त

भोः श्रीदामन्सुबल वृषभ स्तोक कृष्णार्जुनाद्याः—
किं वो दृष्टं मम नु चकिता दृग्गता नैव कुञ्जे ।
काचिद्देवी सकलभुवनाप्लाविलावण्यपूरा—
दूरादेवाखिलमहरतप्रेयसो वस्तु सख्युः ॥ २२७ ॥

चौपाई—हे श्री दाम सुवल हे अर्जुन ।
वृषभ स्तोक कृष्ण मेरी सुन ॥

तुम देख्यौ नव कुञ्ज की ओरी।
चौंधि गईं लखि अखियाँ मोरी॥
कोउ इक नागरि अति छवि रासी।
त्रिभुवन मोहन रूप लतासी॥
आय झमक दूरहि सौं दुरिकैं।
हरि लीनौं हरि सर्वस चुरिकैं॥
लोटत हैं व्याकुल चित तव सौं।
सो शोभा कब नैनन परसौं॥ २२७॥

(प्रेम वैचित्री) शिखरिणीवृत्त

गता दूरे गावो दिनमपि तुरीयांशमभज--
द्वयं दातुं क्वांतास्तव च जननी वर्त्मनयना।
अकस्मात्तूष्णीके सजलनयने दीनवदने--
लुठत्यस्यां भूमौ त्वयि नहि वयं प्राणिणिपवः॥२२८

दोहा--गईं दूर गैयाँ लला, रह्यौ दिवस कछु थोर।
हेरति ह्वै है वाट तव, मैया सांकरि खोर॥
औचक मुख बोलत न तुम, श्रवत दृगन जलधार।
विकल चित्त अवनी लुठत, सूख्यौ मुख न सम्हार॥
प्यारी की झाँकी भई, यासौं जानी जाय।
दीन दशा पिय देखि मैं, प्राण न राखौं हाय॥ २२८॥

(शृङ्गार समय) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

नासाग्रे नवमौक्तिकंसुरुचिरं स्वर्णोज्ज्वलं बिभ्रती--
नानाभंगिरनंगरङ्गविलसल्लीलातरङ्गावलिः ।
राधे त्वं प्रविलोभय व्रजमणिं रत्नच्छटामंजरी--
चित्रोदंचितकंचुकस्थगितयोर्वक्षोजयोःशोभया ॥२२६॥

पद—प्यारी जू नें मोह्यौ मोहनलाल ।
नासा ललित बुलाक छविली,अंग–अंग चम्पक वरण बिशाल।।
विविध अनंग तरंग रंगमय, राजत ललित लडैंती बाल ।
रत्नाभरण विंव तन दमकत, जरतारी कंचुकि उरमाल।।२२६

(प्रिया-हितसखीपरस्परसंभाषण) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

अप्रेक्षे कृतनिश्चयापि सुचिरं वीक्षेतदृक्कोणतो—
मौने दार्ढ्यमुपाश्रितापि निगदेत्तामेव याहीत्यहो ।
अस्पर्शे सुधृताशयापि करयोर्धृत्वा बहिर्यापये--
द्राधाया इति मानदस्थितिमहं प्रेक्षे हसंती कदा॥२३०

दोहा—मानिन मन निश्चय कियौ, पियतन चितवौं नाँहि ।
रूप लालची नैन पै, दुरि चुरि तितही जाँहि ॥
ठनन ठनी बोलौं नहीं, लेहुँ न कबहूँ नाम ।
तौहू फिर फिर कहत मुख, जाहु जाहु घनश्याम ॥
प्रण कीनौं छीवौं नहीं, कोटि जतन तन लाल ।
पै पुनि–पुनि भुज मूल गहि, करत द्वार दिश बाल ॥
निवहौ ना प्रण एकहू, सो कब हसौं निहार ।
समुझ सकुच तुम पियहि कस, भर भेटौं अंकवार ॥२३०॥

(वनविहार) शिखरिणी वृत्त

रसागाधे राधाहृदि सरसि हंसः करतले—
लसद्वंशस्रोतस्यमृतगुणसंगः प्रतिपदम् ।
चलत्पिच्छोत्तंसः सुरचितवतंसः प्रमदया—
स्फुरद्गुंजागुच्छः स हि रसिकमौलिर्मिलतु माम्॥२३१

माँझ—राधा हित रस अगम सरोवर हंस रूप उजियारे ।
राधा ही गुण गानन पोषी वंशी वन कर धारे ॥
मोर मुकुट शिर डुलत श्रवण अति कुंडल प्रिया शृंगारे ।
टाँक्यौ गुंजा गुच्छ अनूपम मिलौ सु मोहन प्यारे ॥२३१॥

(वनविहार) शिखरिणी वृत्त

अकस्मात्कस्याश्चिन्नववसनमाकर्षति परं—
मुरल्या धम्मिल्ले स्पृशति कुरुतेन्याकरधृतिम् ।
परं नित्यं राधापदकमलमूले व्रजपुरे—
तदित्थं वीथीषु भ्रमति स महालंपटमणिः ॥ २३२॥

चौपाई—विनहिं काज विन बात विहारी ।
किनहूँ की झटकत पट सारी ॥
किनहूँ शिर गुहे फूल चँवेली ।
खैंचत तिहिं मुरली रस केलि ॥
काहू कौ कर गहि मुसक्याई ।
अति लम्पट शिर मुकुट कन्हाई ॥
पै प्रिय पग शिर धरत सदांहीं ।
कब डोलत देखौं वन मांहीं ॥ २३२ ॥

(वनविहार) शार्दूलविक्रीडित वृत

एकस्या रतिचौर एव चकितं चान्यास्तनांते करं—
क्रृत्वा कर्षति वेणुनान्यसुदृशो धम्मिल्लमल्लीस्त्रजम् ।
अरोन्याभुजवल्लिमुत्पुलकितां संकेतयत्यन्यया—
राधायाः पदयोर्लुठत्यलममुं जाने महालंपटम्॥२३३

माँझ—किनहूँ उरज गहै किनहूँ सौं दुरि चुरिकें रम आवै ।
किनहूँ कबरी गुहै सुमन लै वंशी तिहिं उरझावैं ॥
किनहूँ कैं गलवाँह डार किनहूँ संकेत वतावै ।
सो अति लम्पट जानत मैं नित राधा पग सिर नावै ॥२३३

(बन बिहार) शिखरिणीवृत

प्रियांसे निक्षिप्तोत्पुलकभुजदंडः क्वचिदपि—
भ्रमन्वृंदारण्ये मदकलकरीन्द्राद्भुतगतिः ।
निजां व्यञ्जन्नत्यद्भुतसुरतशिक्षां क्वचिदहो—
रहः कुञ्जे गुञ्जाध्वनितमधुपे क्रीडति हरिः ॥२३४॥

दोहा—राधा गलबाँही दिये, पुलकित तन नँदलाल ।
डोलत मग वृन्दाविपिन, मत्तगयंदनि चाल ॥
सुरत चिन्ह अँग-अँग दिपत, सूचत निशि सुख पुंज ।
सो हरि क्रीडत रहत जहँ, गूंजत अलि नव कुंज॥२३४॥

(वनविहार) स्रग्धरा छन्द

दूरे सृष्ट्यादिवार्त्ता न कलयति मनाङ्—
नारदादीन्स्वभक्ता—
ञ्छ्रीदामाद्यैः सुहृद्भिर्न मिलति हरति—
स्नेहवृद्धिं स्वपित्रोः ।
किं तु प्रेमैकसीमां मधुररससुधा—
सिंधुसारैरगाधां—
श्रीराधामेव जानन्मधुपतिरनिशं—
कुञ्जवीथीमुपास्ते ॥ २३५ ॥

कवित्त—जग उपहासन सौं राखत न काज कछू नारदादि भक्तन की सुधिहू सम्हारै ना । सुबलादि सखन कौं भेटत न देख्यौ कहूँ, नंद औ जसोदा कौ सनेह मन धारै ना ॥ जानत पै प्रेम सीम मधुर रस सुधा की, सागर अगाधा राधा नैनन सौं टारै ना । ताही सौं विहारै नव कुञ्ज सघन वीथिन में, नागर रसिक दूजी ओर हू निहारै ना ॥ २३५ ॥

(मंगल समय) पथ्या-जातिआर्यगीतान्तरगत

सुस्वादु सुरसतुंदिल मिंदीवरवृन्दसुन्दर किमपि ।
अधिवृन्दाटवि नदति राधावक्षोजभूषणं ज्योति॥२३६

बरवै—सुन्दर रस परिपूरित अगम अनूप ।
नीलांबुज वर शोभित साँवल रूप ॥
उदित निपट शोभा निधि नव सुकुमार ।
मुदित बसत वृन्दावन पिय उर हार ॥ २३६ ॥

(प्रिया स्वरूप वर्णन) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

कान्तिः कापि परोज्ज्वला नवमिल—

च्छ्रीचन्द्रिकोद्भासिनी—

रामाद्यद्भुतवर्णकांचितरुचि—

नित्याधिकांगच्छविः।

लज्जानम्रतनुः स्मयेन मधुरा

प्रीणाति केलिच्छटा—

सन्मुक्ताफलचारुहारसुरुचिः

स्वात्मार्पणेनाच्युतम्॥ २३७॥

छन्द—अनिर्वचनीय अति स्वच्छ दिन प्रति सरस ललित मुख कांति शशि दुति लजावें।सखिन शृङ्गार रचि कियौ हिय हर्ष भई नई नित-नित वदन छवि सुहावै॥ लाज वस नमित मुसक्यात वर भामिनी हार मोती हिये जगमगावै। सुभग निज रूप रस माधुरी झलक सौं लाड़िली रसिक नागर रिझावै॥ २३७॥

(वृन्दावन महिमा) इन्द्रवज्रा वृत्त

यन्नारदाजेशशुकैरगम्यं—

वृन्दावने वंजुलमंजुकुंजे।

तत्कृष्णचेतोहरणैकविज्ञ

मत्रास्ति किंचित्परमं रहस्यम्॥ २३८॥

छंद—नारद, ब्रह्म शिवादि, शुकादिक जो रस दुस्कर।
सो वृन्दावन लता कुञ्ज राजत मूरति धर ॥
मोहन मन धन हरन चपल अति रहत निरंतर।
अद्भुत परम रहस्य सोई शोभित आनँद कर ॥ २३८ ॥

(प्रार्थना) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

लक्ष्म्यायश्चनगोचरीभवतियन्नापुःसखायःप्रभोः—
संभाव्योपि विरंचिनारदशिवस्वायंभुवाद्यैर्नयः
यो वृन्दावननागरीपशुपतिस्त्रीभावलभ्यःकथं—
राधामाधवयोर्ममास्तु स रहोदास्याधिकारोत्सवः॥२३९

चौपाई—जिहि कारण कमला ललचाहीं।
जो सख्यादिक पावत नाहीं ॥
शिव स्वायंभुवादि नारद विधि।
ध्यानहुँ में ना परसत किहुँ विधि॥
सो राधा गोपाल गुलामी।
सखीभाव पैयत अभिरामी ॥
न्यारी ललित निकुञ्ज रसोत्सव।
आश यहै पाऊँ कैसिहुँ कव ॥ २३९ ॥

(शय्या समय) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

उच्छिष्टामृतभुक्तवैवचरितं शृण्वंस्तवैव स्मरन्—
पादांभोजरजस्तवैवविचरन्कुंजांस्तवैवालयान् ।

गायन्दिव्यगुणांस्तवैव रसदे पश्यंस्तवैवाकृतिं—

श्रीराधे तनुवाङ्मनोभिरमलैसोहं तवैवाश्रितः ॥२४०॥

छन्द—तुव जूठन अमृत भोजन कर तव गुण श्रवण सुनाऊँ।
हिय ध्याऊँ रज चरण कमल तव कुञ्ज भवन मडराऊँ॥
गाऊँ दिव्य तिहारेई गुण गण दृग छवि मधुर छकाऊँ।
मन,क्रम,वचन त्रिशुद्ध विहारिन मैं तेरी हि कहाऊँ॥ २४०

(चरण स्मरण) श्रृग्धरा छन्द

क्रीडन्मीनद्वयाक्ष्याः स्फुरदधरमणी—
विद्रुमश्रोणिभार—
द्वीपायामोंतरालस्मरकलभकटा—
टोपवक्षोरुहायाः।
गंभीरावर्त्तनाभेर्बहुलहरिमहा—
प्रेमपीयूषसिंधोः—
श्रीराधायाः पदांभोरुहपरिचरणे
योग्यतामेव चिन्वे॥ २४१॥

दोहा—प्रेमामृत निधि लाड़िली, चपल नैन जुग मीन।
लाल रत्न विद्रुम छटा, टापु नितंव नवीन॥

गज छौना से मद भरे, कुंभस्थल उर जात ।
नाभि भँवर त्रिवली लहरि,अति शोभा सरसात ॥
तिनके पद पंकज ललित, सेवा कौ अधिकार ।
ढूंढ़ि-ढूंढ़ि कब पाय हौं, उर आनंद अपार ॥ २४१ ॥

(अभिलाष) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

मालाग्रन्थनशिक्षयामृदुमृदुश्रीखण्डनिर्घर्षणा—
देशेनाद्भुतमोदकादिविधिभिःकुंजांतसंमार्जनैः ।
वृन्दारण्यरहःस्थलीषु विवशा प्रेमार्तिभारोद्गमात्--
प्राणेशं परिचारिकैःखलु कदा दास्या मयाधीश्वरी२४२

दोहा—माला गुहि चंदन घिसन, सिद्ध करन पकवान ।
कुञ्ज सोहनी झारिवौ, सिखवहु मुहि रसखान ॥
केलिस्थल वृन्दाविपिन, प्रेम विवस पुलकाहुँ ।
सेवा दीजै मोहि यह, स्वामिनि बलि-बलि जाहुँ ॥२४२॥

(शय्या समय) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

प्रेमांभोधिरसोल्लसत्तरुणिमारंभेण गंभीरह—
ग्भेदाभंगिमृदुस्मितामृतनवज्योत्स्नाचितश्रीमुखी ।
श्रीराधा सुखधामनि प्रविलसद्वृंदाटवीसीमनि—
प्रेयोंके रतिकौतुकानि कुरुतेकंदर्पलीलानिधिः ॥२४३

छन्द—प्रेम रस निधि तरुनई उल्लास उठत तरंग।
चपल नैन कटाक्ष रचना विविध वरषत रंग ॥
मंद-मंद मुसकानि वरषत मुखते अमृत चाँदिनी।
खिल रही अति सुखद वृन्दाविपिन में उनमाँदिनी ॥
लाल अंक निशंक राजै राधिका सुख धामिनी।
काम कीरति करनि कौतुक श्रीकिशोरी कामिनी ॥२४३॥

(प्रिया स्वरूप वर्णन) शार्दूलविक्रीडित वृत

शुद्धप्रेमविलासवैभवनिधिः कैशोरशोभानिधि—
वैदग्धीमधुरांगभंगिमनिधिर्लावण्यसंपन्निधिः।
श्रीराधा जयतान्महारसनिधिःकंदर्पलीलानिधिः—
सौंदर्यैकसुधानिधिर्मधुपतेः सर्वस्वभूतो निधिः ॥२४४॥

छन्द—अति शुद्ध प्रेम विलास वैभव निधी ताकी जानिये।
शोभा समूह किशोर ताकी निधी नागरि मानिये ॥
सुठि अंग-अंग सुढंग रचना महारस अमृत निधी।
कंदर्प कोटि कला-कुशल सौंदर्य मधुर सुधानिधी ॥
लाल के नौ निद्धि निधि की अगणित निधी श्रीराधिका।
सर्वस्व सर्वोपर सुसंपति हरौ अब सब वाधिका ॥२४४॥

(शय्या समय) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

नीलेंदीवरवृन्दकांतिलहरीचौरं किशोरद्वयं—
त्वय्येतत्कुचयोश्चकास्ति किमिदंरूपेण संमोहनम्।

तन्मामात्मसखीं कुरु द्वितरुणीयं नौ दृढं श्लिष्यति—
स्वच्छायामभिवीक्ष्यमुह्यतिहरौराधास्मितंपातुनः ॥२४५

दोहा—प्यारी उर दोऊ कुचन में, लखि प्रतिबिंब सु लाल।
नील कमल की कांति कुच, मन हर कियौ विहाल॥
अपनौं ही प्रतिबिंब लखि, कहत आपने आप।
सेवा विवि बहु विधि करैं कीजै सखी मिलाप॥
वैचित्री अति प्रेम की, मोहे मोहनलाल।
हँसन लगी तब लाडिली, हास करैं प्रतिपाल॥ २४५॥

(प्रिया-हितसखी परस्पर संभाषण) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

संगत्यापि महोत्सवेन मधुराकारां हृदि प्रेयसः--
स्वच्छायामभिवीक्ष्यकौस्तुभमणौसंभूतशोकाक्रुधा।
उत्क्षिप्य प्रियपाणिमेव विनयेत्युक्त्वागतायाबहिः—
सख्यै साश्रनिवेदतानिकिमहंश्रोष्यामि ते राधिके॥२४६

दोहा—पिय उर कौस्तुभ मणी मधि, प्यारी लख प्रतिबिंब।
शंकायुत भोरी भट्ट, मान लियौ अविलम्ब॥
कर छुड़ाय बाहिर चली, कुंज द्वार पै आय।
वे बातें मैं कब सुनौं, सखियन सौं बतराय॥ २४६॥

(सीमंत स्मरण) पृथ्वी छन्द

महामणिवरस्रजं कुसुमसंचयैरंचितं—
स्फुरन्मरकतप्रभाग्रथितमोहितश्यामलम्।

महारसमहीपतेरिव विचित्रसिद्धासनं—
कदा नु तव राधिके कवरभारमालोकये ॥ २४७ ॥

सवैया–मणि मोतिन फूलन सौं जु गुथी, मन मोहन को मन मौहन वैंनी । रस राज शृङ्गार महारस कौ, शिरताज सिद्धासन राजत श्रैंनी ॥ रस केश जु केशन की कवरी, रस केश-रची निज हाथ सु अैंनी । कव कुंजन द्वार झरोकन सौं अवि लोकिनि हौं जु महा सुख दैंनी ॥ २४७ ॥

(सोमंत स्मरण) मन्दाक्रान्ता वृत्त

मध्येमध्ये कुसुमखचितं रत्नदाम्ना निवद्धं—
मल्लीमाल्यैर्घनपरिमलैर्भूषितं लंवमानैः ।
पश्चाद्राजन्मणिवरकृतोदारमाणिक्यगुच्छं—
धम्मिल्लं ते हरिकरधृतं कर्हि पश्यामि राधे ॥२४८॥

कवित्त—बीच–बीच फूल लगे रतनन की माल बँधी, छवि हार चँमेली कौ रह्यौ लटकाय कैं । चित्रित विचित्र वैनी हाथन बनाई निज, लाल मणी मोती गुच्छ शोभा रह्यौ पायकैं ॥ राधे सुकुमारी जू की शोभा छवि कहा कहौं लाल हित किशोर हू रह्यौ सचु पायकैं। हाहा अव प्यारी मोहि कृपा कर वुलाय लीजै, कुञ्जन के कौनन में राखौ अपनायकैं ॥ २४८ ॥

(सीमंत स्मरण) शिखरिणीवृत्त

विचित्राभिर्भङ्गीवितितभिरद्धो चेतसि परं—
चमत्कारं यच्छल्लँलितमणिमुक्तादिललितः ।
रसावेशाद्वित्तः स्मरमधुरवृत्ताखिलमहो—
द्भुतस्ते सीमंत नवकनकपट्टो विजयते ॥ २४६ ॥

कवित्त—छाजत है छविन की छटाँन सौं, छवीली जो मोहन मनोहर कौं मोहै अनुकूल है। विविध विचित्र रत्न मणिन आभूषण हैं चमत्कार. चकाचौंध चारौं ओर तूल है॥ रस के आवेसन में काम की कहानी मीठी, निज अलि गन पिय प्यारी सुख मूल है। अद्भुत अनौखौ छत्र मदन महीप जू कौ, राजै सीमन्त में जाड़ौ स्वर्ण शीष फूल है॥ २४६ ॥

(सीमंत स्मरण) शिखरिणी वृत्त

अहो द्वैधीकर्त्तुं कृतिभिरनुरागामृतरस—
प्रवाहैः सुस्निग्धैः कुटिलरुचिरश्याम उचितः ।
इतीयं सीमंते नवरुचिरसिंदूररचिता—
सुरेखा नः प्रख्यापयितुमिव राधे बिजयते ॥ २५० ॥

छन्द—ललित सीमंत बिच अरुण सुठ सौहनी रेख अति लसत शोभा किशोरी। कुटिल घनश्याम अनुराग अमृत सरस उमगि निकस्यौ मनहुँ सीम तोरी॥ उभै दिशि श्यामता छवि न वरनी परै कृष्ण कौ चित्त दुचितौ कियोरी। निरखि द्वै टूक भयौ छैल मन राधिके जयति तव माँग की रुचिर रोरी॥ २५०॥

(प्रियाहितसखी परस्पर संभाषण) शिखिरिणीवृत्त

चकोरस्ते वक्त्रामृतकिरणाबिंबे मधुकर --
स्तव श्रीपादाब्जे जघनपुलिने खञ्जनवरः ॥
स्फुरन्मीनो जातस्त्वयिरससरस्यां मधुपतेः
सुखाटव्यां राधे त्वयि च हरिणस्तस्य नयनम् ॥२५१

पद—कहा कहूँ पिय नैनन की बात ।
तव मुख चंद्र चकोर विहारिन, छकि-छकि छवि न अघात ॥
पद अंबुज तेरे सुकुमारी, विथकित मधुप सुहात ।
जघन पुलिन खंजन रस सर तुम मीन चपल उतरात ॥
आनँद विशद वाटिका गोरी, मृगज मनौं इतरात ।
ललित लडैंती की अद्भुत छवि, नव नव गति दरशात ॥ २५१ ॥

(शय्या समय) मन्दाक्रान्ता वृत्त

स्पृष्ट्वास्पृष्ट्वा मृदुकरतलेनांगमङ्गं सुशीतं—
सांद्रानंदामृतरसहृदे मज्जतो माधवस्य ।
अङ्के पङ्केरुहसुनयना प्रेममूर्तिः स्फुरन्ती—
गाढाश्लेषोन्नमितचिबुका चुंबिता पातु राधा ॥२५२॥

छंद—कोमल कर कंज विहारी । वर परसि अङ्ग सुकुमारी ॥
आनंद सुधा रस पाग्यौ । मन मुदित रूप अनुराग्यौ ॥
तहाँ प्रेम मूर्ति पिक वैनी । पिय अंक लसै मृग नैनी ॥
पिय मसकत कस अँकवारी । तिय मुरकि भरत सिसिकारी ॥
कबहूँ पिय चिबुकै चूमैं । सोइ राधा रक्षक होंमैं ॥ २५२ ॥

(अभिलाष) शिखरिणी वृत्त

सदा गायंगायं मधुरतरराधाप्रिययशः—
सदा सांद्रानन्दानवरसदराधापतिकथाः ।
सदा स्थायंस्थायं नवनिभृतराधारतिवने—
सदा ध्यायंध्यायं विवशहृदि राधापदसुधाः ॥२५३॥

छन्द—गाय गाय अति मधुर राधिका जश नित वानी ।
सुनौं रसद नित सुखद सदा, प्रिय सुरत कहानी ॥
वसि-वसि वृन्दा विपिन विहारस्थलि नित राधा ।
सुमिर-सुमिर नित विवश होंहु पद अमी अबाधा ॥२५३॥

(प्रेम वैचित्री) मन्दाक्रान्ता वृत्त

श्यामश्यामेत्यमृतरससंस्रावि वर्णाञ्जपंती—
प्रेमौत्कंठ्यात्क्षणमपि सरोमांचमुच्चैर्लपंती ।
सर्वत्रोच्चाटनमिव गता दुःखदुःखेन पारं—
कांक्षत्यह्नो दिनकरमलं क्रुध्यती पातु राधा ॥ २५४ ॥

छंद—श्याम-श्याम घन नाम अमृत रस श्रवत जपत रस माती ।
कबहुँक प्रेम विवश पुलकित तन टेर टेर रहि जाती ॥
रहत उचाट सुहात नहीं कछु व्याकुल रविहिं रिसाती ।
वासर जात न आवत रजनी, ललन मिलन ललचाती ॥
छकन छकी छवि मधुर माधुरी, मनमोहन रँग राती ।
प्रीतम कंठ माल सो राधा, मम सर्वस सब भाँती ॥२५४॥

(प्रेम वैचित्री) शिखरिणी वृत्त

कदाचिद्गायंती प्रियरतिकलावैभवगतिं—
कदाचिद्ध्यायंती प्रियसहभविष्यद्विलसितम् ।
अलं मुंचामुंचेत्यतिमधुरमुग्धप्रलपितै—
र्नयंती श्रीराधा दिनमिह कदानन्दयतु नः ॥ २५५ ॥

छन्द—विलसी निशि पी संग नवेली, कबहुँ तासु गति गावै ।
कबहुँक सोचत आजहु रसिया, यौं कस कंठ लगावै ॥
सिसकि उठत चितत पी मसकन, नहिं नहिं ध्वनि मृदु छावें
यौं बितवत राधा दिन सो कब, मन आनँद बढ़ावै ॥२५५॥

(प्रार्थना) मन्दाक्रान्ता वृत्त

श्रीगोविंद व्रजवरवधूवृन्दचूड़ामणिस्ते—
कोटिप्राणाभ्यधिकपरमप्रेष्ठपादाब्जलक्ष्मीः ।
कैंकर्येणाद्भुतनवरसेनैव मां स्वीकरोतु—
भूयोभूयः प्रतिमुहुरधिस्वामि संप्रार्थयेहम् ॥ २५६ ॥

छन्द—तुव भाँवती गोविंद व्रजवर वधुन शिर चूड़ामनी ।
कोटि प्राणन अधिक प्रिय जिहि कमल पद शोभावनी ॥
अद्भुत नवल रस टहल निज मुहिं दै कृपा कर स्वामिनी ।
आपनी करि लैहिं कब मो विनय सुनि सुख धामिनी ॥२५६

(अति सख्य) शिखरिणी वृत्त

अनेन प्रीता मे दिशतु निजकैंकर्यपदवीं—
दवीयोदृष्टीनां पदमहह राधासुखमयी ।

निधायैवं चित्तेकुवलयरुचिं वर्हमुकुटं—
किशोरं ध्यायामि द्रुतकनकपीतच्छविपटम् ॥२५७॥

कुण्डलिया—प्यारी राजत दूर वहु, दीषत ना सुकुमार।
पै सुनियत पिय भजन सौं अति रीझत रिझवार॥
अति रीझत रिझवार, कोऊ विधि ताहि रिझाऊँ।
रटि-रटि प्रीतम टेर, वचन तालौं पहुँचाऊँ॥
नील कमल दुति अंग, मोर पक्षन शिर धारी।
ध्याऊँ नवल किशोर, पीत पट फहरन प्यारी॥२५७॥

(अभिलाष) शार्दूलविक्रीडितवृत

ध्यायंस्तं शिखिपिच्छमौलिमनिशं तन्नाम संकीर्त्तय-
न्नित्यंतच्चरणांवुजं परिचरंस्तन्मंत्रवर्यं जपन्।
श्रीराधापददास्यमेव परमाभीष्टं हृदा धारयन्-
कर्हि स्यां तदनुग्रहेण परमोद्भूतानुरागोत्सवः॥२५८॥

चौपाई—ध्याऊँ मोहनलाल विहारी।
सुन्दर मोर पक्ष शिर धारी॥
तासु नाम लीला नित गाऊँ।
तिन पद कंज टहल हुलसाऊँ॥
जपत रहौं तिन मंत्र रैन-दिन।
रीझं श्रीराधा मम स्वामिन॥
प्राण रमण पद जानि उपासी।
देहिं सदा निज दास्य खवासी॥२५८॥

(अभिलाष) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

श्रीराधारसिकेंद्ररूपगुणवद्गीतानि संश्रावयन्—
गुञ्जामंजुलहारवर्हमुकुटाद्यावेदयंश्चाग्रतः ।
श्यामप्रेषितपूगमाल्यनवगंधाद्यैश्च संप्रीणयं—
स्त्वत्पादाब्जनखच्छटारसहृदे मग्नःकदा स्यामहम् २५६

छन्द—रसिक सिरोमणि लाल रूप गुण पद तुव आगें गाऊँ ।
सुन्दर गुञ्जामाल मुकुट रचि हितसौं सामुहिं लाऊँ ॥
भेजहु पिय ढिग हार सुपारी रस सौरभ पहुँचाऊँ ।
नख पद कंज छटा रस सर में कब मन मगन डुबाऊँ॥२५६

(वृन्दावन महिमा) मन्दाक्रान्ता वृत्त

क्वासौ राधा निगमपदवीदूरगा कुत्र चासौ—
कृष्णस्तस्याः कुचकमलयोरंतरैकांतवासः ।
क्व हं तुच्छः परममधमः प्राण्यहो गर्ह्यकर्मा—
यत्तन्नाम स्फुरति महिमा एष वृन्दावनस्य ॥२६०॥

दोहा—कहँ राधा जिनकी कथा, निगमागम अति दूर ।
कहँ मोहन जो लाड़िली, हिये वसत चित चूर ॥
कहाँ मैं दुष्कर्मी अधम, कपटी कायर क्रूर ।
फुरै जु महिमा नाम यह, कृपा विपिन भरपूर ॥२६०॥

(मंगल समय) मन्दाक्रान्ता वृत्त

वृन्दारण्ये नवरसकलाकोमलप्रेममूर्त्तेः—
श्रीराधायाश्चरणकमलामोदमाधुर्य्यसीमा ।
राधां ध्यायन्रसिकतिलकेनात्तकेलीविलासां—
तामेवाहं कथमिह तनुं न्यस्य दासी भवेयम् ॥२६१॥

दोहा—वृन्दावन नव रस कला, कोमल प्रेम स्वरूप ।
राधा पद पंकज ललित, मोद, माधुरी रूप ॥
रसिक मुकट सँग राधिका, केलि ध्यान उर लाय
वसौं कवै तहँ देह तज, दास्य परम पद पाय ॥ २६१ ॥

(मंगल समय) मन्दाक्रान्ता वृत्त

हा कालिंदि त्वयि मम निधिः प्रेयसा खेलितोभू—
द्भोभो दिव्याद्भुततरुलतास्त्वत्करस्पर्शभाजः ।
हे राधाया रतिगृहशुका हे मृगा हे मयूरा—
भूयोभूयः प्रणतिभिरहं प्रार्थये वोनुकंपाम् ॥२६२॥

छन्द—हो यमुना मम जीवन प्यारी तुम मध पिय सँग खेली ।
परसे तुमहिं ललित कर हा हा दिव्याद्भुत तरु वेली ॥
हे केलिस्थलि मोर मृगी शुक तुम निरखत रस केली ।
पुन पुन वंदहुँ तुमहिं कृपा कर दरशावहु अलिवेली ॥२६२॥

(मङ्गल समय) शिखरिणी वृत्त

वहंती राधायाः कुचकलशकाश्मीरजमहो—
जलक्रीडावेशाद्गलितमतुलप्रेमरसदम् ।
इयं सा कालिंदी विकसितनवेंदीवररुचि—
स्सदा मंदीभूतं हृदयमिह संदीपयतु मे ॥ २६३ ॥

पद—नमो नमो यमुना महारानी । नील वरण गंभीर स्वच्छ अति अतुलित प्रेम महा रसदानी ॥ रसावेश तुम मध जल क्रीड़ा पी सँग करी लली सुखदानी । वही कुचन मृगमद चारौं दिशि श्याम रंग भयौ सुन्दर पानी ॥ विकसि रहे जहँ तहाँ विचित्रित जलज पराग सुगंध उड़ानी । तासु छटा उद्दीपन कीजै मो मन मंद कृपा उर आनी ॥ २६३ ॥

(वृन्दावन महिमा) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

सद्योगीन्द्रसुदृश्यसान्द्ररसदानंदैकसन्मूर्त्तयः—
सर्वेप्यद्भुतसन्महिम्नि मधुरे वृन्दावने संगताः—
ये क्रूरा अपि पापिनो न च सतां संभाष्यदृश्याश्चये—
सर्वान्वस्तुतया निरीक्ष्य परमस्वाराध्यबुद्धिर्मम ॥२६४

पद—जे जे श्री वृन्दावन वासी। श्रेष्ठ महा योगींद्र सदृश अति आनँद कन्द मूर्ति सुखरासी ॥ अद्भुत महिमा सब गुण पूरित युगल लाल पद रैंणु निवासी । क्रूर अधम खल कहा भलैं कोउ मैं वुधि चित करि तिनहिं उपासी ॥ २६४ ॥

(वृन्दावन महिमा) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

यद्राधापदकिङ्करीकृतहृदां सम्यग्भवेद्गोचरं—
ध्येयं नैव कदापि यद्धृदि विना तस्याः कृपास्पर्शतः ।
यत्प्रेमामृतसिंधुसाररसदं पापैकभाजामपि—
तद्वृन्दावनदुष्प्रवेशमहिमाश्चर्य्यं हृदि स्फूर्जतु ॥२६५॥

दोहा—राधा पद दासी प्रथम, होय हिये हुलसाय ।
तब श्री वृन्दावन विशद, महिमा भलें लखाय ॥
नवल किशोरी राधिका, अति ही मृदुल सुभाय ।
तासु कृपा बिन श्रीविपिन, ध्यानहुँ में न समाय ॥
होहु कुटिल खल किन कोउ, पै प्रिय परम उदार ।
प्रेम सुधा रस सार निधि, सहज देत सुकुमार ॥
दुःप्रवेश महिमा सदा, श्री वृन्दावन ऐन ।
फुरित रहौ मेरे हियें, जन्म जन्म सुख दैन ॥२६५॥

(मङ्गल समय) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

राधाकेलिकलासु साक्षिणि कदा वृन्दावने पावने—
वत्स्यामि स्फुटमुज्ज्वलाद्भुतरसे प्रेमैकमत्ताकृतिः ।
तेजोरूपनिकुञ्ज एव कलयन्नेत्रादि पिंडस्थितं—
तादृक्स्वोचितदिव्यकोमलवपुःस्वीयं समालोकये॥२६६॥

सोरठा—श्री वृन्दावन धाम, पावन पुलिन पवित्र अति ।
क्रीड़ा श्यामा श्याम, साक्षी केलि कलान कौ ॥
तासु वास सुख सार, कब पाऊँ मैं लाडिली ।
अद्भुत रस शृङ्गार, प्रेम मत्त डोलौं गलिन ॥

मंजुल नवल निकुञ्ज, छवि छाके विवि राजहीं।
दंपति शोभा पुञ्ज, सो नित मो दृग में बसैं॥
सूचित वैस नवीन, महल टहल बहु गुण भरी।
दासी परम प्रवीन, कबै अपुनपौ देखिहौं॥२६६॥

(मङ्गल समय) रथोद्धतावृत्त

यत्रयत्र मम जन्म कर्म्मभिर्नारकेऽथ परमे पदेऽथ वा।
राधिकारतिनिकुञ्जमंडलीतत्रतत्र हृदि मे विराजताम्॥

छन्द—स्वर्ग नर्क अरु लोक घनेरे।
जहँ जन्मौं कर्मनि के प्रेरे॥
वस्यौ रहै तहँ तहँ उर अन्तर।
राधा रति निकुञ्ज वन परिकर॥२६७॥

(प्रार्थना) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

क्वाहं मूढमतिः क्व नाम परमानंदैकसारं रसः—
श्रीराधाचरणानुभावकथया निस्यंदमाना गिरः।
लग्नाः कोमलकुञ्जपुञ्जविलसद्वृन्दाटवीमण्डले—
क्रीडच्छ्रीवृषभानुजापदनखज्योतिश्छटाःप्रायशः॥२६८॥

दोहा—कहाँ मूढ़ मति मैं, कहाँ, परमानँद रस सार।
नाम राधिका पद विमल, पुनि मो वैन मझार॥
कुञ्ज विहारिन लाडिली, श्रीवृषभानु दुलार।
तिन चरणन नख दुति कृपा, भाषी केलि विहार॥२६९॥

(प्रेम वैचित्री) शार्दूलविक्रीडित वृत्त

श्रीराधे श्रुतिभिर्बुधैर्भगवताप्यामृग्यसद्भैभवे—
स्वस्तोत्रस्वकृपात एव सहजो योग्योप्यहं कारितः ।
पद्यै नैव सदापराधिनि महन्मार्गं विरुध्यत्वदे—
काशेस्नेहजलाकुलाच्चि किमपि प्रीतिं प्रसादीकुरु॥२६९

छन्द—जै जै जै वृषभानु दुलारी ।
तुव महिमा को वरननि हारी ॥
तुव पद पंकज ध्यान लगावैं ।
निगमादिक ब्रह्मादि न पावैं ॥
मोतैं नाहिं कछू वनि आई ।
तुव करुणा तव सुयश कहाई ॥
अधम कुमार्ग जदपि मैं प्यारी ।
पै तन मन एक आश तिहारी ॥
कृपा कोर अवलोक किशोरी ।
निज पद प्रीति देहु सरवोरी ॥ २६९॥

(प्रेम वैचित्री) अनुष्टुप छन्द

अद्भुतानंदलोभश्चेन्नाम्ना रससुधानिधिः ।
स्तवोऽयं कर्णकलशैर्गृहीत्वा पीयतां बुधाः ॥२७०॥

दोहा—परमाद्भुत आनंद कौ, लोभ जु जिय में होय ।
अहो विवेकी रसिक जन सुनि लीजै सब कोय ।।
सरस सुधानिधि अगम अति, ग्रन्थ महा सुख खान ।
श्रवण कलश भरि-भरि पियौ कृत-कृत आपुन मान ।।२७०

इति श्रीवृन्दावनेश्वरीचरणकमल कृपावलम्वजृंभित
श्रीमन्महाप्रभु हितहरिवंशचंद्रगोस्वामिना विरचितं
श्रीराधासुधानिधिस्तोत्रं समाप्तम ।

एवम्

श्री मद्राधावल्लभीय संप्रदायप्रधानपीठाचार्य गोस्वामी
श्रीहित गुरु किशोरीलालजी टीकायत कृत पूरित भावार्थ
हितहार्द प्रकाशिनी टीका सम्पूर्ण की
जय जय श्रीहितहरिवंश ।।

॥ श्रीराधावल्लभो जयति ॥

❀ श्रीहितहरिवंशवंशोजयति ❀

* श्री अधिकारी हित गुरु किशोरीलालो विजयते *

❀ श्री अधिकारी हित गुरु रूपलालो विजयते ❀

श्री रसिक अनन्य नृप चूड़ामणि श्रीमद्धिताचार्य विरचितम

❀ श्रीहित स्फुटवाणी जी ❀

* सवैया *

द्वादश चन्द्र कृतस्थल मंगल बुद्ध विरुद्ध सुरु गुरु वंक।
यद्दि दशम्म भवन्न भृगूसुत मंद सुकेतु जनम के अङ्क॥
अष्टम राहु चतुर्थ दिवामणि तौ हरिवंश करत न शंक।
जोपै कृष्णचरण मन अर्पित तौ करि हैं कहा नवग्रह रंक॥१

* सवैया *

भानु दशम्म जनम्म निशापति मंगल बुद्ध शिवस्थल लीके। जो गुरु होंय धरम्म भवन्न के तो भृगुनन्द सुमन्द नवीके॥ तीसरौ केतु समेत विधुग्रस तौ हरिवंश मनक्रम फीके। गोविन्द छाँड़ि भ्रमन्त दशोंदिश तौ करहहि कहा नवग्रह नीके ॥२॥

❀ छप्पय ❀

ना जानौं छिन अंत कवन बुधि घटहिं प्रकाशित।
छुटि चेतन जु अचेत तेउ मुनि भये विसवासित ॥
पाराशर सुर इन्द्र कलप कामिनि मन फंधा।
परि व देह दुख द्वंद कौन क्रम काल निकंधा ॥
यहि डरहिं डरप हरिवंशहित जिनव भ्रमहि गुण सलिलपर।
जिहिं नामनि मंगल लोक तिहुँ सुहरिपद भजु न विलंब कर॥३॥

❀ सवैया ❀

तू बालक नहिं भरयौ सयानप काहे कृष्ण भजत नहिं नीके। अतिव सुमिष्ट तजिव सुरभिन-पय मन वंधत तंदुल जल फीके। जय श्रीहित हरि-वंश नरकंगति दुरभर यमद्वारें कटियत नकछीके। भवअज कठिन मुनीजन दुर्लभ पावत क्यों जु मनुज तन भीके ॥४॥

❀ कुण्डलिया ❀

चकई प्राण जु घट रहैं पिय बिछुरन्त निकज्ज ।
सर अन्तर अरु काल निशि, तरफ तेज घन गज्ज ॥
तरफ तेज घन गज्ज, लज्ज तुहि वदन न आवै ।
जल विहून करि नैन, भोर किहिं भाय वतावै ॥

जय श्रीहित हरिवंश, विचारि वाद अस कौन जु बकई।
सारस यह सन्देह, प्राण घट रहैं जु चकई ॥ ५ ॥

* कुण्डलिया *

सारस सर बिछुरंत कौं, जो पल सहै शरीर।
अगिन अनंग जु तिय भखै, तौ जानै पर पीर ॥
तौ जानै पर पीर, धीर धरि सकहि बज्र तन।
मरत सारसहिं फूटि; पुनि न परचौ जु लहत मन ॥
जय श्रीहित हरिवंश; विचारि प्रेम विरहा बिन वारस।
निकट कंत नित रहत, मरम कह जानै सारस ॥६॥

छप्पय

तैं भाजन कृत जटित विमल चंदन कृत इन्धन।
अमृत पूरि तिहि मध्य करत सरषप खल रिंधन ॥
अद्भुत धर पर करत कष्ट कंचन हल वाहत।
वारि करत पावार मंद बोवन विष चाहत ॥
जय श्रीहित हरिवंश विचारिकें मनुज देह गुरु
चरण गहि। सकहि तौ सब परपंच तजि कृष्ण
कृष्ण गोविन्द कहि ॥ ७ ॥

* सवैया *

तातें भैया मेरी सौं कृष्ण गुण संचु। कुत्सित
वाद विकारहिं परधन सुनु सिख मंद परतिय बंचु।

मणिगण पुंज ब्रजपति छांड़त हित हरिवंश कर गहि कंचु ॥ पाये जान जगत में सब जन कपटी कुटिल कलियुग टंचु । इहि परलोक सकल सुख पावत मेरी सौं कृष्ण गुण संचु ॥ ८ ॥

❀ अरिल्ल ❀

मानुष कौ तन पाय भजौ ब्रजनाथ कौं ।
दर्वी लैकै मूढ़ जरावत हाथ कौं ॥
जय श्रीहित हरिवंश प्रपंच विषय रस मोह के ।
हरि हां बिन कंचन क्यों चलैं पचीसा लोहके ॥ ९ ॥

❀ राग बिलावल ❀

तू रति रंग भरी देखियत है री राधे रहसि रमी मोहनसों व रैन । गति अति शिथिल प्रगट पलटे पट गौर अंग पर राजत अैन ॥ जलज कपोल ललित लटकति लट भृकुटि कुटिल ज्यों धनुष धृत मैन । सुन्दरि रहिव कहिव कंचुकि कत कनक कलश कुच बिच नख दैन ॥ अधर बिंब दल मलित आरस युत अरु आनँद सूचव सखि नैन । जय श्रीहित हरिवंश दुरति नहिं नागरि नागर मधुप मथत सुख सैन ॥ १० ॥

❀ राग बिलावल ❀

आनँद आज नंद के द्वार । दास अनन्य भजन रस कारन प्रगटे लाल मनोहर ग्वार ॥ चंदन सकल धेनु तन मंडित कुसुम दाम शोभित आगार । पूरण कुम्भ बने तोरण पर बीच रुचिर पीपर की डार ॥ युवति यूथ मिल गोप विराजत बाजत प्रणव मृदंग सुतार । जय श्री हितहरिवंश अजिरवर बीथिनु दधिमधु दुग्ध हरद के खार ॥११॥

❀ राग धनाश्री ❀

मोहन लाल के रँग रांची ।
मेरे ख्याल परौ जिन कोऊ बात दशों दिश मांची ॥
कंत अनन्त करौ जो कोऊ बात कहौं मुनि सांची ।
यह जिय जाहु भलें सिर ऊपर हौं व प्रगट ह्वै नांची ॥
जाग्रत शयन रहत उर ऊपर मणि कंचन ज्यों पांची ।
जय श्रीहितहरिवंश डरौं काकेडर हौं नाहिंन मतिकांची ॥

❀ पद ❀

मैं जु मोहन सुन्यौ बेणु गौपाल कौ । व्योम मुनि यान सुन नारि विथकित भई कहत नहिं बनत कछु भेद यति तालकौ ॥ श्रवण कुण्डल छुरित रुरत

कुंतल ललित रुचिर कस्तूरि चन्दन तिलक भालकौ। चंद गति मंद भई निरख छवि कामि गहि देखि हरिवंश हित वेष नँदलाल कौ ॥१३॥

❋ पद ❋

आज तू ग्वाल गोपाल सों खेलिरी। छांड़ि अति मान वन चपल चलि भामिनी तरु तमाल सों उरझि कनक की वेलिरी ॥ सुभट सुन्दर ललन ताप पर वल दमन तू व ललना रसिक काम की केलिरी। वेनु कानन क्वणित श्रवण सुन्दरि सुनत मुक्ति सम सकल सुख पाय पग पेलिरी ॥ विरह व्याकुल नाथ गान गुण युवति तव निरखि मुख काम कौ कदन अव हेलिरी। सुनत हरिवंश हित मिलत राधारमण कंठ भुज मेलि सुख सिन्धु में झेलिरी॥ १४ ॥

❋ पद ❋

वृषभानु नंदिनी राजत हैं। सुरत रंग रस भरीं भामिनी सकल नारि सिर गाजत हैं॥ इत उत चलत परत दोऊ पग मद गयंद गति लाजत हैं। अधर निरंग रंग गंडनि पर कटक कामकौ साजत हैं॥ उर पर लटक रही लट कारी कटिव किंकिनी

बाजत हैं। जय श्री हित हरिवंश पलटि प्रीतम पट जुवति जुगति सब छाजत हैं ॥ १५ ॥

❀ पद ❀

चलौ वृषभानु गोप के द्वार। जन्म लियौ मोहन हित श्यामा आनँद निधि सुकुमार ॥ गावत युवति मुदित मिलि मंगल उच्च मधुर धुनि धार। विविधि कुसुम किशलय कोमल दल शोभित वंदन वार ॥ विदित बेद विधि विहित विप्रवर करि स्वस्तिनु उच्चार। मृदुल मृदंग मुरज भेरी ढफ दिवि दुन्दुभि रवकार ॥ मागध सूत बंदी चारण जस कहत पुकार पुकार। हाटक हीर चीर पाटंवर देत सम्हार सम्हार ॥ चंदन सकल धेनु तन मंडित चले जु ग्वाल शृंगार। जय श्री हित हरिवंश दुग्ध दधि छिरकत मध्य हरिद्रागार ॥ १६ ॥

❀ राग गौरी ❀

तेरौई ध्यान राधिका प्यारी गोवर्द्धन धर लालहिं। कनक लतासी क्यों न विराजत अरुझी श्याम तमालहिं ॥ गौरी गान सुतान ताल गहि रिझवत क्यों न गुपालहिं। यह यौवन कंचन तन

ग्वालिनि सफल होत यह कालहिं। मेरे कहें विलंब न करि सखि भूरि भाग अति भालहिं। जय श्री हित हरिवंश उचित हौं चाहत श्याम कंठ की मालहिं॥

❀ राग संग्रह ❀

आरती मदन गोपाल की कीजियै। देव ऋषि व्यास शुकदास सब कहत निज क्यों न बिन कष्ट रस सिन्धु कौं पीजियै। अगर करि धूप कुम कुम मलय रंजित नव वर्तिका घृत सों पूरि राखौ। कुसुम कृत माल नँदलाल के भाल पर तिलक करि प्रगट यश क्यों न भाखौ॥ भोग प्रभु योग भरि थार धर कृष्ण पै मुदित भुज दण्ड वर चमर ढारौ। आचमन पान हित मिलत कपूर जल सुभग मुख वास कुल ताप जारौ॥ शंख दुन्दुभि प्रणव घट कल वेणु वर झल्लरी सहित स्वर सप्त नाचौ। मनुज तन पाय यह दाय व्रजराज भज सुखद हरिवंश प्रभु क्यों न याचौ॥ १८॥

❀ पद ❀

आरती कीजै श्याम सुन्दर की। नंद के नंदन राधिका वर की॥ भक्ति करि दीप प्रेम करि बाती।

साधु संगति करि अनुदिनराती ॥ आरति ब्रज युवति यूथ मन भावै । श्याम लीला श्रीहरिवंश हित गावै ॥ १९ ॥

राग गौरी

रहौ कोऊ काहू मनहिं दियें । मेरें प्राणनाथ श्री श्यामा सपथ करों त्रण छियें ॥ जे अवतार कदम्ब भजत हैं धरि दृढ़ व्रत जु हियें । तेऊ उमगि तजत मर्य्यादा वन विहार रस पियें ॥ खोये रतन फिरत जे घर घर कौन काज ऐसे जियें । जय श्रीहित हरिवंश अनत सचु नाहीं विन या रजहिं लियें ॥२०॥

राग कल्याण

हरि रसना राधा राधा रटि । अति आधीन आतुर यद्यपि पिय कहियत है नागर नट । संभ्रम द्रुम परिरंभन कुंजन ढूंढत कालिंदी तट ॥ विलपत हँसत विषीदत स्वेदित सतु सींचत अँसुवन वंशीवट । अंग राग परिधान वसन लागत ताते जु पीतपट । जय श्री हित हरिवंश प्रशंसित श्यामा दै प्यारी कंचन घट ॥२१ ॥

राग कल्याण

लाल की रूप माधुरी नैनन निरखि नैंक सखी। मनसिज मन हरन हास साँमरौ सुकुमार राशि नख शिख अङ्ग अङ्गनि उमँग सौभग सींव नखी। रँग मगी सिर सुरँग पाग लटकि रही वाम भाग चम्पकली कुटिल अलक बीच बीच रखी॥ आयत द्रग अरुण लोल कुण्डल मंडित कपोल अधर दसन दीपति की छवि क्यों हूं न जात लखी॥ अभयद भुज दण्ड मूल पीन अंश सानुकूल कनक निकष लसि दुकूल दामिनी धरखी। उर पर मंदार हार मुक्तालर वर सुढार मत्त दुरद गति तियन की देह दशा करखी॥ मुकलित वय नव किशोर वचन रचन चित के चोर मधु रितु पिक शाव नूत मंजरी चखी। जय श्री नटवत हरिवंश गान रागिणी कल्याण तान सप्त स्वरन कल इते पर मुरलिका वरखी॥ २२॥

❀ राग मलार ❀

दोऊ जन भींजत अटके बातन। सघन कुञ्ज के द्वारैं ठाड़े अम्बर लपटे गातन॥ ललिता ललित

रूप रस भींजी बूँद बचावत पातन । जय श्रीहित
हरिवंश परस्पर प्रीतम मिलवत रति रस घातन॥२३॥

❀ चार दोहा ❀

सबसों हित निष्काम मत, वृन्दावन विश्राम ।
श्री राधावल्लभ लाल कौ, हृदय ध्यान मुख नाम ॥२४॥
तनहिं राखि सतसंग में, मनहिं प्रेम रस भेव ।
सुख चाहत हरिवंश हित, कृष्ण कल्पतरु सेव ॥२५॥
निकसि कुञ्ज ठाड़े भये, भुजा परस्पर अंश ।
श्री राधावल्लभ मुख कमल, निरखि नैन हरिवंश ॥२६॥
रसना कटौ जु अनरटौं, निरखि अन, फुटौ नैन ।
श्रवण फुटौ जो अनसुनौं, विन राधा यश बैन ॥२७॥

आद्य ब्रह्मसिद्धाद्वैतश्रीराधावल्लभीयसंप्रदायपूर्वाचार्य
शिरोमणि जगद्गुरु श्रीहित वंशीस्वरूप गोस्वामी
जयश्रीहितहरिवंशचंद्रमहाप्रभु रचित
श्रीहित स्फुटपदवाणीजी सम्पूर्ण
की जय जय श्रीहितहरिवंश

श्रीहिताचार्य महाप्रभु द्वारा प्रेषित श्रीवीठलदास को पत्रद्वय ।

श्री सकल गुण सम्पन्न रसरीति वढ़ावन चिरंजीव मेरे प्राणन के प्राण वीठलदास जोग्य लिखितं श्रीवृन्दावन रजोपसेवी श्रीहरिवंश जोरी सुमिरन बंचनौ । जोरी सुमिरन मत्त रहौ । जोरी जो हैं सुख वरषत हैं । तुम कुशल स्वरूप हौ । तिहारे हस्ताक्षर बारम्बार आवत हैं, सुख अमृत स्वरूप हैं, पत्री बाँचत आनन्द उमड़ि चलै है । मेरी बुद्धि कौं इतनी शक्ति नहीं जो कहि सकौं पर तोहि जानत हौं । श्री स्वामिनी जू तुम पर वहुत प्रसन्न हैं । हम कहा आर्शीवाद देंय, हम यही आर्शीवाद देत हैं कि तिहारौ आयुष बढ़ौ और तिहारी सकल सम्पत्ति बढ़ौ, तिहारे मनकौ मनोरथ पूरण होहु, हम नेत्रनि सुख देखैं, हमारी भेट यही है, यहाँ की काहू बात की चिन्ता मत करौ, तेरी पहिचानतें मोकूँ श्रीश्यामा जू वहुत सुख देत हैं । तुम लिखौ हौ दिन दश में आवैंगे सोई आशा प्राण रहे हैं । श्रीश्यामा जू वेगि लै आवैं । चिरञ्जीव कृष्णदास कौं जोरी प्रसन्न हैं, श्याम वन्दिनी विहार चन्दन लैनौं । गोविंददास सन्तदास की दण्डौत, गांगू मेदा कौ कृष्ण सुमिरन वाँचनौ, कृष्णदास मोहनदास कौ कृष्ण सुमिरन, रंगा कौ दण्डौत. वनमाली धर्मशाला कौ कृष्ण सुमिरन वाँचनौ ।

दूसरी पत्री ।

श्रीवृषभानुनन्दिनी जयति । जोग्य लिखितं श्रीहरिवंश विठुलदास के कोटि-कोटि अपराध मैं खेवी आगले पाछिले विठुलदास मेरे प्राण हैं जो शास्त्र मर्याद सत्य है और गुरु महिमः ऐसैं ही सत्य है तौ व्रज नव तरुणि कदम्ब चूड़ामणि श्रीराधे तिहारे स्थापे गुरु मार्ग विषै अविश्वास अज्ञानी कौं होत है तातैं यह मर्याद राखनौ । तुम दोऊ सफल आनन्द बरसौ, विठलदास कौ अहो सींचनौ । इति दूसरी श्रीमुख पत्री की जय जय श्रीराधे ।

* श्रीहित *

श्री हित चतुराशी जी

प्राचार्य महाप्रभु श्रीहितहरिवंशचन्द्र गोस्वामी

आद्य सनातन अनन्य श्रीहितराधावल्लभ (बृह्म) सम्प्रदाय पूर्वाचार्य
शिरोमणि श्रीहितवंशी स्वरूप श्रीमद्गोस्वामी श्रीहितहरिवंशचंद्र महाप्रभु
अवतरण वैशाख शु० ११ चंद्रवार विक्रम संवत् १५३०
वृन्दावन पुनरागमन कार्तिक शु० १३ संवत् १५६५
अर्न्तध्यान आश्विन शु० १५ शरद पूर्णिमा संवत् १६०९
वर्तमान हिताब्द ४९१ संवत् २०२१

❀ श्रीराधावल्लभोजयति ❀
❀ श्रीहितहरिवंशचन्द्रोजयति ❀
❀ अधिकारी-श्रीतित गुरु किशोरीलालो विजयते ❀
❀ अधिकारी-श्रीहित गुरु रूपलालो विजयते ❀

श्रीमद्गोस्वामी श्रीहितहरिवंशचन्द्र महाप्रभुजू विरचित-

❀ श्रीमच्चतुराशीजी ❀

(श्रीप्रियाजी हितसखी-परस्पर संभाषण) शय्या समय

❀ राग विभास ❀

जोई जोई प्यारौ करै सोई मोहि भावै—
भावै मोहि जोई सोई सोई करैं प्यारे ।
मो कौं तौ भावती ठौर प्यारे के नैननि में—
प्यारौ भयौ चाहै मेरे नैंननि के तारे ॥
मेरे तन मन प्राण हू तें प्रीतम प्रिय—
अपने कोटिक प्राण प्रीतम मोसौं हारे ।
जय श्रीहित हरिवंश हंस हंमिनी सांवल गौर—
कहौ कौन करै जल तरंगनि न्यारे ॥ १ ॥

(श्रीहितसखी-प्रियाजी परस्पर संभाषण) शय्या समय

प्यारे बोली भामिनी आज नीकी यामिनी—
भेटि नवीन मेघ सौं दामिनी ।

मोहन रसिक रायरी माई तासौं जु—
मान करै ऐसी कौन कामिनी ॥
जय श्रीहित हरिवंश श्रवन सुनत प्यारी—
राधिका-रमण सौं मिली गज गामिनी ॥ २ ॥

(हितसखीजी–सखी परस्पर संभाषण) प्रातः मंगला समय

प्रात समय दोऊ रस लंपट—
सुरत युद्ध जय युत अति फूल ।
श्रम वारिज घन विंदु वदन पर—
भूषण अंगहि अंग विकूल ॥
कछु रह्यौ तिलक शिथिल अलकावलि—
वदन कमल मानौं अलि भूल ।
जय श्रीहित हरिवंश मदन रँग रँगि रहे—
नैन वैन कटि शिथिल दुकूल ॥ ३ ॥

(श्रीहितसखी–श्रीप्रिया परस्पर सम्भाषण) मगला समय, हास

आज तौ युवति तेरौ वदन आनंद भरयौ—
पिय के संगम के सूचत सुख चैन ।
आलस वलित बोल सुरँग रँगे कपोल—
विथकित अरुण उनीदे दोऊ नैन ॥
रुचिर तिलक लेश किरत कुसुम केश—
शिर सीमंत भूषित मानौं तैन ।

करुणा करि उदार राखत कछू न सार—
दसन वसन लागत जब दैन ॥
काहे कौं दुरत भीरु पलटे प्रीतम चीर—
बस कीये श्याम सिखै शत मैन।
गलित उरसि माल शिथिल किंकिणी जाल—
जय श्रीहित हरिवंश लता गृह शैन ॥ ४ ॥

(श्रीहितसखी-श्रीसखी परस्पर संभाषण) मंगल समय, हास

आज प्रभात लता मन्दिर में—
सुख बरषत अति हरषि युगल वर।
गौर श्याम अभिराम रंग भरि—
लटकि लटकि पग धरत अवनि पर ॥
कुच कुमकुम रंजित मालावलि—
सुरत नाथ श्रीश्याम धाम धर।
प्रिया प्रेम के अङ्क अलंकृत—
चित्रित चतुर शिरोमणि निज कर ॥
दम्पति अति अनुराग मुदित कल—
गान करत मन हरत परस्पर।
जय श्रीहित हरिवंश प्रशंश परायन—
गायन अलि स्वर देत मधुर तर ॥ ५ ॥

(श्रीहितसखीजी युगल प्रति संभाषण) मंगला समय, हास

कौन चतुर युवती प्रिया—
जाहि मिलत लाल चोर ह्वै रैन।
दुरवत क्योंऽव दुरै सुनि प्यारे—
रंग में गहिले चैन में नैन॥
उर नख चन्द्र विराने पट—
अटपटे से बैन॥
जय श्रीहित हरिवंश रसिक—
राधापति प्रमथित मैन॥ ६॥

(श्रीहितसखी सखी प्रति संभाषण) शय्या समय

(राग विलावल)

आज निकुञ्ज मंजु में खेलत—
नवल किशोर नवीन किशोरी।
अति अनुपम अनुराग परस्पर—
सुनि अभूत भूतल पर जोरी॥
विद्रुम स्फटिक विविध निर्मित धर—
नव कर्पूर पराग न थोरी।
कोमल किशलय शयन सुपेशल—
तापर श्याम निवेशित गोरी॥

मिथुन हास परिहास परायन--
पीक कपोल कमल पर झोरी ।
गौर स्याम भुज कलह मनोहर--
नीवी बंधन मोचत डोरी ॥
हरि उर मुकुर विलोकि अपनपौ--
विभ्रम विकल मान युत भोरी ।
चिबुक सुचारु प्रलोय प्रबोधत--
पिय प्रतिबिंब जनाय निहोरी ॥
नेति नेति वचनामृत सुनि सुनि--
ललितादिक देखति दुरि चोरी ।
जय श्रीहित हरिवंश करत कर धूनन--
प्रणय कोप मालावलि तोरी ॥ ७ ॥

(श्रीहितसखीजी श्रीप्रियाजी परस्पर संभाषण)प्रातःसमय,वनविहार

अति ही अरुण तेरे नयन नलिन री ।
आलस युत इतरात रँग मगे--
भये निशि जागर मषिन मलिनरी ॥
शिथिल पलक में उठति गोलक गति--
विंधयौ मोहन मृग सकत चलिन री ।

जय श्रीहितहरिवंश हंस कल गामिनि—
संभ्रम देत भ्रमरनि अलिन री ॥ ८ ॥

(श्रीहितसखी–सखी प्रति संभाषण) शृङ्गार समय

वनी श्रीराधा मोहन की जोरी ।
इंद्र नीलमणि श्याम मनोहर—
शातकुंभ तन गोरी ।
भाल विशाल तिलक हरि कामिनि—
चिकुर चन्द्र विच रोरी ।
गज नायक प्रभु चाल गयंदनि—
गति वृषभानु किशोरी ॥
नील निचोल युवति मोहन पट—
पीत अरुण शिर खोरी ।
जय श्रीहित हरिवंश रसिक राधापति—
सुरत रंग में बोरी ॥ ९ ॥

(श्रीहितसखी–सखी प्रति संभाषण) शय्या समय

आज नागरी किशोर भाँवती विचित्र जोर—
कहा कहौं अंग अंग परम माधुरी ।

करत केलि कठं मेलि बाहु दंड गंड गंड—
परस सरस रास लास्य मंडली जुरी ॥
श्याम सुन्दरी विहार बांसुरी मृदंग तार—
मधुर घोष नूपुरादि किंकिणी चुरी ।
जय श्री देखत हरिवंश आलि निर्त्तनी सुगंध चालि—
वारि फेर देत प्राण देहसौं दुरी ॥ १० ॥

(श्रीहितसखी–सखी संभाषण) शय्या समय
(राग विलावल)

मंजुल कल कुंज देश राधा हरि विशद वेश—
राका नभ कुमुदबंधु शरद यामिनी ।
श्यामल दुति कनक अंग विहरत मिलि एक संग—
नीरद मणि नील मध्य लसत दामिनी ॥
अरुण पीत नवदुकूल अनुपम अनुराग मूल—
सौरभ युत शीत अनिल मंद गामिनी ।
किशलय दल रचित शैन बोलत पिय चाटु बैन—
मान सहित प्रति पद प्रतिकूल कामिनी ॥
मोहन मन मथत मार परसत कुच नीवी हार—
वेपथ युत नेति नेति वदति भामिनी ।
नरवाहन प्रभु सुकेलि बहु विधि भर भरत झेलि—
सौरत रस रूप नदी जगत पामिनी ॥ ११ ॥

(श्रीहित-प्रिया-सखी परस्पर संभाषण) रास समय

(राग विलावल)

चलहि राधिके सुजान तेरे हित सुख निधान—
रास रच्यौ श्याम तट कलिंद नंदिनी।
निर्तत युवति समूह राग रंग अति कुतूह—
बाजत रसमूल मुरलिका अनंदिनी॥
वंशीवट निकट जहां परम रमणि भूमि तहां—
सकल सुखद मलय बहै वायु मंदिनी।
जाती ईषद् विकाश कानन अतिशय सुवास—
राका निशि शरद मास विमल चंदिनी॥
नरवाहन प्रभु निहार लोचन भरि घोष नारि—
नख शिख सौंदर्य्य काम दुख निकंदनी।
विलसहु भुज ग्रीव मेलि भामिनी सुख सिंधु झेलि—
नव निकुंज श्याम केलि जगत वंदिनी॥१२॥

(श्रीहित प्रियाजी-सखी परस्पर संभाषण) मंगला उपरान्त

(राग विलावल)

नंद के लाल हरयौ मन मोर।
हौं अपने मोतिन लर पोवति—
कांकर डारि गयौ सखि भोर।

वंक विलोकनि चाल छबीली—
रसिक शिरोमणि नंदकिशोर।
कहि कैसें मन रहत श्रवण सुनि—
सरस मधुर मुरली की घोर॥
इन्दु गोविन्द वदन के कारण—
चितवन कौं भये नैन चकोर।
जय श्रीहित हरिवंश रसिक रस युवती—
तू लै मिलि सखी प्राण अकोर॥ १३॥

(श्रीहित सखीजी श्रीलाल जी प्रति सम्भाषण) स्नान समय

राग टोडी

अधर अरुण तेरे कैसें कै दुराऊं॥
रवि शशि शंक भजन कियौ अपवस—
अद्भुत रंगनि कुसुम बनाऊं॥
शुभ कौसेय कसिव कौस्तुभमणि—
पंकज सुतनि लै अंगनि लुपाऊं।
हरपित इंदु तजत जैमैं जलधर—
सो भ्रम ढूंढि कहां हौं पाऊं॥
अम्बु न दम्भ कछू नहीं व्यापत—
हिमकर तपै ताहि कैसै कै बुझाऊं॥

जय श्रीहित हरिवंश रसिक नव रँग पिय—
भृकुटी भौंह तेरे खंजन लराऊं ॥१४॥

(श्रीहितसखीजी श्रीप्रियाजी परस्पर संभाषण) सुरतांत समय

राग टोडी

अपनी बात मोसौं कहिरी भामिनी—
औंगी मौंगी रहत गरब की माती ।
हौं तो सौं कहत हारी सुनिरी राधिका प्यारी—
निशिकौ रंग क्यौं न कहत लजाती ॥
गलित कुसुम वैनी सुनिरी सारंग नैनी—
छूटी लट अचरा वदति अलसाती ।
अधर निरँग रँग रच्यौरी कपोलनि
युवति चलति गजगति अरुझाती ॥
रहसि रमी छबीले रसन बसन ढीले—
शिथिल कसनि कंचुकी उर राती ।
सखी सौं सुनि श्रवन वचन मुदित मन—
चली हरिवंश भवन मुसिकाती ॥१५॥

(श्रीहित सखीजी श्रीप्रियाजी परस्पर संभाषण) शय्या समय

राग टोडी

आज मेरे कहैं चलौ मृगनैनी ।
गावत सरस युवति मण्डल में—
पिय सों मिलैं भलैं पिकवैनी ॥

परम प्रवीण कोक विद्या में—
अभिनय निपुण लाग गति लैंनी।
रूप राशि सुनि नवल किशोरी--
पल पल घटति चांदनी रैंनी॥
जय श्रीहित हरिवंश चली अति आतुर—
राधारमण सुरत सुख दैनी।
रहसि रभसि आलिंगन चुम्बन—
मदन कोटि कुल भई कुचैंनी॥१६॥

(श्रीहित सखीजी युगल तथा सखी प्रति सम्भाषण) शय्या समय

राग टोडी

आज देखि व्रजसुन्दिरी मोहन बनी केलि।
अंस अंस बाहु दै किशोर जोर रूप राशि-
मनौ तमाल उरझि रही सरस कनक वेलि।
नव निकुञ्ज भ्रँवर गुञ्ज मंजु घोष प्रेम पुञ्ज—
गान करत मोर पिकनि अपने स्वरसौं मेलि॥
मदन मुदित अङ्ग अङ्ग बीच बीच सुरत रङ्ग—
पल पल हरिवंश पिवत नैन चषक झेलि॥१७॥

(श्रीहितसखीजी-श्रीप्रियाजी परस्पर संभाषण) शय्या सुरतांत स०

राग आसावरी

सुनि मेरौ बचन छबीली श्रीराधा।
तैं पायौ रससिन्धु अगाधा॥

तू वृषभानु गोपकी बेटी ।
मोहन लाल रसिक हँसि भेटी ॥
जाहि विरंचि उमापति नाये ।
तापर तैं वन फूल विनाये ॥
जो रस नेति नेति श्रुति भाख्यौ ।
ताकौ तैं अधर सुधा रस चाख्यौ ॥
तेरौ रूप कहत नहीं आवै ।
जय श्रीहित हरिवंश कछुक यश गावै ॥१८॥

(श्रीहितसखीजी युगल तथा सखी प्रति परस्पर सम्भाषण)रास स०

राग आसावरी

खेलत रास रसिक व्रज मण्डन ।
युवतिन अंश दियैं भुज दण्डन ॥
शरद विमल नभ चन्द्र विराजै ।
मधुर मधुर मुरली कल बाजै ॥
अति राजत घनश्याम तमाला ।
कञ्चन वेलि बनी व्रजबाला ॥
बाजत ताल मृदङ्ग उपङ्गा ।
गान मथत मन कोटि अनङ्गा ॥
भूषण बहुत विविधि रँग सारी ।
अङ्ग सुधङ्ग दिखावत नारी ॥

बरषत कुसुम मुदित सुर योषा ।
सुनियत दिवि दुन्दुभि कल घोषा ॥
जय श्रीहित हरिवंश मगन मन श्यामा ।
राधारमण सकल सुख धामा ॥ १६ ॥

(श्रीहित सखीजी श्रीप्रियाजी परस्पर सम्भाषण) सुरतान्त समय

राग धनाश्री

मोहन लाल के रस माती ।
वधू गुपति गोवति कत मोसौं—
प्रथम नेह सकुचाती ॥
देख सँभार पीत पट ऊपर—
कहां चूनरी राती ।
टूटी लर लटकत मोतिन की—
नख बिधु अंकित छाती ॥
अधर बिम्ब खण्डित मषि मंडित—
गण्ड चलति उरझाती ।
अरुण नैन घूमत आलस युत—
कुसुम गलित लटपाती ॥
आज रहसि मोहन सब लूटी—
विविधि आपनी थाती ।
जय श्रीहित हरिवंश वचन सुनि भामिनि—
भवन चली मुसिकाती ॥ २० ॥

(श्रीहितसखीजी श्रीप्रियाजी परस्पर संभाषण) सुरतान्त समय

राग धनाश्री

तेरे नैंन करत दोऊ चारी।
अति कुलकात समात नहीं कहूँ—
मिले हैं कुञ्जविहारी ॥
विथुरी मांग कुसुम गिरि गिरि परैं—
लटकि रही लट न्यारी।
उर नख रेख प्रगट देखियत है—
कहा दुरावत प्यारी ॥
परी है पीक सुभग गंडनि पर—
अधर निरंग सुकुमारी।
जयश्रीहित हरिवंश रसिकिनी भामिनि—
आलस अङ्ग अङ्ग भारी ॥२१॥

(श्रीहित सखीजी श्रीप्रियाजी प०सं०) सुरतान्त वा शृङ्गार समय

राग धनाश्री

नैननि पर वारों कोटिक खञ्जन।
चंचल चपल अरुण अनियारे—
अग्रभाग बन्यौं अञ्जन ॥
रुचिर मनोहर वक्र विलोकन—
सुरत समर दल गञ्जन।
जय श्रीहित हरिवंश कहत न बनै छवि—
सुख समुद्र मन रञ्जन ॥ २२ ॥

(श्रीहितसखीजी श्रीप्रियाजी परस्पर सम्भाषण) सुरतान्त समय
राग धनाश्री

राधा प्यारी तेरे नैंन सलोल ।
तैं निज भजन कनक तन योवन--
लियौ मनोहर मोल ॥
अधर निरंग अलक लट छूटी—
रञ्जित पीक कपोल ।
तू रस मगन भई नहिं जानत—
ऊपर पीत निचोल ॥
कुच युग पर नख रेख प्रगट मानौं—
शङ्कर शिर शशि टोल ।
जय श्रीहित हरिवंश कहत कछु—
भामिनि अति आलस सौं बोल ॥२३॥

(श्रीहितसखीजी श्रीप्रियाजी वा सखी परस्पर संभाषण)राससमय
राग धनाश्री

आज गोपाल रास रस खेलत—
पुलिन कल्पतरु तीर री सजनी ।
शरद विमल नभ चंद विराजत—
रोचक त्रिविधि समीर री सजनी ॥
चंपक बकुल मालती मुकलित—
मत्त मुदित पिक कीर री सजनी ।
देसी सुधंग राग रँग नींकौ—
ब्रज युवतिनकी भीर री सजनी ॥

मघवा मुदित निसान बजायौ—
व्रत छांड्यौ मुनि धीर री सजनी ।
जय श्रीहित हरिवंश मगन मन श्यामा—
हरत मदन घन पीर री सजनी ॥२४॥

(श्रीहितसखीजी श्रीप्रियाजी परस्पर सं०)शृङ्गार वा शय्यासमय
राग धनाश्री

आज नीकी बनी श्रीराधिका नागरी ।
व्रज युवति यूथ में रूप अरु चतुरई—
शील शृंगार गुण सबन तैं आगरी ।
कमल दच्छिण भुजा बाम भुज अंश सखि—
गावती सरस मिलि मधुर स्वर राग री ।
सकल विद्या विदित रहसि श्रीहरिवंश हित—
मिलत नवकुञ्ज वर श्याम बडभागरी ॥२५॥

(श्रीहितसखीजी श्रीप्रियाजी परस्पर संभाषण)शृंगारएवं राससमय
राग धनाश्री

मोहनी मदन गोपाल की बांसुरी ।
माधुरी श्रवण पुट सुनत सुनि राधिके—
करत रति राज के ताप कौ नासुरी ॥
शरद राका रजनि विपिन वृन्दा सजनि—
अनिल अति मंद शीतल सहित बास री ।
परम पावन पुलिन भृंग सेवत नलिन—
कल्पतरु तीर बलबीर कृत रास री ॥

सकल मंडल भलीं तुम जु हरिसौं मिलीं—
बनी वर वनित उपमा कहौं कासु री।
तुम जु कंचन तनी लाल मर्कत मणी—
जय श्रीउभय कल हंस हरिवंश वलि दासु री।२६

(श्रीहितसखीजी युगल और सखी प्रति प० सं०) रास समय

॥ राग बसंत ॥

मधु रितु वृन्दावन आनँद न थोर।
राजत नागिरी नव कुशल किशोर॥
यूथिका युगल रूप मंजरी रसाल।
विथकित अलि मधु माधवी गुलाल॥
चम्पक बकुल कुल विविधि सरोज।
केतकी मेदिनी मद मुदित मनोज॥
रोचक रुचिर बहै त्रिविधि समीर।
मुकलित नूत नदित पिक कीर॥
पावन पुलिन घन मंजुल निकुंज।
किशलय शयन रचित सुख पुंज॥
मंजीर मुरज डफ मुरली मृदंग।
बाजत उपंग वीणा वर मुख चंग॥
मृगमद मलयज कुमकुम अबीर।
बन्दन अगर सत सुरँगित चीर॥

गावत सुन्दरि हरि सरस धमारि ।
पुलकित खग मृग बहत न वारि ॥
जय श्रीहित हरिवंश हंस हंसिनी समाज ।
ऐसैंही करौ मिलि युग युग राज ॥२७॥

(श्रीहित सखीजी श्रीप्रियाजी प्रति सम्भाषण) वन विहार सम

राग बसन्त

राधे देख वनकी बात ।
रितु वसंत अनंत मुकलित—
कुसुम अरु फल पात ॥
वेणु ध्वनि नँदलाल बोली—
सुनि ऽव क्यौं अरसात ।
करत कतव विलम्ब भामिनि
वृथा अवसर जात ॥
लाल मर्कतमणि छबीलौ—
तुम जु कंचन गात ।
बनी जय श्रीहित हरिवंश जोरी—
उभय गुण गण मात ॥ २८ ॥

(श्रीहित सखीजी श्रीलालजी एवं सखिन प्रति परस्पर संभाषण)

शय्या या शृङ्गार समय

॥ राग देव गंधार ॥

व्रज नव तरुणि कदम्ब मुकटमणि—
श्यामा आज बनी ।

नख शिखलौं अँग अंग माधुरी--
मोहे श्याम धनी ॥
यौं राजत कवरी गुन्थित कच--
कनक कंज वदनी ।
चिकुर चंन्द्रिकनि बीच अर्ध विधु—
मानौं ग्रसित फनी ॥
सौभग रस शिर श्रवत पनारी—
पिय सीमन्त ठनी ।
भृकुटि काम कोदण्ड नयन सर—
कज्जल रेख अनी ॥
तरल तिलक ताटंक गण्ड पर—
नासा जलज मनी ।
दसन कुन्द सरसाधर पल्लव—
प्रीतम मन समनी ॥
चिबुक मध्य अति चारु सहज सखि—
सांवल विन्दु कनी ।
प्रीतम प्राण रतन सम्पुट कुच—
कंचुकी कसिव तनी ॥
भुज मृणाल वल हरत वलय युत—
परस सरस श्रवनी ।

श्याम शीश तरु मनौं मिडवारी—
रची रुचिर रचनी ॥
नाभि गंभीर मीन मोहन मन—
खेलन कौं हृदनी ।
कृश कटि पृथु नितम्ब किंकिणी वृत—
कदलि खंभ जघनी ॥
पद अम्बुज जावक युत भूषण—
प्रीतम उर अवनी ।
नव नव भाव बिलोभि भाम इभ—
विहरत वर करिनी ॥
जय श्रीहित हरिवंश प्रसंशित श्यामा—
कीरति विशद घनी ।
गावत श्रवणनि सुनत सुखाकर—
विश्व दुरति दवनी ॥ २६ ॥

(श्रीहितसखीजी एवं सखीन प्रति श्रीप्रियाजी प० सं०) शय्यासमय

॥ रागदेव गंधार ॥

देखत नव निकुञ्ज सुनि सजनी—
लागत है अति चारु ।
माधविका केतकी लता लै—
रच्यौ मदन आगारु ॥

शरद मास राका निशि शीतल—
मंद सुगन्ध समीर ।
परिमल लुब्ध मधुव्रत विथकित—
नदति कोकिला कीर ॥
बहु विधि रंग मृदुल किसलय दल—
निर्मित पिय सखि सेज ।
भाजन कनक विविध मधु पूरित—
धरे धरनि पर हेज ॥
तापर कुशल किशोर किशोरी—
करत हास परिहास ।
प्रीतम पाणि उरज वर परसत—
प्रिया दुरावत वास ॥
कामिनि कुटिल भृकुटि अवलोकत—
दिन प्रतिपद प्रतिकूल ।
आतुर अति अनुराग विवस हरि—
धाय धरत भुज मूल ॥
नागर नीवी बंधन मोचत—
ऐंचत नील निचोल ।
बधू कपट हठि कोप कहत कल—
नेति नेति मधु बोल ॥

परिरंभन विपरित रति वितरत—
सरस सुरत निज केलि।
इन्द्र नीलमणि मय तरु मानौं—
लसत कनक की वेलि॥
रति रण मिथुन ललाट पटल पर—
श्रम जल सीकर संग।
ललितादिक अंचल भकभोरत—
मन अनुराग अभंग॥
जय श्रीहित हरिवंश यथामति वरणत—
कृष्ण रसामृत सार।
श्रवण सुनत प्रापक रति राधा—
पद अम्बुज सुकुमार॥ ३०॥

(श्रीहित सखीजी युगल परस्पर सम्भाषण) सुरतांत समय

राग देव गंधार।

आज अति राजत दम्पति भोर।
सुरत रंग के रसमें भीने नागरि नवल किशोर।
अंसन पर भुज दियैं विलोकत—
इन्दु वदन विवि ओर।
करत पान रसमत्त परस्पर—
लोचन त्रिषित चकोर॥

छूटी लटनि लाल मन करष्यौ—
ये थाके चितचोर ।
परिरंभन चुम्बन मिलि गावत—
स्वर मन्दिर कल घोर ॥
पग डगमगत चलत बन विहरत—
रुचिर कुञ्ज घन खोर ।
जय श्रीहित हरिवंश लाल ललना मिलि—
हियौ सिरावत मोर ॥ ३१ ॥

(श्रीहित सखीजी सखीन प्रति परस्पर सम्भाषण) शय्या समय

॥ रागदेव गंधार ॥

आज बन क्रीड़त श्यामा श्याम ।
सुभग बनी निशि शरद चांदिनी—
रुचिर कुञ्ज अभिराम ।
खंडन अधर करत परिरंभन ॥
ऐंचत जघन दुकूल ।
उर नख पात तिरीछी चितवनि—
दम्पति रस समतूल ॥
वे भुज पीन पयोधर परसत—
वाम दशा पिय हार ।

बसननि पीक अलक आकर्षत--
समर अमित सतमार ॥
पल पल प्रबल चौंप रस लंपट--
अति सुन्दर सुकुमार ।
जय श्रीहित हरिवंश आज तृण टूटत--
हौं बलि बिशद विहार ॥ ३२ ॥

(श्रीहितसखीजी युगल और सखीन प्रति प० सं०)सुरतांत समय।
राग देव गंधार ।

आज बन राजत युगल किशोर ।
नंदनँदन वृषभानुनंदिनी--
उठे उनींदे भोर ॥
डगमगात पग परत शिथिल गति--
परसत नख शशि छोर ।
दसन बसन खंडित मषि मंडित--
गंड तिलक कछु थोर ॥
दुरत न कच करजनि के रोके--
अरुन नैंन अलि चोर ।
जय श्रीहित हरिवंश सँभार न तन मन--
सुरत समुद्र झकोर ॥ ३३ ॥

(श्रीहितसखी युगल और सखीन प्रति परस्पर सं०) सुरतांत
वन विहार एवं शय्या समय
रागदेव गंधार।

वन की कुञ्जन कुञ्जन डोलनि।
निकसत निपट सांकरी वीथिनि—
परसत नाँहि निचोलनि॥
प्रात काल रजनी सब जागे—
सूचत सुख दृग लोलनि।
आलसवंत अरुण अति व्याकुल—
कछु उपजत गति गोलनि॥
निर्तनि भृकुटि वदन अम्बुज मृदु—
सरस हास मधु बोलनि।
अति आसक्त लाल अलि लम्पट—
बस कीने बिन मोलनि॥
बिथुलित शिथिल श्याम छूटी लट—
राजत रुचिर कपोलनि।
रति विपरित चुम्बन परिरंभन—
चिबुक चारु टकटोलनि॥
कबहुं श्रमित किसलय सिज्यापर—
मुख अंचल झक झोलनि।
दिन हरिवंश दासि हिय सींचत—
वारिधि केलि कलोलनि॥३४॥

(श्रीहितसखी युगल एवं सखीन प्रति परस्पर सं०) झूलन समय

राग देव गंधार

झूलत दोऊ नवल किशोर ।

रजनी जनित रंग सुख सूचत—
अंग अंग उठि भोर ॥
अति अनुराग भरे मिलि गावत—
स्वर मन्दिर कल घोर ।
बीच बीच प्रीतम चित चोरत—
प्रिया नयनकी कोर ॥
अबला अति सुकुमारि डरत मन—
वर हिंडोर झकोर ।
पुलकि पुलकि प्रीतम उर लागत—
दै नव उरज अँकोर ॥
उरझी विमल माल कंकण सौं—
कुंडल सौं कच डोर ।
वेपथ युत क्यों बनै विवेचित—
आनँद बढ्यौ न थोर ॥
निरखि निरखि फूलति ललितादिक—
विवि मुख चंद्र चकोर ।
दै अशीस श्रीहरिवंश प्रशंसित—
कर अंचल की छोर ॥ ३५ ॥

(श्रीहित सखीजी युगल एवं सखीन प्रति परस्पर सं०) रास समय

राग सारङ्ग

आज बन नीकौ रास बनायौ ।

पुलिन पवित्र सुभग यमुना तट—
मोहन वेणु बजायौ ॥
कल कंकण किंकिणि नूपुर ध्वनि—
सुनि खग मृग सचु पायौ ।
युवतिन मण्डल मध्य श्याम घन--
सारँग राग जमायौ ॥
ताल मृदंग उपंग मुरज डफ—
मिलि रस सिंधु बढ़ायौ ।
विविधि विशद वृषभानुनन्दिनी--
अङ्ग सुधङ्ग दिखायौ ॥
अभिनय निपुन लटकि लट लोचन—
भृकुटि अनङ्ग नचायौ ।
ता ता थेई ताथेई धरति नौतन गति-
पति ब्रजराज रिझायौ ॥
सकल उदार नृपति चूड़ामणि—
सुख वारिधि बरषायौ ॥
परिरंभन चुम्बन आलिङ्गन—
उचित युवति जन पायौ ।

बरषत कुसुम मुदित नभ नायक--
इन्द्र निसान बजायौ ॥
जय श्रीहित हरिवंश रसिक राधापति--
यस बितान जग छायौ ॥३६॥

(श्रीहितसखीजी श्रीप्रियाजी परस्पर सं०)शय्या समय संभ्रममान

राग सारंग

चलहि किन मानिनि कुञ्ज कुटीर ।
तो बिन कुंवरि कोटि बनिता युत—
मथत मदन की पीर ॥
गद गद स्वर पुलकित बिरहाकुल—
श्रवत बिलोचन नीर ।
क्वासि क्वासि वृषभानुनन्दिनी—
बिलपत बिपिन अधीर ॥
वंशी विसिख व्याल माला बलि--
पंचानन पिक कीर ।
मलयज गरल हुतासन मारुत--
साखा मृग रिपु चीर ॥
जय श्रीहित हरिवंश परम कोमल चित--
चपल चली पिय तीर ।
सुनि भयभीत वज्र कौ पंजर—
सुरत सूर रणधीर ॥३७॥

(श्रीहितसखीजी श्रीप्रियाजी प्रति सम्भाषण)शय्या समय संभ्रममान
राग सारंग

बेगि चलहि उठि गहर करत कत—
निकुञ्ज बुलावत लाल ।
हा राधा राधिका पुकारत—
निरख मदन गज ढाल ॥
करत सहाय शरद शशि मारुत—
फूटि मिली उर माल ।
दुर्गम तकत समर अति कातर—
करहि न पिय प्रतिपाल ॥
जय श्रीहित हरिवंश चली अति आतुर—
श्रवण सुनत तिहिं काल ।
लै राखे गिरि कुच बिच सुन्दर—
सुरत सूर ब्रजबाल ॥ ३८ ॥

(श्रीहितसखीजी श्रीप्रियाजी परस्पर सं०) शय्या समय संभ्रममान
राग सारङ्ग

खेल्यौ लाल चाहत रवन ।
रचि रचि अपने हाथ सँमारयौ निकुञ्ज भवन ।
रजनी शरद मंद सौरभ सौं शीतल पवन ॥
तो बिन कुंवरि कामकी वेदन मेटब कवन ।

चलहि न चपल बाल मृगनैंनी तजिव मवन ॥
जय श्रीहितहरिवंश मिलव प्यारे की आरति दवन ॥३९॥

(श्रीहितसखीजी श्रीप्रियाजी प्रति संभाषण) शय्या समय संभ्रममान

राग सारङ्ग

बैठे लाल निकुंज भवन ।
रजनी रुचिर मल्लिका मुकलित—
त्रिविधि पवन ॥
तू सखि काम केलि मन मोहन—
मदन दवन ।
वृथा गहरु कत करति कृशोदरि—
कारन कवन ॥
चपल चली तन की सुधि बिसरी—
सुनत श्रवन ।
जय श्रीहित हरिवंश मिले रस लंपट—
राधिका रवन ॥ ४० ॥

(श्रीहितसखीजी युगल प्रति संभाषण) प्रातः समय. संभ्रममान

राग सारंग

प्रीति की रीति रँगीलौई जानैं।
यद्यपि सकल लोक चूड़ामणि—
दीन अपनपौ मानैं ।

यमुना पुलिन निकुंज भवन में—
मान मानिनी ठानै ॥
निकट नवीन कोटि कामिनि कुल—
धीरज मनहिं न आनै ॥
नश्वर नेह चपल मधुकर ज्यौं—
आन आन सौं बानै ॥
जय श्रीहित हरिवंश चतुर सोई—
लालहिं छांड़ि मैंड़ पहिचानै ॥ ४१ ॥

(श्रीहितसखीजी युगल और सखीन प्रति सं०)प्रातःया शय्या समय
राग सारंग

प्रीति न काहू की कानि विचारै ।
मारग अपमारग विथकित मन—
को अनुसरत निवारै ॥
ज्यौं सरिता श्रावण जल उमगत —
सनमुख सिंधु सिधारै ।
ज्यौं नादहिं मन दियैं कुरंगनि—
प्रगट पारधी मारै ॥
जय श्रीहित हरिवंश हिलग सारँग ज्यों—
सलभ शरीरहि जारै ।
नायक निपुन नवल मोहन बिनु—
कौन अपनपौ हारै ॥ ४२ ॥

(श्रीहितसखीजी श्रीप्रियाजी प्रति संभाषण) शय्या समय, परिहास में संभ्रममान

राग सारंग

अति नागरि वृषभानु किशोरी ।
सुनि दूतिका चपल मृगनैनी—
आकर्षत चितवत चित गोरी ॥
श्रीफल उरज कंचन सी देही—
कटि केहरि गुण सिंधु झकोरी ।
वेणी भुजंग चंद्र सत वदिनी—
कदली जंग जलचर गतिचोरी ॥
सुनि हरिवंश आज रजनी मुख—
बन मिलाय मेरी निज जोरी ॥
यद्यपि मान समेत भामिनी—
सुनि कत रहत भली जिय भोरी ॥४३॥

(श्रीहितसखीजी प्रियाजी प्रति परस्पर सं०)शय्या समय संभ्रममान

राग सारंग

चलि सुन्दरि बोली वृन्दावन ।
कामिनि कंठ लागि किनि राजहि—
तू दामिनि मोहन नौतन धन ।
कंचुकी सुरँग विविधि रँग सारी—
नख युग ऊन बने तेरे तन ।

ये सब उचित नवल मोहन कौं—
श्रीफल कुच योवन आगम धन ॥
अतिशय प्रीति हुती अन्तर गति—
जय श्रीहित हरिवंश चली मुकलित मन।
निबिड निकुंज मिले रस सागर—
जीते शत रतिराज सुरत रन ॥४४॥

(श्रीहित सखीजी सखीन प्रति सम्भाषण) वन विहार समय
राग सारंग

आवति श्रीवृषभानुदुलारी ।
रूप रासि अति चतुर शिरोमणि—
अंग अंग सुकुमारी ॥
प्रथम उबटि मज्जन करि सज्जित—
नील बरन तन सारी ।
गुँथित अलक तिलक कृत सुन्दर—
सेंदुर माँग सँवारी ॥
मृगज समान नैंन अंजन युत—
रुचिर रेख अनुसारी ।
जटित लवङ्ग ललित नाशा पर—
दशनावलि कृतकारी ॥
श्रीफल उरज कसूँभी कंचुकी कसि—
ऊपरि हार छबि न्यारी ।

कृश कटि उदर गंभीर नाभिपुट–
जघन नितम्बनि भारी ॥
मनौं मृणाल भूषण भूषित भुजा –
श्याम अंस पर डारी ।
जय श्रीहित हरिवंश युगल करणी गज–
विहरत वन पिय प्यारी ॥४५॥

(श्रीहितसखीजी सखीन प्रति परस्पर सं०)शय्या समय

राग सारंग

विपिन घन कुंज रतिकेल भुज मेलि रुचि–
श्याम श्यामा मिले शरद की यामिनी ।
हृदय अति फूल समतूल पिय नागरी–
करनि कर मत्त मनौं विविधि गुण रामिनी ॥
सरस गति हास परिहास आवेश वस–
दलित दल मदन बल कोक रस कामिनी ।
जय श्रीहित हरिवंश सुन लाल लावण्य भिदे–
प्रिया अति शूर सुख सुरत संग्रामिनी ॥४६॥

(श्रीहितसखीजी युगल और सखीनप्रति पर०सं०)वनविहार समय

राग सारंग ।

वन की लीला लालहि भावैं ।
पत्र प्रसून बीच प्रतिबिंबहि–
नख शिख प्रिया जनावैं ॥

सकुच न सकत प्रगट परिरंभन—
अलि लंपट दुरि धावैं।
संभ्रम देत कुलकि कल कामिनि—
रति रण कलह मचावैं॥
उलटी सबैं समझि नैननि में—
अंजन रेख बनावैं।
जय श्रीहित हरिवंश प्रीति रीति बस—
सजनी श्याम कहावैं ॥४७॥

(श्रीहित सखीजी सखीन प्रति पर०सं०)श्रृंगार या वनविहार समय

राग सारंग।

बनी वृषभानुनंदिनी आजु।
भूषण बसन विविधि पहिरैं तन—
पिय मोहन हित साज
हाव भाव लावण्य भृकुटि लट—
हरत युवति जन पाज॥
ताल भेद अब घर स्वर सूचत—
नूपुर किंकिणि बाज।
नव निकुंज अभिराम श्याम सँग—
नीकौ बन्यौ समाज॥

जय श्रीहित हरिवंश विलास रास युत—
जोरी अविचल राज ॥ ४८ ॥

(श्रीहित सखीजी सखीन प्रति प० संभाषण) शय्या विहार समय
राग सारंग

देखि सखी राधा पिय केलि ।
ये दोऊ खोरि खिरक गिरि गह्वर—
विहरत कुमरि कंठ भुज मेलि ॥
ये दोऊ नवल किशोर रूप निधि—
विटप तमाल कनक मानौं वेलि ।
अधर अदन चुम्बन परिरंभन—
तन पुलकित आनँद रस झेलि ॥
पट बंधन कंचुकी कुच परसत—
कोप कपट निरखत कर पेलि ।
जय श्रीहित हरिवंश लाल रस लंपट—
धाय धरत उर बीच सकेलि ॥४९॥

नवल नागरि नवल नागर किशोर मिलि—
कुञ्ज कोमल कमल दलनि शय्या रची ।

(श्रीहित सखीजी सखीन प्रति सम्भाषण) शय्या समय
राग सारंग ।

गौर श्यामल अङ्ग रुचिर तापर मिले—
सरस मणि नीलमनौ मृदुल कंचन खची॥

सुरत नीवी निबंध हेतु पिय मानिनी—
प्रिया की भुजनि में कलह मोहन मची ।
सुभग श्रीफल उरज पाणि परसत—
रोष हुंकार गर्व दृग भंगि भामिनि लची ॥
कोक कोटिक रभसि रहसि श्रीहरिवंश हित—
विविधि कल माधुरी किमपि नाहिन वची ।
प्रणयमय रसिक ललितादि लोचन चषक—
पिवत मकरन्द सुख रासि अन्तर सची ॥५०

(श्रीलाल जी श्रीप्रियाजी प्रति सम्भाषण) दान समय

राग सारङ्ग ।

दान दै री नवल किशोरी
माँगत लाल लाड़िलौ नागर—
प्रगट भई दिन दिन की चोरी ।
नव नारंग कनक हीरावलि–
विद्रुम सरस जलजमणि गोरी ॥
पूरित रस पीयूष युगल घट–
कमल कदलि खञ्जन की जोरी ।
तोपै सकल सौंज दामिनिकी–
कत सतराति कुटिल दृग भोरी ॥

नूपुर रव किंकिणी पिसुन घर—
जय श्रीहित हरिवंश कहत नहिं थोरी ॥५१॥

(श्रीहित सखी जी सखीन प्रति प० स०) वर्षा समय वनविहार

राग मलार।

देखौ माई सुन्दरता की सीवां।
व्रज नव तरुनि कदंब नागरी—
निरखि करत अधग्रीवां ॥
जो कोऊ कोटि कल्प लगि जीवै—
रसना कोटिक पावै।
तऊ रुचिर वदनारविन्द की-
शोभा कहत न आवै ॥
देवलोक भूलोक रसातल-
सुनि कवि कुल मति डरियै।
सहज माधुरी अंग अंग की-
कहि कासौं पटतरियै ॥
जय श्रीहित हरिवंश प्रताप रूप गुण-
वय बल श्याम उजागर।
जाकी भ्रू विलास बस पशुरिव-
दिन विथकित रस सागर ॥५२॥

(श्रीहित सखीजी सखीन प्रति प०सम्भाषणं) वर्षा समय वनविहार

राग मलार ।

देखौ माई अबला के बल रास ।
अति गज मत्त निरंकुश मोहन—
निरखि बँधे लट पास ॥
अबहीं पंगु भई मन की गति—
बिनु उद्यम अनियास ।
तब की कहा कहौं जब पिय प्रति—
चाहत भृकुटि विलास ॥
कच संयमन व्याज भुज दरसति—
मुसकनि वदन विकास ।
हा हरिवंश अनीति रीति हित—
कत डारत तन त्रास ॥५३॥

(श्रीहित सखीजी सखीन प्रति पर० सं०) वर्षा समय वनविहार

राग मलार ।

नयौ नेह नव रंग नयौ रस—
नवल श्याम वृषभानुकिशोरी ।
नव पीतांबर नवल चूँनरी—
नई नई बूँदन भीजति गोरी ॥
नव वृन्दावन हरित मनोहर—
नव चातक बोलत मोर मोरी ।

नव मुरली जु मलार नई गति–
श्रवन सुनत आये घन घोरी ॥
नव भूषण नव मुकुट विराजत–
नई नई उरप लेत थोरी थोरी ।
जय श्रीहित हरिवंश अशीष देत मुख–
चिरजीवौ भूतल यह जोरी ॥५४॥

(श्रीहित सखीजो सखीन प्रति प० सं०) वर्षा समय वनविहार

राग मलार ।

आज दोऊ दामिन मिलि बिहँसी ।
बिचलै श्याम घटा अति नौतन–
ताके रङ्ग रसी ॥
एक चमकि चहूँ ओर सखीरी–
अपने सुभाव लसी ।
आई एक सरस गहनी में—
दुहुँ भुज बीच बसी ॥
अम्बुज नील उभय बिधु राजत–
तिनकी चालन खसी ।
जय श्रीहित हरिवंश लोभ भेटन मन–
पूरण शरद शशी ॥५५॥

(श्रीहित सखीजी श्रीयुगल प्रति पर० स०) वन या शय्या समय

राग गौड मलार ।

हौं बलि जाउँ नागरी श्याम ।
ऐसैं ही रङ्ग करौ निशि बासर–
वृन्दाविपिन कुटी अभिराम ॥
हास विलास सुरत रस सींचन–
पशुपति दग्ध जिवावत काम ।
जय श्रीहित हरिवंश लोल लोचन अलि–
करहु न सफल सकल सुखधाम॥५६॥

(श्रीहितसखीजी श्रीयुगल और सखीन प्रति पर० सं०)होली समय

राग गौरी ।

प्रथम यथा मति प्रणाऊँ श्रीवृन्दावन अति रम्य ।
श्रीराधिका कृपा बिनु सब के मननि अगम्य ॥
वर यमुना जल सींचन दिनही शरद बसंत ।
विविधि भाँति सुमनसिके सौरभ अलि कुल मंत ॥
अरुण नूत पल्लव पर कूँजत कोकिल कीर ।
निर्तनि करत शिखी कुल अति आनंद अधीर ॥
बहत पवन रुचिदायक शीतल मन्द सुगन्ध ।
अरुण नील सित मुकलित जहां तहां पूषण बंध ॥

अति कमनीय बिराजत मंदिर नवल निकुञ्ज।
सेवत सगण प्रीति युत दिन मीनध्वज पुंज॥
रसिक राय जहां खेलत श्यामा| श्याम किशोर।
उभय बांहु परि रंजित उठे उनीदे भोर॥
कनक कपिस पट शोभित सुभग सांवरे अंग।
नील बसन कामिनि उर कंचुकी कसुंभी सुरंग॥
ताल रबाब मुरज डफ बाजत मधुर मृदंग।
सरस उकति गति सूचत बर बँसुरी मुख चंग॥
दोऊ मिलि चाचरि गावत गौरी राग अलाप।
मानस मृग बल बेधत भृकुटि धनुष दृग चाप॥
दोऊ कर तारिनु पटकत लटकत इत उत जात।
हो हो होरी बोलत अति आनँद कुलकात॥
रसिक लाल पर मेलत कामिनि बन्दन धूरि।
पिय पिचकारिनु छिरकत तकितकि कुम कुम पूरि॥
कबहुँ कबहुँ चंदन तरु निर्मित तरल हिंडोल।
चढ़ि दोऊ जन भूलत फूलत करत कलोल॥
वर हिंडोर झकोरनि कामिनि अधिक डरात।
पुलकि पुलकि वेपथ अँग प्रीतम उर लपटात॥
हितचिंतक निज चेरिनु उर आनँद न समात।
निरखि निपट नैननि सुख तृण तोरति बलिजात॥

अति उदार बिवि सुन्दर सुरत शूर सुकुमार ।
जय श्रीहित हरिवंश करौ दिन दोऊ चल बिहार ५७

(श्रीहित सखीजी श्रीप्रियाजी प्रति पर०सं०) शय्या समय सं० मान
राग गौरी।

तेरे हित लैन आई बन तैं श्याम पठाई—
हरति कामिनि घन कदन काम कौ ।
काहे कौं करत बाधा सुनिरी चतुर राधा—
भेटि कैं मेटि री माई प्रगट जगत भौ ॥
देखि री रजनी नीकी रचना रुचिर पी की-
पुलिन नलिन नभ उदित रोहिणी धौ ।
तू तौऽव सखी सयानी तैं मेरी एकौ न मानी-
हौं तोसौं कहत हारी युवति जुगति सौ ॥
मोहन लाल छबीलौ अपने रंग रँगीलौ—
मोहत बिहंग पशु मधुर मुरली रौ ।
वे तौऽव गनत तन जीवन योवन तव-
जय श्रीहित हरिवंश हरि भजहि भामिनि जौ ॥५८॥

(श्रीलालजीका प्रियाजी या श्रीहितजू का कृपापात्रन प्रतिप०सं०)
शय्या या सर्वकाल समय । राग गौरी ।

यह जु एक मन बहुत ठौर करि-
कहि कौनें सचु पायौ ।
जहाँ तहाँ बिपति जार युवती लौं-
प्रगट पिंगला गायौ ॥

द्वै तुरंग पर जोर चढ़त हठ—
परत कौन पै धायौ ।
कहिधौं कौन अंक पर राखै—
जो गणिका सुत जायौ ॥
जय श्रीहित हरिवंश प्रपंच वंच सब—
काल व्याल कौ खायौ ।
यह जिय जान श्याम श्यामा पद—
कमल सँगी शिर नायौ ॥ ५९ ॥

(श्रीहित या लालजी श्रीप्रियाजी प्रति पर० सं०)
शृंगार या शय्या समय । राग गौरी ।

कहा कहौं इन नैननि की बात ।
ये अलि प्रिया वदन अंबुज रस—
अटके अनत न जात ॥
जब जब रुकत पलक संपुट लट—
अति आतुर अकुलात ।
लंपट लव निमेष अन्तर तैं—
अल्प कल्प सत सात ॥
श्रुति पर कंज दृगंजन कुच बिच—
मृग मद ह्वै न समात ।
जय श्रीहित हरिवंश नाभि सर जलचर—
याँचत साँवल गात ॥६०॥

(श्रीहित सखीजो सखीन प्रति प० सं०) रास समय

राग गौरी

आजु सखी बन में जु बने प्रभु—
नाचत हैं ब्रज मंडन ।
वयस किशोर युवति अंशनि पर—
दियैं विमल भुज दंडन ॥
कोमल कुटिल अलक सुठि सोभित—
अवलंबित युग गंडन ।
मानहुं मधुप थकित रस लंपट—
नील कमल के खंडन ॥
हास विलास हरत सबकौ मन—
काम समूह बिहंडन ।
जय श्रीहित हरिवंश करत अपनौ यस—
प्रगट अखिल ब्रंह्मडन ॥६१॥

(श्रीहित सखीजी सखीन प्रति पर०सं०) रास समय

राग गौरी ।

खेलत रास दुलहिनी दूलहु ।
सुनहुं न सखी सहित ललितादिक—
निरखि निरखि नैननि किन फूलहु ॥

अति कल मधुर महा मोहन ध्वनि—
उपजत हंशसुता के कूलहु ।
थेई थेई वचन मिथुन मुख निसरत—
सुनि सुनि देह दशा किन भूलहु ॥
मृदु पदन्यास उठत कुम कुम रज—
अद्भुत बहत समीर दुकूलहु ।
कबहुँ श्याम श्यामा दशनांचल—
कच कुच हार छुवत भुज मूलहु ॥
अति लावण्य रूप अभिनय गुण—
नाहिंन कोटि काम समतूलहु ।
भृकुटि विलास हास रस बरषत—
जय श्रीहित हरिवंश प्रेम रस झूलहु॥६२

(श्रीहित सखीजी सखीन प्रति प०सं०) रास समय
त्रिभंगी छँद चार । राग गौरी

मोहन मदन त्रिभंगी ।
मोहन मुनि मन रंगी ॥
मोहन मुनि सघन प्रगट परमानँद—
गुण गंभीर गुपाला ।
शीश किरीट श्रवण मणि कुंडल—
उर मंडित बन माला ॥

पीतांवर तन धातु विचित्रित—
कल किंकिणि कटि चंगी ।
नख मणि तरणि चरण सरसीरुह—
मोहन मदन त्रिभंगी ॥१॥
मोहन वेणु बजावै ।
इहिं रव नारि बुलावै ॥
आई व्रज नारि सुनत वंशी रव—
गृहपति— बंधु विसारे ।
दरशन मदन गुपाल मनोहर—
मनसिज ताप निवारे ॥
हरषित वदन वंक अवलोकनि—
सरस मधुर ध्वनि गावै ।
मधुमय श्याम समान अधर धरैं—
मोहन वेणु बजावैं ॥२॥
रास रच्यौ बन माहीं ।
विमल कल्पतरु छांहीं ॥
विमल कल्प तरु तीर सुपेसल—
शरद रैन वर चंदा ।
शीतल मंद सुगंध पवन बहै—
तहां खेलत नँदनंदा ॥

अद्भुत ताल मृदंग मनोहर—
किंकिणि शब्द कराहीं ।
यमुना पुलिन रसिक रस सागर—
रास रच्यौ वन माहीं ॥३॥
देखत मधुकर केली ।
मोहे खग मृग वेली ॥
मोहे मृग धेनु सहित स्वर सुंदर—
प्रेम मगन पट छूटे ।
उडगन चकित थकित शशि मंडल—
कोटि मदन मन लूटे ॥
अधर पान परिरंभन अतिरस—
आनँद मगन सहेली ।
जय श्रीहित हरिवंश रसिक सचु पावत—
देखत मधुकर केली ॥४॥ ॥६३॥

(श्रीहित सखीजी श्रीप्रियाजी और सखीन प्रति सं०)

रास समय या संभ्रममान। राग गौरी।

वेणु माई बाजै वंशीवट ।
सदा बसंत रहत वृन्दावन—
पुलिन पवित्र सुभग यमुना तट ॥

जटित किरीट मकराकृत कुंडल—
मुखारविंद भ्रँमर मानौं लट।
दशननि कुंद कली छवि लज्जित—
सज्जित कनक समान पीत पट॥
मुनि मन ध्यान धरत नहिं पावत—
करत विनोद संग बालक भट।
दासि अनन्य भजन रस कारण—
जय श्रीहित हरिवंश प्रगट लीलानट॥६४

(श्रीहितसखीजी श्रीप्रियाजी और सखीन प्रति पर० सम्भाषण)
रास समय या संभ्रममान॥ राग गौरी

मदन मथन घन निकुंज खेलत हरि—
राका रुचिर शरद रजनी॥
यमुना पुलिन तट सुरतरु के निकट—
रचित रास चलि मिलि सजनी॥
बाजत मृदु मृदंग नाचत सबै सुधंग—
तैं न श्रवण सुन्यौ वेणु बजनी।
जय श्रीहितहरिवंश प्रभु राधिकारमण--
मोकौं भावै भाई जगत भगत भजनी॥६५॥

(श्रीहित सखीजो सखीन प्रति प० सम्भाषण) शय्या समय
राग कल्याण।

विहरत दोऊ प्रीतम कुंज॥

अनुपम गौर श्याम तन शोभा—
वन बरषत सुख पुंज ।
अद्भुत खेत महा मनमथ कौ—
दुंदुभि भूषण राव ॥
जूझत सुभट परस्पर अँग अँग—
उपजत कोटिक भाव ।
भरि संग्राम श्रमित अति अबला—
निद्रायत कल नैन ।
पिय के अंक निसंक तंक तन—
आलस युत कृत शैन ॥
लालन मिस आतुर पिय परसत—
उरू नाभि उरजात ।
अद्भुत छटा बिलोकि अवनि पर—
बिथकित वेपथ गात ॥
नागरि निरखि मदन विष व्यापत—
दियौ सुधाधर धीर ।
सत्वर उठे महा मधु पीवत—
मिलत मीन मिव नीर ॥
अबही मैं मुख मध्य विलोके—
बिंबाधर सु रसाल ।

जाग्रत ज्यौं भ्रम भयौ परचौ मन—
शत मनसिज कुल जाल ॥
सकृदपि मयि अधरामृत मुपनय—
सुन्दरि सहज सनेह ॥
तव पद पंकज कौ निज मंदिर—
पालय सखि मम देह ॥
प्रिया कहत कहु कहां हुते प्रिय—
नव निकुंज वर राज ।
सुंदर वचन रचन कत बितरत—
रति लंपट विन काज ॥
इतनौ श्रवण सुनत मानिनि मुख—
अंतर रह्यौ न धीर ।
मति कातर विरहज दुख व्यापौ—
बहुतर स्वांस समीर ॥
जय श्रीहित हरिवंश भुजन आकर्षं—
लै राखे उर मांझ ।
मिथुन मिलत जु कछुक सुख उपज्यौ—
त्रुटि लव मिव भई सांझ॥६६

(श्रीहित सखीजी सखीन प्रति पर०सं०) रास या शय्या समय
राग कल्याण ।

रुचिर राजत वधू कानन किशोरी ।
सरस षोडश किये तिलक मृगमद दिये—
मृगज लोचन उबटि अंग शिर खोरी ॥
गंड पंडीर मंडित चिकुर चंद्रिका—
मेदिनी कवरि गूंथित सुरँग डोरी ।
श्रवण ताटंक के चिबुक पर बिंदु दै—
कसूंभी कंचुकी दुरै उरज फल कोरी ॥
वलय कंकण द्योति नखनि जावक ज्योति—
उदर गुण रेख पट नील कटि थोरी ।
सुभग जघनस्थली क्वणित किंकिणि भली—
कोक संगीत रस सिंधु झक झोरी ॥
विविधि लीला रचित रहसि श्रीहरिवंश हित—
रसिक शिरमौर राधारमण जोरी ।
भृकुटि निर्जित मदन मंद सस्मित वदन—
किये रस विवस घनश्याम पिय गोरी॥६७॥

(श्रीहित सखीजी सखीन प्रति परस्पर सं०) रास समय
राग कल्याण ।

रास में रसिक मोहन बने भामिनी ।

सुभग पावन पुलिन सरस सौरभ नलिन-
मत्त मधुकर निकर शरद की यामिनी ॥
त्रिविधि रोचक पवन ताप दिनमणि दवन-
तहां ठाढे रमण संग शत कामिनी ।
ताल वीणा मृदंग सरस नाचत सुधंग-
एकतें एक संगीत की स्वामिनी ॥
राग रागिनि जमी विपिन बरषत अमी-
अधर बिंबनि रमी मुरलि अभिरामिनी ।
लाग कट्टर उरप सप्त स्वर सौं सुलप—
लेत सुन्दर सुघर राधिका नामिनी ॥
तत्त थेई थेई करत गतिव नौतन धरत-
पलटि डगमग ढरति मत्त गज गामिनी ।
धाय नव रँग धरी उरसि राजत खरी-
जयश्री उभय कुल हंस हरिवंश घन दामिनी॥६८॥

(श्रीहित सखीजी सखीन प्रति प० सं०) रास समय

राग कल्याण ।

मोहनी मोहन रंगे । प्रेम सुरंगे-
मत्त मुदित कल नचत सुधंगे ।
सकल कला प्रवीण कल्याण रागिणी लीन-
कहत न बनै माधुरी अँग अंगे ॥

तरणितनया तीर त्रिविधि सखी समीर—
मानौं मुनि व्रत धर्यौ कपोती कोकिला कीर।
नागरी नव किशोर मिथुन मनसि चोर—
सरस गावत दोऊ मंजुल मंदिर घोर ॥
कंकण किंकिणि ध्वनि मुखर नूपुरनि सुनि—
जय श्रीहित हरिवंश रस बरषे नव तरुनि ॥६६॥

(श्रीहित सखीजी एवं सखीन प्रति पर० सं०)
सुरतांत समय ॥ राग कल्याण ।

आज सँभारत नाहिंन गोरी ।
फूली फिरत मत्त करणी ज्यौं—
सुरत समुद्र झकोरी ॥
आलस बलित अरुण धूपर मषि—
प्रगट करत द्रग चोरी ।
पिय पर करुण अमी रस बरषत—
अधर अरुणता थोरी ॥
बाँधत भृंग उरज अंबुज पर—
अलकनि बंध किशोरी ।
संगम किरचि किरचि कंचुकी बँध—
शिथिल भई कटि डोरी ॥
देत अशीष निरखि युवती जन—
जिनकैं प्रीति न थोरी ।

जय श्रीहित हरिवंश विपिन भूतल पर—
संतत अविचल जोरी॥७०॥

(श्रीहित सखीजी सखीन प्रति प०सं०) रास समय
राग कल्याण।

श्याम सँग राधिका रास मंडल बनी।
बीच नँदलाल ब्रज बाल चंपक बरण—
ज्यौंऽब घन तडित बिच कनक मर्कत मनी॥
लेत गति मान तत्त थेई हस्तक भेद—
स रि ग म प ध नि ये सप्त स्वर नंदिनी।
निर्त्त रस पहिर पट नील प्रगटित छबी—
बदन जनौं जलद में मकर की चंदिनी॥
राग रागिणि तान मान संगीत मत—
थकित राकेश नभ शरद की यामिनी।
जय श्रीहित हरिवंश प्रभु हंस कटि केहरी—
दूर छत मदन मद मत्त गज गामिनी॥७१॥

(श्रीहित सखीजी सखीन प्रति पर० सं०) शय्या समय
राग कान्हरौ।

सुन्दर पुलिन सुभग सुख दायक।
नव नव घन अनुराग परस्पर—
खेलत कुँवरि नागरी नायक॥

शीतल हंससुता रस बीचिनि-
परस पवन शीकर मृदु बरषत।
वर मंदार कमल चंपक कुल-
सौरभ सरस मिथुन मन हरषत॥
सकल सुधंग विलास परावधि-
नाचत नवल मिले स्वर गावत।
मृगज मयूर मराल भ्रँमर पिक—
अद्भुत कोटि मदन शिर नावत॥
निर्मित कुसुम शयन मधु पूरित-
भाजन कनक निकुञ्ज विराजत।
रजनी मुख सुख राशि परस्पर —
सुरत समर दोऊ दल साजत॥
विट कुल नृपति किशोरी कर धृत-
बुधि बल नीवी बंधन मोचत।
नेति नेति वचनामृत बोलत—
प्रणय कोप प्रीतम नहिं सोचत॥
जय श्रीहित हरिवंश रसिक ललितादिक-
लता भवन रंध्रनि अवलोकत।
अनुपम सुख भर भरित विवस असु—
आनँद वारि कंठ दृग रोकत॥७२॥

(श्रीहित सखीजी श्रीप्रियाजी प्रति पर० सं०)

प्रेमाधिक्य संभ्रममान समय । राग कान्हरौ ।

खंजन मीन मृगज मद मेटत—
कहा कहौं नैननि की बातैं ।
सुनि सुंदिरी कहाँ लौं सिखई—
मोहन वशीकरण की घातैं ॥
बँक निशंक चपल अनियारे—
अरुण श्याम सित रचे कहाँ तैं ।
डरत न हरत परायौ सर्वस—
मृदु मधु मिव मादिक दृग पातैं ॥
नैंक प्रसन्न दृष्टि पूरण करि—
नहिं मो तन चितयौ प्रमुदा तैं ।
जय श्रीहित हरिवंश हंस कल गामिनि—
भावै सो करहु प्रेम के नातैं ॥७३॥

(श्रीहित सखीजी श्रीप्रियाजी पति पर०सं०)

प्रेमाधिक्य संभ्रममान समय । राग कान्हरौ ।

काहे कौं मान बढ़ावत है—
बालक मृग लोचनि ।
हौंऽब डरन कछु कहि न सकत—
इक बात सँकोचनि ॥

मत्त मुरलि अंतर तब गावत—
जाग्रत शयन तवाकृत सोचनि ।
जय श्रीहित हरिवंश महा मोहन पिय—
आतुर विट बिरहज दुख मोचनि ॥७४॥

(श्रीहित सखीजी श्रीप्रियाजी प्रति पर० सं०)

प्रेमाधिक्य संभ्रममान समय। राग कान्हरौ।

हौं जु कहति इक बात सखी—
सुन काहे कों डारत ।
प्राण रमण सौं क्यौंऽब करत—
आगस बिनु आरत ॥
पिय चितवत तव चंद बदन तन—
तू अध मुख निज चरण निहारत।
वे मृदु चिबुक प्रलोय प्रबोधत—
तू भामिनि कर सौं कर टारत ॥
विवस अधीर विरह अति कातर—
सर अवसर कछु वै न विचारत ।
जय श्रीहित हरिवंश रहसि प्रीतम मिलि—
त्रिषित नयन काहे न प्रति पारत ॥७५॥

(श्रीहित सखीजी सखीन प्रति प० सं०) शय्या समय

राग कान्हरौ ।

नागरी निकुञ्ज ऐन किशलय दल रचित शैंन—
कोक कला कुशल कुंमरि अति उदार री ।
सुरत रंग अंग अंग हाव भाव भृकुटि भंग—
माधुरी तरंग मथत कोटि मार री ॥
मुखर नूपुरनि स्वभाव किंकिणी विचित्र राव—
विरमि विरमि नाथ वदत वर विहार री ।
लाड़िली किशोर राज हंस हंसिनी समाज—
सींचत हरिवंश नैंन सुरस सार री ॥ ७६ ॥

(श्रीहितसखीजी श्रीप्रियाजी एवं सखीन प्रति पर० सम्भाषण)

परिहास में, सुरतांत समय ॥ राग कान्हरौ ।

लटकत फिरति युवति रस फूली ।
लता भवन में सरस सकल निशि—
पिय सँग सुरत हिंडोरे झूली ॥
यद्यपि अति अनुराग रसासव—
पान विवस नाहिंन गति भूली ।
आलस वलित नैंन विगलित लट—
उर पर कछुक कंचुकी खूली ॥

मरगजी माल शिथिल कटि बंधन—
चित्रित कज्जल पीक दुकूली ।
जय श्रीहित हरिवंश मदन शर जर जर—
शिथकित श्याम सजीवन मूली ॥७७॥

(श्रीहित सखीजी सखीन प्रति पर० सं०) रास समय

राग कान्हरौ ।

सुधंग नाचत नवल किशोरी ।
थेई थेई कहत चहत प्रीतम दिशि--
वदन चंद्र मनौं त्रिपित चकोरी ॥
तान बंधान मान में नागरि--
देखत श्याम कहत हो होरी ।
जय श्रीहित हरिवंश माधुरी अंग अंग--
बरबस लियौ मोहन चित चोरी॥ ७८ ॥

(श्रीहित सखीजी सखीन प्रति पर०सं०) रास समय
राग कान्हरौ ।

रहसि रहसि मोहन पिय के सँगरी--
लडैंती अति रस लटकति ।
सरस सुधंग अंग में नागरि—
थेई थेई कहति अवनि पद पटकति ॥

कोक कला कुल जानि शिरोमणि—
अभिनय कुटिल भृकुटियनि मटकति।
विवश भये प्रीतम अलि लंपट—
निरखि करज नाशा पुट चटकति॥
गुण गण रसिक राय चूड़ामणि—
रिझवत पदक हार पट झटकति।
जय श्रीहित हरिवंश निकट दासी जन—
लोचन चपक रसासव गटकति ॥७९॥

(श्रीहित सखीजी सखीन प्रति प० सं०) शय्या समय

राग कान्हरौ।

वल्लवी सु कनक वल्लरी तमाल श्याम सँग—
लागि रही अंग अंग मनोभिरामिनी।
वदनज्योतिमनौमयंक अलक तिलक छवि कलंक—
छपति श्याम अंक मनौ जलद दामिनी॥
विगत बास हेम खंभ मनौ भुवंग वेणी दंड—
पिय के कंठ प्रेम पुञ्ज कुंज कामिनी।
जयश्री शोभित हरिवंश नाथ साथसुरत आलसवंत—
उरज कनक कलश राधिका सुनामिनी॥८०॥

(श्रीहित सखीजी सखीन प्रति परस्पर सं०) रास समय
राग केदारौ ।

वृषभानुनंदिनी मधुर कल गावै ।
विकट अवघर तान चर्चरी ताल सौं—
नंद नंदन मनसि मोद उपजावै ॥
प्रथम मज्जन चारु चीर कज्जल तिलक—
श्रवण कुंडल वदन चंदनि लजावै ।
सुभग नकवेसरी रतन हाटक जरी—
अधर बंधूक दशन कुंद चमकावै ॥
वलय कंकण चारु उरसि राजत हारु—
कटिव किंकिणि चरण नूपुर बजावै ।
हंसकल गामिनी मथत मद कामिनी—
नखनि मदयंतिका रंग रुचि द्यावै ।
निर्त सागर रभसि रहसि नागरि नवल—
चंद चाली विविधि भेदनि जनावै ।
कोक विद्या विदित भाव अभिनय निपुण—
भ्रू बिलासनि मकर केतनि नचावै ॥
निविड कानन भवन बाहु रंजित रमण—
सरस अलाप सुख पुंज बरषावै ।

उभय संगम सिंधु सुरत पूषणबन्धु--
द्रवत मकरन्द हरिवंश अलि पावैं ॥८१॥

(श्रीहित सखीजी सखीन प्रति प० संभाषण) शय्या समय

राग केदारौ ।

नागरता की राशि किशोरी ।
नव नागर कुल मौलि सांवरौ—
बरबस कियौ चितै मुख मोरी ॥
रूप रुचिर अँग अंग माधुरी—
बिनु भूषण भूषित ब्रज गोरी ।
छण छण कुशल सुधंग अङ्ग में--
कोक रभसि रस सिंधु झकोरी ॥
चञ्चल रसिक मधुप मोहन मन—
राखे कनक कमल कुच कोरी ।
प्रीतम नैन युगल खंजन खग--
बाँधे विविधि निबंधन डोरी ॥
अवनी उदर नाभि सरसी में--
मनहुँ कछुक मादिक मधु घोरी ।
जय श्रीहित हरिवंश पिवत सुन्दर वर—
सींव सुदृढ निगमनि की तोरी ॥८२॥

(श्रीहित सखीजी श्रीप्रियाजी प्रति पर० सं०)
प्रेमवैचित्री संभ्रममान ॥ राग केदारौ ।

छांडिदै मानिनी मान मन धरिवौ ।
प्रणत सुन्दर सुघर प्राण वल्लभ नवल—
बचन आधीन सौं इतौ कत करिवौ ॥
जपत हरि विवश तव नाम प्रति पद विमल—
मनसि तव ध्यान तैं निमिषि नहिं टरिवौ ।
घटत पल पल सुभग शरद की यामिनी—
भामिनी सरस अनुराग दिशि ढरिवौ ॥
हौं जु कछु कहत निज बात सुन मान सखि—
सुमुखि विन काज घन विरह दुख भरिवौ
मिलत हरिवंश हित कुंज किशलय शयन—
करत कल केलि सुख सिंधु में तरिवौ॥८३॥

(श्रीहित सखीजी श्रीप्रियाजी एवं सखीन प्रति प०सं०)सुरतात समय
राग केदारौ

आजऽव देखियत है हो प्यारी रंग भरी ।
मोपै न दुरत चोरी वृषभानुकी किशोरी—
शिथिल कटिकी डोरी नन्दके लालन सों सुरत लरी ॥
मोतियन लर टूटी चिकुर चन्द्रिका छूटी—
रहसि रसिक लूटी गंडनि पीक परी ।

नैननि आलस वस अधरबिंबन रस पुलक—
प्रेम परस जयश्रीहित हरिवंश री राजत खरी॥८४॥

इति श्रीमदाचार्यशिरोमणिश्रीहितावतारजगद्गुरुश्रीमद्रसिकानन्य-
चूडामणि गोस्वामी जय श्रीहितहरिवंश चन्द्रजू कृत
श्रीहित चतुराशीजू की जय जय श्रीहितराधे

फलस्तुती—छप्पय।

भव जल निधिकौं नाव काम पावक कौं पानी।
प्रेम भक्ति कौ सूल मोद मङ्गल सुख दानी॥
निगम सार सिद्धान्त सन्त विश्राम मधुर वर।
रसिकन कौ रस सार सकल अच्छर रसकौ घर॥
चौराशी श्री(हित)हरिवंश कृत पढ़ै सुनै निशि भोर।
छुटै चौराशी भ्रमनि तैं—निरखै युगल किशोर॥
निरखै युगल किशोर भोर अरु रैनि न जानै।
पियै रूप रस मत्त भयौ कछु मनहिं न आनै॥
प्रेम लच्छणा भक्ति होय हिय आनँद कारी।
अरु वृन्दावन बास सखी सुख कौ अधिकारी॥
कुञ्ज महलकी टहल सुख संपति दंपति पाय है।
जय श्री रूपलाल हित प्रीतिसों जो चौरासी गाय है॥

राग संख्या—कवित्त ।

पट् पद विभास मांझ सात हैं विलावल में—
टोडी में चतुर आसावरी में द्वै वने ।
सप्त हैं धनाश्री में युगल वसन्तकेलि—
देवगंधार पंच दोय रस सों सने ॥
सारँग में षोडश हैं चार ही मलार एक—
गौड में सुहायौ नव गौरी रस में भने ।
पट् कल्याण निधि कान्हरौ केदारौ वेद—
वाणी हितजू की सब चौदह राग में गने ॥

इति श्रीफलस्तुती समाप्ता ।

(पद)

प्रथम श्री सेवक पद शिर नाऊँ ।
करौ कृपा श्री दामोदर मोपै—
श्रीहरिवंश चरण रति पाऊँ ॥
गुण गंभीर व्यासनंदन जू के—
तुम प्रसाद सुजश रस गाऊँ ।
नागरीदास के तुम हीं सहायक—
रसिक अनन्य नृपति मन भाऊँ ॥

❋ श्रीहित ❋

श्री सेवक वाणी जी

श्री सेवक जी

श्रीनिजहितनेह प्रकाशक श्रीराधिकावतार श्रीहितनंदकुलकदम्ब
नृपतिवर श्रीदामोदरजी (श्रीसेवकजी) महाराज
अवतरण श्रावण शु० ३ हरियाली तृतीया विक्रम संवत् १५७५
श्रीवृन्दावन प्रगट आगमन विक्रम सम्वत् १६१०
अर्न्तध्यान विक्रम संवत् १६१०

❀ श्रीराधावल्लभो जयति ❀

❀ श्रीहित हरिवंशवंशो जयति ❀

❀ अधिकारी श्रीहित गुरु किशोरीलालो विजयते-तराम् ❀

❀ अधिकारी श्रीहित गुरु रूपलालो विजयते—तराम् ❀

श्रीहितनादकुलनरेश श्रीराधिकावतार श्रीहित सेवकजी महाराज कृत-

श्रीसेवकबाणीजी

॥ श्रीहित यश बिलास प्रकरण १ ॥

राग धनाश्री त्रिपदी छन्द ।

श्रीहरिवंश चन्द्र शुभ नाम ।
सब सुख सिन्धु प्रेम रस धाम ।
याम घटी बिसरै नहीं ॥

यह जु परयौ मुहि सहज स्वभाव ।
श्रीहरिवंश नाम रस चाव ।
नाम सुदृढ भव तरन कौं ॥

नाम रटत आई सब सोहि ।
देहु सुबुद्धि कृपा कर मोहि ।
पोय सुगुण माला रचौं ॥

नित्य सुकण्ठ जु पहिरौं तास।
यश वरणौं (श्री) हरिवंश विलास।
श्रीहरिवंशहि गाय हौं ॥ १ ॥
श्री वृन्दावन वैभव जिती ।
वरणत बुद्धि प्रमाणौं किती।
तिती सबै हरिवंश की ॥
सखी सखा क्यौं कहौं निबेर।
तौ मेरे मन की अवसेर।
टेर सकल प्रभुता कहौं ॥
हरि हरिवंश भेद नहिं होय।
प्रभु ईश्वर जानैं सब कोय।
दोय कहैं न अनन्यता ॥
विश्वंभर सब जग आभास।
यश वरणौं (श्री) हरिवंश विलास।
श्री हरिवंशहि गाय हौं ॥ २ ॥
जन्म कर्म गुण रूप अपार।
बाढै कथा कहत विस्तार।
वार वार सुमिरण करौं ॥

हौं लघु मतिजु अन्त नहिं लहौं।
　बुद्धि प्रमाण कछू कथि कहौं।
　　रहौं शरण हरिवंश की॥
सो धौं कहि मोहि केतिक मती।
　यश बरणत हारै सरस्वती।
　　निती सबै हरिवंश की॥
देहु कृपा करि बुद्धि प्रकाश।
　यश बरणौं (श्री) हरिवंश विलास।
　　श्रीहरिवंशहि गाय हौं॥ ३॥
कलियुग कठिन वेद विधि रही।
　धर्म कहूँ नहिं दीपत सही।
　　कही भली कोउ ना करै॥
उदवस विश्व भयौ सब देश।
　धर्म रहित मेदिनी नरेश।
　　म्लेच्छ सकल पहुमी बढे॥
सब जन करहिं आधुनिक धर्म।
　वेद विहित जानैं नहिं कर्म—
　　मर्म भक्ति कौ क्यौं लहैं॥

बूडत भव आवै न उसास ।
यश वरणौं (श्री)हरिवंश विलास ।
श्रीहरिवंशहि गाय हौं ॥४॥
धर्म रहित जानी सब दुनी ।
म्लेच्छनि भार दुखित मेदिनी ।
धनी और दूजौ नहीं ॥
करी कृपा मन कियौ विचार ।
श्रुति पथ विमुख दुखित संसार ।
सार वेद विधि उद्धरी ॥
सब अवतार भक्ति बिस्तरी ।
पुनि रस रीति जगत उच्चरी ।
करचौ धर्म अपनौं प्रगट ॥
प्रगटे जानि धर्म कौ नाश ।
यश वरणौं (श्री) हरिवंश विलास ।
श्रीहरिवंशहि गाय हौं ॥५॥
मथुरा मण्डल भूमि आपनी ।
जहां बाद प्रगटे जग धनी ।
भनी अवनि वर आप मुख ॥

शुभ वासर शुभ ऋच्छ विचार ।
माधव मास ग्यास उजियार ।
नारिनु मङ्गल गाइयौ ॥
तत्त्वण देव दुंदुभी वाजिये ।
जय जय शब्द सुरन मिलि किये ।
हिये सिराने सबन के ॥
तारा जननि जनक ऋषि व्यास ।
यश वरणौं (श्री) हरिवंश विलास ।
श्री हरिवंशहि गायहौं ॥ ६ ॥
श्रीभागवत जु शुक उच्चरी ।
तैसी विधि जु व्यास विस्तरी ।
करी नन्द जैसी हुती ॥
घर घर तोरण वंदनवार ।
घरघर प्रति चित्रहिं दरवार ।
पंचशब्द घर वाजिये ॥
घर घर दान प्रतिग्रह होय ।
घर घर प्रति निर्त्तत सब कोय ।
घर घर मङ्गल गावहीं ॥

घर घर प्रति अति होत हुलास ।
यश वरणौं (श्री) हरिवंश विलास ।
श्रीहरिवंशहि गाय हौं ॥ ७ ॥

निर्जल सजल सरोवर भये ।
उलटे वृक्षन पल्लव नये ।
दये सकल सुख सबनि कौं ॥
असन शयन सुख नित नित नये ।
अन्न सुकाल चहूं दिशि भये ।
गये अशुभ सब विश्व के ॥
म्लेच्छ सकल हरि यश विस्तरहिं ।
परम ललित वाणी उच्चरहिं ।
करहिं प्रजा पालन सबै ॥
अपनी अपनी रुचि विश्वास ।
यश वरणौं (श्री) हरिवंश विलास ।
श्री हरिवंशहि गाय हौं ॥ ८ ॥

चलहिं सकल जन अपने धर्म ।
ब्राह्मण सकल करहिं षट् कर्म ।
भर्म सबनि कौ भाजियौ ॥

छूट गई कलियुग की रीति ।
नित नित नव नव होत समीति ।
प्रीति परस्पर अति बढ़ी ॥
प्रगट होत ऐसी विधि भई ।
सब भव जनित आपदा गई ।
नई नई रुचि अति बढ़ी ॥
सब जन करहिं धर्म अभ्यास ।
यश वरणौं (श्री)हरिवंश विलास ।
श्रीहरिवंश हि गाय हौं ॥ ६ ॥

बाल विनोद न वरणत बनहिं ।
अपनौ सौ उपदेशत मनहिं ।
गनहिं कवन लीला जिती ॥
सब हरि सम गुण रूप अपार ।
महा पुरुष प्रगटे संसार ।
मार विमोहन तन धरयौ ॥
छण न तृपत शुभ दर्शन आस ।
दुलरावत बोलतमृदु हास ।
व्यासमिश्र कौ लाड़िलौ ॥

मुदित सकल नहिं छांडत पास।
यश वरणौं (श्री) हरिवंश विलास।
श्रीहरिवंश हि गाय हौं ॥१०॥

अब उपदेश भक्ति कौ कह्यौ।
जैसी विधि जाके चित रह्यौ।
लह्यौ जु मन वांछित सफल॥

सब हरि भक्ति कही समुझाय।
जैसी जैसी जाहि सुहाय।
आय सकल चरणनि भजे॥

साधन सकल कहे अविरुद्ध।
वेद पुराण सु आगम शुद्ध।
बुधि विवेक जे जानहीं॥

समझौ सबनि सु भक्ति उजास।
यश वरणौं (श्री) हरिवंश विलास।
श्रीहरिवंश हि गाय हौं॥ ११॥

अब अवतार भेद तिन कहे।
सकल उपासिक तिन मन रहे।
कहे भक्ति साधन सबै॥

मथुरा नित्य कृष्ण कौ वास।
निशि दिन श्याम न छाँडत पास।
तासु सकल लीला कही॥

कही सबन की एकै रीति।
श्रवण कथन सुमरण परतीति।
बीति काल सब जाइयौ॥

उपज्यौ सबन सुदृढ विश्वास।
यश बरणौं (श्री)हरिवंश विलास।
श्रीहरिवंश हि गाय हौं॥१२॥

अब जु कही सब ब्रज की रीति।
जैसी सबन नन्द सुत प्रीति।
कीर्ति सकल जग बिस्तरी॥

बाल चरित्र प्रेम की नींव।
कहत सुनत सब सुख की सींव।
जीवन ब्रज बासिन सफल॥

ब्रज की रीति सु अगम अपार।
विस्तरि कही सकल संसार।
कारज सबहिन के भये॥

ब्रज की प्रीति रीति अनियास ।
यश वरणौं (श्री)हरिवंश विलास ।
श्रीहरिवंशहि गाय हौं ॥१३॥

जिहिं विधि सकल भक्ति अनुसार ।
तैसी विधि सब कियौ विचार ।
सार असार विवेक कैं ॥
अब निज धर्म आपनौं कहत ।
तहाँ नित्य वृन्दावन रहत ।
वहत प्रेम सागर जहाँ ॥
साधन सकल भक्ति जातनौ ।
निज वैभव प्रगटत आपनौ ।
भनौ एक रसना कहा ॥
श्रीराधा युग चरण निवास ।
यश वरणौं (श्री) हरिवंश विलास ।
श्रीहरिवंश हि गायहौं ॥ १४ ॥

इति श्रीहितहरिवंशयश बिलास प्रथम प्रकरण की
जय जय श्रीहित हरिवंश १

॥ श्रीहरिवंशरस विलास प्रकरण २ ॥

त्रिपदी छन्द

श्रीहरिवंश नित्य वर केलि ।
बाढ़त सरस प्रेम रस वेलि ।
मेलि कंठ भुज खेलहीं ॥

वनितन गण मन अधिक सिरात ।
निरखि निरखि लोचन न अघात ।
गात गौर साँवल बने ।

यूथ यूथ युवतिन के घनैं ।
मध्य किशोर किशोरी बनैं ।
गनैं कौन रति अति बढी ॥

नित नित लीला नित नित रास ।
सुनहु रसिक हरिवंश विलास ।
श्रीहरिवंश हि गायहौं ॥ १ ॥

लताभवन सुख शीतल छहां ।
श्रीहरिवंश रहत नित जहां ।
तहां न वैभव आन की ॥

जब जब होत धर्म की हानि।
तब तब तन धरि प्रगटत आनि।
जानि और दूजौ नहीं॥

जो रस रीति सबन तैं दूरि।
सो सब विश्व रही भरिपूरि।
मूरि सजीवन कहि दई॥

सब जन मुदित करत मन हास।
सुनहु रसिक हरिवंश विलास।
श्रीहरिवंश हि गायहौं ॥ २॥

ललितादिक श्यामा अरु श्याम।
श्रीहरिवंश प्रेम रस धाम।
नाम प्रगट जग जानियै॥

श्रीहरिवंश जनित जहां प्रेम।
तहां कहाँ व्रत संयम नेम।
च्छेम सकल सुख सम्पदा॥

तहां जाति कुल नहीं विचार।
कौन सु उत्तम कौन गँवार।
सार भजन हरिवंश कौ॥

या रस मगन मिटै भव त्रास ।
सुनहु रसिक हरिवंश विलास ।
श्रीहरिवंश हि गायहौं ॥ ३ ॥

श्रीहरिवंश सुयश गाइयौ ।
सो रस सब रसिकनि पाइयौ ।
कियौ सुकृत सबकौ फल्यौ ॥

या रस में विधि नहीं निषेध ।
तहां न लग्न ग्रहन के वेध ।
तहाँ कुदिन दिन कछु नहीं ॥

नहीं शुभ अशुभ मान अपमान ।
नहीं अनृत भ्रम कपट सयान ।
स्नान क्रिया जप तप नहीं ॥

ज्ञान ध्यान तहाँ सकल प्रयास ।
सुनहु रसिक हरिवंश विलास ।
श्रीहरिवंश हि गायहौं ॥ ४ ॥

जहाँ श्रीहरिवंश प्रेम उन्माद ।
तहाँ कहाँ स्वारथ निस्वाद ।
बाद विवाद तहाँ नहीं ॥

जे श्रीहरिवंश नाद मोहिये।
तिन फिर बहुरि न कुल कर्म किये।
जिये काल बस ना परे॥

कुल बिन कहौ कौन सौ चाक।
सहज प्रेम रस साँचे पाक।
रंक ईश समुझत नहीं॥

विप्र न शूद्र कौन कुल कांस।
सुनहु रसिक हरिवंश विलास।
श्रीहरिवंश हि गाय हौं॥ ५॥

या रस विमुख करत आचार।
प्रेम बिना जु सबै कृत आर।
भार धरत कत विप्र कौ॥

श्रीहरिवंश किशोर अहीर।
अरु तिन सँग बनितनि की भीर।
तीर यमुन नित खेलहीं॥

तिन की दई जु जूठन खात।
आचारी निज कहत खिस्यात।
बात यहै सांची सदा॥

श्रीहरिवंश कहत नित जास ।
सुनहु रसिक हरिवंश विलास ।
श्रीहरिवंश हि गाय हौं ॥ ६ ॥

निशि दिन कहत पुकारि पुकारि ।
अस्तुति करहु देहु कोऊ गारि ।
हारि न अपनी मानि हौं ॥

श्रीहरिवंश चरण नहिं तजौं ।
अरु तिन के भजतनि कौं भजौं ।
लजौं नहीं अति निडर ह्वै ॥

श्रीहरिवंश नाम बल लहौं ।
अपने मन भाई सब कहौं ।
रहौं शरण हरिवंश की ॥

कहत न बनत प्रेम उज्जास ।
सुनहु रसकि हरिवंश विलास ।
श्रीहरिवंश हि गाय हौं ॥ ७ ॥

जे हरिवंश प्रेम रस भिले ।
क्यौं सोहैं लोगनि में मिले ।
गिले काल जग देखिये ॥

कर्म सकाम न कबहूँ करैं ।
स्वर्ग न इच्छैं नर्क न डरैं ।
धरैं धर्म हरिवंश कौ ॥

श्रीहरिवंश धर्म निर्वहैं ।
श्रीहरिवंश प्रेम रस लहैं ।
ते सब श्रीहरिवंश के ॥

सेवक तिन दासन कौ दास ।
सुनहु रसिक हरिवंश विलास ।
श्रीहरिवंश हि गाय हौं ॥ ८ ॥

इति श्रीहित हरिवंशरस विलास द्वितीय प्रकरण की-

जय जय श्रीहितहरिवंश ॥ २ ॥

॥ श्रीहरिवंश नाम प्रताप प्रकरण ३ ॥

त्रिपदी छन्द ।

श्रीहरिवंश नाम नित कहौं ।
नाम प्रताप नाम फल लहौं ।
नाम हमारी गति सदा ॥

जे सेवैं हरिवंश सुनाम ।
पावैं तिन चरणनि विश्राम ।
नाम रटन संतत करैं ॥

नाम प्रसङ्ग कहत उपदेश ।
जहाँ यह धर्म धन्य सो देश ।
धन्य सुकुल जिहिं जन्म भयौ ॥

धन्य सुतात धन्य सो माय ।
संतत सकल सुनहु चित लाय ।
श्रीहरिवंश प्रताप यश ॥ १ ॥

प्रथम हृदय श्रद्धा जो करै ।
आचारजन जाय अनुसरै ।
जहाँ जहाँ हरिवंश के ॥

रसिकन की सेवा जब होय ।
प्रीति सहित बूझहु सब कोय ।
[१] कौन धर्म हरिवंश कौ ॥

[२] कौन सुरीति[३]कौन आचरण ।
[४] कौन सुकृत जिहिं पावै शरण ।
[५] क्यौं हरिवंश कृपा करैं ॥

तब सब धर्म कह्यौ समझाय।
संतत सकल सुनहु चित लाय।
श्रीहरिवंश प्रताप यश ॥ २ ॥

[१] प्रथम जु सेवहु गुरु के चरन।
जिन यह धर्म कह्यौ सब करन।
नाम प्रताप बताइयौ ॥

जो हरिवंश नाम अनुसरहु।
निशि दिन गुरु कौ सेवन करहु।
सकल समर्पण प्राण धन ॥

गुरु सेवा तजि करहिं जे बानि।
यहै अधर्म यहै सब हानि।
कानि न रसिकनि में रहै ॥

गुरु गोविन्द न भेद कराय।
संतत सकल सुनहु चित लाय।
श्रीहरिवंश प्रताप यश ॥ ३ ॥

गुरु उपदेश सुनहु सब धर्म।
श्रीहरिवंश नाम फल मर्म।
भर्म भग्यौ वचननि सुनत ॥

शुक मुख वचन जु श्रवण सुनावहु ।
तब श्रीहरिवंश सुनाम कहावहु ।
मन सुमिरन बिसरै नहीं ॥

हरि गुरु चरण सेवा अनुसरहु ।
अर्चन वन्दन संतत करहु ।
दासन्तनि करि सुख लहौ ॥

सख्य समर्पण भक्ति बढाय ।
संतत सकल सुनहु चित लाय ।
श्रीहरिवंश प्रताप यश ॥ ४ ॥

गुरु उपदेश चलहु यहि चाल ।
ऐसी भक्ति करहु बहु काल ।
ये नव लच्छण भक्ति के ॥

यह हरि भक्ति करै जब कोय ।
तब श्रीहरिवंश नाम रति होय ।
यह जु बहुत हरि की कृपा ॥

हरि हरिवंश भेद नहिं करै ।
श्रीहरिवंश नाम उचरै ।
च्छण च्छण प्रति विसरै नहीं ॥

प्रीति सहित यह नाम कहाय ।
संतत सकल सुनहु चित लाय ।
श्रीहरिवंश प्रताप यश ॥ ५ ॥

गुरु उपदेश चलहु यहि रीति ।
श्रीहरिवंश नाम पद प्रीति ।
प्रेम मूल यह नाम है ॥

प्रेमी रसिक जपत यह नाम ।
प्रेम मगन निज वन विश्राम ।
श्रीहरिवंश जहाँ रहैं ॥

प्रेम प्रवाह परै जन सोय ।
तब क्यों लोक वेद सुधि होय ।
जब श्रीहरिवंश कृपा करी ॥

व्रत संयम तब कौन कराय ।
संतत सकल सुनहु चितलाय ।
श्रीहरिवंश प्रताप यश ॥ ६ ॥

जब यह नाम हृदय आय है ।
तब सब सुख सम्पति पाय है ।
श्रीहरिवंश सुयश कहै ॥

अरु अपनी प्रभुता नहिं सहै ।
तृण तें नीच अपनपौ कहै ।
शुभ अरु अशुभ न जानहीं ॥

समुझै नहीं कछू कुल कर्म ।
सूधौ चलै आपने धर्म ।
रसिकन सौं प्रीतम कहै ॥

कबहूँ काल वृथा नहिं जाय ।
संतत सकल सुनहु चित लाय ।
श्रीहरिवंश प्रताप यश ॥ ७ ॥

जब श्रीहरिवंश नाम जानि है ।
तब सबही तें लघु मानि है ।
हँसि बोलै बहु मान दै ॥

तरु सम सहन शीलता होय ।
परम उदार कहै सब कोय ।
सोच न मन कबहूँ करै ॥

श्रीहरिवंश सुयश मन रहै ।
कोमल वचन रचन मुख कहै ।
परम सुखद सब कौं सदा ॥

दुखद वचन कबहूँ न कहाय ।
संतत सकल सुनहुँ चित लाय ।
श्रीहरिवंश प्रताप यश ॥ ८ ॥

प्रगट धर्म जैसैं जानियैं ।
श्रीहरिवंश नाम जा हियैं ।
नाम सिद्धि पहिचानियैं ॥

श्रीहरिवंश नाम सब सिद्धि ॥
सबै रसिक विलसैं नव निद्धि ।
भुगतैं दैंहिं न जाचहीं ॥

पोपण भरण न चिंत कराहिं ।
श्रीहरिवंश विभव बिलसाहिं ।
श्रीवृन्दावन की माधुरी ॥

गुण गावत जु रसिक सचुपाय ।
संतत सकल सुनहुँ चित लाय ।
श्रीहरिवंश प्रताप यश ॥ ९ ॥

श्रीहरिवंश धर्म जे धरहिं ।
श्रीहरिवंश नाम उच्चरहिं ।
ते सब श्रीहरिवंश के ॥

श्रवण सुनहिं जे श्रीहरिवंश ।
मुख वरणत वाणी हरिवंश ।
मन सुमरण हरिवंश कौ ॥
ऐसे रसिक कृपा जो करैं ।
तौ हम से सेवक निस्तरैं ।
जूठन लै पावैं सदा ॥
सेवक शरण रहैं गुण गाय ।
संतत सकल सुनहु चित लाय ।
श्रीहरिवंश प्रताप यश ॥१०॥

॥ इति श्रीहित हरिवंश नाम प्रताप
तृतीय प्रकरण की जय जय श्रीहरिवंश ॥३॥

॥ बानी प्रताप चतुर्थ प्रकरण ॥४॥

राग मारू, चरणकुल छन्द दुपई थोक आठ ।

समझौ श्रीहरिवंश सुवानी ।
रसद मनोहर सब जग जानी ॥
कोमल मधुर ललित पद श्रैनी ।
रसिकनि कौं जु परम सुख दैनी ॥
श्रीहरिवंश नाम उच्चारा ।
नित्य विहार रस कह्यौ अपारा ॥

श्री वृन्दावन भूमि बखानौं ।
श्रीहरिवंश कहे तैं जानौं ॥
श्रीहरिवंश गिरा रस सूधी ।
कछु नहिं कहौं आपनी बूधी ॥
श्रीहरिवंश कृपा मति पाऊँ ।
तब रसिकनि कौं गाय सुनाऊँ ॥१॥
श्रीहरिवंश जु श्रीमुख भाखी ।
सो बन भूमि चित्त में राखी ॥
हौं लघु मति नहिं लहौं प्रमाना ।
जानत श्रीहरिवंश सुजाना ॥
नव पल्लव फल फूल अनंता ।
सदा रहत ऋतु शरद बसंता ॥
श्री वृन्दावन सुन्दरताई ।
श्रीहरिवंश नित्य प्रति गाई ॥२॥
श्री वृन्दावन नव-नव कुञ्जा ।
श्रीहरिवंश प्रेम रस पुञ्जा ॥
श्रीहरिवंश करत नित केली ।
छण-छण प्रति नव-नव रस झेली ॥

कबहुँक निर्मित तरल हिंडोला ।
झूलत फूलत करत कलोला ॥
कबहुँक नव दल सेज रचावैं ।
श्रीहरिवंश सुरति रति गावैं ॥३॥
सुरतान्त छवि बरणी न जाई ।
क्षण-क्षण प्रति हरिवंश जु गाई ॥
आज सँभारत नाहिं न गोरी ।
अङ्ग-अङ्ग छवि कहौं सु थोरी ॥
नैन वैन भूषण जिहिं भाँती ।
यह छवि मोपै बरणी न जाती ॥
प्रेम प्रीति रस रीति बढ़ाई ।
श्रीहरिवंश वचन सुखदाई ॥४॥
वंश बजाय विमोहित नारी ।
बोली सङ्ग सु नित्य बिहारी ॥
परिरंभन चुम्बन रस केली ।
विहरत कुँवरि कण्ठ भुज मेली ॥
सुन्दर रास रच्यौ बन माँही ॥
यमुना पुलिन कल्पतरु छाँही ॥

रास रङ्ग रति वरणी न जाई।
नित—नित श्रीहरिवंश जु गाई ॥५॥

श्रीहरिवंश प्रेम रस गाना ।
रसिक विमोहित परम सुजाना ॥

अंशनि पर भुज दियैं विलोकत।
तृप्ति न सुन्दर मुख अविलोकत ॥

इन्दु वदन दीपत विवि ओरा।
चारु सुलोचन तृपित चकोरा ॥

करत पान रस मत्त सदाई।
श्रीहरिवंश प्रेम रति गाई ॥६॥

श्रीहरिवंश सुरीति सुनाऊँ।
श्यामा श्याम एक सँग गाऊँ ॥

च्त्रण इक कबहुँ न अन्तर होई।
प्राण सु एक देह हैं दोई ॥

राधा संग बिना नहिं श्याम।
श्याम बिना नहिं राधा नाम ॥

च्त्रण—च्त्रण प्रति आराधत रहीं।
राधा नाम श्याम तब कहहीं ॥

ललितादिकनि संग सचु पावैं ।
श्रीहरिवंश सुरत रति गावैं ॥७॥

श्रीहरिवंश गिरा यश गायें ।
श्रीहरिवंश रहत सचु पायें ॥

श्रीहरिवंश नाम पर संगा ।
श्रीहरिवंश गान इक संगा ॥

मन क्रम वचन कहौं नित टेरैं ।
श्रीहरिवंश प्राण धन मेरैं ॥

सेवक श्रीहरिवंश हि गावै ।
श्रीहरिवंश नाम रति पावै ॥८॥

करखा

जयति जगदीश जश जगमगत जगत गुरु—
जगत वंदित सु हरिवंश वाणी ।

मधुर कोमल सुपद प्रीति आनंद रस—
प्रेम विस्तरित हरिवंश वाणी ॥

रसिक रस मत्त श्रुति सुनत पीवन्त रस—
रसनि गावंत हरिवंश वाणी ।

कहत हरिवंश हरिवंश हरिवंश हित-
जपत हरिवंश-हरिवंश बाणी ॥१॥
कही नित केलि रस खेलि वृन्दाविपिन-
कुञ्ज तैं कुञ्ज डोलनि बखानी।
पट न परसंत निकसंत वीथिन सघन-
प्रेम विह्वल सु नहिं देह मानी॥
मगन जित-जित चलत छिन सु डगमग मिलत-
पन्थ बन देत अति हेत जानी।
रसिक हित परम आनन्द अवलोक तन-
सरस विस्तरित हरिवंश बाणी ॥२॥
वंश रस नाद मोहित सकल सुन्दिरी-
आनि रति मानि कुल छाँड़ि कानी।
बाहु परिरंभ नीवी उरज परसि हँसि-
उमगि रतिपति रमित रीति जानी॥
यूथ युवतिनु खचित रास मण्डल रचित-
गान गुन नृत्य आनन्द दानी।
तत्त थेई थेई करत गतिव नौतन धरत-
रास रस रचित हरिवंश बानी ॥ ३ ॥

रास रस रचित बाणी जु प्रगटित जगत–
शुद्ध अविरुद्ध परसिद्ध जानी ।
श्याम श्यामा प्रगट-प्रगट अच्छर निकट-
प्रगट रस श्रवत अति मधुर बानी ॥
सो जु बानी रसिक नित्य निशि दिन रटत-
कहत अरु सुनत रस रीति जानी ।
ताहि तजि और गाऊँ न कबहूँ कछू–
प्राण रमि रही हरिवंश बानी ॥४॥
भाग अन भाग जानत जु नहिं आपनौ-
कौन धौ लाभ अरु कौन हानी ।
प्रगट निधि छाँडि कत फिरत रूंका करत-
भरम भटकत सु नहिं भूलि जानी ॥
प्रीति बिनु रीति रूखी जु लागति सकल-
जुगति करि होत कत कवित मानी ।
रसिक जो सद्य चाहत जु रस रीति फल-
तौ कहौ अरु सुनौ हरिवंश बानी ॥५॥
यहै नित केलि येई जु नायक निपुन–
यह बन भूमि नित-नित बखानी ॥
बहुत रचना करत राग रागिनि धरत-
तान बंधान सब ठानि आनी ॥

ज्यों मूंद नहिं मिलत टकसार तें बाहिरी—
लाख में गैर मुहरी जु जानी।
यों जु रस रीति बरनत न ठाँई मिलत—
जो न उच्चरत हरिवंश बानी ॥६॥

रसिक बिनु कहैं सब ही जु मानत बुरौ—
रसिकई कहौ कैसें जु जानी।
आपनी-आपनी ठौर जेई तहां—
आपनी बुद्धि के होत मानी॥
निपट करि रसिक जो होहु तैसी कहौ--
अब जु यह सुनौ मेरी कहानी।
जौऽरु तुम रसिक रस रीति के चाडिले--
तोऽरु मन देहु हरिवंश बानी ॥७॥

वेद विद्या पढ़त कर्म धर्मन करत—
जल्प तन कलप की अवधि आनी।
चारु गति छाँडि संसार भटकत भ्रमत--
आश की पाश नहिं तोरि जानी॥
सकल स्वारथ करत रहत जन्मत मरत--
दुःख अरु सुःख के होत मानी।
छांडि जंजाल कैसैं न निश्चय धरत--
एक छिन रमत हरिवंश बानी ॥८॥

वृथा बलगन करत द्यौस खोवत सकल-
सोवतन राति नहिं जाति जानी ।
ऐसैं ही भाँति समुझ्यौ न कबहूँ कछू-
कौन सुख दुखः को लाभ हानी ॥
तब सुःख हरिवंश गुण नाम रसना रटत-
और बहु वचन अति दुखः दानी ।
हानि हरिवंश के नाम अंतर परैं-
लाभ हरिवंश उच्चरत बानी ॥ ९ ॥
नाम बानी निकट श्याम श्यामा प्रगट-
रहत निशि दिन परत प्रीति जानी ।
नाम बानी सुनत श्याम श्यामा सुबस-
रसद माधुर्य्य अति प्रेम दानी ॥
नाम बानी जहाँ श्याम श्यामा तहाँ-
सुनत गावंत मो मन जु मानी ।
बलित शुभ नाम बलि विशद कीरति जगत-
हौं जु बलि जाउँ हरिवंश बानी ॥१०॥

* छप्पय *

बलि-बलि श्रीहरिवंश नाम-
बलि बलित विमल यश ।

बलि–बलि श्रीहरिवंश कर्म–
व्रत कृत सु नाम वश ॥

बलि–बलि श्रीहरिवंश—
वरण धर्मिन गति जानत ।

बलि–बलि श्रीहरिवंश नाम—
कलि प्रगट प्रमाणत ॥

हरिवंश नाम सु प्रताप बलि—
बलित जगत कीरति विशद ।

हरिवंश विमल वानी सु बलि—
मृदु कमनीय सुमधुर पद ॥१॥

इति श्रीवाणी प्रताप चतुर्थ प्रकरणकी जय श्रीहरिवंश ॥४॥

॥श्री हित इष्टाराधन पंचम प्रकरण ॥५॥

छन्द गाथा ।

प्रथम प्रणम्य सुरम्य–मति
मन बुधि चित्त प्रशंस ।
चरण शरण सेवक सदा–
सु जय जय श्रीहरिवंश ॥

श्रीहरिवंश विपुल गुण मिष्टं।
श्रीहरिवंश उपासिक इष्टं ॥

श्रीहरिवंश कृपा मति पाऊँ।
श्री हरिवंश विमल गुण गाऊँ ॥

गाऊँ हरिवंश नाम यश—
निर्मल श्रीहरिवंश रमित प्राणं।

कारज हरिवंश प्रताप सुउदित—
कारण श्रीहरिवंश भणं ॥

विद्या हरिवंश मन्त्र चतुत्तर—
जपत सिद्ध भव उद्धरणं।
जय जय हरिवंश जगत मङ्गल पर—
श्रीहरिवंश चरण शरणं ॥१॥

हरि रिति अच्चर बीज ऋषि—
वंशी शक्ति सु अंश।

नख शिख सुन्दर ध्यान धरि—
जय जय श्रीहरिवंश ॥

श्रीहरिवंश सु सुन्दर ध्यानं—
श्रीहरिवंश विशद विज्ञानं ॥

श्रीहरिवंश नाम गुण भूपं।
श्रीहरिवंश प्रेम रस रूपं॥
रसमय हरिवंश परम परमाच्छर-
श्रीहरिवंश कृपा सदनं।
आत्मा हरिवंश प्रगट परमानँद-
श्रीहरिवंश प्रमाण मनं॥
जीवन हरिवंश विपुल सुख संपति—
श्रीहरिवंश चलित चरणं।
जय जय हरिवंश जगत मङ्गल पर-
श्रीहरिवंश चरण शरणं॥ २॥
शरण निरापक पद रमित—
सकल अशुभ शुभ नंश।
देत सहज निश्चल भगति—
जय जय श्रीहरिवंश॥
श्रीहरिवंश मुदित मन लोभं।
श्रीहरिवंश वचन वर शोभं॥
श्रीहरिवंश कायकृत कारं।
श्रीहरिवंश विशुद्ध विचारं॥

पूजा हरिवंश नाम परमारथ—
श्री हरिवंश विवेक परं ।
धीरज हरिवंश विरंद बल वीरज—
श्री हरिवंश अभद्र हरं ॥
तृष्णा हरिवंश सुयश रस लंपट।
श्री हरिवंश कर्म करणं ।
जय जय हरिवंश जगत मंगल पर ।
श्री हरिवंश चरण शरणं ॥ ३ ॥

श्रीहरिवंश सुगोत कुल-
देव जाति हरिवंश ।
श्री हरिवंश स्वरूप हित-
ऋद्धि सिद्धि हरिवंश ॥
श्री हरिवंश विदित विधि वेदं ।
श्रीहरिवंश जु तत्व अभेदं ॥
श्री हरिवंश प्रकासित योगं ।
श्रीहरिवंश सुकृत सुख भोगं ॥
प्रज्ञा हरिवंश प्रतीति प्रमाणत-
प्रीतम श्री हरिवंश प्रियं ।
गाथा हरिवंश गीत गुण गोचर-
गुपति गुणित हरिवंश गियं ॥

सेवक हरिवंश सार संचित सब—
श्रीहरिवंश धर्म धरणं ।
जय जय हरिवंश जगत मंगल पर—
श्रीहरिवंश चरण शरणं ॥४॥

॥छप्पय॥

जय जय श्रीहरिवंश चन्द्र द्विज वर कुल मण्डन।
जय जय श्रीहरिवंश चन्द्र कलि तम भव खण्डन ॥
जय जय श्रीहरिवंश चन्द्र अकलंक प्रकाशित।
जय जय श्रीहरिवंश चन्द्र सब जग आभासित ॥
हरिवंश चन्द्र अमृत बरषि, सकल जंतु तापनि हरणं।
सेवक समीप संतत रहैं, श्रीहरिवंश चरण शरणं ॥

इति सर्वशास्त्रसार श्रीहित इष्टाराधन पंचम प्रकरण की
जय जय श्रीहरिवंश।

॥ श्रीहित धर्मिन कृत षष्ठ प्रकरण ॥६॥

छन्द तोटक।

पहिलैं हरिवंश सुनाम कहौं।
हरिवंश सुधर्मिनि संग लहौं ॥
हरिवंश सुनाम सदा तिनकें।
सुख सम्पति दम्पति जू जिनकें ॥१॥

हरिवंश सुनाम कहौं नित कैं।
मिल ही कहौं कृत्त सुधर्मिनि कें ॥
हरिवंश उपासना है तिन कैं।
सुख सम्पति दम्पति जू जिन कैं ॥२॥
हरिवंश गिरा रस रीति कहैं।
सुकृती जन संगति नित्य रहैं ॥
कछु धर्म विरुद्ध नहीं तिनकैं
सुख सम्पति दम्पति जू जिनकैं ॥३॥
हरिवंश प्रशंसित नित्य रहैं।
रस रीति विवर्द्धित कृत्य कहैं।
जु कछू कुल कर्म नहीं तिनकैं।
सुख सम्पति दम्पति जू जिनकैं ॥ ४॥
हरिवंश सुनाम जु नित्य रटैं।
छण याम समान न नैंक घटैं ॥
विधि और निषेध नहीं तिन कैं।
सुख सम्पति दम्पति जू जिनकैं ॥५॥
हरिवंश सुधर्म जु नित्य करैं।
हरिवंश कही सु नहीं विसरैं ॥

हरिवंश सदा निधि है तिन कै।
सुख सम्पति दम्पति जू जिनकैं ॥६॥
हरिवंश प्रतापहि जानत हैं।
हरिवंश प्रबोध प्रमाणत हैं॥
हरिवंश सु सर्वसु हैं तिन कैं।
सुख सम्पति दम्पति जू जिनकैं ॥७॥
हरिवंश विचार परे जु रहैं।
हरिवंश धरम्म धुरा निबहैं॥
हरिवंश निबाहक हैं तिन कैं।
सुख सम्पति दम्पति जू जिनकैं ।८॥
हरिवंश रसायन पीवत हैं।
हरिवंश कहैं सुख जीवत हैं॥
हरिवंश पतिव्रत है तिन कैं।
सुख सम्पति दम्पति जू जिनकैं ॥९॥
हरिवंश गिरा रस रीति भनैं।
हरिवंश कहैं हरिवंश सुनैं॥
हरिवंश हृदय व्रत है तिन कैं।
सुख सम्पति दम्पति जू जिनकैं ॥१०॥

हरिवंश कृपा हरिवंश कहैं।
हरिवंश कहैं हरिवंश लहैं॥
हरिवंश सुलाभ सदा तिन कैं।
सुख सम्पति दम्पति जू जिनकैं॥११

हरिवंश परायण प्रेम भरे।
हरिवंश सु मंत्र जपैं सुधरे॥
हरिवंश सु ध्यान सदा तिन कैं।
सुख सम्पति दम्पति जू जिनकैं॥१२

नित श्रीहरिवंश सु नाम कहैं।
नित राधिका श्याम प्रसन्न रहैं॥
नित साधन और नहीं तिन कैं।
सुख सम्पति दम्पति जू जिनकैं॥१३

जब राधिका श्याम प्रसन्न भये।
तब नित्य समीप सु खैंच लये॥
हरिवंश समीप सदा तिन कैं।
सुख सम्पति दम्पति जू जिनकैं॥१४

❀ छप्पय ❀

नित नित श्रीहरिवंश नाम—
क्षण क्षण जु रटत नर।
नित नित रहत प्रसन्न जहाँ—
दम्पति किशोर वर ॥
जहाँ हरि तहाँ हरिवंश—
जहाँ हरिवंश तहाँ हरि।
एक शब्द हरिवंश नाम—
राख्यौ समीप करि ॥
हरिवंश नाम सु प्रसन्न हरि—
हरि प्रसन्न हरिवंश रति।
हरिवंश चरण सेवक जिते—
सुनहु रसिक रस रीति गति ॥१॥

इति श्रीहित धर्मिन कृत षष्ठ प्रकरण की जय जय श्रीहितहरिवंश ꣴ

॥ हित रसरीति सप्तम प्रकरण ॥७॥

छन्द रड्डा। अन्तर्गत प्रसंख्या।

ब्यास नन्दन जगत आधार—
जगमगत यश सब जग वंदनीय जग भय विहंडन।

जग शोभा जग सम्पदा—
जग जीवन सब जग मण्डन ॥
जग मंगल जग उद्धरन जग निधि जगत प्रशंस।
चरण शरण सेवक सदा सु जय जय श्रीहरिवंश ॥१

जयति यमुना विमल वर वारि--
शीतल तरल तरंगिणी रत्न बद्ध विचि तटि विराजत।

प्रफुलित विविध सरोजगण--
चक्रवादि कुल हँस राजत ॥
कूल विशद वन द्रुम सघन लता भवन अति रम्य।
नित्य केलि हरिवंश हित सु ब्रह्मादिकनि अगम्य ॥२

सुघर सुन्दर सुमति सर्वज्ञ—
संतत सहज सदा सदन सघन कुञ्ज सुख पुंज बरषत।
सौरभ सरस सुमन चयन सजित शयन सचु रंग
हरषत ॥

केलि विशद आनँद रसद वेलि बढत नित याम।
ठेलि निगम मग पग सुभग खेलि कुमर वर वाम ॥३
रसिक रमनी रसद रस रासि—
रस सींवाँ रस सागरी रस निकुञ्ज सुख पुंज बरषत।

रस निधि सुविधि रसज्ञ रस-
रेख रीति रस प्रीति हरषत।
रस मूरति सूरति सरस रस विलसनि रस रंग॥
रस प्रवाह सरिता सरस रति रस लहरि तरंग॥४॥

श्याम सुन्दर उरसि वनमाल-
उरग भोग भुजदण्ड वर कम्बुकंठमणिगण विराजत।
कुञ्चित कच मुख तामरस-
मधु लम्पट जनु मधुप राजत।
शीश मुकुट कुण्डल श्रवण मुरली अधर त्रिभंग।
कनक कपिश पट शोभिअति जनु घन दामिनि संग ५

सुभग सुन्दिरी सहज श्रृङ्गार-
सहज शोभा सर्वाङ्ग प्रति सहज रूप वृषभानुनन्दिनी।
सहजानन्द कादंबिनी-
सहज विपिन वर उदित चंदिनी॥
सहज केलि नित नित नवल सहज रंग सुख चैन।
सहज माधुरी अंग प्रति मोपै कहत बनै न॥६॥

विपिन निर्तत रसिक रस रासि-
दम्पति अति आनंद वश प्रेम मत्त निःशंक क्रीड़त।

चंचल कुंडल कर चरण-
नयन लोल रति रंग ब्रीडत
झटकत पट चुटकिन चटक लटकत लट मृदु हास
पटकत पद उघटत शब्द मटकत भृकुटि विलास ॥७॥

नवल नागरि नवल युवराज-
नव नव वन घन क्रीडंत नव निकुञ्ज विलसंत सर्वस ।
नव नव रति नित नित बढ़त-
नयौ नेह नव रंग नयौ रस ॥
नव विलास कल हास नव मधुर सरस मृदु बैंन ।
नव किशोर हरिवंशहित सु नवल नवल सुख चैन ॥

छप्पय ।

नवल नवल सुख चैन-
ऐन आपने आप बस ।
निगम लोक मर्य्याद-
भंजि क्रीडंत रंग रस ॥
सुरत प्रसङ्ग निशंक करत-
जोई जोई भावत मन ।

ललित अङ्ग चलि भंग—
भाव लज्जित सु कोकगन ॥
अद्भुत विहार हरिवंश हित—
निरखि दासि सेवक जियत।
विस्तरित सुनत गावत रसिक—
सु नित निन लीला रस पियत ॥६॥

इति श्री रसरीत सप्तम प्रकरण को जय जय श्रीहितहरिवंश ॥७

॥ अथ श्रीहितअनन्यटेक प्रकरण ॥ ८ ॥

॥ सवैया ॥

कर्म धर्म कोउ करहु वेद विधि—
कोउ बहु विधि देवतन उपासी।
कोउ तीरथ तप ज्ञान ध्यान व्रत—
अरु कोउ निर्गुण ब्रह्म उपासी ॥
कोउ यम नेम करत अपनी रुचि—
कोउ अवतार कदम्ब उपासी।
मन क्रम वचन त्रिशुद्ध--
सकल मत हम श्रीहितहरिवंश उपासी ॥१॥

जाति पांति कुल कर्म धर्म व्रत—
संश्रित हेत अविद्या नासी ।
सेवक रीति प्रतीति प्रीति हित—
विधि निषेध शृंखला विनासी ॥
अब जोई कही करैं हम सोई—
आयुष लियैं चलैं निज दासी ।
मन क्रम वचन त्रिशुद्ध—
सकल मत हम श्रीहितहरिवंश उपासी ॥२॥
जो हरिवंश कौ नाम सुनावै—
तन मन प्राण तासु बलिहारी ।
जो हरिवंश उपासिक सेवै—
सदा सेउँ ताके चरण विचारी ॥
जो हरिवंश गिरा यश गावै—
सर्वस्व देहुँ तासु पर वारी ।
जो हरिवंश कौ धर्म सिखावै—
सोई तौ मेरे प्रभु तैं प्रभु भारी ॥३॥
श्रीहरिवंश सुनाद विमोही—
सुनि धुनि नित्य तहाँ मन दैहौं ।
श्रीहरिवंश सुनन्त चली सँग—
हौं तिन सँग नित्य प्रति जैहौं ॥

श्रीहरिवंश विलास रास रस–
श्रीहरिवंश -संग अनुभैहौं ।
जो हरि नाम जगत्र शिरोमणि–
वंश विना कबहूँ नहिं लैहौं ॥ ४ ॥
प्रेमी अनन्य भजन्न न होय–
जो अन्तरयामी भजै मन में ।
जो भजि देख्यौ यशोदा कौ नन्दन–
तौ विश्व दिखाय सवै तन में ॥
श्रीहरिवंश सुनाद विमोहीं–
ते शुद्ध समीप मिलीं चण में ।
अब यामें मिलौनी मिलै न कछू–
जब खेलत रास सदा वन में ॥५॥
जो बहु मान करै कोऊ मेरो–
किये बहु मानत नाहिं बड़ाई ।
जो अपमान करै कोऊ केंहूँ–
किये अपमान नहीं लघुताई ॥
श्री हरिवंश गिरा रस सागर–
माँझ मगन्न सवै निधि पाई ।
जो हरिवंश तजौं भजौं औरहिं–
तौ मोही श्रीहरिवंश दुहाई ॥ ६ ॥

कही वनकेलि निकुञ्ज-निकुञ्जनि-
नवदल नूतनि सेज रचाई।
नाथ विरंमि-विरंमि कही तव-
सो रति तैसीधौं कैसैं भुलाई॥
सत्वर उठे महामधु पीवत-
माधुरीबाणी मेरे मन भाई।
जो हरिवंश तजौं भजौं औरहि-
तौ मोहि श्रीहरिवंश दुहाई॥७॥
भुज अंशनि दीन्हे बिलोकि रहे-
मुख चन्द उभय मधु पान कराई।
आप बिलोकि हृदय कियौ मान-
चिबुक सुचारु प्रलोय मनाई॥
श्रीहरिवंश बिना यह हेत-
को जानै, कहा, को कहै समुझाई।
जो हरिवंश तजौं भजौं औरहिं-
तौ मोहि श्रीहरिवंश दुहाई॥८॥
श्रीहरिवंश सुनाद सुरीति-
सुगान मिलैं वन माधुरी गाई।

श्रीहरिवंश बचन्न रचन्न–
सु नित्य किशोर–किशोरी लड़ाई ॥
श्रीहरिवंश गिरा रस रीति–
सु चित्त प्रतीति न आन सुहाई ।

जो हरिवंश तजौं भजौं औरहि–
तौ मोहि श्रीहरिवंश दुहाई ॥९॥

श्रीहरिवंश कौ नाम सु सर्वसु–
जानि सु राख्यौ मैं चित्त समाई ।

श्रीहरिवंश के नाम प्रताप कौ–
लाभ लह्यौ सु कह्यौ नहिं जाई ॥

श्रीहरिवंश कृपा तें त्रिशुद्ध कै–
साँची यहै जु मेरे मन भाई ।

जो हरिवंश तजौं भजौं औरहि–
तौ मोहि श्रीहरिवंश दुहाई ॥१०॥

देखे जु मैं अवतार सबै भजि–
तहाँ–तहाँ मन तैसौ न जाई ।

गोकुलनाथ महा ब्रज वैभव–
लीला अनेक, न चित्त खटाई ॥

एकहि रीति प्रतीति बँध्यौ मन—
मोहि सबै हरिवंश बजाई ॥

जो हरिवंश तजौं भजौं औरहि—
तौ मोहि श्रीहरिवंश दुहाई ॥११॥

नाम अरद्ध हरै अघपुञ्ज—
जगत्त करै हरि नाम बड़ाई ।

सो हरिवंश समेत सँपूरण—
प्रेमी अनन्यनि कौं सुखदाई ॥

श्री हरिवंश कहंत सुनंत—
छण-छण काल वृथा नहीं जाई ।

जो हरिवंश तजौं भजौं औरहि—
तौ मोहि श्रीहरिवंश दुहाई ॥१२॥

—※—

※ छप्पय ※

श्रीहरिवंश सुप्राण सुमन हरिवंश गनिज्जै ।
श्रीहरिवंश सुचित्त मित्त हरिवंश भनिज्जै ॥
श्रीहरिवंश सु बुद्धि बरण हरिवंश नाम जस ।
श्रीहरिवंश प्रकाश वचन हरिवंश गिरारस ॥

श्रीहरिवंश नाम बिसरै न छण—
श्रीहरिवंश सहाय भल।
हरिवंश चरण सेवक सदा—
सु शपथ करी हरिवंश बल ॥१३॥

इति श्रीहित अनन्य टेक शपथ वर्णन नाम अष्टम प्रकरणकी जय जय श्रीहरिवंश ॥८॥

॥अथ श्रीअकृपा कृपा नवम प्रकरण ॥ ९ ॥

(अकृपा—सोरठा)

सब जग देख्यौ चाहि,
काहि कहौं हरि भक्ति बिनु।
प्रीति कहूं नहिं आहि,
श्रीहरिवंश कृपा बिना ॥१॥
गुप्त प्रीति कौ भंग,
संग प्रचुर अति देखियत।
नाहिंन उपजत रंग—
श्रीहरिवंश कृपा बिना ॥ २ ॥
मुख बरणत रस रीति—
प्रीति चित्त नहिं आवई।
चाहत सब जग कीर्ति—
श्रीहरिवंश कृपा बिना ॥३॥

गावत गीत रसाल-
भाल तिलक शोभित घना।
बिनु प्रीतिहिं बेहाल-
श्रीहरिवंश कृपा बिना ॥ ४ ॥

नाचत अति हि रसाल-
ताल न शोभित प्रीति बिनु।
जन बीधे जंजाल-
श्रीहरिवंश कृपा बिना ॥ ५ ॥

मानत अपनौ भाग-
राग करत अनुराग बिनु।
दीखत सकल अभाग-
श्रीहरिवंश कृपा बिना ॥ ६ ॥

पढ़त जु वेद पुराण-
दान न शोभित प्रीति बिनु।
बीधे अति अभिमान-
श्रीहरिवंश कृपा बिना ॥ ७ ॥

बुधवान भक्त अनूप-
रूप न शोभित प्रीति बिनु।

भरम भटकत भूप—
श्रीहरिवंश कृपा बिना ॥८॥

सुन्दर परम प्रवीण—
लीन न शोभित प्रीति बिनु।
ते सब दीखत दीन—
श्रीहरिवंश कृपा बिना ॥९॥

गुण मानी संसार—
और सकल गुण प्रीति बिनु।
बहुत धरत शिर भार—
श्रीहरिवंश कृपा बिना ॥१०॥

—※—

अथ कृपा के सोरठा।

मुख बरणत हरिवंश—
चित्त नाम हरिवंश रति।
मन सुमिरण हरिवंश—
यह जु कृपा हरिवंश की ॥१॥
सब जीवनि सौं प्रीति—
रीति निबाहत आपनी।

श्रवण कथन परतीति—
यह जु कृपा हरिवंश की ॥२॥

शत्रु मित्र सम जानि—
मानि मान अपमान सम ।

दुख सुख लाभ न हानि—
यह जु कृपा हरिवंश की ॥३॥

नित इक धर्मिनि संग—
रंग बढ़त नित नित सरस ।

नित—नित प्रेम अभंग—
यह जु कृपा हरिवंश की ॥४॥

निरखत नित्य विहार—
पुलकित तन रोमावली ।

आनंद नयन सुढार—
यह जु कृपा हरिवंश की ॥५॥

छण छण रुदन करंत—
छण गावत आनंद भर ।

छण छण हहर हसंत—
यह जु कृपा हरिवंश की ॥६॥

छण-छण बिहरत संग-
छण-छण निरखत प्रेम भरि।
छण यश कहत अभंग-
यह जु कृपा हरिवंश की ॥७॥

निरखत नित्य किशोर-
नित्य-नित्य नव नव सुरति।
नित निरखत छवि भोर-
यह जु कृपा हरिवंश की ॥८॥

तृप्ति न मानत नैन-
कुंज रन्ध्र अवलोकि वन।
यह सुख कहत बनै न-
यह जु कृपा हरिवंश की ॥९॥

कहा कहौं बड़ भाग-
नित-नित रति हरिवंश हित।
नित बर्द्धित अनुराग-
यह जु कृपा हरिवंश की ॥१०॥

नित वर्द्धित अनुराग भाग अपनौं करि मानत ।
नित्य-नित्य नवकेलि निरखि नैननि सचु मानत ॥
नित-नित श्रीहरिवंश नाम नव-नव रति मानत ।
नित-नित श्रीहरिवंश कहत सोइ सोइ शिर मानत ॥

आपुनौ भाग आपुन प्रगट—
कहत जु श्रीहरिवंश वल ।
[श्री] हरिवंश भरोसे भये निडर
सु नित गर्जत हरिवंश वल ॥११॥

इति श्रीहितकृपा—अन्वयव्यतिरेक वर्णन नाम नवम प्रकरण की
जय जय श्रीहित हरिवंश ॥ ९ ॥

॥अथ श्रीहित भक्त भजन दशम प्रकरण॥१०॥

(बाईस कुण्डलिया) (प्रथम सिद्धान्त की ११)

श्रीहरिवंश सु धर्म दृढ़ अरु सनुभत निजु रीति ।
तिनकौ हौं सेवक सदा सु मन क्रम वचन प्रतीति ॥
मन क्रम वचन प्रतीति प्रीति दिन चरण पखारौं ।
नित प्रति जूठन खाँउँ वरण भेदहि न विचारौं ॥
तिनकी संगति रहत जाति कुल मद सब नंशहि ।

संतत सेवक सदा भजत जे श्रीहरिवंशहि ॥ १ ॥

सब अनन्य साँचे सुविधि सबकौ हौं निजु दास।
सुमिरण नाम पवित्र अति दरश परस अघ नास ॥
दरश परस अघ नास वास निजु संग करौं दिन।
तिन मुख हरि यश सुनत श्रवण मानौं न तृप्ति छिन ॥
कलि अभद्र वरणत सहस कलि कामादिक द्वंद्व तब।
सेवक शरण सदा रहैं सुविधि साँचे अनन्य सब ॥२॥

राधावल्लभ भजत भजि भली-भली सब होय।
रसिक अनन्य सजाति भजि भली-भली सब होय ॥
भली-भली सब होय जबहि हरिवंश चरण रति।
भली-भली सब होय रचित रसरीति सदा मति ॥
भली-भली सब होय भक्ति गुरु रीति अगाधा।
भली-भली सब होय भजत भजि श्रीहरि राधा ॥३॥

राधावल्लभ भजत भजि भली-भली सब होय।
अशुभ अनर्भलि संग जन विमुख तजौ सब कोय ॥
विमुख तजौ सब कोय झूठ बोलत सचु मानत।
दोष करत निःसंक रंक करि संतन जानत ॥
अभिमानी गर्विष्ठ लोभ मद मत्त अगाधा।
दुष्ट परिहरौ दूरि भजत भजि श्रीहरि राधा ॥४॥

राधावल्लभ भजत भली-भली सब होय।
जिते विनायक शुभ अशुभ विघ्न करैं नहि कोय॥
विघ्न करैं नहि कोय डरैं कलि कष्ट काल भय।
हरैं सकल संताप हरषि हरि नाम जपत जय।
श्रीवृन्दावन नित्य केलि कल करत अगाधा॥
हित हरिवंश किशोर भजत भज श्रीहरि राधा॥५॥

राधावल्लभ भजत भजि भली-भली सब होय।
त्रिविधि ताप नाशहिं सकलसब सुखसम्पति होय॥
सब सुख सम्पति होय होय हरिवंश चरण रति।
होय विषय विष नाश होय वृन्दावन वस गति॥
होय सुदृढ़ सत्संग होय रस रीति अगाधा।
होय सुयश जग प्रगट होय पद प्रीति सु राधा॥६॥

राधावल्लभ भजत भजि भली-भली सब होय।
भीर मिटै भट यमनकी भय भंजन हरि सोय॥
भय भंजन हरि सोय भरम भूल्यौ भटकत कति।
भगवत भक्ति विचार वेद भागवत प्रीति रति॥
भक्त चरण धरि भाव तरत भवसिन्धु अगाधा।
हित हरिवंश प्रशंस भजत भजि श्रीहरि राधा॥७॥

राधावल्लभ भजत भजि भली-भली सब होय।
अन्य देव सेवी सकल चलत पुंजीसी खोय॥

चलत पुंजीसी खोय रोय रूखि द्यौस गँवावति ।
सोय छपत सब रैन जोय कविसम जु नचावति ॥
भोय विषम विष विषय कोइ सतगुरु नहिं लाधा ।
धोय सकल कलि कलुष दोइ भजि श्रीहरि राधा ॥८॥
राधावल्लभलाल विनु जीवन जनम अकत्थ ।
बाधा सब कुल कर्म कृत तुच्छ न लागै हत्थ ॥
तुच्छ न लागै हत्थ सत्थ समरथ न बियौ तब ।
माथ धुनत हरि विमुख संग यमपंथ चलत जब ॥
गाथ विमल गुण गान कत्थ यश श्रवण अगाधा ।
नाथ अनाथनि हित समर्थ मोहन श्रीराधा ॥९॥

कर्मठ कठिन सशल्य नित सोचत शीश धुनंत ।
श्रीहरिवंश जु उद्धरी सोइ रस रीति सुनंत ॥
सोइ रस रीति सुनंत अन्त अनसहन करत सब ।
जब जब जियनि विचार सार मानत मन-मन तब ॥
छण छण लोलुप चित्त समझि छोड़त तातैं शठ ।
करत न सन्त समाज जिते अभिमानी कर्मठ ॥१०॥

हित हरिवंश प्रशंस मन नित सेवन विश्राम ।
चित निषेध विधि सुधि नहीं वितु संचित निधि नाम ॥
वितु संचित निधि नाम काम सुमिरंन दासन्तन ।
याम घटी न विलम्ब बाम कृत करत निकट जन ॥

ग्राम पंथ आरण्य दाम दृढ़ प्रेम ग्रथित नित।
ता मत रत सुख रासि वाम दश नवकिशोर हित।११॥

(कुण्डलिया रस की ११)

श्रीराधा आनन कमल हरि अलि नित सेवंत।
नव-नव रति हरिवंशहित वृन्दाविपिन वसंत॥
वृन्दाविपिन वसंत परस्पर बाहु दंड धरि।
चलत चरण गति मत्त करणि गजराज गर्व भरि॥
कुञ्ज भवन नित केलि करत नव नवल अगाधा।
नाना काम प्रसंग करत मिलि हरि श्री राधा॥१२॥

मुख विहंसत हरिवंशहित रुख रस रासि प्रवीन।
सुख सागर नागर गुरू पुहुप शयन आसीन॥
पुहुप शयन आसीन कीन निजु प्रेम केलि वस।
पीन उरज वर परसि भीन नव सुरत रंग रस॥
खीन निरखि मद मदन दीन पावत जु बिलखि दुख।
मीनकेतु निर्जित सुलीन प्रिय निरखि विहँसि मुख।१३

रस सागर हरिवंशहित लसत सरित वर तीर।
यश जग विशद सु विस्तरित वसत जु कुञ्ज कुटीर॥
वसत जु कुंज कुटीर भीर नव रँग भामिनि भर।
चीर नील गौरांग सरस घन तन पीताम्बर॥
धीर वहत दच्छिण समीर कल केलि करत अस।
नीरज शयन सुरचित वीर वर सुरतरंग रस॥१४॥

पिय विचित्र वन हरषि मन जिय यश वेणु क्वणंत ।
तिय तारुण्य सुनि तुष्ट धुनि कियौ तहाँ गमन तुरंत ॥
कियौ तहाँ गमन तुरंत कंत मिलि बिलसत सर्वस ।
तंत रासमण्डल जुरन्त रस निर्त्त रंग रस ॥
संतत सुर दुन्दुभि बजंत बरषंत सुमन लिय ।
अंत केलि जल जनुकि मत्त इभिराट करिणिपिय ॥१५

हरि विहरत वन युगल जनु तडित सुवपु घन संग ।
कर किशलय दल शयन भल भरि अनुराग अभंग ॥
भरि अनुराग अभंग रंग अपने सचुपावत ।
अंग-अंग सजि सुभट जंग मनसिजहि लजावत ॥
पंगु दृष्टि ललितादि तंक निर खत रंध्रन कर ।
मंग अदि रचि शिथिल सजत उच्छंग धरत हरि ॥१६॥

श्याम सुभग तन विपिनघन धाम बिचित्र बनाय ।
तामहि संगम युगल जन काम केलि सचुपाय ॥
काम केलि सचु पाय दाव छल प्रियहिं रिझावत ।
धाय धरत उर अंक भाव गन कोक लजावत ॥
चाव चवग्गुन चतुर राय रस रति संग्रामहि ।
छाय सुशय जग प्रगट गाय गुण जीवत श्यातहि ।१७॥

सरितातट सुरद्रुम निकट अलिता सुमन सुवास ।
ललितादिक रसननि विवस चलिता कुंज निवास।

चलिता कुञ्ज निवास आस तव हित मग परषत।
रासस्थल उत्तम विलास सचि मिलि मन हरषत॥
तासु वचन सुनि चित हुलास विरहज दुख गलिता।
दासन्तन कुञ्ज युवति मास माधव सुख सलिता ॥१८॥

परषत पुलिन सुलिन गिरा करषत चित स्वर घोर।
हरषत हित नित नवल रस बरषत युगल किशोर॥
बरषत युगल किशोर जोर नवकुञ्ज सुरत रन।
मोर चन्द्र चय चलत डोर कच शिथिल सुभग तन॥
चोर चित्त ललतादि कोर रंध्रनि निजु निरखत।
थोर प्रीति अन्तर न भोर दम्पति छवि परखत ॥१९॥

ऋतु बसन्त वन फल सुमन चित प्रसन्न नव कुञ्ज।
हित दम्पति रति कुशल मति वितु संचित सुख पुंञ्ज।
वितु संचित सुख पुञ्ज गुञ्ज मधुकर खुनाद धुनि।
रुंज मृदंग उपंग धुञ्ज डफ झंझि ताल सुनि॥
मंजु युवित रस गान लुंज इव खग तहाँ विथकितु।
भुंजत रास-विलास कुञ्ज नव सचि बसन्त ऋतु ॥२०॥

कहत-कहत न कही परै रहत जु मनहि विचार।
सहत-सहत बाढ़ै भगति गृह तन गुरु हित गार॥
गृह तन गुरु हित गारि हारि अपनी कर मानत।
चारवेद सुस्मृति जु चार क्रम कर्म न जानत॥

डारि अविद्या करिं विचार चित हित हरिवंशहि।
नारि रसिक हृद वन विहार महिमा न परै कहि ॥२१॥
सेवक श्रीहरिवंश के जग आजत गुण गाय।
निशि दिन श्रीहरिवंशहित हरषि चरण चितलाय।
हरषि चरण चित लाय जपत हरिवंश गिरा यश।
मनसि वचसि चित लाय जपत हरिवंश नाम यश।
श्रीहरिवंश प्रताप नाम नौका निजु सेवक।
भवसागर सुख तरत निकट हरिवंश जु सेवक ॥२२॥

इति श्रीहितभक्त भजन नाम दशम प्रकरण की
जय जय श्रीहित हरिवंश ॥१०॥

॥श्रीहित ध्यान गुण प्रकाश एकादश प्रकरण॥

(गाहान्तर्गत उद्गाहा छन्द)

सजयति हरवंशचन्द्र, नामोच्चार वर्द्धित सदा सुबुद्धि
रसिक-अनन्य प्रधान सतु साधु मण्डली मंडनो जयति।
जय जय श्रीहरिवंश हित प्रथम प्रणाऊँ शिर नाय।
परम रसद निर्विघ्न ह्वै जैसैं कवित शिराय॥
सुकवित सुछन्द गनिज्जै समय प्रबंध बन।
सुकवि विचित्र भनिज्जै हरि यश लीन मन॥
श्रोता सोई परम सुजान सुनत चित रति करै
सेवक सोई रसिक अनन्य विमल यश विस्तरै॥

सुयश सुनत वरणत सुख पायौ।
कीर भृङ्ग नारद शुक गायौ॥
श्रीवृन्दावन सब सुखदानी।
रतन जटित वर भूमि रमानी॥
वर भूमि रमानि सुखद द्रुम वल्ली–
प्रफुलित फलित विविधि वरणं।
नित शरद वसंत मत्त मधुकर कुल–
बहू पतत्रि नादहि करणं॥
नाना द्रुम कुञ्ज मंजु वर वीथी–
वनविहार राधारमणं।
तहां सँतत रहत श्याम श्यामा सँग–
श्रीहरिवंश चरण शरणं॥ १॥
रहत सदा सखि सगं रास रंग रस रसाल उल्लासं।
लीला ललित रसालं सम स्वर तालं वरषत सुख पुञ्जं॥
अतुलित रस बरषत सदा सुखनिधान वनवासि।
अद्भुत महिमा महि प्रगट सुन्दरता की रासि॥
सुन्दरता की रासि कनक दुति देह रुचि।
वारिज वदन प्रसन्न हासि मृदु रंग शुचि॥
सुभ्रू सुष्ठु ललाट पट सुन्दर करणं।
नयन कृपा अवलोकि प्रणति आरति हरणं॥

सुन्दर ग्रीव उरसि वनमालं ।
चारु अंश वर बाहु विशालं ॥
उदर सुनाभि चारु कटि देशं ।
चारु जानु शुभ चरण सुवेशं ॥
शुभ चरण सुवेश मत्त गजवर गति-
पर उपकार देह धरणं ।
निज गुण विस्तार अधार अवनि पर-
वाणी विशद सुविस्तरणं ॥
करुणामय परम पुनीत कृपानिधि-
रसिक अनन्य सभा भरणं ।
जय जग उद्योत व्यासकुलदीपक-
श्रीहरिवंश चरण शरणं ॥ २ ॥

(गाहान्तर्गतगाहू छन्द उपगीति)

सारासार विवेकी प्रेमपुञ्ज अद्भुत अनुराग ।
हरि यश रस मधु मत्त सर्व त्यक्त्वा दुस्त्यज कुलकर्म ॥
कर्म छांड़ि कर्मठ भजे ज्ञानी ज्ञान विहाय ।
व्रतधारी व्रत तजि भजे श्रवणादिक चितलाय ॥
श्रवणादिक चित लाय योग जप तप तजे ।
औरौ कर्म सकाम सकल तजि सब भजे ॥
साधन विविध प्रयास ते सकल विहावहीं ।
श्रवण कथन सुमिरण सेवन चित लावहीं ॥

अर्चन वंदन अरु दासंतन सख्य और आत्मा समर्पन ॥
ये नव लच्छण भक्ति बढाई तब तिन प्रेमलच्छणा पाई॥
पाई रस भक्ति गूढ़ युग-युग जग-
दुल्लंभ भव इन्द्रादि विधिं ।
आगम अरु निगम पुराण अगोचर-
सहज माधुरी रूप निधिं ॥
अनभय आनन्दकन्द निजु सम्पति-
गुप्त सुरीति प्रकट करणं ।
जय जय उद्योत व्याकुल दीपक-
श्रीहरिवंश चरण शरणं ॥३॥

(गाहान्तर्गत बिगाहा छन्द)

प्रगटित प्रेम प्रकाशं सकलजंतु शिशरी-कृत चितं ।
गत कलि तिमिर समूहं निर्मल अकलंक उदित छग चद्रं।
विपद चन्द्र तारा तनय शीतल किरण प्रकासि ।
अमृत सींचत मम हृदय सुखमय आनँद रासि ॥
सुखमय आनँद रासि सकल जन शोक हर ।
समझि जे आये शरण ते डरत न काल डर ॥
दियौ दान तिन अभय द्वंद्व दुख सब घटे ।
नित-नित नव-नव प्रेम, कर्म बन्धन कटे ।
कटे कर्म बँधन संसारी सुखसागर पूरित अति भारी ॥

विधि निषेध शृंखला छुड़ावैं-
निज आलय बन आनि बसावैं ॥
आलय बन बसत संग पारस के-
आयस कनक समान भयं।
मांगौं मन मनसि दासि अपनी करि-
पूरण काम सदा हृदयं ॥
सेवक गुण नाम आस करि बरणौं--
अब निजु दासि कृपा करणं।
जय जग उद्योत व्यासकुलदीपक--
श्रीहरिवंश चरण शरणं ॥४॥

छप्पय

पढ़त गुनत गुण नाम सदा सतसंगति पावै।
अरुबाढ़ै रस रीति बिमल बाणी गुण गावै॥
प्रेम लच्छणा भक्ति सदा आनँद हितकारी।
श्रीराधायुगचरण प्रीति उपजै अति भारी॥
निज महल टहल नवकुंज में--
नित सेवक सेवा करणं।
निशिदिन समीप संतत रहैं-
सु श्रीहरिवंश चरण शरणं ॥५॥

इति श्रीहितहरिवंश चन्द्र ध्यान गुणप्रकाश एकादश
प्रकरण की जय श्रीहितहरिवंश ॥११॥

॥ अथ श्रीहित मंगल गान द्वादश प्रकरण। १२।

(छंद चार राग सूहौ बिलावल)

जय जय श्रीहरिवंश व्यासकुल मण्डना ।
रसिक अनन्यनि मुख्य गुरु जन भय खण्डना ॥
श्रीवृन्दावन वास रास रस भूमि जहां ।
क्रीडत श्यामा श्याम पुलिन मंजुल तहां ॥
पुलिन मंजुल परम पावन त्रिविधि तहां मारुत बहै ।
कुञ्ज भवन विचित्र शोभा मदन नित सेवत रहै ॥
तहां संतत व्यासनन्दन रहत कलुष विहंडना ।
जय जय श्रीहरिवंश व्यासकुल मंडना ॥१॥

जय जय श्रीहरिवंशचन्द्र उदित सदा ।
द्विजकुल कुमुद प्रकाश विपुल सुख संपदा ॥
पर उपकार विचार सुमति जग विस्तरी ।
करुणासिंधु कृपाल काल भय सब हरी ॥
हरी सब कलि काल की भय कृपारूप जु वपु धर्‌यौ ।
करत जे अनसहन निंदक तिनहुं पै अनुग्रह कर्‌यौ ॥
निरभिमान निर्वैर निरुपम निष्कलंक जु सर्वदा ।
जय जय श्रीहरिवंशचंद्र उदित सदा ॥२॥

जय जय श्रीहरिवंश प्रशंसित सब दुनी ।
सारासार विवेकित कोविद बहुगुनी ॥

गुप्त रीति आचरण प्रगट सब जग दिये।
ज्ञान धर्म व्रत कर्म भक्ति किंकर किये॥
१भक्त जे हित शरण आये द्वन्द्व दोष जु सब घटे।
कमल कर जिन अभय दीने कर्म बन्धन सब कटे॥
परम सुखद सुशील सुन्दर पाहि स्वामिनि मम धनी।
जय जय श्रीहरिवंश प्रशंसित सब दुनी॥ ३॥
जय जय श्रीहरिवंश नाम गुण गाय है।
प्रेम लच्चणा भक्ति सुदृढ़ करि पाय है॥
अरु बाढ़ै रस रीति प्रीति चित ना टरै।
जीति विषम संसार कीर्त्ति जग विस्तरै॥
बिस्तरै सब जग बिमल कीरति साधु संगति ना टरै।
वास वृन्दाविपिन पावै श्रीराधिका जू कृपा करैं।
चतुर युगलकिशोर सेवक दिन प्रसादहि पाय है।
जय जय श्रीहरिवंश नाम गुण गाय है॥ ४॥

इति श्रीहित मंगल गान द्वादश प्रकरण की जय जय श्रीहित हरिवंश॥ १२॥

१'भक्ति हित जे' यह भी पाठ है।

अथ श्रीहित पाके धर्मी धर्म त्रयोदश प्रकरण॥ १३ ॥

(सवैया)

साधन त्रिविधि सकाम १मति सब–
स्वारथ सकल सबै जु अनीति।
ज्ञान ध्यान व्रत कर्म जिते सब–
काहु में नहिं मोहि प्रतीति ॥
रसिक अनन्य निसान बजायौ–
एक श्याम श्यामा पद प्रीति।
श्रीहरिवंश चरण निज सेवक–
विचलै नहीं छांडि रस रीति॥ १ ॥

(किरीट छंद)

श्रीहरिवंश धरम्म प्रगट्ट निपट्ट कै–
ताकी उपमाकौ नाहि न।
साधन ताकौ सबै नव लच्छन–
तत्च्छण वेग विचारत जाहि न ॥
जो रस रीति सदा अविरुद्ध प्रसिद्ध–
विरुद्ध तजत्त क्यों ताहि न।

---

१ 'मंत्र' पाठांतर है।

जोपै धरम्मी कहावत हौ तौ–
धरम्मी धरम्म समुज्झत काहिन ॥२॥

(अरसात छन्द)

जोपै धरम्मिनि सौं नहिं प्रीति—
प्रतीत प्रमाणत आन न आनिवौ।
एकहि रीति सवनि सौं हेत—
समीत समेत समान न मानिवौ ॥
वात सौं वात मिलै न प्रमाण—
प्रकृत्ति विरुद्ध जुगत्ति कौ ठानिवौ।
श्रीहरिवंश के नाम न प्रेम—
धरम्मी धरम्म समुझौ क्यों जानिवौ ॥३॥

(किरीट छन्द)

श्रीहरिवंश वचन्न प्रमाण कैं—
शाकत संग सबै जु बिसारत।
संसृति माँझ वन्याय कै पायौ जु—
मानुषदेह वृथा कत डारत ॥
क्यों न करत्त धरम्मिनि कौ सँग—
जानि बूझि कत आन विचारत।
जोपै धरम्मी मरम्मी हौ तौ—
धरम्मिनि सों कत अंतर पारत ॥ ४ ॥

(द्रुमला छन्द)

जो धरम्मी धरम्म कह्यौ जु करौ तौ–
धरम्मिन संग बढ़ौ सबतैं ।
अपुनर्भव स्वर्ग जो नाहिं बराबर–
तौ सुख मर्त्य कहौ कबतैं ॥
कहौ काहे प्रमाण बचन्न बिसारत–
प्रेमी अनन्य भये जबतैं ।
तब श्रीहरिवंश कही जु कृपाकरि–
साँचौ प्रबोध सुन्यौ अबतैं ॥ ५ ॥

(सवैया मुगत)

श्रीहरिवंश जु कही श्याम श्यामा पद–
कमल संगी शिर नायौ ।
ते न बचन मानत गुरुद्रोही–
निशि दिन करत आपनौ भायौ ॥
इत व्यवहार न उत परमारथ–
बीच ही बीच जु जनम गमायौ ।
जो धरमिनि सौं प्रीति करत नहिं–
कहा भयौ धर्म्मी जु कहायौ ॥ ६ ॥

(सुमुखी छन्द)

करौ श्रीहरिवंश उपासिक संग—
जु प्रीति तरंग सुरंग बह्यौ ।

करौ श्रीहरिवंश की रीति सबै–
कुल लोक विरुद्ध जु जाय सह्यौ ॥
करौ श्रीहरिवंश के नाम सौं प्रीति–
जा नाम प्रताप धरम्म लह्यौ ।
जु धरम्मी धरम्म स्वरूप कह्यौ–
विसरौ जिन श्रीहरिवंश कह्यौ ॥७॥

(किरीट छंद)

श्रीहरिवंश धरंम जे जानत–
प्रीति की ग्रंथि तहीं मिल खोलत ।
श्रीहरिवंश धरंमिनि माँझ–
धरंमी सुहात धरंम लै बोलत ॥
श्रीहरिवंश धरंमि कृपा करैं–
तासु कृपा रस मादक डोलत ।
श्रीहरिवंश की बाणी समुद्र कौ–
मीन भयौ जु अगाध कलोलत ॥८॥

(छन्द दुमिला)

व्रत संयम कर्म सु धर्म जिते–
सब शुद्ध विरुद्ध पिछानत हैं ।
अपनी अपनी करतूत करैं–
रस मादिक संक न आनत हैं ॥

हरिवंश गिरा रस रीति प्रसिद्ध—
प्रतीति प्रगट्ट प्रमाणत हैं।
बलि जाऊँ अपने धरम्मिनि की—
जे धरंमी धरंम हि जानत हैं ॥९॥

(मदिरा छंद)

श्रीहरिवंश धरंम सुनंत जु—
छाती सिरात धरम्मिनि की।
धरंम सुनंत प्रसन्न ह्वै बोलत—
बोलनि मीठी धरंमिनि की॥
धरंम सुनंत पुलक्कित रोमनि—
हौं बलि प्रेमी धरंमिनि की।
जु धरंम सुनाय धरंम हि याचत—
चाहौं कृपा जु धरंमिनि की ॥१०॥

(छप्पय)

श्रीहरिवंश प्रसिद्ध धर्म समुझै न अल्प तप।
समुझौ श्रीहरिवंश कृपा सेवहु धर्मिन जप॥
धर्मी बिन नहिं धर्म नाहि बिनु धर्म जु धर्मी।
श्रीहरिवंश प्रताप मर्म जानहिं जे मर्मी॥
श्रीहरिवंश नाम धर्मी जु रति तिन शरण्य संतत रहैं।

सेवक निशि दिन धर्म्मिन मिलैं श्रीहरिवंश सुजस कहैं ॥ ११ ॥

इति श्रीहित पाके धर्मी धर्म त्रयोदश प्रकरण की जय जय श्रीहित हरिवंश ॥१३ ॥

॥ अथ हित काचे धर्मी धर्म चतुर्दश ॥ प्रकरण ॥ १४ ॥

(सवैया छन्द)

श्रीहरिवंश धरम्मिनि के सँग—
आगै ही आगै जु रीति बखानत ।
आपने जान कहैं जु मिलै मन—
उत्तर फेरि चवग्गुन ठानत ॥
बैठत जाय विधर्मिन में—
तब बात धरम्म की एकौ न आनत ।
काचे धरम्मिनि के सुनौ छंद—
धरम्मी धरम्म मरम्म न जानत ॥ १ ॥

(समान)

बातन जूठनि खान कहैं—
मुख देत प्रसाद अनूठेइ छाँड़त ।
ग्रंथ प्रमाण कैं जो समुझाइयै-
तौ तब क्रोध रारि फिरि माँडत ॥

तत्त्वण छाँडि प्रेम की बातहिं—
फेरि जाति कुल रीति प्रमाणत ।
काचे धरम्मिनि के सुनौ छन्द—
धरम्मी धरम्म मरम्म न जानत ॥ २ ॥

(किरीट)

धरम्मिन माँझ प्रसन्न ह्वै बैठत—
जाय विधर्म्मिन माँझ उपासत ।
लालच लागि जहाँ जैसे तहाँ तैसे—
सोई तिन मध्य प्रकाशत ॥
बाद हिं होत कुम्हार के कूकर—
खाली हृदय गुरु रीति न मानत ।
काचे धरम्मिन के सुनौ छन्द—
धरम्मी धरम्म मरम्म न जानत ॥ ३ ॥
नाना तरंग करत्त त्तण त्तण—
रोवत रैंट न लार सम्हारत ।
तत्त्वण प्रेम जनाय कहंत—
जु मेरी सी रीति काहे अनुसारत ॥
तत्त्वण झगरि रिसाय कहंत—
जु मेरी बराबर और न मानत ।

काचे धरंमिनि के सुनौ छन्द–
धरंमी धरंम मरंम न जानत ॥४॥
मेरौ सौ प्रेम मेरौ सौ कीरतन–
मेरी सी रीति काहे अनुसारत।
मेरौ सौ गान मेरौ सौ बजायबौ–
मेरौ सौ कृत्य सबै जु बिसारत॥
छाँड़ि मर्याद गुरून सौं बोलत–
कंचन काँच बराबर मानत।
काचे धरंम्मिनि के सुनौ छन्द–
धरंमी धरंम मरंम न जानत ॥५॥

(समान)

देखे जु देखे भले जु भले–
तुम आपनौ और परायौ न जानत।
हौं जु मदा रस रीति बखानत–
मेरी बराबर ठागन मानत॥
कैसै धौं पाऊँ तिहारे हृदय कौं–
आन द्वार के मोहि न जानत।
काचे धरंमिनि के सुनौ छन्द–
धरंमी धरंम मरंम न जानत ॥६॥

(किरीट)

और तरंग सुनौ अति मीठी–
सखीन के नाम परस्पर बोलत।
तत्त्वण केश गहंत मुष्टिहनि–
शाकत शुद्ध बचावत डोलत।
तत्त्वण बोलै तू प्रेत तू रात्तस–
फेरि परस्पर जाति प्रमाणत।
काचे धरंमिनि के सुनौ छन्द–
धरंमी धरंम मरंम न जानत ॥७॥
जान्यौ धरंम देखी रस रीति–
जु निष्टुर बोलत बदन प्रकाशित।
ऐसे न वैसे रहे मभ्क रैंढव–
पाछिले यों जु करी निरभासित॥
ह्वै हैं फेरि जैसे के तैसे हम–
बारे तैं आये सन्यासिन मानत।
काचे धंरमिनि के सुनौ छन्द–
धरंमी धरंम मरंम न जानत ॥८॥
एक रिसाने से रूखे से दीखत–
पूछत रीति भभूकत धावत॥
एक रगमगे बोलत चालत–
मामिले हूं बपुरे जु जनावत।

एक वदन्न कै सांची सांची कहैं—
चित्त सचाई की एकौ न आनत ।
काचे धरम्मिनि के सुनौ छन्द—
धरम्मी धरम्म मरम्म न जानत ॥ ६ ॥
एक धरम्म समझे बिना ऽब—
गुशाँई के ह्वै जु जगत्त पुजावत ।
मूल न मन्त्र टटोरा की रीति—
धरम्मिनि पूछत वदन दुरावत ॥
एक मुलम्मा सौ देत उघारि—
जु वल्लभ सौं बल्लभ परमाणत ।
काचे धरंमिनि के सुनौ छन्द—
धरंमी धरंम मरंम न जानत ॥ १० ॥
एक गुरून सौं वाद करंत—
जु पंडित मानी ह्वै जीभ हि ऐंठत ।
एक दरव्य के जोर बरब्बट—
आसन चाँपि सभा मधि बैठत ॥
एक जु फेरि रीति उप देशत—
एक बड़े ह्वै न बात प्रमाणत ।
काचे धरम्मिनि के सुनौ छन्द—
धरंमी धरंम मरम्म न जानत ॥ ११ ॥

एक धरंमी अनन्य कहाय—
बड़ाई कौं न्यारी ये बाजी सी मांडत।
और के बाप सौं बाप कहंत—
द्रव्य के काज धरम्म हि छांड़त ॥
बोलत बोल बटाऊ से लागत—
ह्वै गुरु मानी न बात प्रमाणत।
काचे धरम्मिनि के सुनौं छंद—
धरंमी धरंम मरंम न जानत ॥१२॥

(रोला)

परखे सुनहु सुजान जहां कछु और कचाई।
भक्त कहैं परसन्न, न तरुतौ कहैं बुरवाई ॥
दिये सराहैं सुख रहैं दुख में दिन राती।
खैवे कौं जु सजाति खरच कौं होत बिजाती ॥ १३ ॥

(किरीट)

लै उपदेश कहाय अनन्य—
अन्हाय अनर्पित जाय गटक्कत।
आस करैं विषयीन के आगे—
जु देखे मैं जोरत हाथ लटक्कत ॥
केतिक आयु कितेक सौ जीवन—
काहे विनाशत काज हटक्कत।

श्रीहरिवंश धरम्मिन छांड़ि—
घर घर काहे फिरत भटक्कत ॥ १४ ॥

(मालती)

शाकत संग अग्गिन्न लपट्ट—
लपट्ट जरत्त क्यों संगति कीजै।
साधु सुबुद्धि समान सु संतनि—
जानि-कै शीतल संगति कीजै ॥
एक जु काचे प्रकृति विरुद्ध—
प्रकृत्ति विरुद्ध करैं (तौ) कहा कीजै।
जे आगि के दाझे गये भजि पानी में—
पानी में आगि लगैं (तौ)कहा कीजै॥१५

(समान)

प्रीति भंग बरणत रस रीति हि—
श्रीहरिवंश वचन विसरावहु।
आप आपनी ठौर जहां तहां—
करि विरुद्ध सब पैं निंदरावहु ॥
एक संसार दुष्ट की संगति—
ताहू में तुम पुष्ट करावहु।
विनती करौं सकल धर्मिनि सौं—
धर्मी ह्वै जिन नाम धरावहु ॥ १६ ॥

(कवित्त ३२ अक्षरी रूप घनाक्षरी)

स्वारथ सकल तजि, गुरु चरणनि भजि;
गुण नाम सुनि कथि, संतनि सौं संग करि।
काल व्याल मुख परयौ,कफ वात पित्त भरियौ,
भ्रम्यौ कत, अनन्य कहे की जिय लाज धरि॥
सेवक निकट रस रीति प्रीति मन धरि—
हितहरिवंश कुल कानि सब परिहरि।
काचे रसिकनि सौं बिनती करत ऐसी—
गोविंद दुहाई भाई जो न सेवौ श्यामा हरि ॥१७॥

(छप्पय)

प्रगटत श्रीहरिवंश शूर दुन्दुभि बजाय बल।
मदन मोह मद मलित निदरि निर्दलित दंभ दल॥
भर्म भाग्य भय भीत गर्व्व दुर्ज्जन रज खण्डन।
लोभ क्रोध कलि कपट प्रबल पाखंड बिहंडन॥
तृष्णा प्रपंच मत्सर व्यसन सर्व दंड निर्बल करे।
शुभ अशुभ दुर्ग विध्वंश तब जयति जयति जग उच्चरे॥

इति श्री काचे धर्मी धर्म नाम चतुर्दश प्रकरण की जय जय
श्रीहित हरिवंश ॥ १४ ॥

हित अलभ्य लाभ पंचदश प्रकरण ॥१५॥

(नाराच छन्द)

हरिवंश नाम है जहां, तहां तहां उदारता–
सकामता तहां नहीं, कृपालुता विशेषिये।
हरिवंश नाम लीन जे, अजातशत्रु ते सदा–
प्रपंच दंभ आदि दै तहां कछू न पेखिये॥
हरिवंश नाम जे कहैं, अनन्त सुक्ख ते लहैं–
दुराप्य प्रेम की दशा तहां प्रत्यक्ष देखिये।
सोई अनन्य साधु, सो जगत्र पूजिये, सदा–
सु धन्य धन्य विश्व में जनम्म सत्य लेखिये॥१॥
हरिवंशचन्द्र जो कही सुचित्त ह्वै सबै लही–
वचन्न चारु माधुरी सु प्रेम सौं पिछानिये।
सुनैं प्रपन्न जे भये अभद्र सर्व के गये–
तिन्हैं मिलैं प्रसन्न ह्वै न जाति भेद मानिये॥
सुभाग लाग पाय हैं प्रशंसि कंठ लाय हैं–
सिराय नैन देखि कैं अभेद बुद्धि आनिये।
कृपालु ह्वै सु भाखि हैं धरम्म पुष्ट राखि हैं–
श्रीव्यासनन्द नाम कौ अलभ्य लाभ जानिये॥२॥
हरिवंश नाम सर्वसार छांड़ि लेत बहुत भार–
राज विभव देखिकैं विषय विषम्म भोव हीं।

सु जोर होत साधुसंग आनि करत प्रीति भंग—
मान काज राजसीन के जु मुक्ख जोवहीं ॥
जहां तहां जु अन्न खात सखी कहत आप गात—
सकल द्यौस द्वंद जात रात्रि सर्व्व सोवहीं ।
प्रसिद्ध व्यासनन्द नाम जानि बूझि छोड़ हीं—
प्रमाद तैं लिए बिना जनम्म बाद खोवहीं ॥३॥
हरिवंश नाम हीन खीन दीन देखिये सदा—
कहा भयौ बहुज्ञ ह्वै पुरान वेद पढ्ढहीं ।
कहा भयौ भये प्रवीण जानि मानिये जगत्र—
लोक रीझि सोभ कौं बनाय बात गढ्ढहीं ॥
कहा भयौ किये करम्म यज्ञ दान देत-देत—
फलनि पाय उच्च-उच्च देवलोक चढ्ढहीं ।
परयौ प्रवाह काल के कदापि छूटि है नहीं—
श्रीव्यासनन्द नाम जो प्रतीति सौं न रढ्ढ (ट्ट)हीं॥४॥

ॐ इति श्री हित अलभ्यलाभ पंचदश प्रकरण की जय जय श्रीहितहरिवंश ॥ १५ ॥

हित अबोलनौ सिद्धान्त नाम षोडश प्रकरण ॥ १६ ॥

(दोहा)

बाणी श्रीहरिवंश की, सुनहु रसिक चित लाय ।
जिहिं विधि भयौ अबोलनौ, सो सब कहौं समुझाय ॥१॥
श्रीहरिवंश जु कथि कही, सोरु सुनाऊँ गाय ।
बाणी श्रीहरिवंश की, नित मन रही समाय ॥२॥
श्रीहरिवंश अबोलनौ, प्रगट प्रेम रस सार ।
अपनी बुद्धि न कछु कहौं, सो बाणी उच्चार ॥३॥
हितहरिवंश जु क्रीड़हीं, दंपति रस समतूल ।
सहज समीप अबोलनौ, करत जु आनँद मूल ॥४॥
काहे कों डारति भामिनी, हौं जु कहति इक बात ।
नैंक वदन सन्मुख करौ, च्छण च्छण कल्प सिरात ॥५॥
वे चितवत तुव वदन बिधु, तू निज चरण निहारति ।
वे मृदु चिबुक प्रलोबहीं, तू करसौं करटारति ॥६॥
बचन अधीन सदा रहै, रूप समुद्र अगाध ।
प्राणरमण सौं कत करत, बिनु आगस अपराध ॥७॥
चितै कृपा करि भामिनी, लीने कंठ लगाय ।
सुख सागर पूरित भये, देखत हियौ सिराय ॥८॥

सेवक शरण सदा रहै, अनत नहीं विश्राम।
वाणी श्रीहरिवंश की, कै हरिवंशहि नाम ॥९॥

इति श्रीहित अबोलनौ सिद्धान्त षोडश प्रकरण की जय जय
श्रीहित हरिवंश ॥ १६ ॥

इति श्रीनादकुल मंडन हित पथ अञ्जन रसिक सभा भूषण
श्रीराधिकावतार श्रीदामोदरजी (सेवकजी) कृत
श्रीमत् सेवकवाणीजी की जय जय
श्रीहितहरिवंश।

❀ फलस्तुति छप्पय ❀

(भावना परायण श्रीकृष्णदासजी कृत)

जयति जयति हरिवंश नाम रति सेवक बानी।
परम प्रीति रस रीति रहसि कलि प्रगट बखानी ॥
प्रेम संपती धाम सुखद विश्राम धरम्मिनि ।
भणत गुणत गुण गूढ़ भक्त भ्रम भजत करम्मिन ॥
श्रीव्यासनन्द अरविंद चरण मद तासु रंग रसराँचहीं।
श्रीकृष्णदास हित हेत सौं जे सेवक वाणी बाँचहीं ॥१

* छप्पय *

कै हरिवंशहि नाम धाम वृन्दावन बस गति।
वाणी श्रीहरिवंश सार संच्यौ सेवक मति ॥

पठन श्रवण जो करै प्रीति सों सेवक वानी ।
भव निधि दुस्तर यदपि होय तिहिं गोपद पानी ॥
श्रीव्यासनन्द परसाद लहि—
युगल रहस दरसै जु उर ।
भनि वृन्दावन हित रूप बलि—
सुख बिलसैं भावुक धाम धुर ॥ २ ॥

ग्रंथ सिन्धु तें सोधि रंग कलि माँहिं बढ़ायौ ।
यह हित कृपा प्रसाद अमी भाजन भरि पायौ ॥
रसिक मनौ सुर सभा आनि तिनकौं दरसायौ ।
श्री सेवक निजु गिरा मोहिनी बाँटि पिवायौ ॥
पठन श्रवण निशि दिन करै—
दम्पति सु धाम सुख लहै अलि ।
वाणी स्वरूप हरिवंश तन—
भनि वृन्दावन हित रूप बलि ॥३॥

सकल प्रपंच विनाश होत पढि सेवक वाणी ।
श्रीवृन्दावन वास होत पढ़ि सेवक वाणी ॥
व्यासनन्द पद प्रीति होत पढ़ि सेवक वाणी ।
श्री राधावल्लभ मीत होत पढ़ि सेवक वाणी ॥
पढ़ियैं नित हित रंग सों सेवक बाणी प्रेम भर ।
सेवक वाणी की कृपा सेवक वाणी कहै सु कर ॥

॥ पद ॥

सेवक सेवक वाणी बोलौ।
रूप रंग रस मद में छाके कुञ्जनि कुञ्जनि डोलौ॥
जाके पढे सुनें अरु गाये उपजत प्रेम अमोलौ।
रसिक मुकुन्द सुमिर हित चित में कपट कपाटनि खोलौ॥५।

॥ पद ॥

जय श्री हित जय सेवक वाणी।
परम प्रीति कौ हार यही है यही गिरानिज वाणी॥
सब रसकनि कौ प्राण यही है परम पुनीत प्रमानी।
हित रसकौ दातार यही है यही सरस सुख दानी॥
सेव्य कौ सेवक रूप यही है जो जानी सो ज्ञानी।
जाको गावौ मनकू भावै देह दशा बिसरानी॥
हित रूप कृपा तें "कीरत" पाई हितानन्द रजधानी ६॥

❀ छप्पय ❀

अति सै गिरा गंभीर भाव दह पैठ न आवै।
नाम रूप रस बेहद कोऊ पार न पावै॥
अच्छर अर्थ समुझिवें बहु कोविद जन दहलें।
पुनि ये रसिक सुजान रीझि कुञ्जर ज्यौं चहलें॥
निजु वेद हदौ ज्यों प्रमुलखैं अरु सब थकित बिचारकरि।
वृन्दावन हित रूप बलि हरिवंश रूप दरसे जु हरि॥७॥

श्रीप्रियादासजी कृत—

अथ श्रीसेवकजू महाराजकौ भजनाष्टक

* छप्पय *

जैसैं तैसैं जो कहै एक बार हरिवंश ।
पाँयनु माथौ दै रहै छिन छिन करै प्रशंश ।।
कपट रूप हरिवंश कौ हास हेत धरि आवै ।
पद रज में लोटचौ करै बारि बारि शिरबावै।।
अंसुवनि धारा यौं चलै ज्यों पिचकारी जानि ।
सेवक की रति जो भई कैसैं करौं बखानि ।। १ ।।
आगम निगम और चतुराई मनतें सबही खोयौ ।
हित कौ नाम हिये में जाके रोम रोम में भोयौ ।।
हित नैंननि में हित बैंनन में हित बिन और न जानैं ।
जो हरिवंश त्रिविधि करि भावैं ताहीसौं रुचि मानैं ।।
गति मति जिनके व्यास सुवनजू जाम घटी नहीं भूल ।
रसिक शिरोमणि लालजू सेवक जीवन मूल ।। २ ।।
हरिवंश नाम के सुनतही रोम रोम भरि आवै ।
हरिवंश उपासक जो मिलै पदरज तन लपटावै ।।
हिय सौं रहत लगाय मुख बोल न आवै ।
अभ्यन्तर अकुलानि बुद्धि गति कैसैं पावै ।।

शिरनावै चहुँदिशि फिरै छिन छिन लेत बलाय।
सेवक की गति जो भई सो मोपै कही न जाय ॥३॥

हरिवंश नाम की भनक झनक जो काननि आवै।
खानि पान सुधि जाय लौट कै ताय मल्हावै॥
भरै दृगनि में नीर चीर बिनु चहुंदिश देखै।
कासि कासि कहै बोलि तासु कौ ऐंढ़ौ पेखै॥
फिर बैठै धरनी गिरै गावै नाम पुकार।
सेवक की रति को कहै हौ कीनौं बलिहार॥ ४॥

प्रेम भरौ जाकौ हियौ सो हित हित उठयौ पुकार।
कानन में झांई परी कहां गिरयौ बिन ही सभांर॥
अहा अहा यह नाम कौननै मोहि सुनायौ।
धन्य तासु की मात जासुनै यह सुत जायौ॥
ऐसें कहिकें नीर दृग भरिकैं दियौ बहाय।
सेवक की रति अकह है मोपै कही न जाय॥ ५॥

हरिवंश नाम के कहत नैंन जल धारा छूटै।
पूरि रह्यौ हिय कसक तासु अद्भुत कछु लूटै॥
अहो अहो यह कौन सुधारस मोय पिवायौ।
साधन कौ फल नाहिं कबहुं चरनन शिरनायौ॥
भुज उठाय ऐसें कहै रसिक शिरोमणिलाल।
सेवक की रति गति देखि हित परे प्रेम के जाल॥६॥

ध्यान करत हरिवंश भाग्य अद्भुत करि लेख्यौ।
पलटि पर्यौ अंग अंग अपनपौ वैसौ देख्यौ ॥
जब गिर्यौ धरनि थहराय बात कछु कहत न आवै।
हित हित उठयौ पुकार अवनि में कीच मचावै ॥
अगम सिंधु है प्रेम कौ वरनत बनै न वैन।
हित सेवक के प्रान हैं हित सेवक के नैन ॥ ७ ॥

रसिक शिरोमणिलाल सौं गति मति जिनकी पागि—
प्रेम भक्ति सेवन करैं मानत हैं बड़भाग।
गुन हित गाये आंसू आवैं चित नहीं पावैं चैनी ॥
रात दिना की सुधि बुधि भूली बढ़त चाह नित पैनी।
सेवक धीर पीर कौ सागर मैं नहीं पाऊँ थाह ॥
याकौ कनुका जा उर आवै ताकी मिटै न दाह ॥८॥

दोहा—छंद बंद यामें नहीं जो पिंगल में जात।
रसिक शिरोमणि कृपा बल कही प्रेम की बात ॥

❀ चौपाई ❀

जोपढ़ै गुनैं यह अष्टक मनलावै-श्रीहरिवंश चरणरतिपावै।

दोहा—अरु सेवकजी कृपाकरि संग राखै जन सोय।
पिय प्यारी की निज सखी ताकी सहचरि होय ॥

—:❀:—

सोरठा-हित हैं बड़े दयाल, तातें हियरा कलमल्यौ।
देखौ अचिरज ख्याल, कोकीर हू आमनि फूल्यौ॥

इति श्री हित जी के नाम सौं श्री सेवक जी की प्रीति वर्णन अष्टक प्रियादास जी कृत की जै जै श्री हित हरिवंश।

श्रीहित रूपचन्द्रो विजयते

श्रीसेवक–उत्कर्ष

छप्पय।

हितकौ लाड़ लड़ायौ नीकें हितकौं ध्यायौ।
हित बिन और न गायौ बरबस हित प्रगटायौ॥
हितकौ मिहीं स्वरूप गिरा मधि प्रगट बतायौ।
हितकौ बांकौ पंथ कृपा करि ताहि जतायौ॥
हित धर्म सूर साँचौ सकृति—
श्रीसेवक की सर को करै।
हित चरण कमल मकरन्द कौ—
मधुप भयौ हित उच्चरै॥ १॥

श्रीहरिवंश जु तजौं (तौ) मोहि हरिवंश दुहाई।
श्रीहरिवंश न भजौं (तौ) मोहि हरिवंश दुहाई ॥
हित बिन और न गाऊँ ध्याऊँ यह प्रण कीयौ।
हीयौ धनि धनि वंश बिना हरि नाम न लीयौ ॥
हित धर्म वीर बाँकौ रसिक—
बलि बलित विजय डंकौ दियौ।
जिहिं उधारि मिले हरिवंश जू—
बलि अलि किशोरि असको बियौ ॥२॥

जहँ लौं धामी धाम सकल हित ही कौं गायौ।
हित ही श्यामा श्याम हितहि सब रमित बतायौ ॥
हित ही विद्या मंत्र सु हित ही कारण कारज।
हित ही परम स्वतंत्र सु हित ही जे आचारज ॥
जिन व्रत अनन्य बाँकौ लियौ—
जय श्री सेवक हित धर्म धुर।
हित रमि सु रह्यौ तन मन हिये—
अरु रोम रोम रह्यौ हित सु पुर ॥ ३ ॥

॥ इति फलस्तुति की जय जय श्रीहित हरिवंश ॥

* श्रीहितप्रभुर्विजयते *

अथ अष्टयाम सेवाविधिः ।

तत्क्रमश्चोक्तो रुद्रयामले ॥ श्री पार्वत्युवाच—

देव देव महादेव शंकरप्राणवल्लभ ।
श्रीराधाकृष्णयो नित्यं ध्यानं कथय मे प्रभो ॥ १ ॥

उसका क्रम रुद्रयामल में इस प्रकार कहा गया है। श्रीपार्वती बोलीं। हे प्राणप्रिय, देवताओं के भी देवता, महादेव, शङ्करजी, प्रभु श्रीकृष्ण और कृष्णा भगवान् के नित्य ध्यान को मुझ से कहिये ॥ १ ॥

श्रीशिवोवाच—

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि तव स्नेहस्य कारणात् ।
यद्यपीदं न वक्तव्यं गुह्याद्गुह्यतरं परम् ॥ २ ॥

श्रीशिव बोले, हे देवि ! श्रेष्ठ और गुह्य से अत्यन्त गुह्य यह बात यद्यपि कहने योग्य नहीं तथापि तुम्हारे प्रेम के कारण कहूँगा, सुनिये ॥ २ ॥

ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय शुचिस्तत्परमानसः ।
आत्मानं प्रथमं ध्यायेच्छुद्धं ब्रह्म कलामयम् ॥ ३ ॥

ब्राह्म मुहूर्त्त में उठ कर पवित्र हो, उन में मन लगाकर प्रथम शुद्ध परिपूर्ण ब्रह्म श्रीहित राधावल्लभ कलामय (शृङ्गार-मय) अपने निज स्वरूप (सखी) का ध्यान करै ।। ३ ।।

तत इष्टं गुरुं ध्यात्वा शिरसा प्रणु मेन्मुहुः ।
आत्मानं च गुरुं चापि सखी रूपं पुनः स्मरेत् ।। ४ ।।

फिर इष्ट और गुरुदेव का ध्यान कर वार-वार शिर से प्रणाम करै । एव सखी रूप गुरु का और परमात्मा का पुनः पुनः स्मरण करै ।। ४ ।।

निश्चयं शृणु मद्वाक्यं सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।
अविश्वासान्मद्वचने रौरवं नरकं व्रजेत् ।। ५ ।।

प्रियतमे मेरे वाक्य को सुनिये मैं सत्य-सत्य कहूँगा, मेरे वचन में अविश्वास करने से रौरव नरक होगा ।। ५ ।।

सखी भावं विना नैव स्मरणे गुणकीर्त्तने ।
पूजने वा तयोर्देवि कथंचिदधिकारिता ।। ६ ।।

हे देवि ! सखी भाव के बिना राधाकृष्ण के स्मरण, गुण कीर्त्तन तथा पूजन में किसी प्रकार से भी अधिकार नहीं ।। ६ ।।

संगोपयेन्निजं भावं न परेभ्यः प्रकाशयेत् ।
प्रकाशे सिद्धिहानिः स्यान्नरकं चापि गच्छति ।। ७ ।।

अपने भाव को गुप्त रखै दूसरों से प्रकाशित न करै। प्रकाश करने पर असिद्धि और नरक प्राप्त होता है ।। ७ ।।

आत्मानं चिंतयेत्तस्मात्किशोरीं प्रमदाकृतिम्।
राधिकानुचरीभूतां राधादास्यैकतत्पराम् ॥ ८ ॥

अतः अपने को प्रमदा, सरूपा, किशोरी, श्रीराधिकाजी की अनुचरी तथा उनकी तत्परा दासी विचारे॥ ८ ॥

ततोध्यायेन्महेशानिनिरंजनमनामयम्।
सच्चिदानन्दमात्रं हि ब्रह्म ज्योतिरखंडितम् ॥ ९ ॥

अनन्तर हे महेशानि! माया रहित, अनामय, सच्चिदानन्द अखण्ड ज्योति स्वरूप परब्रह्म (श्रीराधावल्लभ) का ध्यान करै ॥ ९ ॥

माथुरं मंडलं तत्र तत्र वृन्दावनं वनम्।
नाना तरुलताकीर्णं कालिन्दीपरिवेष्टितम् ॥ १० ॥

रत्नभूमिप्रकाशाढ्यं महा विष्णवादि दुर्गमम्।
भवनानि विचित्राणि सखीनां तत्र कोटिशः ॥ ११ ॥

असंख्यातनिकुञ्जानि सुखदानि सदा हरेः।
तेषु कुंजेषु क्रीडंतौ राधाकृष्णौ ततः स्मरेत् ॥ १२ ॥

उस समय उस ध्यान में मथुरा मण्डल में श्रीवन वृन्दावन को अनेक वृक्ष लताओं से व्याप्त श्रीयमुनाजी से परिवेष्टित रत्नमयी भूमिके प्रकाशसे युक्त, विष्णु आदि देवताओं को दुर्लभ, जिसमें कोटिश, सखियों के विचित्र भवन हैं और सदा सुखदायक भगवान् की असंख्य निकुञ्ज हैं, उन कुञ्जों में खेलते हुए श्रीराधाकृष्ण का स्मरण करै ॥१०॥११॥१२॥

द्रुतजांबुनदप्रख्यां राधां परम सुन्दरीम् ।
सर्वसौभाग्यशोभाढ्यां सखीजननिषेवितास् ॥ १३ ॥

कृष्णं च कोटिमदनमोहनानन्दविग्रहम् ।
महामरकतश्यामं नीलेन्दीवरलोचनम् ॥ १४ ॥

ध्यानार्थं ते प्रवक्ष्यामि नित्यलीलां महेश्वरि ।
निकुञ्ज भवने ताभ्यां क्रियमाणांदिवानिशम् ॥ १५ ॥

"द्रुत सुवर्ण की मी कान्ति" सम्पूर्ण सौभाग्य और शोभा युक्त श्रीपरम सुन्दरी राधिकाजी हैं, जिनकी सखी जन सेवा कर रही हैं और करोड़ों कामों को मोहित करने वाले आनन्द स्वरूप, महामरकत मणि सदृश श्याम, नील कमल सदृश नेत्र वाले श्रीकृष्ण भगवान् तथा उनकी नित्य लीला को हे महेश्वरि सुयोग से तुम्हारे ध्यान करने के लिये कहता हूँ ॥१३॥१४॥१५॥

सौरतानन्दलोभेन व्यतीता यामिनीयदि ।
निद्रासुखं लभेते च रात्रिशेषे सुयोगतः ॥ १६ ॥

मुहुर्मुहुश्च स्वप्नेपि कामविक्रीडनं निजम् ।
विहारिणौ सूचयंतौ निमग्ने रससागरे ॥ १७ ॥

सेवासमयमाज्ञाय वृन्दयाचापि प्रेरिता ।
मिथो वदंति प्रत्यूषे पक्षिणो मधुरस्वराः ॥ १८ ॥

यदि सुख में आनन्द के लाभ से रात्रि व्यतीत हो, तो शेष रात्रि में निद्रा सुख प्राप्त कर और रस समुद्र में गोता

लेते हुए बार-बार स्वप्न में भी अपनी हिममयी-क्रीड़ा को सूचित करते विहार करें हैं, सेवा समय जान कर वृन्दा से प्रेरित मधुर स्वर से पक्षी गण प्रातःकाल आपस में बोलने लगे ॥१६॥१७॥१८॥

वचांसि तेषामाकर्ण्य ललिताद्या मुदा युताः ।
स्नात्वा धृत्वा स्वश्रृङ्गारमागतास्तल्पमन्दिरं ॥ १९ ॥

विनिद्रौ च स्वयं जातौ तथापि लशितौ मुहुः ।
परस्परं प्रेमलग्नौ विस्मृताशेषकार्यकौ ॥ २० ॥

सा विलोक्य तथा भूतौ सख्यः सेवा परायणाः ।
स्थित्वा तन्मन्दिरद्वारे प्रगायंति च तद्यशः ॥ २१ ॥

उनकी बात सुन कर ललिता से आदि सखियाँ प्रसन्नता से स्नान कर तथा शृङ्गार कर शय्या घर में आतीं भई यद्यपि स्वयं निद्रा चली गई तथापि परस्पर प्रेम में मग्नहो सब कार्यों को भूलकर बारम्बार श्रीयुगलवर शोभित होंय हैं। वे सेवापरायण ललिता आदि सखीजन इस प्रकार प्रेममें मग्न दोनों को देख कर शय्या घर के द्वार पर ठहर कर उनके यश को गान करने लगीं ॥१९॥२०॥२१॥

तच्छ्रुत्वातीतहर्षेण तल्पतस्तौ समुत्थितौ ।
व्यत्यस्तवस्त्राभरणौ स्मरंतौ शर्वरी सुखम् ॥ २२ ॥

उस गान को श्रवण कर अत्यन्त हर्ष से अस्त-व्यस्त हैं वस्त्र और आभरण जिन के ऐसे दोनों रात्रि के सुख को याद करते हुए शय्या से उठे ॥ २२ ॥

ततः शृंगारमानीय सुगन्धिसलिले तयोः ।
मुखादिकंच संप्रोच्य वस्त्रखंडेन वै पुनः ॥ २३ ॥

नैवेद्यं विविधं सख्यो मोदकादिमुदावहम् ।
प्रीत्यासमर्पयन्तिस्म ताभ्यो भुक्तं च पार्वति ॥२४॥

गंडूसान् कारयित्वा च दत्वा तांबूलवीटिकाम् ।
कुर्वंति मंगलारार्तिं गीतिवाद्यत्र निश्चनैः ॥ २५ ॥

तब सखियां सुगन्धित जल और भृङ्गार लाकर दोनों प्रियाप्रियतम के मुख कमल को धोय रुमाल से पोंछ प्रसन्नतादायक अनेक प्रकार के मोदकादि नैवेद्य निवेदन करने लगीं और हे पार्वती ! प्रियाप्रियतम आरोगने लगे। फिर कुल्ला कराय तांबूल की बीड़ी दे गान और बाजों के शब्दों से मङ्गला आरती करने लगीं ॥२३॥२४॥२५॥

पश्चात्तौ स्वामिनौ स्नानवेदीमभ्येत्यतिष्ठतः ।
सख्यो मुहूर्तपर्यंतं तत्र गायंति तन्मुदे ॥ २६ ॥

तदन्तर दोनों को स्नान वेदी के पास लेजाकर बैठाती भईं और सखियां उनकी प्रसन्नता के लिये घड़ी तक गाने लगीं ॥ २६ ॥

ततोऽभ्यंगं कारयित्वा स्नापयित्वा च वारिणा ।
यथा शोभं सुशृङ्गारं रचयंति निजेशयोः ॥ २७ ॥
अंगरागं पुष्पमालां दत्वा धूपं च दीपकम् ।
सद्रत्न मुकरं ताभ्यां दर्शयित्वा मम प्रिये ॥ २८ ॥

मोदकाद्यैश्च संभोज्याचम्य वीटीन्प्रदाय च।
सभानिकुञ्ज भवने रत्नसिंहासनोपरि ॥ २९ ॥

कोमला सनके दिव्ये संस्थाप्य गिरिनन्दिनि।
शृङ्गारार्तिकां भव्यां कुर्वंति विविधस्वनैः ॥ ३० ॥

तत्पश्चात् उबटनों कर और जल से स्नान कराय और अपनेप्रियाप्रियतम को शृङ्गार से सुशोभितकरती भई। हे मेरी प्रिये पार्वती चन्दन तथा अतरमाला, फूल, धूप दीप देकर और रत्नजटित दर्पण दिखाय, मोदकादिकों से भोजन कराय आचमनके बाद बीड़ी देकर निकुञ्ज भवन की सभा में रत्नजटित सिंहासन पर दिव्य कोमल आसन बिछाय, हे पार्वती! अनेक प्रकार के शब्दों से सुन्दर शृङ्गार आरती करती भई ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

पुन. काश्चन गायेति स्वरतालादिशोभया।
वीणावेणुमृदंगादीन्वादयंत्यपरास्तथा ॥ ३१ ॥

फिर कितनी ही तौ स्वर पूर्वक तालादि की शोभा से गाने लगीं और दूसरी सखियां वीणा वेणु, मृदङ्गादि बजाती भई ॥ ३१ ॥

ताम्बूलवीटिकापात्रं दधानाः बीजनादिकम्।
काश्चित्परिमलादीनां पात्रमत्यंतशोभनम् ॥ ३२ ॥

राजंते स्म स्वसेवासु समस्तगुण मण्डिताः।
ताभ्यः सखीभ्यो हर्षेण यच्छतः स्वं निजेश्वरौ ॥३३॥

कितनीही पानदान, अत्यन्त सुन्दर इत्रदान, पंखादि धारण करती भईं । अपनी-अपनी सेवा में समस्त गुणों से भूषित सखियाँ शोभा को प्राप्त हुईं और अपने प्रियाप्रीतम को आनन्द से अपनी सेवा से सुख देती भईं ।। ३२ ।। ३३ ।।

नाना प्रकारकं पाकं संविधाय प्रयत्नतः ।
जाते मध्याह्नसमये तद्भोक्तुं प्रार्थयंति ताः ।। ३४।।

पुनः सावधानी से अनेक प्रकार के पाक को वना कर मध्याह्न समय होने पर भोजन करने के लिये वे सव प्रिया-प्रीतम से प्रार्थना करती भईं ।। ३४ ।।

ततो रसवतीशालां समागत्य महेश्वरि ।
रत्नपीठोपरिस्थित्वा भुजांते राधिकाहरिः ।। ३५ ।।

सितापायससर्पीपिगोटिकाश्चातिकोमलाः ।
सूपं नानाविधं तत्रौदनंदधि च व्यंजनम् ।। ३६ ।।

वटिकांश्चानेकविधमार्द्रकादिप्ररोचनम् ।
जलं सुरभि शीतं च सुमिष्टो यमुनोद्भवम् ।। ३७ ।।

हे पार्वती ! फिर पाकशालामें रत्नासन पर परस्पर वाहूमूल में बैठकर प्रियाप्रीतम दाल, भात, अति कोमल हल्की रोटी, कढ़ी खीर, पूआ तथा अनेक प्रकार के व्यञ्जनादि भोजन करने लगे और श्रीयमुनाजी का मिष्ट, शीतल, सुगन्धित जल पान करते भए ।। ३५ ।। ३६ ।। ३७ ।।

असंख्याताश्च सामग्र्यो नाहं ता गदितुं क्षमः।
परिवेष्य भोजयंति यथारुचि तदालिकाः ॥ ३८ ॥

हे पार्वती! भोजन के समय अनगणित सामग्रियां थीं, जिनको मैं नहीं कह सकता। उनको सखियां घेर कर रुचि के अनुकूल भोजन कराने लगीं ॥ ३८ ॥

भोजनांते च गंडूषां कारयित्वा सु वारिणा।
संप्रोच्य चैलखंडेन तयोरास्यं करद्वयं ॥ ३९ ॥
नीराजनं प्रकुर्वंति ललिताद्याः सखीजनाः।
घंटाझल्लारिकाद्यैर्वेणुमृदंगपटहस्वनैः ॥ ४० ॥
ततो रहसि पर्यंके शाययित्वा निजेश्वरी।
क्षणं संवाह्य चरणौ निर्गच्छंति ततो वहिः ॥ ४१ ॥

भोजन के बाद स्वच्छ जल से कुल्ला कराय उनके मुख और दोनों हाथों को रूमाल से पोंछ कर ललितादि सखीजन घंटा, वेणु मृदङ्गादि के शब्दों से आरती करतीं भईं। अनन्तर प्राणप्रिय प्रियाप्रीतम को एकान्त में शय्या पर सुवाय अल्प-काल पाम दवाय पुनः बाहर निकल गईं ॥३९॥४०॥४१॥

भुंजंति च महाप्रेम्णा प्रसादान्नं निजेशयोः।
कोटिव्रताध्वरादिभ्योप्यतिपुण्यं प्रदायकम् ॥ ४२ ॥

फिर बड़े प्रेम से करोड़ों यज्ञों से भी अत्यन्त पुण्यदायक प्रियाप्रीतम के प्रसाद को स्वयं भोजन करती भईं ॥ ४२ ॥

मुक्त्वा प्रसादताम्बूलवीटिकाश्चापि भक्तितः ।
स्मरंत्यस्तत्कृतं कुंजे परमानन्दनिर्वृताः ॥ ४३ ॥

भक्ति से प्रसाद पाय और प्रसादी बीड़ी खाय प्रियाप्रीतम की लीला को स्मरण करती भई कुञ्ज में आनन्दित हुईं ॥ ४३॥

नाना विधि प्रसूनानां नानाविधिविभूषणम् ।
वनमालां वैजयन्तीं रचयन्ति च काश्चन ॥ ४४ ॥

काश्चिन्नानारत्नभूषां काश्चित्परिमलादिकम् ।
संपादयन्ति काश्चिच्च काश्चिच्चित्रं लिखंतिच ॥४५॥

कितनी ही सखियां अनेक प्रकार के पुष्पों की अनेक प्रकार के भूषण बनाय और चरणतक की वैजयन्ती माला बनाती भईं कितनी ही अनेक रत्नों के भूषण तथा अन्य कर्पूरादि की माला तथा कितनी ही विचित्र चित्रादि बनाती भईं ॥४४॥४५॥

द्विमुहूर्तेऽवशिष्टेऽह्नि पुनरुत्थाप्य पूर्ववत् ।
द्राक्षासितोपलादीनिह्यर्पयंति यथारुचि ॥ ४६ ॥

पुनः चार घड़ी दिवस रहने पर उठ कर पूर्ववत् रुचि के अनुकूल दाख सितोपलादि अर्पण करती भईं ॥ ४६ ॥

तद्भुक्त्वाराधिकाकृष्णौबालाभिस्सह मन्दिरात् ।
वंशीवटस्यनिकटे यात्रार्थं गच्छतो मुदा ॥ ४७ ॥

फिर श्रीप्रियाप्रीतम सखियों के साथ भोजन कर मन्दिर से वंशीवट के समीप हर्ष से घूमने निकले ॥ ४७ ॥

उपेत्योपवने रम्यं नाना पुष्पसुगंधितम् ।
श्रात्रं श्रात्रं तत्र तत्र मोदते पक्षिणां रुतम् ॥ ४८ ॥

अनेक पुष्पों की गंध से सुगन्धित सुन्दर उपवन में आकर ठौर-ठौर पक्षियों के शब्द को सुन-सुन प्रसन्न होने लगे ॥ ४८ ॥

पाठयंत्यपि कुत्रापि मणि पिंजरसंस्थितान् ।
शुकादीन्येषु वात्सल्यं परमं प्राणनाथयोः ॥ ४९ ॥

प्राणनाथ प्रिया-पीतम को वात्सल्य दिखाती भई, कहीं मणिजटित पिंजरों में शुकादि पक्षियों को पढ़ा रही हैं ॥ ४९ ॥

जले विहरणं क्वापि दोलिकांदोलनं क्वचित् ।
कृत्वैवघटिकाशेषं दिने कुञ्जं तु गच्छतः ॥ ५० ॥

कहीं जल विहार, कहीं झूलन में झोटा, इस प्रकार एक घड़ी दिन शेष रहने पर पुनः कुञ्ज में पधारते भये ॥ ५० ॥

तत्रानुचर्य्यो विविधपुष्पशृङ्गारमुत्तमम् ।
कारयित्वा मोदकादि समर्प्यपरयोर्मुदा ॥ ५१ ॥

वहाँ कुञ्ज में अनेक प्रकार के पुष्पों का उत्तम शृङ्गार कर प्रसन्नता से मोदकादि समर्पण कर ॥ ५१ ॥

गीतवाद्यत्रनिर्घोषैः सायंनीराजनं तयोः ।
कुर्वंति मिलिताः सर्वाः महेशि परमादरात् ॥ ५२ ॥

सायंकाल में गाजे-बाजे के शब्दों से सब सखी मिलकर परस्पर दोनों की आरती करती भईं ॥ ५२ ॥

सुखासने मुहूर्तंहि स्थित्वा रासमहोत्सवम् ।
सखीनांमण्डले नित्यं राधाकृष्णौ प्रकुर्वतः ॥ ५३ ॥

प्रिया प्रीतम सुखपूर्वक आसन पर बैठ, फिर सखियों के बीच में नित्य रासोत्सव करें हैं ॥ ५३ १

काश्चिद्वाद्यं वादयंति नृत्यंति च तयोर्मुदे ।
काश्चिद्गायंति तद्दास्ये स्तुवंत्यन्याः सखीजनाः ॥५४॥

कहीं कोई बाजे बजाती भईं, तो कितनी ही उनकी प्रसन्नता के निमित्त नाचने लगीं, कितनी ही गाने लगीं और कितनी ही एक स्तुति करती भईं ॥ ५४ ॥

द्यूतादिलीलयारात्रिप्रथमप्रहरे कृताः ।
सिताशस्कुलिदुग्धाद्यैः तौ संभोज्य यथा रुचि. ॥५५॥

तांबूलवीटी रुचिरा मुखामोदप्रदायिकाः ।
दत्वा कुर्वंति शयनं नीराजनमहोत्सवं ॥ ५६ ॥

पुनः रात्रि के प्रथम पहर में द्यूतादि क्रीड़ा खेलती भईं, पुनः पूरी, दूध मीठा आदि से यथा रुचि (भोजन) व्यालू कराय, ताम्बूल बीड़ी खवाती भईं। शयन आरती करती भईं ॥ ५६ ॥

सुतल्पे शाययित्वाथ संवाह्य च पदांबुजम् ।
रहस्यसमयं ज्ञात्वा वयस्या वहिरागतः ॥ ५७ ॥

फिर सुन्दर कोमल शय्या पर सुलाकर चरण-कमलों को दबा कर और सखियाँ रहस्य समय जान कर बाहिर आती भई ॥ ५७ ॥

एका सखीतु श्रीराधा कृपातिभरपूरिता।
तदानीमपि सेवार्थं तल्पोपांते विराजते ॥ ५८ ॥

एक केवल कृपापात्र निज सुहृद सखी(श्रीहित अलिजी) श्री राधिका जू की वा समय में भी सेवा के निमित्त शय्या के पास विराजती भईं ॥ ५८ ॥

अन्या भुक्ता च तच्छेषं गायंति स्वामिनोर्यशः।
भावयंत्यो गुप्तलीलां नयंति निखिलां निशाम् ॥५६॥

अन्य सखियाँ प्रिया-प्रीतम के अवशिष्ट प्रसाद को पाकर स्वामिनी स्वामी के यश को गाती हुईं गुप्त लीला की भावना करती हुई शेष रात्रि को बिताती भईं ॥ ५९ ॥

आश्चर्य मदनोन्मत्तौ श्रीराधामाधवावुभौ।
प्रकुर्वतः कामकेलिमलक्ष्यां कामशास्त्रतः ॥ ६० ॥

पुनः श्रीराधामाधव दोनों ही मदनमत्त हो आश्चर्य से काम-शास्त्र के अनुसार अलक्ष्य काल-क्रीड़ा करते भये ॥ ६० ॥

निशीथे सौरतानन्दवर्धनं काममोदकम्।
प्रेम्णा तथा प्रपिबतः परागजनितं मधु ॥ ६१ ॥

पुनरभ्येत्यपर्यंकं स्वतंत्ररसिकोत्तमौ।
रतिकामौ मोहयंतः प्रिये विहरतौ निशि ॥ ६२ ॥

अर्द्ध रात्रि में सुख के आनन्द को बढ़ाने वाले काम-मोदक आरोगते भये और परागजनित मधु-पान करते भये। पुनः पलङ्ग के पास आकर स्वतंत्रा से रसिक शिरोमणि प्रिया प्रीतम रति और कामदेव को मोहित करते हुए निशा में विहार करते भये ॥ ६२ ॥

यदा चरितवैवस्यादपि विस्मरतः स्वकम् ।
तदा तदा स्मारयति सखी निकटवर्तिनी ॥ ६३ ॥

जब विवश हो कभी अपनी क्रीड़ा को भूलें हैं, तो निकट वर्त्तिनी सखी (श्रीहित अलि जी) स्मरण करावें हैं ॥ ६३ ॥

एषा तेऽभिहिता गौरी ध्यानार्थं दिक् प्रदर्शनम् ।
निशेजयर्नित्यलीला सदा नवविलासिनोः ॥ ६४ ॥
यथा समयमेतेन क्रमेण ध्यानमाचरन् ।
अचिंत्यं समवाप्नोति साधको दर्शनं तयोः ॥ ६५ ॥

हे पार्वती ! मैंने तुम्हारे ध्यान के लिये अपने श्री प्रिया-प्रीतम की नव नित्य नूतन लीला का दिग्दर्शन मात्र कराया है। साधक मनुष्य यथा समय की लीला को क्रम से ध्यान करता हुआ, उन दोनों के अचिन्त्य दर्शन को प्राप्त होता है ॥ ६५ ॥

सावधानतया देवि यदि ध्याययेदपिक्षणम् ।
कोटिजन्मकृतात्पापान्मुच्यते नात्रसंशयः ॥ ६६ ॥

हे देवि ! यदि सावधान हो एक क्षण भी मनुष्य ध्यान करे, तो कोटि जन्म कृत अपराधों से मुक्त हो जाय, इसमें बिलकुल सन्देह नहीं। इति श्री अष्टयाम सेवा विधिः।

अनुवादक—श्रीहितकुलोद्भवाचार्यगोस्वामिबालकशिक्षक श्रीहित शिक्षापाठशाला प्रधानाध्यापक पंडित श्रीसोहनलालगर्ग शास्त्री, १००८श्रीराधावल्लभ जी का मन्दिर, श्रीवृन्दावन।

* श्रीहित राधावल्लभोजयति *
श्रीहित हरिवंशचन्द्रोजयति ।

श्रीराधावल्लभजू कौ अष्टप्रहर सेवाविलास

ध्यान कौ प्रकार

प्रथम ही चार घड़ी रात्रि रहै तब श्रीराधावल्लभजी कौ नाम लेत उठै तब अपने आचार्य कौ ध्यान करै । तहाँ द्वै घड़ी रात्रि रहै अरु द्वै घड़ी चढै तब लग मङ्गल समय है।

अथ श्री मङ्गल समय

प्रथम स्नानादिक करिकैं तिलक करै। पाछै मन्दिर की मार्जनी करै, फिर जल मृत्तकादि करि मन्दिर कौं शुद्ध करै। तैसैंहि श्रीलालजू के पात्रादिक जलादिक सौं शुद्ध करै। पाछै आसन पै बैठिकैं अपनौ सखी स्वरूप विचारै । श्री यमुनाजी में श्री ललितादि सखी स्नादिक करैं हैं। तहाँ आप भाव सौं स्नान करै। ता पीछें गुरुन कौ दियौ प्रसादी शृङ्गार होय सारी लहँगा कंचुकी आदि जे वस्त्र-भूषण हैं ते पहिरै अपनौ शृङ्गार करै। अपनी यूथेश्वरी श्री निज सुहृद अलि श्रीहितअलि जू कौं जानैं और उनकी अनुगती ह्वैकै सब सेवा भावना करै । ता पाछें श्री वृन्दावन कौ ध्यान करै । ताके मध्य में श्रीसेवाकुञ्ज विचारै । तहाँ श्री प्रिया प्रीतम जू कौ महल है ताके चहुँ ओर रत्नजटित कोट है। ताके निकट श्री गुरु सखी जू कौ मन्दिर है, तहाँ जाय कै श्रीगुरु सखी जू कौं जगावै । जल झारी लै कै दन्त धावन करावै। फेर स्नानादिक करावं ता पीछें श्री प्रिया प्रीतम जू की प्रसादी शृङ्गार होय सो श्री गुरु सखी जू कौ

शृङ्गार करें, फेर श्री गुरु सखी जू के पाछें होय कै श्री प्रिया प्रीतम जू के निकुञ्ज महल में जाय। श्रीहित ललतादिक सखी श्रीलाड़िलीलाल जू की टहल करै हैं तिनकें संग में मिलकें श्री गुरु सखी जू के पीछै होय कै आप टहल करै। तहाँ श्री गुरु सखी जू के हाथ कञ्चन जल झारी दैके आप पीकदानी लै कें श्री जोरी जू कूं कुरला करवावै। कोमल सुगन्ध रूमाल सौं मुखारविन्द पुछावै। पाछें मिश्री, मलाई आदि कञ्चनादि थार में धरिकें भोजन करावै। सुगन्धित शीतल जल अर्पण करै। पाछैं कुरला करावै। हाथ पुछाय बीरी अर्पण करै। तब सिंहासन पर बैठाय आरती करै। पाछै पुष्पाञ्जलि करै ता पाछें श्रीहित ललितादिक सखी भोजन करैं हैं। तिनमें जाय कें सीत प्रसादी लेय श्री गुरु प्रसाद आप भोजन करें। श्री गुरु सखी जू कौं श्रीहित सखी जू के परिकर में जानै और आप श्रीगुरु सखी जू के पाछै होय टहल करै। स्वतन्त्र नहीं करै। इत्यादि विधि सौं मङ्गल समय जानिये। इति श्री मंगल समय॥

अथ श्री शृङ्गार समय

छः घड़ी दिन चढ़े तें बारह घड़ी पर्य्यन्त दिन चढै तब लग शृंगार समय है। ताकी विधि—दो घड़ी दिन चढ़े पाछें श्री जोरी जू पुष्प वाटिका में बाग की रचना देखिवे को आवें तहाँ सखी हास परिहास गान करैं। पीछै स्नान कुञ्ज में लाय अंगन में उवटनौं करै। स्नान ऋतु के अनुसार जल सौं विधि पूर्वक करावै। पाछें शृंगार कुंज में पधराय शृंगार करावै। श्री जोरी जू कौ सदा मिले ही विचारैं। काहू क्रिया में न्यारौ नहीं विचारैं। शृंगार कराय भोजन कुंज में ल्यावै। तहाँ चंपक

लता जू की भोजन की टहल मुख्य है। तहाँ सखियनि में मिलिकैं बंधवा दही मिठाई आदि श्री गुरु सखी जू के हाथ अर्पण करिकैं श्री जोरी जू कौं भोजन करावै। ता पाछैं शीतल सुगन्ध मय जल पिवावै। पाछैं कुरला आदि करावै। वीरी अरपै। पाछैं दिव्य सुवर्ण कौ महा रत्नानिमय षोडश द्वार कौ सभा मण्डल है। तहाँ रत्नजटित सिंहासन फूलन के आसन सोहैं। तापर बैठाय आरती करैं। पुष्पनि की न्यौछावर करैं। तहाँ समस्त सखी दर्शन करैं। तहाँ गानादिक की भावना करैं। पाछैं पूर्व रीति सौं सखियनि के मध्य श्री गुरु सखी जू कौ तथा अपनौ प्रसाद पायवौ विचारैं। इत्यादि विधि सौं शृंगार समय। इति श्री शृंगार समय सम्पूर्णम् ॥

अथ राजभोग समय

बारह घड़ी दिन चढ़े पीछैं राज भोग समयौ लागै छः घड़ी पाछिलौ दिवस रहै तब लग है। ताकी विधि। सखी आय सभा मण्डल में प्रार्थना करैं। तब महा दिव्य रत्ननि कौ भोजन कुंज हैं। तहाँ श्री जोरी जू आवैं तब कछुक आभूषण वस्त्र उतारैं। तहाँ सखी फूलनि के आसन पर बैठारैं। तहाँ आसन ऊपर श्री जोरी जू छै घड़ी भोजन करैं। तहाँ निखरी सखरी अनेक प्रकार की सामिग्री अर्पण करैं। सुगन्धमय शीतल जल अर्पण करैं। वीरी अर्पण करैं और आरती आदि धूप-दीपादि पूर्व रीति सौं करै। तैसै ही श्री गुरु सखी जू कौ और अपनौं भोजन पूर्व रीति सौं करै। किन्तु श्री जोरी जू कौं शयन कराय कैं भोजन करै। शयन करायवे की विधि—महा दिव्य मणि मय शय्या मन्दिर विचारै। तहाँ श्री जोरी जू कौं पधरावै। तहाँ शय्या के निकट सुगन्धित वीरी पुष्प, जलादि

धरै। कोई घरी एकान्त रहस्य की भावना करै। पीछै पौढ़िवे की भावना करैं। जाल रन्ध्रनि ह्वै कै श्रीललितादिक सखी अवलोकनि करै। तैसै ही आप हू अवलोकनि करै। इत्यादि विधि सौं राज भोग समय विचारैं। इति श्री राज भोग संपूर्णम्

अथ उत्थापन समय

छै घड़ी दिन पाछिलै सौं लेकर सायंकाल पर्यन्त लौं सन्ध्या समय है। ताकी विधि। छै घड़ दिन रहै, तव सखी वीणा वजाय कैं श्री लाड़िली लाल कूँ जगावै। मेवा फल आदि अरोगाय, शीतल जल अथवा सरवत कौ पान करावै। मरगजे शृङ्गार कौ सम्हारै। पाछै अनेक प्रकार के मेवा मिश्री कौ भोजन करावै। शीतल जल-पान करावै, वीरी अर्पण करै। सखियन में मिलि आप टहल करै। पाछैं श्री गुरु सखी जू कौ प्रसाद पावौ विचारै पूर्वं रीति सों। पाछै वन विहार की भावना करै,तहाँ नित्य कृत्य विषै नित्य ही भावना माहीं,कुञ्जको विहार गह्विर कौ खेलिवौ, हिंडोला कौ झूलिवौ, दान लीला कौ करवौ, आंख मिचौनी कौ खेलिवौ, जल विहार कौ खेलिवौ नवेरिन में बैठि-श्रीयमुना जल कौ पैरवौ, प्रियाजी तौ लाल जी रूप होंय और लालजी प्रियाजी रूप होंय। सखी हमेशा विवाह करावैं नित्य दूलह-दुलहिनी होय करि वन विहार करिवौ करैं पुहुप की गेंद सौं परस्पर खेलिवौ। इत्यादि विधि सौं उत्थापन जानियै। इति श्री उत्थापन समय सम्पूर्णम्।

अथ सायंकाल समय

सायंकाल के समय में सखी भोग ल्याईं। मोदक मगद मलाई, मिश्री, मोतीचूर, चन्द्रकला, जलेबी. खुरमा, खजला,

इमरती, पेड़ा पगे मखाने, बँधवा दही आदि सामिग्री श्रीलाड़िली लाल जू कौं भोजन करवावैं। पीछें शीतल जल पिवाय बीड़ी अर्पण करिकै आरती आदि सेवा करै। सायंकाल समय से छै घडो रात्रि पर्यंत रास विलास की भावना करै। इत्यादि विधि सौं सन्ध्या समय विचारै। इति श्री सन्ध्या समय सम्पूर्णम्।

अथ शयन समय

छै घड़ी रात्रि गये ताईं सन्ध्या समय भयौ ता पाछैं शयन समय घड़ी दोय दोय कौ है। ताकी विधि। पूरी, कचौरी, मोहन भोग, औंट्यौ दूध अनेक तरकारी, बँधिवा दही आदि समर्पण करै। पाछै शीतल सुगन्धित जल पिवाय बीरी अर्पण करै। पीछे आरती करै। पाछै दिव्य कंचन की इन्द नील मणि आदि शैय्या मन्दिरविचारै। तापर श्रीलाड़िलीलाल कौं पधरावै कोमल-कमल दलादिक फूलन की शैय्या विचारै। ताके निकट महा-मधुर मादक रस बीरी सामिग्री धरैं। पाछै सखी भोजन करैं। तिन में मिलिकैं श्रीगुरु सखी जू अरु अपनौ प्रसाद पायवौ विचारै। इत्यादि विधि सौं शयन समयौ जानिये इतिश्री शयन समयौ सम्पूर्णम्।

अथ शैया समय

आठ घड़ी रात्रि गये पाछैं सेज्या समय विचारै घड़ी बीस कौ सेज्या समय है ताकी विधि-श्री जोरी जू सय्या १२ महा प्रेम रस मग्न ह्वैं हास-परिहास करैं हैं। यहाँ श्रीललितादिक सखी जाल रंध्रनि ह्वैं अवलोकन करैं हैं। तहाँ जाल रन्ध्रनि होयकैं श्री जोरी जू की रहस्य केलि कौं आपहू देखैं पाछे डेढ़ पहर रात्रि जाय तब अनेक मेवादिक औंट्यौ दूध मोदकादि

सामिग्री श्री गुरु सखीजू के हाथ दैकैं श्री जोरी जू कौं भोजन-करवावैं,सुन्दर शीतल सुगन्धित जलपान करवायकैं बीरी अर्पण करै। पाछैं पौढ़वे की भावना करै। पाछैं श्री गुरु सखी जू आदि दैकैं आप प्रसाद पायवे की भावना करैं पूर्व रीति सौं विचारै। नित्य श्रीवृन्दावन विषैं ऐसैं श्रीप्रिया प्रीतम जू की भावना करियैं आठ घड़ी रात्रि गये पाछे बीस घड़ी सेज्यासमय की भावना कही सो अट्ठाइस घड़ी रात्रि भये ताईं कौ शय्या समय भयौ। फेर द्वै घड़ी कौ तड़कौ रह्यौ, तब फेर मङ्गला समय लगै सो याही भाँति सौं भक्त-जन होय सो आठ पहर की भजन-भावना नित्य प्रति मानसी भाव सौं तथा प्रगट भाव सौं हमेशा ही करिवौ करैं, सो परमपद श्रीवृन्दावन धाम नित्य विहार लीला के दर्शन कौ अधिकारी होय। नित्य धाम विषै छः ऋतु एक दिवस माही श्री लाड़िली लाल जू की सेवा करै है दश घड़ी वसन्त ऋतु प्रभात सौं सेवा करैं हैं। ऐसे ही दस-दस घड़ी छंहु ऋतु साठ घड़ी दिवस रात्रि हैं ता माहीं सेवा करैं हैं। होरी कौ खेल वसन्त ऋतु में विचारनौ और सब ही समय श्रीलाड़िली लाल जू के इच्छा के आधीन हैं। कई नर नारी सात समय श्री जोरी जू कौ भजन भावना कौं करैं। ताके भाग की महिमा कौं ब्रह्मा, शिव, देवता, सनकादिक, नारद कहतपार पावैं नाहीं। इति श्री अष्टप्रहर सेवा समय भावना विलास सम्पूर्णम्।

श्रीहितराधिकावल्लभो जयति ॥ श्रीहितहरिवंशचन्द्रोविजयते

नित्य नैमित्तक उत्सव बोध

श्री श्री देवाधिदेव श्रीराधावल्लभजी के वार्षिक नित्त नैमित्तिक उत्सवों की विधि तथा भोगरागादि का निर्णय आदि प्राचीन पद्धति के अनुसार तथा उत्सव निर्णय आदि ग्रन्थों के अनुसार जो कि अद्यावधि हो रहे हैं. उन्हें अवश्य ही कर्तव्य समझ समयानुसार सर्व साधारण के जानने के अर्थ और अनेक सम्प्रदाइयों का अनुरोध भी बहुत समय से होनेसे, लिपिबद्ध कर प्रगट करनों उचित समझौ । सम्प्रदायी जनों को ये यथाशक्ति करने उचित हैं। जहाँ जहाँ सम्प्रदाई मन्दिर हैं वे भी याही अनुसार यथाशक्ति करें. क्यों कि अनेक शास्त्रन में प्रभू सेवा भोग राग विधि प्रेमपूर्वक करनौ ही मुख्य लिख्यौ है। भगवत सेवा जो राखैं हैं, उनको अवश्य कर्त्तव्य है। यहाँ अति संक्षेप में लिख्यौ है—

वैशाख ।

परम पुनीत मधुरित कौ माधव (वैशाख) मास ही रसिकजनौं को परमानन्ददायक है–याही में श्रीहितप्रभू कौ प्रागट्य है, याहीसौं प्रथम शृंखलाबद्ध यहाँ से राखी–याही के अन्तरगत चन्दन यात्रा वैसाख सुदी ३ को चन्दनवागौ के संग चन्दन के आभूषण पायजेब, पकपायन तथा हथ फूज आदि धारण होंय, वैशाख सुदी ४ से श्रीजी महाराज औलाई में

विराजें, प्राचीन प्रथा के अनुसार औलाई के दर्शन सन्ध्या आरती के पश्चात् होंय, और ग्रीष्म के सुख हैं शीतल भोग, औलाई, फूल श्रृङ्गार विशेता से तथा समय समय पुष्प कुञ्जन में जलयन्त्र, फुहारे आदि उसीर कुञ्ज खमखाने अष्टप्रहर पंखा से पवन करानौ, चन्दन यात्रा के पदन कौ कीर्तन तथा आज राजभोग में सत्तू सखरे में श्रीखण्ड आदि धरनौं, तथा निखरे में भुने सत्त् के लड्डू भोग धरनौ, आज से ही ग्रीष्म भर शर्बत, ठण्डाई, ऋतुफल सहित भोग धरनौ तथा श्री हित प्रभू को जन्मोत्सव वैसाख लगते ही रासमण्डल एवं श्रीजी के मन्दिर में प्रारम्भ होजाय, नित्य, नवीन मगल, बधाई गान होय, वैसाख कृष्णा दोज से मन्दिर में श्रीसेवक वाणी जी प्रारम्भ होजांय, तथा वैसाख कृष्णा सप्तमी, से हित मण्डल पर सेवक वाणी जी होंय वैसाख सुदि ८ से चार दिन पर्यन्त चाव की सवारी सन्ध्या उत्थापन समय श्री राधाकृष्ण के स्वरूप सखीन सहित सजधज निशान, झण्डीन के वाजे गाजे साज समाज के साथ श्री हित मण्डल पै जाय वहां चन्दन पुष्पमाल तथा प्रसाद वितरण करनौ अति लाघव और कम से कम केवल चाव के खर्च में ६०) कौ खर्च है। विशेष जो होसके तो बहुत ही अच्छौ है, वैसाख सुदि १० कौ हितमण्डल पै जागरण, ढाढीं भाँड नृत्य समाज, बधाई, वंशावली आदि उच्चार तथा, ग्वाल मण्डला, रसिक मण्डली कौ होय, प्रातः वैसाख सुदि ११ को अरुणोदय-जन्म समय श्रीमन्दिर में मंगला पै ही समाज किंचित्दधिकांदौ, और पंचामृत (दूध, दही, घृत, मधु, बूरौ जलादि से) से श्रीराधावल्लभ जू सहित मुरलिका कौ स्नान करानौ, श्रृङ्गार समय कलस पंचपल्लव, वन्दनवार कई प्रकार की, केला चौडंडी मंडप में विराजमान पीत वागौ धारन आभूषण कुछ

विशेष धारण भोग में अनेक पकवान लड्डू मुठिया ४ सेर के, लड्डू मगद ४ सेर के, लड्डू बेसन ४ सेर के, तथा मठरी ४ सेर की, मीठे सेव ५ सेर के, सकलपाड़े ४ सेर के, नौन की मठरी २ सेर की. मोहनभोग विशेषता में इच्छानुसार परन्तु उक्त लिखित आवश्यक है, विशेषता कौ नियम नहीं आज सन्ध्या को औलाई नहीं होय. जामा ही धारन होय, शृङ्गार के पीछे सेवाधिकारी श्री निज मन्दिर के द्वार पर दौनों ओर पहिले श्री प्रियाजी की ओर,गोवर पान, सात २ सींक सवाँर के साथिये स्थापित करै, वन्दनवार द्वार तथा जगमोहन तथा वाहर के द्वार पर बँधैं श्रीहित प्रभू कौ अभिषेक पंचामृत केलपत्र मण्डप कलश पञ्चपल्लव धरे जाँय, भोग राग यथा विधि।

श्रीअक्षयलाल जी कौ वैसाख सुदी ३ अक्षय तृतीया, वाजार वाले श्रीरूपलालजी कौ वैशाख वदी ७ श्रीमुकुटमणिजी कौ वैशाख वदी १४, श्री प्रेमलालजी कौ वैसाख सुदी ५, श्रीलाड़िलीलालजी महाराज कौ वैशाख सुदी ११ कौ जन्मोत्सव होय ।

ज्येष्ठ।

जेष्ठ कृष्णा १ को श्रीहित प्रभू की छठी उत्सव सखरे में यथा शक्ति विशेष रूप से खीर, दुग्धपाक, श्रीखण्ड याही भाँति दशूठन उत्सव जेष्ठ बदी ५ को और जेष्ठ कृष्णा ९ को बनविहार की परिक्रमा, श्री वनकी रात्रिसैन पीछे समाज सहित-सैन में नित्य नेम से कुछ अधिक भोग दूध, लड्डू आदि पूरी आज समाजीन को विशेष व्यालू मिलै, जेष्ठ शुक्ला ११ आज जल विहार उत्थापन से सन्ध्या आरती तक जगमोहन में श्रीयमुना जी भरें फुहारे विशेष रूप से चलैं, समयानुसार पुष्प कुञ्ज या नौका खण्ड वनै,

श्रीजी महाराज विराजमान होंय समाज में प्रथम सुन्दर पुलिन सुभग सुख दायक, यह पद होंय, शीतल भोग विशेष रूप से तथा भीजीदार मूँग और चना की, वँधवा दही, खस्ता कचौरी, नोंन की टिकिया दाल आदि भोग-जलविहार के पद होंय। श्री आनन्दलाल जी को जेठ वदी १ श्रीहितजीवनलालजी कौ ज्येष्ठ वदी ३ कौ जन्मोत्सव होय।

आषाढ़।

आषाढ़ वदी पञ्चमी को श्री हित रूपलालजी महाराज अधिकारी कौ जन्मोत्सव होय। और अषाढ़ वदी ३० को श्री सुकुमारीलाल जी (अधिकारी) कौ जन्मोत्सव होय। आषाढ़ शुल्का दोज को लाल वागो धारण बिछवाई विछौना आदि शीतल भोग जलविहार के समान समाज में रथ यात्रा के पद रथ चढ़ि आवत साँवरौ, होय, तथा आज से मल्हार के पद समाज में प्रारम्भ, शृंखलावद्ध प्रथम श्रीहित जू की मल्हार-फिर अनेक वर्षाऋतु में झूलन तक वर्षा होने पर शीतल भोग विशेष फूल शृङ्गार आज ही तक होय, आषाढ़ सुदी १५ श्रीगुरु पूजा धूप, दीप, नैवेद्य, श्रीफल और भेट करें, प्रघट में श्रीगुरु सन्मुख न होंय, तो चित्र सेवा कर भेट मनीआर्डर द्वारा भेजै और पूनौं ही से श्रीसेवक चरित्र की कथा तथा ११ से शुल्का ३ पर्यन्त श्री सेवक-बधाई शृङ्गार समय होय मोहन भोग ऽ१ सेर या ऽ।। सेर कौ अधिक भोग लगै और सबको तथा समाजियों को वितीर्ण होय. किंचित अमनियां समाज में वाणी जी के भोग को लड्डू पेड़ा आदि नित्यप्रति और श्री हिताचार्य और सेवक जी कौ पूजन भोग यथा शक्ति चित्र सेवा।

श्रीदामोदर वर प्रभु कौ आषाढ़ पूनौ, श्रीकमलनयनजी कौ आषाढ़ बदी ५, श्री रूपलालजी अधिकारी कौ आषाढ़ बदी ५, श्रीविहारीलालजी कौ आषाढ़ बदी ६, श्रीदंपत किशोरजी कौ आषाढ़ बदी ६, श्रीकुञ्जलालजी कौ आषाढ़ बदी १०, श्रीहरिलालजी कौ आषाढ़ बदी ३०, श्रीं सुकुमारीलालजी कौ आषाढ़ बदी ३०, श्रीनवनीतलालजी कौ आषाढ़ सुदीं १, श्री गोपीलालजी कौ आषाढ़ सुदी ५, श्री परमानन्दजी महाराज कौ आषाढ़ बदी २, श्रीविलासदासजी कौ आषाढ़ सुदी १३ कौ जन्मोत्सव होय ।

श्रावण

श्रावण कृष्ण ३० हरियाली-हरी पोशाक धारण-श्रावण शुल्का २ सिंधारौ उत्सव थोड़ो अमनियाँ सिंधारे कौ तथा मेहँदी, रोली, अतर, फुलेल, मौली, कलायौ, कंघी, प्यालौ, दर्पन तथा नवीन पोशाक, यदि सब तैयार न हो सकें, तौ सारी और पाग ही यह सब वस्तु सेज्जा समीप सैन समय राखी जाँय और मेहँदी धारण हिंडोला के स्तंभ पुष्यनक्षत्र में स्थापित करनौ, रात्रि में सिंधारे मेहँदी के पद सैन समय कीर्तन में-सिंधारे अमनियां की विधि—ऽ२ सेर फैनी, ऽ२ सेर घेवर, ऽ२ इमरती, ऽ२ वालुशाई,ऽ२गुझिया, बड़ी मठरी मीठी ऽ२ लड्डू नुक्ती ऽ२केऔर मुठिया के ऽ२के सेव ऽ१ सकलपाड़े ऽ२ तथा नौंन को मठरी, सेव एक-एक सेर, इन सब में थोड़ी-थोड़ी चीजें तथा ऋतु फलन के साथ सिंधारे भोग में सैन में पधरानौ तथा याही सिंधारे कौ सब अमनियाँ संध्या के दोनों भोगन में झूलन के समय दिन सात तक भोग में आवै-झूलन में ऽ५ सेर के पूआ नित्य भोग लगें, झूलन-श्रावण शुल्का ३ को संध्या उत्थापन से सन्ध्या आरती पीछे तक झूलन होय, सवेरे

शृङ्गार से राजभोग तक सेवक जू की बधाई श्री सेवक जू कौ जन्मोत्सव, ८४ सेर को मोहन भोग सो समाज में राजभोग में वितरण होय, श्रावण शुल्का में झूलन समयानुसार नित्य नवीन घटा, लता-पता आदि सजै। जैसी घटा होवे वैसी पोषाक वैसी ही पोशिश छत पिछवाई-विशेष खर्च में विशेष-उपरोक्त सिधारे कौं अमनियां दिन सात कौ होय, अब अष्टमी या नौमी को दूसरी सेवा परिवर्तन से सेवावारे पुनः सात दिन के लिए उपरोक्त विधि या किंचित् न्यूनाधिक सिधारा कर नित्यप्रति झूलन के भोग दोनों में मालपूआ के साथ धरैं झूलन में नित्यप्रति पोषाक धारन होय, सन्ध्या आरती पीछे झूलन के बाद औलाई के दर्शन भीतर होंय, श्रावण शुल्का ११ को पवित्रा दोनों समय धारण होवै और शुल्का १५ में रक्षाबंधन राखी दोनों समय धारण—

श्रावण शुल्का १५ में सन्ध्या आरती पीछे झूलन समाप्ति जन्माष्टमी की बधाई प्रारम्भ। 'आनन्द आज नन्द के द्वार' प्रथम।

श्रीमोहनलालजी महाराज को श्रावण बदी २, श्रीचतुर-शिरोमणिलालजी कौ श्रावण बदी ७, श्रीहितलालजी कौ श्रावण बदी ८ श्रीमुकुन्दलालजी कौ श्रावण सुदी ३, श्रीजगदीशलालजी कौ श्रावण सुदी ११ को जन्मोत्सव होय।

भाद्रपद

प्रथम श्रीहितप्रभु कौ पद फिर लाल जी की छटी पर्यंत बधाई-अष्टमी को भी जन्म बधाई गान नृत्य, नन्दोत्सव भादौं कृष्णा ९ को-शृङ्गार समय (हितोत्सव की भाँति) केलाखम्भ मण्डप, बन्दनवार, बाहर-भीतर, पंचामृत, ८ सेर दूध दही ३ सेर बूरा थोड़ा-थोड़ा घी सहत से कलश पञ्चपल्लव शृङ्गार समय कौ अमनियाँ-गुझिया छोटी ३ सेर की, गद्दी

छोटी ३ सेर की बड़ी गुझिया और गद्दी २ सेर, लड्डू मुठिया दो सेर के, लड्डू बेसन दो सेर के, मठरी २ सेरकी, मखाने पगे भये, मिगी पाग, चिरोंजी पाग, गोलापाग, बादाम एक-एक सेर के, सोंठ की गोली ऽ। भर की, पंजीरी मैदा की ३ सेर, धनियाँ की १ सेर, राजभोग में पूरी, कचौरी, दहीबड़ा, अचार मुरब्बा इत्यादि निखरौ भोग लगै । शृङ्गार पीछे हितोत्सव की तरह साथिये स्थापित-सन्ध्या को आज भी औलाई नहीं पीतवा ौ ही धारण होय-भाद्र कृष्णा १३ कुंलालजी की छठी कछू पकवान पहिले अमनियाँ में से शृङ्गार में भोग धरनौं, राजभोग में सखरौ विशेष, खीर कढ़ी, पकौड़ी, पीत भात, मोहनभोग इत्यादि यदि भादों में अधिक मास पड़ जाय तो श्रीदामोदरवर जी महाराज की हस्तामल वाणी कौ यह निर्देश माननीय है ज्यों भगवान की दोय अष्टमी भादों की पन्द्रह दिनके अन्तर सौं उत्सव करै बीच लौंद आवै तो मध्य न मानै, काहे तैंजु व्रज में प्रगटे हैं जुगल नाम अरु जहाँ जुगल तहाँ विहार। सन्ध्या पीछे श्री प्रिया जू की बधाई, 'चलौ वृषभानु गोप के द्वार' से प्रारम्भ होय, प्रिया जू की छठी ताईं भाद्र शुल्का १३ तक होय, भादौं शुल्का ५ से चाव श्री हितोत्सव की भाँति चार दिन पर्यंत श्रीहित मण्डल में जाय और अमनियाँ या प्रकार—लड्डू मुठिया ४ सेर के, लड्डू बेसन ५ सेर के, गुझिया छोटी ५ सेर की, गद्दी छोटी ५ सेर की गुझिया बड़ी २ सेर की, सेव मीठे ५ सेर के, सकलपारे ४ सेर के, मठरी मीठी ४ सेर की, पाग ५ प्रकार के सवा-सवा सेर खांड़ के, गोला मखाने, मिगी, बादाम, चिरोंजी आदि पँजीरी मैदा की ५ सेर की, पँजीरी धनिया की ३ सेर की, धनियाँ की गोली ३ सेर की, सोंठ की १ सेर की, नौंन की मठरी २ सेर की, सेव नौंन के २ सेर के, 'अधिकस्य अधिकं फलम्' भाद्र शुल्का ७ को

लाल पोषाक धारण, आज भी औलाई नहीं होय, जामा धारण और शयन समय चौडण्डी केला कौ मंडप बंदनवार आदि बधे आज शयन आरती पीछे एक घड़ी तक दर्शन होंय। आरती पीछे नवीन पुष्प पोंहची और चिबुक बेसर धारण होय. याही समय ढ़ांड़िन-ढ़ांड़ी की हाजरी नृत्य बधाई श्रीजी के सम्मुख जगमोहन में होय और न्यौछावर रुपया १।।) या २) और दुपट्टा दो, तिलक श्रीफल से ढ़ांड़िन तथा ढ़ांड़ी के होय, जाकी सेवा नहीं होय वह खाली दो दुपट्टा ढ़ांड़ी-ढ़ांड़िन को तिलक कर नारियल दो देकर सेवा वाले के पीछे उढ़ावें, पश्चात् ढ़ांड़ी और समाजी ब्यारू आदि सो निवृत्ति हो रात्रि भर जागरण, नृत्य बधाई करें। अरुणोदय के समय मङ्गला आरती, पीछे कुछ जन्मोत्सव कौ दधिकांदों, समाज ऊपर चौतरा जगमोहन पै होय। पञ्चामृत सों (दूध. दही, मधु, घृत, बूरो) स्नान, शृङ्गार पीछे दधिकादों राजभोग आयबे पै गोस्वामियों को दधिकादों दही, दूध कम से कम १।ऽ सवा मन (आज कल तो दश मन दूध दही का होय हरिद्रा, ऽ२ सेर तथा चन्दन केशर मिश्रित बँधा दही "अधिकस्य अधिकं फलम्" राजभोग पहिले ही सेवाधिकारी द्वारा कृष्ण जन्मानुसार साथिये धरे जाँय । दधिकादों समाज सहित श्रीहित मन्दिर, श्रीवनचन्द जू कौ डोल, श्री सेवाकुञ्ज होतौ भयौ श्रीहित मण्डल पै जाय फिर श्री यमुना स्नान कर चाव की तैयारी होय चाव की अपूर्वशोभा होय क्यों कि आगे श्रीहित प्रभु की चाव पीछे श्री स्वामी हरिदास जी की चाव हरिवंशी हरिदासी जी के मिलन कौ स्मरण करावै। औलाई आज भी नहीं होय आज श्री राधाष्टमी को ही अधिकारी

श्रीकिशोरीलालजी महाराज को जन्म दिन है। भाद्र कृष्णा १३ को श्रीप्रियाजी की छटी, श्रीकृष्ण छटी अनुसार अमनिया तथा खीर विशेष होय, आज ही के दिन श्रीहित प्रभू के चित्र की प्रतिष्ठा भई सो हित जू को पाटोत्सव जाननों केलिपत्र वंदनवार सजानों हित प्रभू को पञ्चामृत स्नान, अमनियाँ भोग कलश पंचपल्लव स्थापित, भाद्र शुक्ला १५ से संध्या पीछे साँझी के पद। श्रीगोपाललालजीकोभादों वदी ९ श्रीवल्देवलालजीमहाराज को भादों सुदी ६, श्रीकिशोरीलालजी अधिकारी को भाद सुदी ८, श्री दयासिन्धुलालजी को भादों सुदी १५ का जन्मोत्सव होय।

आश्विन।

प्रथम 'बन को लीला लालहिं भावै" समाज में यह पद होय साँझी दिन १५ तक फूल तथा रङ्ग की जैसी हो सकै बनै बनाने वारे और खर्च आधीन है यासे याको खर्च अकृत है। आश्विन शुल्का १० को जवारे धारण पोशाक लाल भारी शृङ्गार समय समाज में श्रीहित महाप्रभू को पद प्रथम होय खेलत रास रसिक ब्रज मंण्डल। ऽ१ सेर को मोहनथार, आश्विन शुल्का १५ को संध्या आरती पीछे बाहर चौदंडी में शरद में विराजें-शयन पर्यन्त श्वेत पोशाक धारण तथा चंदोबा पिछवाई श्वेत, संध्या आरती पीछे समाज में शर्द के पद मोहन मदन त्रिभंगी होय, याही पद में जब देखत मधुकर केली तब परदा आयें वंशीजी गद्दी पै विराजें पुनः दर्शन खुलें फिर शैन भोग आयें। भोग में कम से कम १।ऽ सवा मन दूध, मलाई ऽ१ सेर तथा चन्द्रका ऽ७ सात सेर की मोमन की बूरो पूरित दूध में सुगन्ध इलाइची। (आज से औलाई नहीं होय और पंखा ऋतु अनुसार जब तब होय नहीं तो बन्द ही हो जाय) बजार वाले

श्री किशोरीलालजी की कार वदी ८, श्री जीवनलालजी की कार बदी १०, श्री चन्द्रलालजी कौ कार सुदी १०, श्रीमनोरथ-लालजी कौ क्वार सुदी ३, श्री राधालालजी कौ क्वार बदी ३ कौ जन्मोत्सव होय।

कार्तिक।

याही भांति कार्तिक कृष्णा २ दूसरी शरद। आज सब पोशाक श्वेत, पाग सुर्ख [लाल] धारण होय और सब विधि पूर्णिमा की आज मुकुट धारण नहीं होय समाज में श्री हित प्रभू की स्फुट वाणीजी की पद, लाल की रूप माधुरी होय, याही पद में जब सप्त स्वरन कलयते मुरलिका बरखी, याँही परदा आयकें वंशीजी अपनी गाद्दी पर विराजें,कार्तिक वदी १४ तथा मावस दीप-मालिका विशेषरूप से दीपदान, श्वेत जरी की पोषाकधारणहटरी में विराजें और चौपड़ दोनों वखत विछै,खेल पद होंय। अन्नकूटकी तैयारी ५ पंचमीमे ही होय विशेषसामिग्री बनैं वाकी सूचीविधि पूर्वक विशेषतासों नहीं लिखी। अन्नकूट में सुनहरी जरीकी पोशाक धारण होय। सभी तरह के पकवान, सब दालन के, अन्दाज कम से कम ३ऽ मन घृत, ४ऽ मन खाँड, ३।ऽ मन मैदा, बेसन १ऽ दार पन्द्रह सेर सब प्रकार की दूध तर खोआ की वस्तु कम से कम सवा-सवा सेर सभी भाँति की तथा आठ दस वस्तु तिल की गजक. रेवड़ी आदि तथा पोनाल इलायचीदाने तिनड्नी आदि तथा गुड़ की वस्तु पूआ आदि में ।ऽ सेर गुण सब भाँति के साग, अचार, फल, बरा पकौरी तथा सखरे की सब सामिग्री विशेष रूप से वाही दिन बनैं सखरे निखरे की सभी सामिग्री। पकवान आदि प्रथम से बनैं-अन्नकूट कौ भोग खर्च बहुत [विशेष] है करने ही से मालूम होय है। यद्यपि अन्नकूट कौ उत्सव निर्णय आदि

सम्प्रदाई ग्रन्थों में लेख नहीं है परन्तु १०० वर्ष से प्रचलित देश कालानुसार है और व्याहुलो भी वा दिन होय यह अन्नकूट व्याहुले की पंगत रूप में होय सो जाननो। शृङ्गार पीछे निखरी सामिग्री सब भाँति की, अचार, साग, फल सहित जगमोहन में तखत बिछोनान पै सजाये जाँय राज भोग सखरौ में भीतर नित्य के समान विशेष रूप से भीतर भोग लगैं पीछे दर्शन खुलैं, आरती राजभोग ४ बजे पीछे तक होय, रात्रि को उत्थापन बाहर ही चौदंडी, केलावृक्ष, मडप में विराजैं, संध्या आरती पीछे विवाहोत्सव होय, विवाह और अन्नकूट समय सुनहरी जरी की पोशाक धारण होय, व्याहुले के समय गठजोड़ौ सेहरौ मौर मौरी के दर्शन होंय और दोनोंन के तिलक होंय। नव दूलह दुलहिन कौ तिलक करनौ प्रत्येक सेवक को अवश्य कर्तव्य है। कलश पंचपल्लव तथा व्याहुले के पद समाज में अनेक बाजे बजैं कछु अग्नि क्रीड़ा कुल्हड़ महताब चरखी आदि चलाई जावें, या उत्सव को मनोर्थ विशेष रूप में चाहैं जब होय किन्तु लाल या पीत रंग की या काले रंग की छोड़ कोई रंग की नवीन पौशाक अवश्य मनोरथ व्याहुले में होय और अमनियां बूँदी के लड्डू, कचौरी, इमरती, बालूसाई आदि न्यौछावर. तिलक केला बन्दनवार, समाज बाजे आतिशबाजी आदि सब व्याहुले की भाँति मनोरथ में भी होंय, कार्तिक वदी ३० को श्री गो० रसिका नन्दलालजी को जन्म दिन है, और कार्तिक शु० ५ को श्रीगुलाब लालजी कौ जन्म दिन है, कार्तिक शुल्का अष्टमी गोपाष्टमी में लकुट मोर पखा कौ नटवर भेष के दर्शन दिन में हीं होंय, तथा भोग में शृङ्गार, उत्थापन में पकवान और लड्डू आदि। कार्तिक में मावस को ग्रहण आदि समय के संकोच में व्याहुलो होय तो अन्नकूट गोपाष्टमी आदि कोई दिन करै अन्नकूट के दिन पुनः श्रद्धानुसार व्याहुलो होय, कार्तिक शु० एकादशी देवोत्थान

के दिन चौक में गेरू-खड़िया से चौक काढे जांय, संध्या को चार पींड़ा खड़े कर सिघाड़े आदि धरे जांय विशेष दीपदान होय कार्तिक शू० १३ को कई उत्सव होने से सब उत्सवन को तिलक उत्सव है, आज ही श्री राधावल्लभलालजी कौ पाटोत्सव होय और आज ही श्री बृन्दावन कौ प्राघट्य दिन है. और श्रीसुन्दर बरजी कौ जन्म उत्सव भी मानौं जाय और श्रीवनचन्दजी तथा और आज तक जितने अधिकारी गद्दी पर विराजे सबकौ तिलकोत्सव दरबार आज ही भयौ और होय है। शृङ्गार में केला वंदनमाल मंडप हटरी में ही हितोत्सव समान पंचामृत स्नान सथिया आदि होंय भोग में मोहन थाल ३ सेर कौ २ सेर के लड्डू, २ सेर की बूँदी, २ सेर की मठरी आदि लगै, सब को और समाज में बटै पूनौ तक यथा शक्ति दीपदान होय और श्रीगोवर्धनलालजी कौ का० बदी २, श्रीमोहनचन्द्र प्रभु कौ का० बदी १०, श्री कृपासिंधुलालजी कौ का० बदी ११, श्रीरसिकानंदलालजी कौ का० बदी ३०, श्रीगोवर्धनलालजी कौ का० सुदी १, श्रीगुलाबलालजी कौ का० सुदी ५ श्रीहितानन्दजी कौ का० सुदी ८ कौ जन्मोत्सव होय।

अगहन।

अगहन ब० २ को गोस्वामी श्रीहितकीर्तिलालजी श्रीहित गो० कीर्तिकुमारजी कौ जन्म दिन होय है,मार्गशीर्ष कृष्ण छट्टको छींट छट्ट होय आज से छींट के बागे रजाई दुशाला मोजा,हस्त चरण में धारण होंय,हिम ऋतु कौ शृंगार होय। मार्ग शीर्ष कृ० २से माघ सु० ४ तक-समाज में रात्रि में श्री व्यालीस लीला होंय एवं द्वादशयश कौ पाठ होय, छींट छट्ट "सेवा बिचार" 'या उत्सव बोध' में नहीं लिखी ऋतु अनुसार भोग, राग, शृङ्गार आदि होंय तथा कमोष्ण "गुनगुने" जल से स्नान होंय, और

नारद पञ्चरात्रि तथा तंत्रोक्त 'नित्योत्सवो नित्य सौख्यो नित्य श्रीर्नित्य मंगलः' नित्य ही समय समय उत्सव हैं, शय्या कौ आनन्द उत्साह नित्य नवीन नवीन प्रेम से ही है, जो जो जैसे जैसे प्राण प्रिय श्री प्रियालालजू कौं लड़ावें यासे केवल प्रेम ही की मात्रा परम पूज्य प्रथम आराध्य है. अगहन सु० १० को गो० श्रीगोविन्दलालजी कौ जन्म दिन है, मार्गशीर्ष शु० १२ को व्यञ्जन द्वादशी होय प्रचलित अनेक प्रकार के सखरे निखरे भोग धरे जाँय, शीत ऋतु उपचार अग्नि अँगीठी भी शृंगार एवं सन्ध्या आरती पीछे सन्मुख धरी जाय श्रीकन्हैयालालजी कौ अगहन ब० ४, श्रीहित कुमारजी अगहन व० ५, श्रीसुखलाल जी कौ अगहन व० ३०, श्रीमनोरथलालजी कौ अगहन सु० १२. श्रीगोविंनलालजी कौ अगहन सुदी १० कौ श्रीराधेश-लालजी (युवराज) कौ अगहन सु० १४ कौ जन्मोत्सव होय हैं।

पौष।

पौष वदी ४ को गो० श्रीहित लालजी को जन्म दिन है पौष शु० २ से माघ शु० १ तक एक मास बड़े प्रातःकाल खिचड़ी कौ भोग लगै, खिचड़ी के शीत समय के भावनामय पद बड़े प्रातः समाज में होंय, खिचड़ी अति ही विचित्र अपूर्व श्रीराधावल्लभजी की प्रसिद्ध है, सो मंगला से पहिले भोग लगै और मंगला में नित्य नवीन फरगुल धारण कराई जांय और कई अपूर्व अनिर्वचनीय झांकी सुरतान्त चिन्हन कू छिपायवे के भाव की होंय वा समय कौ सुख देखे ही वनैं बड़ी भीड़ होय। खिचड़ी की विधि—कई दिन पहिले बड़ी विधि से दार मूँग की बनाई जांय, सवेरे के समय नित्य मामूली खर्च ५ सेर खिचड़ी की है तामैं घी, मेवा अधसेरी सेर के हिसाब से खिचड़ी होते में पड़े मेवा में लाल दाख छुहारे, बादाम पिस्ता ,गिरी तथा केशर

सुगन्ध आदि अनेक मसाले सौंफ, धनिया. लोंग, मिर्च काली पड़ें, खिचड़ी की विलक्षणता और भोग की अपूर्वता वर्णन नहीं हो सकै, याही भाँति मीठी खिचड़ी भी नित्य भोग लगैं, निखरे में अनेक भाँति के साग, अचार,.मुरब्बा, चटनी, अद्रकछूल्ला तथा दहीबरा, पापर कई भाँति की कचरी, रबड़ी, मलाई, फल मेवा, फैनी, घेवर, गजक तथा केशर मिश्री मिश्रित गर्म दूध, माखन, मिश्री आदि अनेक वस्तु तथा अनेक प्रकार के लड्डू आदि पकवान भी वाही समय भोग में पधराये जाँय। खिचड़ी में वस्त्र के बंगला गर्म में विराजें. बड़ी अपूर्वता कौ सुख या ऋतु के अनुसार भोग दर्शन समाज कौ रहै. सब को प्रसाद किनका नित्य मिलै, विशेष समय से दिनप्रति खिछड़ी बढ़ै। ५ सेर से ३० और ३५ सेर की नित्य होय, विशेष खर्च में दोनौं एकादशीन कूं विशेष पंगति खिचड़ी की राजभोग में होय मीठी खिचड़ी भी अलग होय। गो० श्री हितलालजी कौ पूष बदी ४, गो० व्रजभूषणलालजी को पूष बदी ३० कौ जन्म है।

माघ।

माघ सुदी २ को केशरी मोहनभोग ३ सेर कौ और रबड़ी मलाई, फल, माखन, मिश्री, मेवादि वस्तु मंगला में भोग लगैं समाज में भी मोहनभोग के पद गावें, और ऋतु अनुसार इकलाई में दुशाला ही सेवा में रहें टोपा और दुशालन के अपूर्व दर्शन होंय, वाही दिन श्री गो० मोहनलाल जी महाराज कौ जन्मदिन है सो मङ्गल वधाई 'वारी कौ भँवरवा' पद होय, खिचड़ी पड़वा तक भोग लगैं, आज उत्सव समाप्ति होय। माघ सु० ४ को बसंती बँगला में विराजें। माघ शु० ५ को शृंगार समय बसन्त उत्सव, बसन्त धारण, कलस धरनौं, बसन्ती पोशाक शृंगार विशेष होय। आज से मोज़ा, रजाई अँगीठी नहीं धरी

जाय और गुलाल सब रंग के धरे जांय। आज से शृङ्गार और सन्ध्या आरती पै किंचित् गुलाल उड़ायौ भी जाय। वसन्त के पद दोनों समय समाज में होंय, वसन्त को ४ सेर के मालपुआ तथा केशरमय लड्डू, बालूसाई आदि पकवान शृङ्गार में और वसन्ती मोहनभोग पूरी, कचौरी आदि राजभोग में आरोगें। सेवाकुंज में सन्ध्या को समाज होय। माघ सु० १५ सन्ध्या को होली डांडे कौ पद, आज से होरी धमार कौ समाज प्रारम्भ होय। श्रीकृष्णचन्द्र प्रभु कौ माघ सुदी ६, श्रीराधारंजनजी कौ माघ सुदी १२, श्रीब्रजजीवनलालजी कौ माघ सुदी १४ कौ जन्मोत्सव होय।

फाल्गुण

फा० कृ० ११ को श्री मानसरोवर में समाज जागरण होय फाल्गुण बदी १३ को गो० श्रीभजनलालजी कौ जन्मोत्सव होय। शिवचौदस को जोगिया छदम समाज में होय। फागुन सु० २ फुलैरादोज से रंगदार बेल बूटा फूल आदि चित्रित चौडंडी में विराजें. शृङ्गार समय आज से फैंट गुलाल की धारण करैं और राजभोग दिन में तथा रात्रि कूं शयन भोग में फेंट उतर जाँय दोनों समय, शृंगार में पूआ ३ या ४ सेर के और पकवान आदि भोग में आमैं, शृंगार अधिक होय, गुलाल अधिक उडै, थोड़ो रंग भी घोलौ जाय। पोशाक रंगमगी हलकी सफेद धारण होय, सेवाकुञ्ज में समाज होय और छदम लीलान की समाज दशमी तक होय। रंग भरी एकादशी को सवारी बड़ी भारी लवाज में से शहर भर में निकलैं। फा० सु० ११ से सन्ध्या समय से बाहर विराजें पूनौं तक खूब गहरौ रंग गुलाल कौ खेल होय धूप उत्थापन केपीछेसे सन्ध्या भोगतक नित्य एकादशी को सन्ध्या आरती के पश्चात

समाज में गो० श्रीकिशोरीलालजी कौ पद रंग रंगीले दोऊ नव-निकुञ्ज मेंहोयकै परदा आजायें और श्रीजीमहाराज भीतरपधारें, दर्शन खुलें पीछे शयन भोग आवें ब्याहवले में हमेशा शयन आरती जगमोहन में ही होंय। एकादशी को सन्ध्या आरती पीछे व्याहुलौ होय, प्रथम अन्नकूट के व्याहुले की भाँति सब विधि दूधाभाती चौडंडी केला वन्दनमाल समाज वाजे तासे आतिशबाजी भोग में पकवान आदि तिलक, न्यौछावर कलस स्थापन पञ्चपल्लव आदि धरे जाँय, व्याहुले में श्रीजी कौ तिलक सब सेवक मात्र को करना चाहिये होली के नित्य खेल में भोग में ५ सेर के पूआ, लड्डू इमर्ती, बालूसाई, सेव, मठरी, घेवर, सकलपारे आदि दोनों भोगन में पधराये जाँय। मनोरथ से प्रातः भी खेल होंय और धूप शृङ्गार आरती बाहर होंय और शृङ्गार से राजभोग तक खेल खूब गहरे रंग गुलाल कौ होय समाज में धमार होंय, तेरस या पूनौं को प्रातः मनोरथ के खेल में निकुञ्ज बनें और प्रिया प्रियतम के अर्द्धाङ्ग के दर्शन अद्भुत होंय, राजभोग में नित्य भीतर पधारें राजभोग आरती भी भीतर होय, नित्य खेल में अनेक रंग के मनन गुलाल उड़ जाँय, कीच आँगन में होंय, सब मन्दिर रंगमँगौ होजाय, होली कौ रंग खूब धोने पर भी महीनों पीछे तक रहै, होली के प्रातः धूल डोल होय, तिथि निर्णय में गड़बड़ होने पर भी दिवाली भोर अन्नकूट और होली भोर डोल होने कौ नियम चलौ आवै डोल पत्ती मोरछली की और फूलन के फल झब्बान से सुशोभित होय, लाल पोशिष और गुलाबी पोशाक धारण होय, मेहँदी तथा पूर्ण विशद शृङ्गार होय दिन में धूप शृङ्गार और सन्ध्या को धूप सन्ध्या आरती बाहर होंय। डोल झूलन के दर्शन बड़े अद्भुत एक साल में अनूठे अद्वितीय होंय, शृङ्गार पीछे गौरी में 'प्रथम यथामति प्रणाऊँ श्रीवृन्दाबन

[अ]तिरम्य' ये पद २।। या ३ घन्टे में जम के होय जब पद [ह]ो जाय तभी राजभोग आरोगने भीतर पधारैं किंचित [गु]लाल की थाली सन्मुख रहै और 'कामिनि वन्दन धूर' [त]क आवैं तब खल्प उड़ायौ जाय आज भोग में मालपूआ [द]स सेर के दोनों समय तथा विशेष रूप से जलेबी, इमर्ती, लड्डू आदि भोग लगैं. राजभोग में आरती के दर्शन भीतर चौंडडी में होंय, सन्ध्या को धूप से सन्ध्या भोग तक डोल के पद हौंय, सन्ध्या आरती पीछे भीतर दर्शन होंय शयन तक। श्रीहीरालालजी कौ फागुन ब० ४, गो० श्री भजनलालजी कौ फागुन ब० १३ कौ. श्रीचन्द्रलालजी कौ फागुन बदी ३०, गो० श्रीहुलासलालजी कौ फागुन सु० २, श्रीगोपीनाथ प्रभु कौ तथा श्रीचन्द्रलालजी महाराज कौ फागुन सु० १५ कौ जन्मोत्सव होय

चैत्र ।

श्री वनचन्द्र महाप्रभु जी कौ जन्मोत्सव चैत ब० ६ कौ होय, पीत पोशाक धारण होय कुछ विशेष भोग।

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा नवीन संवत्सर को नवीन पोशाक, राजभोग में खीर आदि विशेष भोग। चैत शु० नौमी को लाल पीरी पोशाक श्रीराम जन्म वधाई समाज, में कछु विशेष भोग लगै। चैत शु० एकादशी को गुलाब के फूल (कम से कम २० सेर) और निवाड़े के फूल तथा पीत चमेली के फूलन कौ डोल बनैं, सन्ध्या को धूप आरती से शयन पर्यन्त गुलाव कि डोल में झूलैं, पद समाज भोग आदि होंय समाज में सन्ध्या आरती पश्चात फूलन कुंज गुलाब की यह पद गो० श्रीरूपलाल महाराज कृत होंय या पद की समाप्ती पर परदा आजायें वंशीजी अपनी गद्दी पै विराजैं पुनः दर्शन खुलैं, आज ही चैती गुलाव कम से कम ५ सेर का

गुलाबजल भीतर अपरस के भवका से उतरैं, जो ग्रीष्म के भोग शर्बत, खीर आदि में सेवा में आवै। चैत्र शुल्का १५ से श्रीहितोत्सव कौ मंगल पाठ श्रीसेवकवाणीजी कौ समाज करनौ, दोनों समय अर्थात् शृङ्गार और सन्ध्या आरती पीछें और याही पूर्णिमा कौं श्रीहितप्रभू के परम इष्ट गुरु श्रीराधिका महारानी जू ने पीपर पत्र में श्रीनिजमन्त्र श्रीहरिवंश गोस्वामी जू कौं दियौ। या उत्सव के उपलक्ष में श्रीहित के परमाराध्य श्रीराधिकावल्लभ जू कौं पीत वस्त्र धारण करानौ और शृङ्गार भोग में कछू मोहनथाल अधिक राखनौ और आज सौं ही एक मास चार दिन तक अर्थात् हित जू के दर्शन जेठ कृष्णा ५ पर्य्यन्त वधाई, कीर्त्तन करनौ-करानौ, आज से हित मण्डल पै हू सन्ध्या समय श्रीहित वधाई कौ समाज प्रारम्भ होय। श्रीहरिलालजी महाराज कौ चैत्र वदी ४, श्रीवनचन्द्र महाप्रभु जू कौ चैत्र बदी ६, पीत पौशाक धारण श्रीवृजराज-कमललालजी का चैत्र वदी १३ श्रीकीर्तिलालजी कौ चैत्र सु० ६ श्रीमाधवलाल जी कौ चैत्र सुदी ११ को जन्मोत्सव होय। समयानुसार यह विधि अति संक्षेप से लिख समाप्ति करी। और प्रत्यक मास की दोनों एकादशी एवं पूर्णिमा को दिन में मुकुट काछिनी और तुर्रा श्रीप्रियाजी और रात्रि में श्रीलालजी धारण करें और प्रायः मावस को ताज और श्याम पोशाक धारण करैं, याके अतिरिक्त अपने अपने गुरुन कौ उत्सव मालूम करके अवश्य यथाशक्ति करनौ उचित है। कम से कम श्रीहितोत्सव, सेवक उत्सव श्रीराधा अष्टमी एवं गुरु जन्मोत्सव तौ अवश्य प्रत्येक धर्मी को और अधिक मास आने पर यथाशक्ति वर्ष भर के उत्सव यथेच्छ करने उचित हैं।

गोस्वामी श्रीहित किशोरीलाल जी अधिकारी,
पौत्र श्रीकीर्तिलालजी गोस्वामी
मिन्दर १००८ श्रीराधाबल्लभजी महाराज, श्रीवृन्दावन धाम।

श्रीराधावल्लभीय सम्प्रदायाचार्य श्रीमद्गोस्वामी
श्रीहितकीर्तिलालजी (श्रीकीर्तिकुमारजी) महाराज
अवतरण विक्रम् संवत् १९८५ अगहन कृ० द्वितीया

श्रीहित कीर्तिलाल गोस्वामी

राग जोगिया–आसावरी

* बधाई *

माधव मास की उजियारी में ग्यारस अधिक सुहाई ।
रानी तारा भाग्य उदय की अनुपम हित निधि पाई ।
श्याम मिश्र सुत कौ मुख देखत मन में अति हरषाई ।
भूतल पै हरिवंशी प्रगटी रसिक जनन सुखदाई ॥
वृज युवतिनु के यूथ यूथ मिलि गावत सरस बधाई ।
सथिये सुभग द्वार पै राजें मोतिनु चौक पुराई ॥
कदली खंभ रुपाय चहुँदिश वंदनवार बँधाई ।
वेद गिरा की रिचा स्वरन लै गूंज रही शहनाई ॥
सजनी लाड़िलीलाल प्रिया की जग अपनावन आई ।
अहो भाग्य जो अंखियन परसी हित की सुन्दरताई ॥
धन्य द्यौस यह आयौ सजनी हिय आनन्द घुमड़ाई ।
वृन्दावन में रस की सरिता हित हरिवंश बहाई ॥
(जैश्री) रूपलाल हित हितानन्द की रजधानी मनभाई ।
श्रीहित कीरतलाल उमगि हिय गहकि बधाई गाई ॥

हित कीर्तिलाल गोस्वामी कृत

राग खम्बावती (त्रिताल)

आराध्यौ निज इष्ट रूप दुलरायकें ।
छक्यौ प्रेम रस मांहिं सहज हित गायकें ॥१॥

प्रगट कियौ रस रूप रसिक शिरमौर कौ ।
निरख बखान्यौ अूप विपिन वर ठौर कौ ॥२॥

श्री राधावल्लभलाल इष्ट प्रणतनि दिये ।
करि जीवन पर कृपा सरस कीने हिये ॥ ३ ॥

श्री मुख तैं जो कही सोई शिक्षा सरस ।
अबलौं गूंजत श्रवण हियैं दृग दै दरस ॥ ४ ॥

तिहिं प्रताप तैं अजहुँ सरस दिन दिन रहौं ।
साक्षात हित रूप सुयश कहाँ लौं कहौं ॥५॥

यह चतुर्थ अवतार श्री तारा नन्द कौ ।
पुनि प्रगट्यौ हित रूप श्रीहित आनन्द कौ॥६॥

धन्य धन्य ते जीव अहो जे हिय लगे ।
करि दर्शन बड़भाग रूप रस में पगे ॥ ७ ॥

श्री राधावल्लभलाल कृपा अब कीजिये ।
रूप आत्मज जान दान यह दीजिये ॥ ८ ॥
निज़ कर्मनि अनुसार जनम पाऊँ जहां ।
यौं हीं सेवा मांय तुम्हें पाऊँ तहां ॥ ९ ॥
(जैश्री) हितानन्द रजधानि रसिक जन भूप की
श्रीहित कीरतलाल शरण हित रूप की ॥१०॥

श्रीहित कीर्तिलाल गोस्वामी कृत—

सोरठा—हित रूप चरित की बेलि,
यह देखौ फूली फली।
प्रियतम प्रिया नवेलि,
पत्र फूल फल में लसैं ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

श्रीहरिवंश स्वरूप ही प्रगटयौ हौ हित रूप ।
पोष तोष कै रसिक जन किये रंक तें भूप ॥ १ ॥
बंश अंश हरिवंश के रूपलाल अवतार ।
श्री राधावल्लभलाल के पाये निज अधिकार ॥ २ ॥

सो हरिवंश स्वरूप अब प्रगट मिल्यौ हित रूप ।
त्राहि त्राहि सब करत हैं आजु रंक अरु भूप ॥ ३ ॥

चैत सुदी यमुना छटी कीन्हौं कुञ्ज पयान ।
विवस दियौ कातर भयौ करनहिं पायौ ध्यान ॥४॥

नैननि सौं सरिता बहै हियरा हीक उठात ।
सबहिनु कौं एसौ लग्यौ भयौ बज्र कौ पात ॥ ५ ॥

अपने भवनिनु छांड़ि कैं जुरि आये इकठौर ।
आजु रूपलालहिं मिलीं रजरानी सिरमौर ॥ ६ ॥

बेकल सबकौ हीयरा एपे भरयौ हुलास ।
पाछैं सौं आगैं बढ़त सरिता सागर पास ॥ ७ ॥

मंडल सब सूनौं लगै सूनौं सुख कौ पुञ्ज ।
मंदिर हू सूनौं लगै रूप विहीनी कुञ्ज ॥ ८ ॥

हियरा सौं पियरा गयौ सूनौं करि गयौ गेह ।
हा जियरा धियरा नहीं बिना प्राण मनु देह ॥ ९ ॥

ऊँचे ऊँचे स्वरनि लै बोलैं श्रीहरिवंश ।
अनुपम छवि हित रूप लखि होत संस सब नंश ॥१०॥

मानहुँ पावस रितु अबहिं आइ नैननि माहिं।
सजल मेघ वर्षत फिरैं कल काहू जिय नाहिं ॥ ११ ॥
यमुना जल सौं कलस भरि लाये विप्र समाज।
अंग पौंछ नूतन वसन धारे हैं गुरु राज ॥ १२ ॥
आवहु मिलकर हम सबै सतफेरी करिलैंहिं।
एक एक श्रीफल सबै चरणनि में धरि दैंहिं ॥ १३ ॥
नहिं आवै ऐसी घड़ी जैसी दृग दरसाय।
मस्तक अपनौं सफल करि धरि चरणनि चितलाय॥१४॥
रचना पुष्प विमान की कापै बरनी जाय।
रूप निकाई हंस की देखत मति बौराय ॥ १५ ॥
सकल सौंज सिंगार लै पुष्प विमान सजाय।
देखत गति मति सब हरी हितरूपलाल पधराय ॥ १६ ॥
अपने अपने चाव सौं सब हिन लिये उठाय।
प्रथमहिं मन्दिर द्वार पै श्याम रहे कछु गाय ॥ १७ ॥
सबतैं आगै रसिक जन गावत राधा नाम।
धन्य द्यौस यह जानिये जो पायौ हित धाम ॥ १८ ॥
पंचम स्वर सौं कर पटक चट्टा चौथ दिखात।
बृजवासिन की यह उमगि कापै बरनी जात ॥ १९ ॥
गुरू इष्ट हित दुहुँन की परिकरिमा करलीन।
पुनि अपने गृह द्वार कौं हित सौं आशिषदीन ॥ २० ॥

जग तारन जो कछु हुतौ मन में निज उत्साह ।
सो पूरन करिकैं चले वृन्दावन रस गाह ॥ २१ ॥
जावहु श्रीवनचन्द्रजू लावहु वेगि लिवाय ।
मन मेरौ जवहिं खिलै लैऊँ गोद बिठाय ॥ २२ ॥
आगैं श्रीवनचन्द्रजू मिले डोल की ओट ।
दै अशीष हिय चाय सौं लखौ छवीली जोट ॥ २३ ॥
परिदच्छिण कर कुञ्जवन हित मण्डल की ओर ।
जहाँ सेवक ध्रुवदास पर प्यारी अंचल छोर ॥ २४ ॥
गावत विशज बधावनौं सेवाकुञ्जन मांय ।
अष्ट अली हित रूप लखि फूली अंगनि मांय ॥ २५ ॥
मैं प्यारे संग चलत हौं अष्ट अलिन के बीच ।
आवत ही तुव रूप कौं लैहौं हिय विच भीच ॥ २६ ॥
हित सजनी जू करत हैं प्यारी सौं मनुहार ।
रूपअली कौ आगमन साजहू सुभग शृङ्गार ॥ २७ ॥
लै आवौ निजरूप अलि सादर कुञ्ज लिवाय ।
सुहृद अली कौं देखिवे मोमन अति अकुलाय ॥२८॥
मण्डल ही तैं चलौंगी रूप अली के संग ।
प्यारे कैसो सगुन यह फरकत बाँयो अंग ॥ २९ ॥
यमुना तट पर चलन कौ कीन्हौं प्रिया विचार ।
रूप अली लै संग पिय करिं हौं रास बिहार ॥३०॥

श्री सेवक वट के निकट दियौ सवनि विश्राम।
हित मय वृन्दा विपिन संग पाये श्यामा श्याम॥३१॥
वट हू लट छिटकाय कैं गहत रूप के पांय।
नेह नवेली ध्रुवअली मिलिवे भरी उमांय ॥ ३२ ॥
हित सजनी सब अलिन कू लेवौ आप बुलाय।
वृन्दा तुम हितरूप कौ देवौ अंग पलटाय ॥ ३३ ॥
वारि वारि पहुपाञ्जली लै आवौ तृण तोर।
मम दर्शन हित ह्वै रहे वाके नैन चकोर ॥ ३४ ॥
प्यारी अपने रूप पै रीझ रीझ बलिजांय।
नव निकुञ्ज की माधुरी कापै वरनी जांय॥ ३५ ॥
अगी सखी आरति करौ लै आवौ तृण तोर।
याही रस में मगन सब परिकर भयौ विभोर॥३६॥
हित अलि प्यारी कुंवरि कौं पुनि पुनि चेत कराय।
मदन टेर की ओर चलि काहे देर लगाय॥३७॥
रइत निच्त इतही सवै करत नित्त नई केलि।
कृपा रूप हित तैं लखै प्रियतम प्रिया नवेलि ॥ ३८ ॥
अपने ज़िय सौं जो कोऊ देखै जाकौ हीय।
सोई रसिक अनन्य है यह अज्ञा करदीय ॥ ३९ ॥
कृपा किशोरीलाल हित देवैं रूप लखाय।
विन्दु मध्य वारिद लखै कृपापात्र बलिजाय ॥ ४० ॥

वृन्दा सौं आज्ञा करी सुन्दर डोल बनाय।
तब झलकै मम रूप अति प्यारे संग झुलाय ॥ ४१ ॥
हरिवंशी कौ दरस करि रूप अली सुख पाय।
ह्वै अधीर भू पर गिरीं चरन कमल लिपटाय ॥४२॥
रवकि लई निज हीय सौं कर बर राख्यौ शीश।
प्राण प्रिया कौ दरस करि यह कहि दई अशीष ॥४३॥
हित सजनी जू प्यार सैं प्यारी तैं बतरात।
आईं हैं मम रुप अलि दर्शन हित अकुलात ॥४४॥
अहा अहा हित अली जू पुनि यह नाम सुनाव।
बिछुरे बीत्यौ काल बहु बेगहि मोहि मिलाव ॥४५॥
बेगहिं अलि सब मिलि चलौ मदन टेर की ओर।
सखियन सौं आज्ञाकरी रसमय उभय किशोर ॥४६॥
वृन्दा सजनी प्रिया सौं कहत रंगीली बात।
प्यारी तेरे रूप पै पुनि पुनि हौं बलिजात ॥ ४७ ॥
कीरतलाल हू धरत हिय पद रज कौ विश्वास।
अबलौं पूरन सब भयौ आगै हूकी आस ॥ ४८ ॥
प्यारी तेरी सुहृद अलि मिलीं तात के रूप।
ताही पुन्य प्रताप सौं देख्यौ तेरौ रूप ॥ ४९ ॥
अपनी कीरति जानिकैं दीजो महल खवास।
रसना सौं श्रवनन परैं धन वृन्दाबन बास ॥ ५० ॥

चैतहि तैं नित उठि रहे मनके जे उदगार।
वैसाख जेठ घुटि कैं रहे श्रवी न एकौ धार ॥ ५१ ॥
षाढ़ मास सावन चल्यौ जात बात की बात।
भादौं सुदि लागी झरी भींजत रसमय गात ॥ ५२ ॥
मानुष तन वृन्दाविपिन रसिकन कौ रस रंग।
श्री हितानन्द गुरु कृपा तैं पायौ दुर्लभ संग ॥ ५३ ॥
धन्य धन्य वह शुभ घरी जादिन जनम्यौ आय।
ऐसे पितु कौ आत्मज भाग्य कह्यौ किमि जाय ॥ ५४॥
नाम धाम धामी मिल्यौं पुनि प्रसाद हित रूप।
जनम जनम ये ही मिलैं मेरे मन के भूप ॥ ५५ ॥
यह आशा नहीं छूटि है छूटै पुनि पुनि देह।
भ्रात मात गुरु इष्ट संग यही तात कौ गेह ॥ ५६ ॥
क्वार वदी तिथि छट्ट कौं आप ही पूरन कीन।
द्वै हजार उन्नीस में गायौ कीरत दीन ॥ ५७ ॥
माता कीरति नाम सौं लीजो मोहि पिछानि।
नातौ नेह निभाइयो हित कीरति अलि जानि ॥५८॥
ऐसी आशा करत हौं अपने हिय के मांय।
कृपा रावरी कीजियो रूप अली लखि जांय ॥ ५९ ॥
नहीं हमकौ पानी चहै नहीं घाट की भीर।
वृन्दावन रज दीजियो मदनटेर के तीर ॥ ६० ॥

प्रधान पीठाधि कारिणी टीकैत अधिकारिन

महारानी श्रीगंगाकुंवरिजू कृत-

* पद १ *

अब अनुकम्पा कीजिये वृषभानु दुलारी।
दर्शन दै सुख दीजिये कीरति की प्यारी॥
कर जोड़ूँ विनती करूँ हूँ शरण तिहारी।
कृपा वलोकन करौ आय रसिकन की प्यारी॥
भवबाधा सब मेटियो करि कृपा महारी।
तुव पद पंकज परस कैं दृग होय सुखारी॥
अधिकारिन, गंगाकुँवरि तुव महल मझारी।
रूप अलि के संग रहौं देहु टहल सवारी॥

* पद २ *

हाथ जोर विनती करौं श्री राधावल्लभलाल।
कृपा रावरी किजियो हित प्रभु दीन दयाल॥
शरण तिहारी मैं गही सुनि लीजे दै कान।
और कोऊ दीसत नहीं ऐसो कृपा निधान॥
हौं भोरी दासी सदा प्राननाथ सुनि लेहु।
अधिकारिन गंगाकुंवरि रूप अली संग देहु॥

टीकैत अधिकारी

१०८ श्रीहित रूपलालजी महाराज

ने प्रगट करी, फागुन कृष्ण ८ शनिवार संवत २०१८

* गजल-बधाई *

चलौ सब मिल सखी सजधज बधाई है बधाई है।
बधाई हरि मुरलिका की सुहाई रास मंडल पर॥
कि स्वामिनि का हुकम शिरधरि श्रीहित अलि अवनि आई है
तरनिजातीर पर सुन्दर श्रीगोविन्द घाट के ऊपर।
बधाई रास मंडल की अहा क्या रंग लाई है॥
जहँ श्री व्यास नंदन जू श्रीतारा तनय करुणाकर।
कि कलिके कलुप धोने को सदा आसन लगाई है॥
जहाँ पर एक दिन प्यारी कही सुनि बात हित सजनी।
तुम्हें अब है वही करना जो मेरे मन में भाई है॥
यौं सुनकर बड़ी खुश होकर प्रिया से अदब अरजी की
अहो बड़ भाग्य जो प्यारी की आज्ञा शिर चढ़ाई है॥
सुनो तुम आज से मेरे रसिक जन मुकट मणि होकर।
कि कलि कालिख को धो डालो जो गुरुजन उर में छाई है
हाँ उसके लिये दरवाजा हमेशा खुला रहने दो।
जो मेरे नाम को लेकर तुम्हारे द्वार आई है॥

तुम्हारे हुक्म से उसको तुम्हारे पास आने दें ।
कि पहिरेदार अपने को हिदायत ये सुनाई है ॥
औ उसके हृदय के भीतर जमी जो जंग धो डालो ।
कि कुन्दन बनादो उसको जो मेरी ही कहाई है ॥
यहीं सब हित के पक्किर ने यहाँ तक अष्ट सखियों ने ।
तुम्हारी कृपा से उर की व्यथा विरहज नसाई है ॥
हमारे नित्य बसने की जगह है वही वृन्दावन ।
जहाँ हम दोनों ने बैठक तेरी गोदी बनाई है ॥
जहाँ सेवक चरण रज में परम विश्राम पाकर के ।
कि अपने अपने रस्ते से हमारी शरण पाई है ॥
जहाँ पर अमित रसिकों ने अमित विश्राम पाया है ।
हमेशा अष्ट सखियों ने कृपा तेरी मनाई है ॥
जहाँ पर हित कृपा के हैं सदा टीकैत अधिकारी ।
जै श्री रूपानन्य दासी ने बधाई गहकि गाई है ॥

श्रीमद्गोस्वामी श्रीहित रूपलालजी महाराज

अधि।ारी कृत—

* पद *

प्रणऊँ प्रथम व्यास कुमार।
नाम श्रीहरिवंश विनु कछु है नहीं संसार ॥ १ ॥
श्रीराधावल्लभलाल के निज मित्र परम कृपाल।
तिनहुँ के हैं प्राण प्यारे व्यासनंद रसाल ॥ २ ॥
रुचि सु रुख अनुसारनी निज निज कृपा पात्र अनन्य।
(जैश्री) रूपलाल सु मृदुल हिय में प्रिया विनु नहिं अन्य॥३
जवतें विरोजीं हृदय में दृढ़ थाप दै अभिराम।
रोम रोमनि रमि रह्यौ तवतें श्रीराधा नाम ॥ ४ ॥
जगत सोवत चलत वैठत घरी पल दिन रात।
हृदय तें वह प्रिया मूरति छिन न इत उत जात ॥५॥
मंत्र राधा नाम राधा इष्ट राधा रूप।
धाम राधा रूप मय अरु दृष्टि राधा रुप ॥ ६ ॥
रूप राधा जानिये अरु राधिका हित रूप।
हित विना कछु है नहीं जो अहै सो हित रूप ॥ ७ ॥
कल्याण दायी प्रेम दायी भजौ राधा नाम।
नाम नामी भेद नाही हित हृदय विश्राम ॥ ८ ॥
गुननि आगर भजन सागर रसिक जन मन भूप।
(जैश्री) हित किशोरीलाल हित गुरु तनय श्रीहित रूप ॥९॥

अधिकारी श्रीमद्गोस्वामी

श्रीहित किशोरीलाल जू कौ

* मंगल वधाई *

मंगल श्री हरिवंश नाम गुण गाइये।
पिय प्यारी कौ हेत सु ताहि लड़ाइये ॥
विपिन अलौकिक धाम लतागृह राजहीं।
अंकनि दंपति लसत सुरत रण साजहीं ॥ ॥
साजहीं जहाँ सुरत क्रीड़ा श्रीकिशोरीलालरी।
प्रेम विह्वल गात कमनी उमगि हित कर मालरी ॥
रंध्र मग छवि किरण प्रगटी सखिनु दृग मधि छाइये।
मगल श्रीहरिवंश नाम गुण गाइये ॥ १ ॥
जै जै श्रीहित व्यास सुवन करुणा भरे।
रसिक मुकट मणिलाल अभय प्रणतनि करे ॥
श्री राधावल्लभलाल सुयश प्रगटाइयौ।
पिय प्यारी उपदेश निदेश लखाइयौ ॥
लखाइयो हित केलि निज को कुञ्ज निभृत सुहावनी।
रसिक जन मन मोद दायनि नवल रुचि उपजावनी ॥

श्रीराधाबल्लभीय सम्प्रदाय प्रधान पीठाधिपति ब्रज साहित्य के
प्रकाण्ड मर्मज्ञ अनन्त जीवोद्धारक आदर्श गुरुवर
श्रीमद्गोस्वामी श्री हितकिशोरीलालजी महाराज
टीकायत – श्री वृन्दाबनधाम (मथुरा)

अवतरण भाद्रपद शु० ८
विक्रम संवत् १९२८

अर्न्तध्यान अगहन शु० पूर्णिमा
संवत १०९९

जब घटत निज धर्म जान्यौ करि अनुग्रह अवतरे।
जै जै श्रीहित व्यास सुवन करुणा भरे॥ २॥

जय जय श्री हरिवंश विपिन चूड़ामनी।
उपकारक अवतंश रसिक जीवन धनी॥
कोमल परम कृपाल युगल हित रंगरी।
दृग चितवनि रस भरी सु निर्मल अंगरी॥
अंग निर्मल हृदय शीतल अधम जन कलि कारणैं।
धरयौ अद्भुत रूप चित्र विचित्र शरण उद्धारणैं॥
श्रीकिशोरीलाल हित वपुनाम पावन सुख भनी।
जय जय श्री हरिवंश विपिन चूड़ामनी॥ ३॥

जय जय जननी कूँख सफल हित रस भरी।
प्रगटयौ कुँवर अनूप लगी आनँद झरी॥
तिथि आठैं सुदि भाद्र महूरत शुभ घरी।
वृन्दावन हित धाम रहसि वर्षा करी॥
करी हित रस रहसि वर्षा नृत्य जुवती जन करैं।
मंगल कुलाहल अजिर मधि वाद्यंत्र धुनि हित हित झरैं॥
पढ़त निगमनि रिचा विप्र सुचौक सथिया शुभ घरी।
जय जय जननी कूँख सफल हित रस भरी॥ ४॥

जय जय श्री हरिलाल भवन भूषण महाँ।
प्रगटे विजय स्वरूप अनूपम छवि अहा॥

कोविद रसिक रसज्ञ हृदय हित मित बढ़ै ।
मुख अंबुज्ज दृग भृङ्ग पिवत रस थित रहै ॥
रहै हित थित चित्त रस भर शब्द जय जय बोलहीं ।
जननी मनोहरि गोद बालक लखि मुदित मन डोलहीं ॥
कीरति कुँवरि के जनम दिन प्रगट्यौ परम आनँद लहा ।
जय जय श्रीहरिलाल भवन भूषण महा ॥ ५ ॥

जय जय श्रीहितरूप किशोरी लालरी ।
दम्पति वपु एकत्व रसिक जन पालरी ॥
हित अलि आज्ञा पाय सु यश रस विस्तरयौ ।
शरणा गत प्रतिपाल अभय कर वर धरयौ ॥
धरयौ कर वर जासु के शिर ग्रंथि करमनि की कटी ।
अलि भाव भावक बहु किये सुख भरत हिय रविजा तटी
पद कमल परसत सरस तन मन परत हित छवि जालरी
जय जय श्री हित रुपकिशोरी लालरी ॥ ६ ॥

जय जय श्री हरिलाल सुवन निर्भय हियौ ।
श्री राधावल्लभ लाल लड़ायौ हित पियौ ॥
अधिकारी हित कोप मृदुल वचनावली ।
हँसत हरत मन मनहुँ झरत सुमनावली ॥
सुमनावली मनु झरत श्री हरिवंश हित रटना लगी ।
रहत कुञ्जनि सुख सनैं जहाँ हित अली रस में पगी ॥

कुटिल कामी विषय रत सठ दास प्रीतम गहि लियौ ।
जय जय श्री हरिलाल सुवन निर्भय हियौ ॥ ७ ॥

* वधाई *

वधाई आजु बाजत रंग भरी ।
भादौं सुदी महाँ तिथि आठैं जन्मैं सुभग घरी ॥
गावत वधू सोहिले रचि रचि मानहुँ मेघ झरी ।
धरत सवासिन कलस साँथिये नेगिनु नेग अरी ॥
मंगल मुखी गतिनु लैं निर्ततताननि लेत खरी ।
बजत मृदङ्ग धिकिट धिधकिट किट परन निकर जड़री ॥
गुनियन भीर द्वार गुण गावत विरदन मुख उचरी ।
विप्रनि रिचा पढ़ाय वेद ध्वनि नाम करण वितरी ॥
श्री युत नाम किशोरीलाल हित वंशी वेलि फरी ।
करि हैं धर्म प्रचुर पुहमी महँ जगजन शूल हरी ॥
राधावल्लभलाल लड़ैं हैं इष्ट सुदृष्टि करी ।
दंपति हित अवतार एकमिक रसिकनि जान परी ॥
हित प्रीतम हरिलाल सुवन मुख निरखत पल न टरी ।

श्रीमद्गोस्वामी श्रीहित रूपलाल जी महाराज

अधिकारी को मङ्गल वधाई प्रारम्भ

* राग सूहौ बिलावल *

जय जय श्री हित अलि अंश प्रगट जग जगमगे ।
श्री राधावल्लभ लाल लड़ावत रसपगे ॥

श्री रूपलाल ढ़िग बोलि कुञ्ज हित यौं कही ।
पुनि प्रगटी जगमाहिं न सरसता रही ॥
यही आज्ञा पाय कैं शुभ घरी शुभ दिन जब भयौ
जै श्री किशोरी लाल जू के प्रगट मङ्गल ह्वै गयौ॥
श्री रूपलाल सुहावनौ श्री राधिका हित रंग रंगे ।
जै जै हित अलि अंश प्रगट जग जगमगे ॥ १ ॥

जै जै हित रस बेलि केलि प्रियालाल की ।
फूली बहुरि बसन्त रसिकता ख्याल की ॥
सरस सुगन्ध अपार रसिक चित अलि बनैं ।
मँड़रावत दिन रैन सुयश रस सुख भनैं ॥
श्रीरूपलाल कृपाल की अब प्रभा पुनि विस्तृत भई ।
सरस रसकौ सिंधु उमड़्यौ शुष्कता जग सौं गई ॥
जिते नीरस दरस कीन्हें सरसता के ढ़िंग लगे ।
जय जाय हित अलि अंश प्रगट जाग जगमगे ॥२॥

जाय जय हित कौ रूप लाल मन मोहन ।
सुन्दर सुखद सुजान रसीलौ सोहना ॥
टहल खवासी योग सहायक जानिकैं ।
हित अलि परम प्रसन्न भई निज मानिकैं ॥
जियौ आशिष देत सजनी सबैं छवि पै वलि गईं ,
लाल नैननि दियौ कजरा बालतन कांती दई ॥

युगल दीप्ति निहार वेगहिं कली कल्मष सब भगे।
जय जय हित अलि अंश प्रगट जग जगमगे ॥ ३ ॥
(जय जय) श्री रूपलाल सुख दैन कृपा अब कीजिये।
वृन्दावन हित फेरि जगत कौं दीजिये ॥
बूड़त या भव सिंधु उबारौ जीव कौं।
दरसावौं माधुर्य सरस रस सींव कौं॥
आप प्रगटे सरस परिकर वेगि अब प्रगटाइये।
श्रीराधिका वर लाल के नव नित्य कौतुक गाइये ॥
हित शरण की बिनय नित नित भाव वृत्ति हियें जगै॥
जय जय हित अलि अंश प्रगट जग जगमगै ॥ ४ ॥

* बधाई *

आजु बधाई बजत सुहाई।
श्रीरूपलाल के प्रगटत ही जग जय जय ध्वनि रहि छाई
मातु तात उमगे भये डोलें आनँद निधि यह पाई।
रसिक समाज आजु वहु फूल्यौ सरस बधाई गाई ॥
पुनि वह सरस गिरा प्रगटैगी यह आशा उर आई।
श्रीहित शरण कृपाबल पाये उमगे मुदित महाई ॥१॥

गाऊँ गहकि गुण गंभीर।
रूप हित कौ प्रगट देखौं श्रवत लोचन नीर ॥ १ ॥

कृष्ण पक्ष सुपंचमी तिथि सरस मास अषाढ़ ।
(जय) श्रीकिशोरीलाल कौ यह रूप गर्भित लाड़ ॥२॥
उमगि उदयौ रसिक जन हित रस परीक्षा लैन ।
कुञ्ज रस ब्रह्मादि दुर्लभ सो जु सादर दैन ॥ ३ ॥
कृपा जाकी दृगनि वर्षत प्रणत जन दिन रात ।
जो न दिनकर होय तौ कहाँ संभवै क्यौं प्रात ॥ ५ ॥
देखिये किन भाय भरिके पूजि हैं मन आस ।
हित चतुर्भुज दास दरस्यौ हितज प्रेम प्रकाश ॥ ५ ॥

श्री भोलानाथजी कृत–

* कुन्डलिया *

प्रथम लाल हित रूप के पुत्र किशोरीलाल ।
लाल किशोरी ग्रह प्रगट अब हित रूप कृपाल ॥
अब हित रूप कृपाल खेल उल्टौ दरसायौ ।
जब श्री विग्रह छोड़ फेरि अब हृदय लगायौ ॥
दियौ मान नहि नृपति कौं पचिहारे सब भृत्य ।
हित भोरी अब मन बस्यौ मान दैन कौ कृत्य ॥१॥
परचौ पायौ भली विधि हैं ये बेड़ उदार ।
थोरे ही में पलटि हैं ऊपर के व्यौहार ॥
ऊपर के व्यौहार शुद्ध प्रेमा बरसा है ।
लौकिक दृष्टी फेरि कुञ्ज क्रीड़ा दरसा है ॥

दीठि डरनि लगि स्वामिनी करी विषय की वारि ।
सत्य सत्य यह सत्य है हित भोरी निर्धार ॥ २ ॥
धरौ धीर सब रसिक हो जिन आतुर घबराव ।
जुग दश बीते प्रगट ह्वै फेरि दियौ है दाव ॥
फेरि दियौ है दाव केलि शिशुता की देखौ ।
अपराधन सौं बचौ खेल हित जू कौ लेखौ ॥
तरुणाई की धूप में हित छिप्यौ रूप के माँह ।
भोरी हित खिल हैं कुशुम बैंस उतरती छाँह ॥ ३ ॥

श्री मद्गोस्वामी श्री हित सुकुमारीलालजी महाराज के

जन्म मंगल बधाई प्रारम्भ आषाढ़ वदी मावस

संवत् १६७६ राग सूहौ विलावल

—: मङ्गल :—

जय जय श्री हरिवंश वंश के लाल हैं ।
श्री सुकुमारीलाल रसिक प्रतिपाल हैं ॥
दिव्य मनोहर रूप प्रभा शशि जानिये ।
अधिकारी हित रूप सुतनय बखानिये ॥
बखानिये सुतनय नैन सिरात श्रीमुख देखिकैं ।
जनक जननी मोद मानत सुधन अपनौं पेखिकैं ॥

लै गोद दुलरावत सु सजनी चूम मुख उरमाल हैं।
जय जय श्री हरिवंश वंश के लाल हैं॥ १॥
जय जय श्री सुकुमारी प्यारी प्राण हैं।
रसमय शांत स्वरूप गुणनि की खान हैं॥
दुखी जगत के जीव देखि पुनिवपु धरयौ।
हित मारग उपदेश सकल संकट हरयौ॥
हरयौ संकट सकल सबकौ भक्ति पथ दरसाय कैं।
कुटिल कामी क्रूर पापी लिये हृदय लगाय कैं॥
प्रिया पिय के गोप्य रस कौ देत सब कौं दान हैं।
जय जय श्री सुकुमारी प्यारी प्रान हैं॥ २॥

श्रीसुकुमारी लाल सफल पावस करी।
मानस कृष्ण अषाढ़ सुप्रगटे शुभ घरी॥
गावत गीत पुनीत नारि अति मोद में।
देखत सुत कौ रूप मातु की गोद में॥
गोद में देखत कुवर श्रीहित किशोरी लाल जू।
निज पौत्र कौ प्रागट्य देख्यौ हृदय हर्ष विसाल जू
दै मान द्विजनि बुलाय सबकौं दानकी लागी झरी।
श्रीसुकुमारी लाल सफल पावस करी॥ ॥३॥
श्रीसुकुमारी लाल सुजस जग छाय है।

जिनकौ शुद्ध चरित्र सबनि मन ᳵ. हैं ।'
शरणागत कौ देत अभय कौ दान हैं ।
पोषत सबके प्राण करत सनमान हैं ॥
करत सबकौ मान कहा गुण गान इक मुख कीजिये ।
निरख सुखद स्वरूप अपनै भाग्य कौ फल लीजिये ॥
गावत श्री राधा चरण मंगल सबनि कौ सुख दाय है ।
श्री सुकुमारीलाल सुजस जग छाय है ॥ ४॥

* बधाई *

मावस कृष्ण अषाढ़ कौ, जन्मै सुखदाई ।
संवत उन्नीसौ उन्यासी, बजी बधाई ।
जननी गंगा कुवरिजनक हित रूपलाल हैं ।
श्रीसुकुमारी लाल कुँवर तिनके कृपाल हैं ।
जो कोउ आवै शरण, ताहि हित सौं अपनावै ।
कृपा दत्त निज मंत्र दै रस भजन करावैं ॥
हित कुल में भये प्रकट, विमल वाणी मन हरनी ।
सुन्दर गौर स्वरूप अंग, शोभा दृग भरनी ॥
अद्भुत छटा विलोकी शिष्य सेवक बहु आवैं ॥
राधाचरण प्रेम सौं जनम बधाई गावैं ।

श्रीमद्गोस्वामी श्री हितभजन लाल जी की

मंगल वधाई प्रारम्भ

जन्म संवत् फागुन वदी १२ सम्वत् १९८२

रागसूहौं विलावल

आर्विभाव द्वितीय हित रुप सहेलि है ।
विलासवंश अर्चाय हित पद्धति नवेलि है ।
वनठन आवति लटकि चाल मन भाइयाँ ।
श्याम चंदिनी विंदुका तिलक सुहाइयाँ ।
सुहाईयाँ मन भावते को यह कुवर भजन स्वरूप हैं
हित जाड्य जंभम यथामति चेतन्य चिन्मय रूप हैं।
पावन प्रतीत हितेश्वरी की विलास रास जू केलि हैं
अवर्भाव द्वितीय हितरुप सहेली हैं ।
श्रीहित सौरभ सुकुमार तनय रूपलाल जू ॥
श्रीहित भजनलाल गोस्वामि भजनता ख्याल जू ।
इन समअरु हितनाहि जै श्रीहित मूलये ॥
राधा यश रस भूप मधुर वर फूलये ॥
फूलसम सव देखि फूलत त्रिविछकनिछकि फून्यौरहै ॥
निशियामपितु हितु हितमतिउपासितसेवाकरत सवकालजू ।
श्री हित सौरभ सुकुमार तनय रूपलाल जू ॥ २ ॥
नव नागरि मनमिलन रमित रमणीयता ॥
भजन सवादि तृपति हिये की अमीयता ।
सुहृदय सनेही मेही नेही निपुणता ॥
जग जीवन जग ज्योतिता हित की हितयिता ।

हितयिता हित हितू की हित हेतु हित भाजन बन्यौ।
राधा रसावधि रूप वारिधि अनन्यता आसन ठन्यौ।
शरण आये अभय कीने हरत तनमन विषमता ॥
नवनागरि मन मिलन रमित रमणीयता।
हितवपु विजय स्वरूप विजय की विजयता ॥
बिनु विवेक विज्ञान मिलन की सहायता।
हित शुक चुंचु सौं किरत सुफल के भोग्यता ॥
प्राणनाथ दुलरावन योग की योग्यता।
योग्यता अभिराम धाम विराजमान अचल रहैं ॥
चारु मुक्ति संजोकरण कीरतियशादिक मचल रहैं।
प्रेम राज्य स्वतन्त्र सेवक नियम की अभयता ॥
हितवपु विजय स्वरूप विजय की विजयता ॥४॥
श्रीमद्धित हरिवंश चन्द्रवर महा प्रभो।
रसा सक्ति रसभक्ति रस शेखर विश्वभो ॥
श्रीहितसुहाग वर विमल वगीचा कल्प तरु।
निज मंत्रितआवेश विभावित नाभि उरु ॥
उर कमल नाभि सुकर्णिका हिय कमल प्रेमा भाखिली
पियभाव भावित प्रिया राधा प्राण रस रंजित अली ॥
अखिलेश मिथुनविलास तिय आशक्ति मादिकता विभो
श्री मद्धित हरिवंश चन्द्रवरमहा प्रभो ॥

बधाई:—सरस बधाई रस निधि माई ।
गोस्वामी जयभजनलाल हित प्रकटे सबजीवन सुखदाई॥
गंगा कुमरि मातु महारानी अधिकारिन जु सुयश निधिपाई
उन्नीसौं ब्यासी शुभ संवत फागुन वदी द्वादशी रस दाई॥
श्रीकिशोरीलालहिततनय रूप पितु आँनंद उमगनि कहीनजाई
हितानन्द रस सिंधु मगन मन श्रीराधावल्लभ मुदितसुहाई।
नृत्य गान रँग मगे समाज रस गावत रसिक समूह बधाई।
सुयस नवेलीशरण प्रेम सौं दिन दुलरावत अधिक मल्हाई।

श्रीमद्गोस्वामी श्रीकीर्त्तीलाल जी महाराज कौ

जन्म दिन अगहन कृष्ण पक्ष दुतिया संवत् १९८४ कौ है

मगल राग सूहौं विलावल:—

जय जय श्री हरिवंश वंश के लाल हैं ।
श्रीकीरतिलाल कृपाल भक्त प्रतिपाल हैं ॥
प्रतिपाल भक्तनके सदा हितरूप जनकसुहावनें ।
जननी जू गंगा कुमरि मृदुचित सबनिके मन भावनैं
सुन्दर जु भव्य स्वरूप जिनके वचन परम रसाल हैं
जय जय श्री हरिवंश वंश के लाल हैं ॥
जय जय श्री कीरतिलाल सफल हिम रितु करी ।
अगहन कृष्ण दोज दिव्य देही धरी ॥

धरी देही दिव्य पुनि हित रूप सौं जब अवतरे ।
गायौं सुयश गौंराग तेई चरण हित सौं हिय धरे ॥
ह्वै है सुयश भूतल प्रगट श्री विंदु कुल बेली फरी ।
जय जय कीरतिलाल सफल हिम रितु करी ॥

जय जय श्री कीरतिलाल सवन सुख दैंन हैं ।
अतिही चित्त उदार मनोहर बैंन हैं ॥
बैंन हैं अति ही मनोहर चित्त को मलता भरयौ ।
और सौं नहि काम कछु इक राधिकावल्लभचरयौ ॥
आवै जौ कोऊ शरण ताकौंदेत सब सुख चैंन है ।
जय जय श्रीकीरति लाल सबनि सुख दैंन है ॥३॥

जय जय श्री कीरतिलाल गुणनि की खान है ॥
निज भक्तन कौं देत अधिक सन्मान है ।
सन्मान सबकौं करत बोलत फूल से बर्षावहीं ॥
क्रीड़ा जु नित्य निकुञ्ज की तिनके हृदय दरसावहीं ।
राधाचरन मंगल जु गावत सबनि कौ सुखदान है ॥
जय जय श्रीकीरति लाल गुणनि की खान है ॥

वधाई

संवत् उन्नीसौ चौरासी ।
शुभ नक्षत्र शुभवार शुभघरी प्रगटे हैं सुखरासी॥
अधिकारीश्रीरूपलाल गृह सुखकी घरीप्रकाशी।
माँगत नेगी नेग आपनौं सबकी गई उदासी ॥
नाचत नारी मंगल गावत मिलधाये ब्रजवासी।
गंगाकुमरि पुत्रकी सेवा करत दास अरु दासी॥
जिनकौ दरशन करत जीवकी सकल अविद्यानासी
राधाचरन वधाई गाई मन मेंमान हुलासी ॥

वधाई

अगहन द्वितिया कृष्ण सुहाई ।
अधिकारी श्री रुपलाल गृह बाजत सुनी वधाई ॥
नाचत नारी मंगल गावत बाजे विविध वधाई ।
मोतिन चौक पुराय कलश धरि बंदनवार बधाई ॥
दानिनु दान देत बहू विधी सौं मन में अति हर्षाई ।
धरत सवासिन द्वार सांथिये कदली खंभ रुपाई ॥
जन्मदिवस श्रीकीर्त्तीलाल कौ गंगाकुमरि जननिसुखदाई
राधाचरन कृपाबल हितगुरु यहजु वधाई गाई ॥

❀ रसिक-नाम-ध्वनि ❀

जय-जय राधावल्लभ, गुरू हरिवंश,
रंगीलौ राधावल्लभ, हितहरिवंश ।
छबीलौ राधावल्लभ, प्यारौहरिवंश,
रसीलौ राधावल्लभ, जीवन हरिवंश ।
श्रीवृन्दावनरानीराधा वल्लभनृपति प्रसंश ।
हित के वस जस रस उर धरिये,करिये श्रुति अवतंश ।।१
वंशीवट, यमुना तट, धीर समीर पुलिन सुखपुञ्ज ।
विहरत रंग रँगीलौ हित सों, मंडल सेवाकुञ्ज ।।२।।
ललिता विसाखा चंपक चित्रा, तुङ्गविद्या रङ्गदेवी ।
इन्दुलेखा सुदेवी सबही, सखी यूथ हित सेवी ।।३।।
श्रीवनचन्द्र, श्रीकृष्णचन्द्र, श्रीगोपीनाथ, श्रीमोहन ।
नाद-विन्दु परिवार रंगीलौ, हित सों नित छवि जोहन।।४।।
नरवाहन, ध्रुवदास व्यास श्री सेवक, नागरीदास ।
विट्ठल मोहन नवल छवीले, हित चरणन की आस ।।५।।
हरीदास नाहरमल गोंविंद, जैमल भुवन सुजान ।
खरगसेन हरिवंशदास परमानंद के हित प्रान ।।६।।
गंगा, यमुना, करमठी, अरू भागवती ये वाई ।
हित के चरण-शरण ह्वै कै, इन दंपति-संपतिपाई ।।७।।
दासचतुरभुज; कन्हरस्वामी, अरु प्रबोध, कल्याण ।
स्वामीलाल, दामोदर, पुहुकर,सुन्दर हित अरु आर।।८।।

हीरदास तुलाधार और जसवंत महामति नागर।
रसिकदास, हरिकृष्ण दोऊ ये प्रेम-भक्ति के सागर॥१०॥
मोहन माधुरीदास, द्वारिकादास परम अनुरागी।
श्यामशाह तूमर कुल हित सों दंपति में मति पागी।
श्रीहित-शरण भये अरु अब हैं, फेरहु जे जन ह्वै हैं।
प्रेम-भक्ति अरुभाव-चाव सौं, वृन्दावन-निधि पै हैं॥११॥
रसिक–मंडली में या तन कौं, नीके ढंग लगावौ।
दंपति-यश गावौ हर्षावौ, हित सों रीझ रिझावौ॥१२॥
देवन कों दुर्लभ नर देही, सो तैं सहजहिं पाई।
मन-भाई निधि पाई सो क्यों,जान-बूझ बिसराई॥१३॥
एक अहंता-ममता ये हैं, जग में अति दुःखदाई।
ये जब श्रीजी की ओर लगैं तब, होत परम सुखदाई॥१४॥
मात-तात सुत-दार देह में, मत अरुझै मति मंदा।
श्रीहितकिशोर कौ ह्वै चकोर तू लखि वृन्दावनचंदा॥१५॥

जै जै श्रीराधावल्लभ श्रीहरिवंश।

जै जै श्री वृन्दावन श्रीवनचन्द॥

इति श्रीहित रसिक नामावली

(श्रीहितं वन्दे)

श्रीराधासुधानिधि कौ समय प्रबंध

पृष्ठ सं०		श्लोक सं०
	अथ मंगला समय	
६	यस्या कदापिव०	१
७	ब्रह्म श्वरादि०	२
१८९	जाग्रत स्वप्न०	१६४
१४५	यत्रयत्रमम जन्म०	२६७
८१	नदेवै ब्रह्माद्य०	१४८
१४२	हाकालिदित्वयि०	२६२
१४३	वहंतीराधाया०	२६३
३४	वृन्दारण्यनिकुञ्ज०	५९
१४४	राधा केलिकला०	२६६
१४२	वृन्दारण्ये नव रस०	२६१
३०	दुकूलंविभ्राणामथ०	५२
६८	उपास्य चरणांबुजे०	१२२
९	यत्किंकरीषुवहु०	७
१०८	कदागायंगायंमधुर०	२०१
९७	राधामाधवयोर्विचित्र०	१७९
८९	मत्कंठेकिंनखर०	१६३
५७	सालावण्य चम०	१०२
९४	विच्छेदाभासमाना०	१७३
१०६	परस्पर प्रेमरसेनि०	१९६
१२८	सुस्वादुसुरस०	२३६
१०७	कालिंदीतट कुंजे०	१९८
७३	व्याकोशेंदीवरविक०	१३३
७९	मिथोभगी कोटि०	१४४
१०५	मदाघूर्णं नेत्रं०	१९५
९३	विचित्ररति०	१७०
४३	प्रातः पीतपटं०	७५
१११	स्वेदापूरः कुसुम०	२०७
३३	विपचित सुपंचमं०	५७
११९	व्याकोशेंदीवराष्टा०	२२०
७७	अहोभुवनमोहन०	१४०
	इति मंगला समय	
	अथ शृंगार समय	
१२	कृष्णामृतंचल०	१४
१७	गत्वाकलिंदत०	२३

पृष्ठ सं०	श्लोक सं०
७३ कलिंद गिरिनन्द०	१३२
३१ विचिन्वंतीकेशा०	५३
२३ पत्रावलीरचयि०	३६
१२० पत्रालींललितां०	२२२
२० निर्मायचारु मुक०	३०
८५ दुकूलमतिकोम०	१५७
३८ धम्मिल्लंतेनवपर०	६६
७१ मल्लींदामनिव०	१२९
६७ उन्मीलन्मुकुटं०	१२०
५५ गात्रे कोटितडिच्छ०	९८
७४ गौरांगेम्रदिमा०	७४
५७ लज्जांत: पटमार०	१०१
१२५ नासाग्रेनवमी०	२२९

इति शृङ्गार समय संपूर्ण

अथ भोग समय

१३ उज्जागरंरसिकना०	१६

अथ चरण स्मरण

७ यो ब्रह्मरुद्र शुकना०	३
२१ दूरादपास्य स्वजना०	३२
८ आधयमूर्द्धनि०	४
११ वृन्दावनेश्वरितवै०	१२
५२ यस्यास्तेवर्तकि०	९३
११० कामंतूलकया०	२०५
१६ सत्प्रेमसिंधुम०	२१
५८ येषांप्रेक्षां वितर०	१०३
९३ खेलन् मुग्धाक्षि०	१७२
१३१ क्रीड्न्मीनद्वया०	२४१
१५ श्रीराधिके सुरतरं०	१९
८२ सदानन्दं वृन्दावन०	१५०

इति चरण स्मरण सम्पूर्ण

अथ वक्षोज स्मरण।

वृन्दाटवी प्रकट मन्मथ०	३३
२२ सांद्रानुरागरससार०	३४
२२ क्रीडासर: कनक०	३५
२६ श्रीराधिके तवनवो०	४४

इति वक्षोजस्मरण सम्पूर्ण

अथ बदन स्मरण

१०० लसद्दसन मौक्ति०	१८४
२५ प्रेमोल्लसद्रसविला०	४१
६६ भ्रमद्भ्रकुटि सुन्दरं०	११९
१०० चलत्कुटिलकुंतल०	१८५
९ तन्न:प्रतिक्षण०	६

पृष्ठ सं०	श्लोक सं०
८८ सुधाकर मुधाकरं०	१६१
१७ सत्प्रेमराशिसरसो०	२४
८७ यदिकनकसरोजं०	१६०
७० राकनेकविचित्र०	१२५

इति बदन स्मरण संपूर्ण

अथ सीमंत स्मरण

१३४ महामणि वरस्रजे०	२४७
१३५ मध्ये मध्ये कुसुम०	२४८
१३६ विचित्राभिर्भंगी०	२४९
२३६ अहो द्वेधीकर्त्तुं	२५०

इति सीमंत स्मरण संपूर्ण

अथ बन बिहार समय

९३ करेकमलमद्भुतं०	१७१
१२७ प्रियांसेनिक्षिप्तो०	२३४
१२६ रसागाधे राधाहृद०	२३१
१०१ पूर्ण प्रेमामृत०	१८६
११९ चलल्लीलागत्या०	२१९
१२० कदामधुरसारि०	२२१
९० क्षणंमधुरगान०	१६६
६० वृन्दाटव्यांनवनव०	१०७
६२ अहो रसिकशेखर०	१११
१०८ रसघनमोहनमूर्ति०	२००
१२६ अकस्मात्कस्या०	२३२
१२७ एकस्यारतिचौर०	२३३
११२ पातंपातंपदकमल०	२०८
३६ द्रष्ट्यायत्र क्वचन०	६२
१२८ दूरसृष्ट्यादिवार्ता०	२३५

इति बनविहार समय

अथ वृन्दाबन महिमा

११७ किंवानस्तैः सुशा०	२१६
१० वृन्दानिसर्बमहता०	८
१२९ यन्नारदाजेशशुकै०	२३८
१४३ सद्योगींद्रसुदृश्य०	२६४
१४४ यद्राधापदकिंक०	२६५
१४१ कासौराधानिगम०	२६०
९५ किंब्रूमोन्यत्रकुंठी०	१७५
राधाकरावचित०	१३
९७ रोमावलीमिहरात्म०	१७८

अथ अभिलाष

७६ राधाकेलिनिकुञ्ज०	१३८
११५ राधापादारविंदो०	२१३
७८ राधानमैत्रकार्यं०	१४३
१३८ सदा गाय गायं०	२५३
८८ अङ्गप्रत्यङ्गरिगन्म०	१६२

पृष्ठ सं०		श्लोक सं०
७५	कदावृन्दारण्येमधु०	१३७
११२	अहोतेमीकुञ्जा०	२०९
११३	इहैवाभूत् कुंजेनव०	२१०
१०६	आसास्यदास्यवृष०	१९७
७७	राधानामसुधा०	१४१
१३२	मालाग्रन्थनशिक्षया०	२४२
१४१	श्रीराधेरसिकेंद्ररू०	२५९
१४०	ध्यायंस्तंशिखिपि०	२५८
६३	यद्गोविंद कथा०	११४
७८	मंदीकृत्यमुकुन्द०	१४२
	अथ प्रार्थना	
४१	यत्पादांबुरुहैकरेणु०	७२
१४५	काहमूढ़मतिःक्व०	२६८
८०	ब्रह्मानदैकवादा०	१४७
४४	अलंविषयवार्त्तया०	८३
३१	अतिस्नेहादुच्चैरति०	५४
६९	राकाचंद्रोवराको०	१२४
७५	यस्यास्फूर्जत्पद०	१३६
११	यत्पादपद्मनख०	१०
११	उज्जंभमानरसवा०	११
५१	कांताढ्याश्चर्य०	९१
४८	यल्लक्ष्मीशुकनार०	८५
१०२	श्रीगोपेन्द्रकुमार०	१८८
५२	कलिंदागिरिनंदिनी०	९२
५१	दृशौत्वयिरसांबु०	९०
६४	रहोदास्यतस्या०	११५
२५	पूर्णानुरागरसमू०	४०
४४	धर्माद्यर्थंचतु०	७७
२४	तस्याअपाररस०	३९
४५	राधादास्यमपास्य०	७९
६६	लावण्य परमाद्भुत०	११८
७०	शुद्धप्रेमकलीला०	१२७
७१	वृन्दारण्यनिकुंज०	१२८
११०	यस्याप्रेमघना०	२०४
८५	सौंदर्यामृतराशि०	१५६
१३९	श्रीगोविंदव्रजवर०	२५६
१३०	लक्ष्मीयश्चनगो०	२३९
१११	सांद्रप्रेमरसौघ०	२०६
	अथ प्रिया हित परस्पर सं०	
८३	क्षरंताव प्रत्तक्षरमनु०	१५३
१३४	संगत्यापि होत्सवे०	२४६
६१	इतोभयमितस्त्रपा०	१०९
११६	भूयोभूयकमल०	२१५
११३	श्रीमद्बिंवाधरेते०	२११
१३७	चकोरस्तेवक्त्रामृत०	२५१
५०	कृष्णपक्षोनवकुवल०	८८
६१	श्यामेचाटुरुतानि०	११०
१२५	अप्रेक्षेकृतनिश्चया०	२३०
१५	श्रीराधिकेसुरतरंगि०	२०
६५	चन्द्रास्येहरिणाक्षि०	११६

पृष्ठ सं०	श्लोक सं०
६० रूपंशारदचन्दकोटि०	१०८
८२ उन्मीलन्नवमल्लि०	१५१
५६ मुक्तापंक्तिप्रतिमद०	९९
५६ स्निग्धाकुञ्चितनी०	१००
अथ अतिसख्य	
१०१ ययोन्मीलत्केलि०	१८७
१०३ किंरेधूर्त्तप्रवरनि०	१९०
१२१ श्रीगोवर्द्धनएक०	२२३
१०३ कदाचाराधायाः०	१९१
१३९ अनेनप्रीतामेदि०	२५७
अथ अत्यानन्य	
६५ राधापादसरोजभक्ति०	११७
४९ यदिस्नेहाद्रावेदि०	८७
३२ निजप्राणेश्वर्यायद०	५५
अथ वाल्यकैशोर	
१३२ यूनोर्वीक्ष्यदरत्रपार०	२२५
९१ श्रीमद्राधेत्वमथ	१६८
३३ प्रीतिंकामपिनाम०	५६
३८ कदावाखेलतीव्र०	६५
३७ उन्मीलन्मिथुना०	६४
अथ प्रेम वैचित्री	
१४ दृष्ट्वैव चंपक०	१८
२३ श्यामेति सुन्दर०	३७
२४ वेणुः करान्नि०	३८
२७ अङ्कस्थितेऽपि०	३८
२८ वीणांकरे मधु०	४८
९८ श्लोकान्प्रेष्ठ०	१८०
१०९ क्षणंशीत्कुर्वंतीं०	२०३
११५ अदृष्ट्वा राधांके०	२१४
११८ श्याम श्यामे०	२१७
११८ तादृङ् मूर्ति०	२१८
१२३ ज्योतिः पुञ्ज०	२२६
१२३ भोः श्री दामन्०	२२७
१२४ गता दूरे गावो०	२२८
१३८ श्याम श्यामेत्य०	२५४
१३९ कदाचिद्गायंती०	२५५
१४६ श्रीराधेश्रुतिभिर्बु०	२६९
१४६ अद्भुतानन्दलोभ	२७०
अथ रास समय	
६२ विचित्रवरभूषणो०	११२
९९ कदागोविंदाराधन०	१८३
८४ लुलितनवलवंगो०	१५५
१०२ ओष्टप्रांतोच्छलित०	१८९
५० लीलापांगतरंगितै०	८९
८६ कदारासेप्रेमोन्मद०	१५८
६३ कदासुमणिकिंकि०	११३
८६ प्रसृमरपटवासे०	१५९
३४ सहासवरमोहना०	५८
अथ संकेत समय	
३५ पादस्पर्शरसोत्सव०	६०

पष्ठ सं०		श्लोक सं०
५९	करतेपत्रालिकिमपि०	१०५
५९	रहोगोष्ठीश्रोतुं तव०	१०६
२०	संकेतकुञ्जमनुपल्लव०	३१
२६	सद्गधमाल्यनव०	५३
१६	सांकेतकुञ्जमनुकुञ्ज०	२२
१३	पादांगुलीनिहित०	१५
२५	सांकेतकुञ्जनिलये०	४२
३६	साभ्रू नर्तनचातुरी०	६३

इति संकेत समय

अथ शय्या समय

६८	आनआननचन्द्रमी०	१२३
१३७	स्पृष्ट्वा रमृदुकरतल०	२५२
१३२	प्रेमांभोधिरसोल्ल०	२४३
१९	श्रीराधिकानिजवि०	२८
८१	त्वयिश्यामेनित्ये०	१४९
१३३	नीलेंदीवरबृन्दको०	२४५
२९	अन्योन्यहासपरिहा०	४९
२७	संलापमुच्छलदनं०	४५
२८	कुजांतरेकिमपि०	४७
७६	यातायातसते०	१३९
१०	केनापिनागरवरे०	९
९२	एकंकांचनचंपकं०	१६९
८३	अमर्य्यादोन्मील०	१५२

पष्ठ सं०		श्लोक सं०
९१	अद्यश्यामकिशोर०	१६७
५८	वल न्नीत्वतल्पं०	१०४
१२१	अनगजयमङ्गलम्०	२२४
४२	दूरेस्निग्धपरंपरा०	७३
९४	कदात्युन्मुक्तं०	१७४
७४	तांबूलंक्वचिदर्प०	१३४
१०४	कदावाप्रोद्दाम०	१९२
९०	अलिदेकालिंदी०	१६५
१०४	मिथःप्रेमावेशा०	१९३
११४	सांद्रानदोत्मदरस०	११२
४९	लब्ध्वादास्यंतद्०	८६
१३०	उच्छ्रष्टामतभु०	२४०

अथ नाम स्मरण

५३	यज्जापःसकृदेवगो०	९४
५४	देवामथभक्त०	९६
५३	कालिंदीतटकुंजह	९५
८४	अनुल्लिख्यानंता०	१५४
५५	यावाराधयति०	९७

अथ प्रिया स्वरूप वर्णन

२९	महाप्रेमोन्मीलन्०	५०
३०	अमंदप्रेमांकश्ल०	५१
७४	प्रत्यंगोच्छल०	१३५
१०७	प्रीतिश्विमूर्त्ति०	१९९

पृष्ठ सं०	श्लोक सं०
७२ प्रेमोल्लासैक०	१३०
९६ लसद्वदनपंकज०	१७६
८ दिव्यप्रमोदरस०	५
१३३ शुद्ध प्रेमविलास०	२४
३९ तज्जीयान्नवयौ०	६८
४७ तत्सौदंर्य्यंसच०	८४
९६ अनंगनवरंगिणी०	१७७
४० प्रेमानन्दरसैक०	६९
७९ काचिद्वृन्दावन०	१४५
१८ चिंतामणि: प्र०	२६
४० वृन्दारण्य निकुञ्ज०	७०
३५ लावाण्यामृत०	६१
१२९ कांति:कापि०	२३७
३८ लक्ष्मीकोटि०	६७
७२ यस्यास्तत्सु०	१३१
४४ प्रेम्णःसन्म०	७८
१०५ मदारुणवि०	१९४
४३ यदवृन्दावनमात्र०	७६
१९ पीतारुणच्छवि०	२९
१७ लावण्यसाररस०	२५
१८ मंजुस्वभावम०	२७
१०९ उदचिद्रामांच०	२०२
७० कालिंदीकूल०	१२६
६७ श्यामामंडल०	१२१
४१ लीलापांगतरंग०	७१
१४ वैदग्धसिंधुर०	१७
९९ कोटींदुच्छविहा०	१८२
९८ प्रेयसङ्गसुधा०	१८१
अथ रसिक स्वरूप	
४६ कैशोराद्भुतमाधुरि०	८०
४६ लिखितभुजमूल०	८१
४६ कर्माणिश्रुति०	८२
८० नजानीतेलोकं०	१४६
इति रसिक स्वरूप	

इति श्रीराधासुधानिधि जी को समय प्रबन्ध सम्पूर्णम् ।

(श्रीहित हरिवंशवंशो विजयते)

श्री चतुराशीजी के पदन कौ समय प्रबंध

पृष्ठ सं०		पद सं०
	मङ्गला समय (पद १६)	
१६२	प्रात समय दोऊ०	३
१६२	आज तौ युवती०	४
१६३	आज प्रभात लता०	५
१६४	कौन चतुर युवती०	६
१६५	अति ही अरुण०	८
१६८	नन्द के लाल०	१३
१७०	अपनी बात०	१५
१७१	आज देख ब्रज०	१७
१७३	मोहनलाल के०	२०
१७४	तेरे नयन करत०	२१
१७४	नयनन पर वारौं०	२२
१७५	राधा प्यारी तेरे०	२३
१८२	आज अति राजत०	३१
१८४	आज वन राजत०	३३
१८५	वन की कुञ्जन०	३४
२०३	यह जु एक मन०	५६
२१४	आज सँभारत०	७०
२१६	लटकत फिरत०	७७
२२४	आजऽव देखियत०	८४
	इति मंगला समय सम्पूर्णम्	

पृष्ठ सं०		पद सं०
	स्नान एवं शृंगार समय (पद ४)	
१६६	बनी राधा मोहन०	९
१६९	अधर अरुण तेरे०	१४
१७६	आज नीकी०	२५
१७८	ब्रज नव तरुणि०	२६
	इति शृंगार समय संपूर्णम्	
	अथ राजभोग शय्या बिहार समय (पद २)	
१९६	देखि सखी राधा०	४९
१९६	नवल नागरी०	५०
	इति राजभोग शय्या बिहार समय संपूर्णम्	
	अथ बनविहार समय (पद ३)	
१९३	आवत श्री वृषभानु०	४
१९४	वन की लीला०	४
१९५	वनी वृषभानु०	४
	इति बनविहार समय संपूर्ण	

पृष्ठ सं० पद सं०

अथ रास समय (पद १७)

१६७ चलहि राधिके० १२
१७२ खेलत रास रसिक० १६
१७५ आज गोपाल रास० २४
१७६ मोहिनी मदन० २६
१८७ आज बन नीकौ० ३६
२०५ आज सखी बन में० ६१
२०५ खेलत रास० ६२
२०६ मोहन मदन त्रिभंगी ६३
२०८ वेणु माइ बाजै० ६४
२०६ मदन मथन घन० ६५
२१२ रुचिर राजत वधू० ६७
२१२ रास में रसिक० ६८
२१३ मोहिनी मोहन० ६६
२१५ श्याम संग राधिका ७१
२२० सुधंग नाचत० ७८
२२० रहसि रहसि० ७६
२२२ वृषभानुनन्दिनी० ८१

इति रास समय संपूर्णम्

अथ संभ्रम मान समय (पद १३)

१८८ चलहि किन० ३७
१८६ वेगि चलहि उठि० ३८
१८६ खेल्यौ लाल चाहत० ३६
१६० बैठे लाल निकुंज० ४०
१६० प्रीति की रीति० ४१
१६२ अति नागर० ४३
१६२ चलि सुन्दरि बोली० ४४
१६७ दान दैरी नवल० ५१
२०३ तेरे हित लैन आई० ५८
२१७ खंजन मीन मृगज० ७३
२१७ काहे कौं मान० ७४
२१८ हौं जु कहत इक० ७५
२२४ छाँड़ दै माननी० ८३

इति संभ्रम मान समय संपूर्णम्

अथ शय्या समय (पद १८)

१६१ जोई जोई प्यारौ० १
१६१ प्यारे बोली भामिनी० २
१६४ आज निकुंज मंजु० ७
१६६ आज नागरी० १०
१६८ मञ्जुल कल कुञ्ज० ११
१७० आज मेरे कहैं० १६
१७१ सुन मेरो वचन० १८
१८० देखत नव निकुञ्ज० ३०
१८३ आजु बन क्रीड़त० ३२
१६१ प्रीति न काहू की० ४२
१६४ विपन घन कुंज० ४६
२०१ हौं बलि जाऊं ५६

पृष्ठ सं०		पद सं०
२०४	कहा कहीं इन०	६०
२०९	विहरत दोऊ०	६६
२१५	सुन्दर पुलिन०	७२
२१९	नागरी निकुञ्ज०	७६
२२१	वल्लवी सु कनक०	८०
२२३	नागरता की रासि०	८२

इति शय्या समय संपूर्णम्

अथ बसन्त समय (पद २)

१७७	मधु रितु वृन्दावन०	२७
१७८	राधे देख बन की०	२८

ति वसन्त समय संपूर्णम्

अथ मलार समय (पद ४)

पृष्ठ सं०		पद सं०
१९८	देखौ माई सुन्दरता०	५२
१९९	देखौ माई अबला०	५३
१९९	नयौ नेह नव रंग०	५४
२००	आज दोऊ०	५५

इति मलार समय संपूर्णम्

अथ झूलन समय (पद १)

१८६	झूलत दोऊ नवल०	३५

इति झूलन समय संपूर्णम्

अथ होरी समय (पद १)

२०१	प्रथम यथामति०	४७

इति होरी समय संपूर्णम्

इति श्रीमच्चतुराशी जी कौ समय प्रबन्ध संपूर्णम्।

(सर्वाधिकार स्वरक्षित)

मिलने का पता—

श्री राधावल्लभीय सम्प्रदायाचार्य

श्री हित कीर्तिलाल गोस्वामी

१००८ श्री राधावल्लभजी का मन्दिर

वृन्दावन (मथुरा)

श्रीयुत सेठ चन्द्रप्रकाशजी अग्रवाल

C/o श्री दुर्गादत्त रामदेव

पो० बराकर (बर्दवान)